नालंदा विश्वविद्यालय

वार्षिक प्रतिवेदन 2023-24

"राष्ट्रीय महत्व" का एक अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय
(भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के अधीन)
राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार - 803116, भारत।

<u>नालंदा विश्वविद्यालय की पुनर्कल्पना</u>

शैक्षणिक वर्ष 2023-24 नालंदा विश्वविद्यालय के लिए एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है क्योंकि यह 19 जून, 2024 को माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा बिहार के राजगीर, नालंदा में अपने नवनिर्मित परिसर के भव्य उद्घाटन का गवाह है। नालंदा का प्राचीन गौरव, जो शिक्षा, ज्ञानोदय और सद्भाव के वैश्विक केंद्र के रूप में इसके पुनरुत्थान का प्रतीक है। विश्वविद्यालय, भारत की बौद्धिक विरासत का एक प्रतीक, अंतःविषय शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है, जो दुनिया भर के छात्रों और विद्वानों को एकजुट करता है।

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व के तहत, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर अकादमिक उत्कृष्टता, स्थिरता और वैश्विक जुड़ाव की एक नई भावना को अपनाता है। अपने संबोधन में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, "नालंदा सिर्फ एक नाम नहीं है, यह एक पहचान और सम्मान है। नालंदा एक मूल्य और मंत्र है... आग किताबों को जला सकती है लेकिन यह ज्ञान को नष्ट नहीं कर सकती।" यह लोकाचार एक समावेशी, नवोन्मेषी और भविष्य के लिए तैयार शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता को प्रेरित करता है, जो अतीत के ज्ञान और भविष्य की आकांक्षाओं पर आधारित है। जैसे ही हम एक नए अध्याय में कदम रखते हैं, हम दुनिया को इसमें हमारे साथ यात्रा करने के लिए आमंत्रित करते हैं ज्ञान और विकास की परिवर्तनकारी यात्रा।

चित्र: भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 19 जून, 2024 को नालंदा विश्वविद्यालय के नवनिर्मित परिसर का उद्घाटन किया।

अनुक्रमणिका

क्रम सं.		पृष्ठ संख्या
1.	कुलपति महोदय की लेखनी से	04
2.	अंतर्राष्ट्रीय रूपरेखा और अधिदेश	05
3.	शासकीय संरचना	08
4.	प्रमुख पहल	11
5.	शैक्षणिक विन्यास	14
6.	प्रतिष्ठित व्याख्याता	16
7.	शैक्षणिक कार्यक्रम	18
8.	बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म स्कूल	24
9.	पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन स्कूल	48
10.	ऐतिहासिक अध्ययन स्कूल	78
11.	भाषा एवं साहित्य/मानविकी विद्यालय	97
12.	प्रबंधन अध्ययन स्कूल	110
13.	सीखने के केंद्र	133
14.	वैश्विक पीएचडी कार्यक्रम	136
15.	अल्पकालिक कार्यक्रम	137
16.	आसियान-भारत विश्वविद्यालयों का नेटवर्क (AINU)	140
17.	समझौता ज्ञापन/सहयोग	143
18.	छात्र निबंध	144
19.	उपाधियाँ/प्रमाणपत्र/डिप्लोमा विवरण	153
20.	सम्मेलन एवं सेमिनार	154
21.	अंतर्राष्ट्रीय छात्र/छात्राएँ	155
22.	लिंग-अनुकूल परिसर	159
23.	पुस्तकालय	160
24.	सुविधाएँ	163
25.	नेट ज़ीरो कैम्पस निर्माण	169
26.	पुरस्कार, सम्मान और मान्यता	177
27.	वार्षिक लेखा	178
28.	उभरता हुआ नालंदा: मीडिया कवरेज	181

<u>कुलपति महोदय की लेखनी से</u>

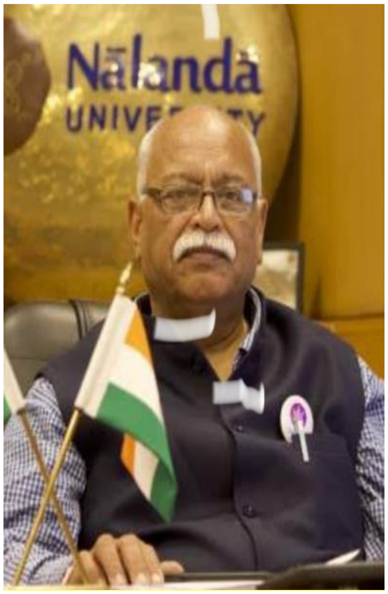

पिछले वर्ष 2023-2024 [अप्रैल-मार्च] के दौरान नालंदा विश्वविद्यालय की प्रगति के बारे में वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना खुशी की बात है। हालाँकि, 19 जून 2024 को हमारे माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा हरित, नेट ज़ीरो नालंदा विश्वविद्यालय परिसर के उद्घाटन की ऐतिहासिक घटना का संक्षेप में उल्लेख करना खुशी की बात है। संघ और राज्य के सम्मानित नेता और गणमान्य व्यक्ति उद्घाटन समारोह में सभी भागीदार देशों की सरकारों, विदेशी राजनयिकों ने भाग लिया। माननीय प्रधान मंत्री के ओजस्वी संबोधन और प्रेरक शब्द नालंदा परिसर में गूंजते हैं और समुदाय को ऊर्जावान बनाते हैं, नालंदा के छात्रों और शिक्षकों को प्रेरित करते हैं और गर्व और उद्देश्य की भावना को भी प्रज्वलित करते हैं।

नालंदा विश्वविद्यालय उभर रहा है और विश्व शांति और स्थिरता के प्रति सचेत जिम्मेदारी को आत्मसात करते हुए दुनिया भर के युवा विद्वानों को विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षित करने के अपने महान दृष्टिकोण को पूरा कर रहा है। नालंदा विश्वविद्यालय के वैश्विक पीएचडी छात्रों का पहला बैच भी 2023-24 में शुरू हुआ, और नए शोधकर्ताओं को डॉक्टरेट कार्यक्रम में प्रवेश दिया गया। हमारे माननीय प्रधान मंत्री द्वारा कल्पना की गई और अकादमिक आदान-प्रदान, विशेषज्ञता और अनुसंधान साझा करने के लिए नालंदा विश्वविद्यालय को दिए गए आसियान-भारत विश्वविद्यालयों के नेटवर्क [एआईएनयू] को सफलतापूर्वक प्रबंधित किया गया और संकाय विनिमय कार्यक्रम के तहत दौरे हुए।

हमारे माननीय चांसलर प्रोफेसर अरविंद पनगढ़िया और गवर्निंग बोर्ड के सदस्यों का सक्षम मार्गदर्शन; हमारे देश के सम्मानित नेतृत्व का आशीर्वाद और हमारे सहयोगी देशों का समर्थन, हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहा है, जबकि संकाय, छात्र और कर्मचारी अपने-अपने क्षेत्रों में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने का प्रयास कर रहे हैं, और देश का प्रत्येक नागरिक नालंदा के उत्थान के लिए शुभकामनाएं देता है। नालन्दा उच्च कक्षाओं में पहुँच रहा है।

जय हिन्द!

प्रो. अभय कुमार सिंह
अंतरिम कुलपति

अंतर्राष्ट्रीय रूपरेखा और अधिदेश

नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010 (संख्या 39, 2010) को 21 सितंबर, 2010 को राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त हुई। इस अधिनियम ने नालंदा विश्वविद्यालय को एक अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित किया, जिसे "राष्ट्रीय महत्व के संस्थान" के रूप में नामित किया गया है, और इसका प्राथमिक उद्देश्य शांति, सद्भाव और सतत विकास को बढ़ावा देना है।

नालंदा विश्वविद्यालय के पुनर्जन्म की यात्रा 2006 में शुरू हुई, जब भारत के तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने बिहार विधान सभा में नालंदा की ऐतिहासिक महानता को ध्यान में रखते हुए इसे पुनः स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। इसके साथ ही, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के देशों ने भी नालंदा के पुनः स्थापना के प्रति सामूहिक आकांक्षा व्यक्त की:

“15 जनवरी, 2007 को फिलीपींस के सेबू शहर में आयोजित दूसरे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन ने क्षेत्रीय शैक्षिक सहयोग को मजबूत करने और पूर्वी एशिया क्षेत्र के शैक्षिक उत्कृष्टता केंद्रों का उपयोग करने के लिए सहमति दी। इसके अलावा, बिहार राज्य में स्थित नालंदा विश्वविद्यालय के पुनर्जीवन के माध्यम से क्षेत्रीय समझ और एक-दूसरे की विरासत और इतिहास की सराहना को बढ़ावा देने का निर्णय लिया गया।”

“25 अक्टूबर, 2009 को थाईलैंड के हुआ हिन में आयोजित चौथे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना का समर्थन किया और प्रस्तावित नालंदा विश्वविद्यालय और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में मौजूद उत्कृष्टता केंद्रों के बीच नेटवर्किंग और सहयोग को प्रोत्साहित किया। इसका उद्देश्य एक ऐसा शिक्षण समुदाय बनाना था, जहां छात्र, विद्वान, शोधकर्ता और शिक्षाविद एक साथ कार्य कर सकें और उस आध्यात्मिकता का प्रतीक बनें जो पूरे मानवजाति को एकजुट करती है।” (नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010 की भूमिका)

भारत सरकार ने अपने अंतरराष्ट्रीय जनादेश को ध्यान में रखते हुए भारतीय संसद के एक अधिनियम के माध्यम से विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की।

पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के भाग लेने वाले सदस्य देश जिन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना के समर्थन में एक अंतर-सरकारी समझौते पर हस्ताक्षर किए:

India | **Australia** | **Bangladesh** | **Bhutan** | **Brunei Darussalam** | **Cambodia**

China | **Indonesia** | **Laos- PDR** | **Mauritius** | **Myanmar** | **New Zealand**

South Korea | **Sri Lanka** | **Thailand** | **Portugal** | **Vietnam** | **Singapore**

विश्वविद्यालय का उद्देश्य

- सदस्य देशों की क्षमता निर्माण के लिए प्राचीन विज्ञान (विशेष रूप से नालंदा में सदियों पहले प्रचलित), दर्शन, भाषा, इतिहास और अन्य उच्च शिक्षा के क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करना और अनुसंधान को सक्षम बनाना, जिससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सके।
- पूर्वी एशिया के भावी नेताओं को एक मंच पर लाकर क्षेत्रीय शांति और दृष्टिकोण को बढ़ावा देना, ताकि वे अपने ऐतिहासिक संबंधों को समझकर एक-दूसरे के दृष्टिकोण को बेहतर तरीके से जान सकें और इस समझ को वैश्विक स्तर पर साझा कर सकें।
- शिक्षण, अनुसंधान और पाठ्यक्रम में ऐसे शैक्षणिक मानकों और मान्यता मानदंडों को समन्वित करना जो सभी सदस्य देशों के लिए स्वीकार्य हों।
- सदस्य देशों के विद्वानों और इच्छुक व्यक्तियों के बीच एक अद्वितीय साझेदारी बनाना।
- समकालीन संदर्भ में बुद्ध के शिक्षाओं को समझना, साथ ही दुनिया के अन्य भागों के विचारों और प्रथाओं को भी शामिल करना।
- अनुसंधान को बढ़ावा देना ताकि एशियाई देशों, विशेष रूप से पूर्वी एशिया के बीच अधिक परस्पर संवाद स्थापित हो सके, जो व्यापार, विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र, धर्म, दर्शन और सांस्कृतिक प्रवाह जैसे क्षेत्रों में मजबूत ऐतिहासिक समानताओं से जुड़े हुए हैं।
- छात्रों और विद्वानों में समायोजन और समझ की भावना को बढ़ावा देना और उन्हें लोकतांत्रिक समाजों के आदर्श नागरिक बनने के लिए प्रशिक्षित करना।
- सदियों पहले नालंदा में दी जाने वाली शिक्षा को ध्यान में रखते हुए सदस्य देशों की शैक्षिक प्रणाली में सुधार में योगदान देना।
- सदस्य देशों की विभिन्न कलाओं, शिल्पों और कौशलों में शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना, उनकी गुणवत्ता को बढ़ाना और लोगों तक उनकी पहुंच सुनिश्चित करना।

शासकीय संरचना

कुलाध्यक्ष
भारत के माननीय राष्ट्रपति
श्रीमती द्रौपदी मुर्मू
(जुलाई 2022-)

कुलाधिपति
प्रो. अरविंद पनगढ़िया
(अप्रैल 2023-)

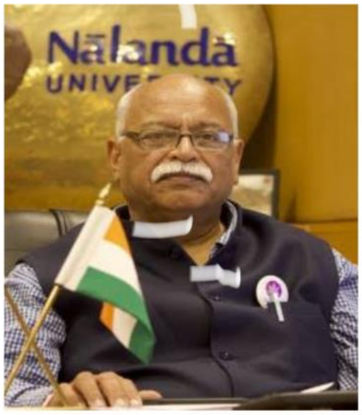

अंतरिम कुलपति
प्रो. अभय कुमार सिंह
(16 मई 2023 -)

<u>विश्वविद्यालय के वैधानिक समितियाँ</u>

- <u>शासी बोर्ड</u>
- <u>कार्यकारी समिति</u>
- <u>वित्त समिति</u>
- <u>शैक्षणिक परिषद</u>

<u>शासी बोर्ड</u>

कुलाधिपति	डॉ. अरविंद पनगढ़िया नालंदा विश्वविद्यालय के चांसलर और गवर्निंग बोर्ड के अध्यक्ष
कुलपति	प्रो अभय कुमार सिंह अंतरिम कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय
सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय	पदेन सदस्य
अतिरिक्त सचिव (शिक्षा), शिक्षा मंत्रालय	पदेन सदस्य
बिहार राज्य सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले दो सदस्य	श्री अंजनी कुमार सिंह श्री आनंद किशोर
पांच सदस्य राज्यों का प्रतिनिधित्व, जिन्होंने तीन वर्षों की अवधि के दौरान अधिकतम वित्तीय सहायता प्रदान की है- क) भारत से प्रतिनिधित्व (भारत एकमात्र सदस्य राज्य है जिसने वित्तीय सहायता प्रदान की है)	श्री प्रसून जोशी
केंद्र सरकार द्वारा नामित प्रसिद्ध शिक्षाविद् या शिक्षाविद् व्यक्तियों में से तीन सदस्य	प्रो. मंजुल भार्गव श्री आनंद महिंद्रा श्री वेणु श्रीनिवासन

शासी बोर्ड की कार्यकारी समिति

सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार	पदेन अध्यक्ष
प्रो. मंजुल भार्गव	सदस्य
श्री प्रसून जोशी	सदस्य
श्री वेणु श्रीनिवासन	सदस्य
श्री आनंद किशोर	सदस्य
कुलपति	पदेन सदस्य सचिव

वित्त समिति

कुलपति	पदेन अध्यक्ष
दो कुलाधिपति नामित/व्यक्ति	सदस्य
वित्त मंत्रालय, सरकार का एक नामांकित व्यक्ति। भारत का	सदस्य
विदेश मंत्रालय, सरकार का एक नामांकित व्यक्ति। भारत का	सदस्य
कुलपति द्वारा नामित रोटेशन द्वारा अध्ययन विद्यालयों के डीन	सदस्य
वित्त अधिकारी	सदस्य सचिव

शैक्षणिक परिषद

कुलपति	पदेन अध्यक्ष
कुलपति की अनुशंसा पर अकादमिक परिषद द्वारा सात विशेषज्ञों (विश्वविद्यालय या इसके द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थान के कर्मचारी नहीं) को सहयोजित किया गया।	विशेषज्ञ सदस्य
स्कूलों और संकाय के डीन को कुलपति द्वारा नामित किया जाता है	सदस्य
लाइब्रेरियन	सदस्य
निदेशक (प्रवेश) या कुलपति द्वारा नामित	विशेष आमंत्रित
कुलसचिव	सदस्य सचिव

प्रमुख पहल

ए. ज्ञान के नए मार्गों का सृजन

- नया स्कूल: नालंदा विश्वविद्यालय अगस्त 2024 से स्कूल ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस एंड पीस स्टडीज़ के माध्यम से अपना शैक्षणिक संचालन शुरू करेगा।
- नया मास्टर्स कार्यक्रम: शैक्षणिक वर्ष 2024-25 से, विश्वविद्यालय दो नए मास्टर्स कार्यक्रम, अर्थात् एम.ए. इन पुरातत्त्व और एम.ए. इन इंटरनेशनल रिलेशंस एंड पीस स्टडीज़ शुरू करने जा रहा है। वर्तमान में, नालंदा विश्वविद्यालय आठ मास्टर्स कार्यक्रम प्रदान करता है।
- पोस्ट-डॉक्टरल फेलोशिप: जून 2024 से, नालंदा विश्वविद्यालय ने सभी स्कूलों में पोस्ट-डॉक्टरल फेलोशिप के नए कार्यक्रम प्रदान करना शुरू किया।
- प्रस्तावित पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कार्यक्रम: विश्वविद्यालय ने आर्कियोलॉजी, ट्रांसलेशन स्टडीज, फ्यूचर स्टडीज, अर्थ साइंसेज और जियो-इन्फॉर्मेटिक्स, डिजिटल जियोग्राफी और एनर्जी मैनेजमेंट जैसे विषयों में नए पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कार्यक्रम शुरू करने की प्रक्रिया आरंभ कर दी है।
- नए शॉर्ट कोर्सेस: आस-पास के क्षेत्रों की समुदायों के साथ जुड़ाव और संभावित छात्रों की रुचि को ध्यान में रखते हुए, आगामी शैक्षणिक सत्र से विश्वविद्यालय फ्रेंच, डिजास्टर मैनेजमेंट, जापानी, ग्रीक भाषा, एप्लाइड बौद्ध दर्शन आदि में डिप्लोमा और सर्टिफिकेट जैसे नए शॉर्ट कोर्सेस प्रदान करेगा।
- आगामी मास्टर्स कार्यक्रम: नालंदा विश्वविद्यालय आगामी शैक्षणिक सत्रों में एम.ए. इन इकोनॉमिक्स, एम.ए./एम.एससी. इन जियो-इन्फॉर्मेटिक्स/जियोग्राफी, एम.ए./एम.एससी. इन मैथमेटिक्स, एम.ए. इन साइकोलॉजी और एम.ए. इन इंडियन फिलॉसफी जैसे कार्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव रखता है।
- छात्रवृत्ति में वृद्धि: शैक्षणिक वर्ष 2024-25 के लिए विश्वविद्यालय ने विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं का विस्तार किया है। एशियान छात्रवृत्ति स्लॉट 50 से बढ़ाकर 80 कर दिए गए हैं और बिम्सटेक छात्रवृत्ति स्लॉट 20 से बढ़ाकर 50 किए गए हैं, जिससे मेधावी छात्रों को लाभ होगा।
- पुस्तकालय में ई-संसाधनों की वृद्धि
- इस वर्ष, क्षेत्रीय यात्रा और अनुभवात्मक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। मानविकी, भाषा, कंप्यूटर, जीआईएस, पर्यावरण आदि के लिए प्रयोगशालाओं में कई उन्नत उपकरण स्थापित किए

गए। छात्रों द्वारा क्षेत्रीय यात्राओं की संख्या में वृद्धि की गई। पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में, अंतरविषयक स्कूलों के छात्रों ने बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय और आईसीएआर क्षेत्रीय स्टेशन, पटना; एसएलआरएम, राजगीर; घेरेल, बिहार; चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान, पटना; राजगीर किला, जल शोधन संयंत्र, गिरियक आदि के शैक्षिक/क्षेत्रीय दौरों में भाग लिया।

- शैक्षणिक लेखा परीक्षा: शैक्षणिक परिषद और भारत व विदेश के प्रतिष्ठित विद्वानों की मदद से शैक्षणिक लेखा परीक्षा की गई, जिसमें पाठ्यक्रमों की समीक्षा की गई और विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय दायित्वों को ध्यान में रखते हुए नए पाठ्यक्रम जोड़े गए।
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग: संयुक्त कार्यक्रम, संकाय विनिमय और सहयोगात्मक अनुसंधान शुरू करने के लिए कई अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों का पता लगाया गया और सहयोग स्थापित किया गया।

बी. शैक्षणिक संवर्द्धन/पुनःसंरेखण/आउटरीच

- नेट जीरो ग्रीन कैंपस का उद्घाटन: नालंदा विश्वविद्यालय के नेट जीरो ग्रीन कैंपस का उद्घाटन 19 जून 2024 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किया गया। इस अवसर पर बिहार के राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर, बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर, विदेश राज्य मंत्री श्री पबित्रा मार्गेरिटा और विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. अरविंद पनगड़िया उपस्थित थे।
- राज्यसभा अध्ययन यात्रा कार्यक्रम (RSSVP): राज्यसभा अध्ययन यात्रा कार्यक्रम के अंतर्गत नालंदा विश्वविद्यालय के छात्रों के एक समूह ने 21-22 फरवरी 2024 को राज्यसभा का दौरा किया। माननीय उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के अध्यक्ष श्री जगदीप धनखड़ ने संसद भवन में नालंदा विश्वविद्यालय के छात्रों से बातचीत की। उन्होंने छात्रों से शांति, प्रगति और सतत विकास के संरक्षक बनने का आह्वान किया और भारतीय सभ्यता की शाश्वत विरासत को रेखांकित किया।
- छठा बोधगया ग्लोबल डायलॉग: नालंदा विश्वविद्यालय ने 16-17 मार्च 2024 को देसकाल सोसाइटी के सहयोग से "लैंडस्केप ऑफ एनलाइटनमेंट" विषय पर छठा बोधगया ग्लोबल डायलॉग आयोजित किया। बिहार के माननीय राज्यपाल ने इस संवाद का उद्घाटन किया। इस संवाद ने बहु-दृष्टिकोणों से अनुभव, चिंतन और अंतर्दृष्टियों की अभिव्यक्ति के लिए मंच प्रदान किया, जो शिक्षा, धरोहर और सततता को जोड़ते हुए बुद्ध की विरासत पर भविष्य निर्माण के लिए प्रेरित करता है।

- आसियान महासचिव का दौरा: आसियान महासचिव डॉ. काओ किम होर्न ने 14-15 फरवरी 2024 को नालंदा विश्वविद्यालय का दौरा किया। नालंदा समुदाय को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, "यह वास्तव में नालंदा के पुनरुत्थान का साक्षी बनना एक बड़ा सम्मान है।" उन्होंने भारत सरकार द्वारा दी जा रही छात्रवृत्तियों की सराहना की, जो युवाओं को भविष्य का निर्माण करने में सक्षम बनाती हैं।
- ग्रीस की राजदूत का दौरा: भारत में ग्रीस की राजदूत सुश्री अलिकी कुत्सोमीतोपूलू ने 21 सितंबर 2024 को नालंदा विश्वविद्यालय का दौरा किया। उन्होंने विश्वविद्यालय के अत्याधुनिक सुविधाओं और नवाचारपूर्ण डिज़ाइन की प्रशंसा की।
- फ्रांस के राजदूत का दौरा: भारत में फ्रांस के राजदूत महामहिम थियरी माथु ने 20 सितंबर 2024 को नालंदा विश्वविद्यालय का दौरा किया। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय के शिक्षकों और छात्रों के साथ शैक्षणिक सहयोग और संभावित शोध संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया।

<u>शैक्षणिक विन्यास</u>

"तत्कर्म यन्न बंधाय सा विद्या या विमुक्तये" में विश्वास रखने वाले के रूप में, नालंदा विश्वविद्यालय शिक्षा को भारत की प्राचीन 'ज्ञान परंपरा' (ज्ञान परंपरा) के लेंस से देखता है जिसमें मानव विकास का एक व्यापक स्पेक्ट्रम और ज्ञान की अटूट परंपरा शामिल है।

एक ज्ञान समाज का निर्माण. नालंदा विश्वविद्यालय, एक युवा विश्वविद्यालय होने के बावजूद, छात्रों और विद्वानों के विविध समुदाय का घर है। यह दुनिया भर से सर्वश्रेष्ठ और प्रतिभाशाली लोगों को आकर्षित करने का प्रयास करता है। वर्तमान में, विश्वविद्यालय में 30 से अधिक राष्ट्रीयताएँ हैं जो परिसर में इसकी विविधता और बहुलवाद को समृद्ध कर रही हैं।

अध्ययन के स्कूल: अध्ययन के सभी छह स्कूलों में नए पाठ्यक्रम शुरू किए गए: -

- बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यालय
- पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन स्कूल
- ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय
- स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज
- भाषा एवं साहित्य/मानविकी विद्यालय
- अंतर्राष्ट्रीय संबंध और शांति अध्ययन स्कूल

लघु अवधि पाठ्यक्रम: मौजूदा पाठ्यक्रमों को नया रूप दिया गया और नए पाठ्यक्रम इस प्रकार जोड़े गए:

- भाषाएँ: अंग्रेजी, संस्कृत, पाली, तिब्बती, कोरियाई, फ्रेंच
- आलोचनात्मक सोच
- डिजिटल मानविकी
- योग एवं ध्यान
- नालंदा विरासत
- बंगाल की खाड़ी: एक परिचय
- नवाचार एवं नेतृत्व
- चेतना अध्ययन
- इंडो-फ़ारसी विरासत

- भू-सूचना विज्ञान
- आपदा प्रबंधन

अनुसंधान केंद्र: स्कूलों और अल्पकालिक कार्यक्रमों के अलावा, विश्वविद्यालय ने अपने विशिष्ट क्षेत्रों में अनुसंधान उत्पन्न करने के लिए अनुसंधान केंद्र भी शुरू किए हैं: -

- बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र
- सामान्य अभिलेखीय संसाधन केंद्र
- संघर्ष समाधान और शांति अध्ययन केंद्र
- नालंदा विश्वविद्यालय केंद्र, नीमराणा

<u>विशिष्ट व्याख्याता</u>

पूर्वी एशिया और उससे परे ज्ञान मार्गों को तैयार करने की दृष्टि से, विश्वविद्यालय ने विभिन्न व्याख्यान श्रृंखला कार्यक्रम स्थापित किए हैं जो व्याख्यान देने के लिए सिद्ध विशेषज्ञता, विशिष्ट छात्रवृत्ति और विशिष्टताओं वाले वक्ताओं को आमंत्रित करके भारतीय नैतिक मूल्यों को विकसित करने और मुख्य ज्ञान मूल्यों को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण कदम है। और नियमित आधार पर छात्रों और शिक्षकों के साथ बातचीत करें। अगस्त 2023 से जुलाई 2024 के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित व्याख्यानों की सूची इस प्रकार है:

क्र सं.	शीर्षक		विवरण
1.	पद्मश्री डॉ. किरण सेठ, स्पिक मैके के संस्थापक (अप्रैल, 2024)	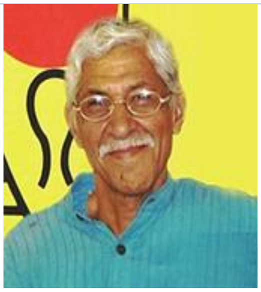	अपने संबोधन में, डॉ. किरण सेठ ने भारतीय संस्कृति के प्रचार में साइकिल चलाने, स्वयंसेवा और गांधीवादी सिद्धांत के अंतर्संबंध की खोज की।
2.	डॉ. रॉब लिनरोथ एसोसिएट प्रोफेसर एमेरिटस, नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी, यूएसए (मार्च, 2024)		पश्चिम में कुछ प्रारंभिक छवियाँ हिमालय - जिसका विडंबनापूर्ण संबंध सुवर्णद्वीप (केदाह, मलक्का जलडमरूमध्य) से है, जहां विक्रमशिला पंडित अतिश ने 1042 में पश्चिम तिब्बत की यात्रा से पहले अध्ययन किया था, सचित्र वार्ता के दौरान जांच की गई।
3.	प्रोफेसर गेशे न्गवांग समतेन, तिब्बती शिक्षाविद् और पद्म श्री पुरस्कार विजेता (फरवरी, 2024)		इसके मूल में, व्याख्यान में नालंदा परंपरा पर जोर दिया गया जो मन के विज्ञान पर केंद्रित है, गहन अध्ययन, अनुसंधान और व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर ध्यान केंद्रित करता है जिसने इसे उल्लेखनीय परिष्कार के स्तर तक बढ़ा दिया है। व्याख्यान इस बात पर आधारित था कि कैसे नालंदा परंपरा आधुनिक विज्ञान से मिलती है और दुनिया को प्रभावित करती है।

4.	महामहिम डॉ. काओ किम होर्न, महासचिव, आसियान (फरवरी, 2024)		अपने व्याख्यान में, उन्होंने आसियान के भविष्य: विकसित हो रहे रणनीतिक वातावरण में आसियान की प्रासंगिकता और लचीलेपन पर ध्यान केंद्रित किया।
5.	डॉ. विजय चौथाइवाले, विचारक, विद्वान एवं विदेश नीति विशेषज्ञ (नवंबर, 2023)		उनका व्याख्यान बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति पर केंद्रित था।
6.	डॉ. आभास मालदहियार, वास्तुकार, स्तंभकार (सितंबर, 2023)		उनका व्याख्यान मध्यकालीन भारत के इतिहास और समकालीन समय में इसकी प्रासंगिकता पर आधारित था।
7.	डॉ. विक्रम संपत लेखक, भारतीय विद्वान और इतिहासकार (सितंबर, 2023)	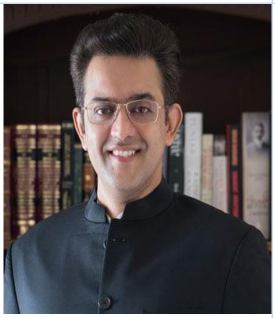	उनके व्याख्यान ने भारतीय संदर्भ में इतिहास की अवधारणा और विभिन्न आख्यानों की खोज की। इसे पत्थर की लकीर मानने के बजाय, उनके व्याख्यान ने दर्शकों को इतिहास की लचीली और लचीली प्रकृति पर प्रकाश डाला जो इसे अवधारणा बनाने वाली हर पीढ़ी के साथ बदलती है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

स्कूल और शैक्षणिक कार्यक्रम

एसबीएस-पीसीआर

- बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यालय
  - एमए, ग्लोबल पीएच.डी. बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्मों में
  - एमए, ग्लोबल पीएच.डी. हिंदू अध्ययन में (सनातन धर्म)

सीस

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन स्कूल

- एमएससी, ग्लोबल पीएच.डी. पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन में

एसएमएस

- प्रबंधन अध्ययन स्कूल
  - एमए, ग्लोबल पीएच.डी. सतत विकास और प्रबंधन में

एसएचएस

ऐतिहासिक अध्ययन स्कूल

- एमए, ग्लोबल पीएच.डी. ऐतिहासिक अध्ययन में

एसएलएलएच

भाषा एवं साहित्य/मानविकी स्कूल

- एमए, ग्लोबल पीएच.डी. भाषाओं और साहित्य में

पाठ्यक्रम

नालंदा विश्वविद्यालय परास्नातक कार्यक्रम, एक वैश्विक पीएच.डी. प्रदान करता है। कार्यक्रम और अल्पकालिक पाठ्यक्रम। कुल मिलाकर, प्रवेश अकादमिक रिकॉर्ड, उद्देश्य विवरण और अनुशंसा पत्रों पर आधारित होते हैं। नालंदा विश्वविद्यालय में पाठ्यचर्या संबंधी फोकस एक मजबूत शैक्षणिक वास्तुकला तैयार करना है जो विश्व स्तरीय सर्वांगीण शिक्षा का समर्थन करने और सीखने के नए क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान को बढ़ावा देने में सक्षम है। इन शैक्षणिक पहलों का मुख्य लक्ष्य ज्ञान को आगे बढ़ाने और प्राचीन ज्ञान और सांस्कृतिक प्रणालियों के अनुप्रयोग के लिए आधार तैयार करना है ताकि व्यक्तिगत और शैक्षणिक दृष्टिकोण और सहयोग को व्यापक बनाने पर आधारित एक नई विश्व व्यवस्था बनाई जा सके। यह अपने अनूठे क्षेत्रों और अनुसंधान कार्यक्रमों के माध्यम से पूरा किया गया है। शैक्षणिक कार्यक्रमों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के बराबर लाने के लिए, पाठ्यक्रम को लगातार नए पाठ्यक्रमों और पाठ्यक्रम संरचनाओं के साथ अद्यतन किया जाता है जो सीखने के परिणामों को स्पष्ट करने, उन लक्ष्यों को पूरा करने के तरीकों का पता लगाने और सीखने के परिणामों के अनुरूप मूल्यांकन रणनीतियों को सुनिश्चित करने की दृष्टि से डिज़ाइन किए गए हैं। अंतरराष्ट्रीय मानकों पर आधारित एक नया अकादमिक आर्किटेक्चर पेश किया गया। सीखने के नए क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान पर ध्यान देने के साथ अंतःविषय नवीन पाठ्यक्रम भी शुरू किए गए हैं। सभी पाठ्यक्रम कैफेटेरिया मॉडल में हैं और मेनू में कई वैकल्पिक विकल्प हैं जो अंतःविषय हैं। कुल पाठ्यक्रम क्रेडिट को 48 क्रेडिट से बढ़ाकर 64 कर दिया गया।

मास्टर डिग्री की संरचना: 64 क्रेडिट

नालंदा में मास्टर डिग्री प्रदान करने के लिए, एक छात्र को 64 क्रेडिट प्राप्त करने की आवश्यकता होती है: पिछले (प्रथम वर्ष) में 32 और अंतिम (द्वितीय वर्ष) में 32। मास्टर्स के छात्रों को प्रत्येक सेमेस्टर में न्यूनतम 16 क्रेडिट पूरे करने की आवश्यकता होती है। एक शैक्षणिक वर्ष में कम से कम 18 सप्ताह के दो शैक्षणिक सेमेस्टर होते हैं, जिनमें से प्रत्येक में 16 सप्ताह कक्षा की व्यस्तता होती है।

सतत विकास और प्रबंधन में एमबीए कार्यक्रम 74 क्रेडिट का कार्यक्रम है जो भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों/पेशेवरों और पदधारियों दोनों के लिए खुला है। नालंदा में एमबीए की डिग्री प्रदान करने के लिए, एक छात्र को 74 क्रेडिट प्राप्त करने की आवश्यकता होती है: पिछले (प्रथम वर्ष) में

38 जिसमें ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप के लिए 2 क्रेडिट और अंतिम (द्वितीय वर्ष) में 36 क्रेडिट शामिल हैं। एमबीए छात्रों को ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप के लिए 2 क्रेडिट के अलावा प्रत्येक सेमेस्टर में न्यूनतम 18 क्रेडिट पूरे करने की आवश्यकता होती है। एक शैक्षणिक वर्ष में कम से कम 18 सप्ताह के दो शैक्षणिक सेमेस्टर होते हैं, जिनमें से प्रत्येक में 16 सप्ताह कक्षा की व्यस्तता होती है।

कुल पाठ्यक्रम क्रेडिट: नालंदा विश्वविद्यालय के सभी स्कूलों में एक समान पाठ्यक्रम संरचना है। पाठ्यक्रमों को कोर, वैकल्पिक और सेमिनार पाठ्यक्रमों में वर्गीकृत किया गया है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक स्कूल में चौथे सेमेस्टर में एक शोध प्रबंध घटक होता है। प्रत्येक सेमेस्टर की विस्तृत संरचना नीचे दी गई है।

- एम.ए./एम.एससी.:
- 10 कोर पाठ्यक्रम, 30 क्रेडिट के बराबर
- 7 ऐच्छिक, 21 क्रेडिट के बराबर।
- 4 सेमिनार, 4 क्रेडिट के बराबर
- 1 निबंध, 9 क्रेडिट के बराबर

____

कुल 64 क्रेडिट

(16 क्रेडिट/सेमेस्टर)

एमबीए:

- 12 कोर पाठ्यक्रम, 36 क्रेडिट के बराबर
- 2 मुख्य पाठ्यक्रम, 6 क्रेडिट के बराबर
- 4 ऐच्छिक, 12 क्रेडिट के बराबर।
- 2 सेमिनार, 2 क्रेडिट के बराबर
- 1 ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप, 2 क्रेडिट के बराबर
- 10 क्रेडिट के बराबर निबंध और 2 क्रेडिट के बराबर प्रस्तुति
- कॉर्पोरेट अनुभव 10 क्रेडिट के बराबर और मोनोग्राफ 2 क्रेडिट के बराबर

कुल 74 क्रेडिट

(पिछले (प्रथम वर्ष) में 38, जिसमें ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप के लिए 2 क्रेडिट और अंतिम (द्वितीय वर्ष) में 36 क्रेडिट शामिल हैं।

मूल्यांकन के तरीके

अनुशासनात्मक और व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को खत्म करने के लिए एक नई ग्रेडिंग प्रणाली लागू की गई, जिससे व्यक्तिगत उपलब्धियों की तुलना करना आसान हो गया। एक निश्चित ग्रेड से नीचे के छात्रों को अपने स्कोर में सुधार करने का अवसर प्रदान करने के लिए, मूल्यांकन की एक नई पद्धति लागू की गई। विश्वविद्यालय साहित्यिक चोरी और अन्य परीक्षा कदाचारों के प्रति शून्य-सहिष्णुता की नीति का पालन करता है।

नई मूल्यांकन और मूल्यांकन प्रक्रिया के अनुसार, प्रत्येक पाठ्यक्रम में छात्र का कम से कम 50% मूल्यांकन औपचारिक अंतिम-सेमेस्टर परीक्षा पर आधारित होता है, मुख्य रूप से मौखिक परीक्षा के साथ या उसके बिना लिखित परीक्षा होती है। अन्य 50% में औपचारिक मध्यावधि लिखित परीक्षा के माध्यम से 20% मूल्यांकन शामिल है, जबकि शेष 30% को आम तौर पर 20% मूल्य के असाइनमेंट/प्रोजेक्ट और 10% मूल्य के निरंतर मूल्यांकन के बीच विभाजित किया जाता है। एक नई ग्रेडिंग प्रणाली विकसित और कार्यान्वित की गई। वसंत 2020.

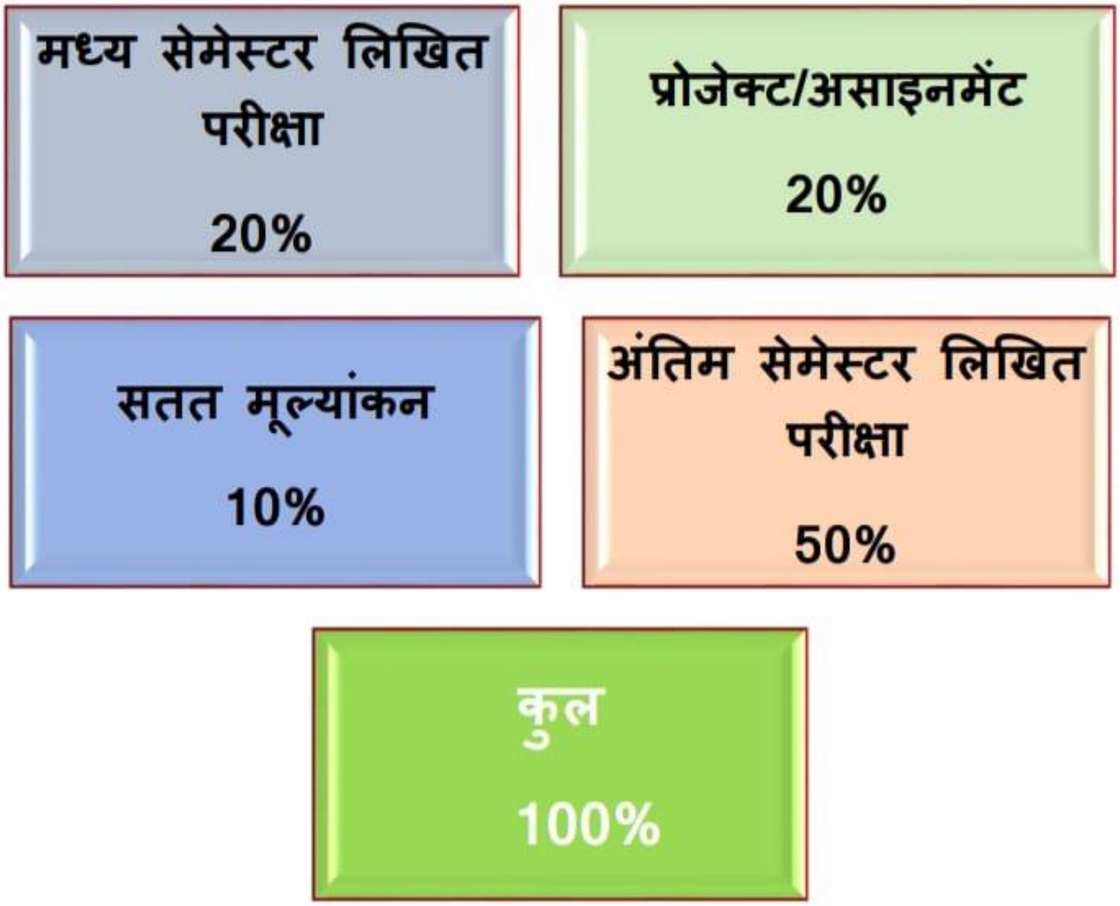

वैश्विक पीएच.डी. कार्यक्रम (नियमित और अंशकालिक)

नालंदा विश्वविद्यालय राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए दो स्तरों पर चार साल का डॉक्टरेट कार्यक्रम प्रदान करता है: नियमित और अंशकालिक। नियमित पीएच.डी. के लिए. विद्यार्थियों, यह पूर्णतः आवासीय कार्यक्रम है। अंशकालिक पीएच.डी. के लिए. कार्यक्रम, स्कूलों द्वारा निर्धारित संपर्क कार्यक्रमों/कार्यशालाओं के अनुसार। विश्वविद्यालय ने नियमित और अंशकालिक दोनों स्तरों पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए चार वर्षीय वैश्विक डॉक्टरेट कार्यक्रम के लिए 11 छात्रों को प्रवेश दिया। यह कार्यक्रम जनवरी, 2020 में शुरू हुआ और ग्लोबल पीएच.डी. वर्तमान में कार्यक्रम विश्वविद्यालय के तीन स्कूलों द्वारा पेश किया जा रहा है।

वैश्विक पीएचडी डिग्री प्रदान करने के लिए शोध कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए, एक विद्वान को नीचे दिए गए विवरण के अनुसार कुल 130 क्रेडिट जमा करने की आवश्यकता है:

कोर्स वर्क: 32 क्रेडिट (प्रथम सेमेस्टर)
थीसिस: 60 क्रेडिट
अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय सम्मेलनों/मंचों में प्रकाशन/प्रस्तुति: 08 क्रेडिट
प्री-सबमिशन सेमिनार प्रस्तुति: 10 क्रेडिट
मौखिक परीक्षा: 20 क्रेडिट
कुल: 130 क्रेडिट

अल्पकालिक कार्यक्रम (डिप्लोमा और प्रमाणपत्र)

शिक्षण ब्लॉक, नया परिसर

नालंदा विश्वविद्यालय ने छात्रों को विभिन्न भाषाओं और विशिष्ट क्षेत्रों में दक्षता हासिल करने में सक्षम बनाने पर ध्यान देने के साथ 2018 से अल्पकालिक कार्यक्रमों की पेशकश शुरू की है। विश्वविद्यालय ने विविधीकरण और सामुदायिक सहभागिता के इरादे से इन कार्यक्रमों की पेशकश शुरू की है। ये कार्यक्रम उन प्रयासों का हिस्सा हैं जो एनयू ने आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों के साथ जुड़ने के उद्देश्य से शुरू किए हैं।

प्रारंभ में संस्कृत, अंग्रेजी और कोरियाई में प्रवीणता प्रमाणपत्र और डिप्लोमा की पेशकश की गई। धीरे-धीरे, पाली, योग, रिमोट सेंसिंग और भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) कार्यक्रमों को प्रस्तावित कार्यक्रमों की सूची में जोड़ा गया। इसके अलावा ज्ञान के उभरते क्षेत्रों में नए लघु पाठ्यक्रम जैसे कि नालंदा विरासत; बंगाल की खाड़ी: एक परिचय; नवाचार एवं नेतृत्व; चेतना अध्ययन: आधुनिक विज्ञान और प्राचीन भारतीय ज्ञान का परिप्रेक्ष्य आदि की पेशकश की जा रही है।

अध्ययन विद्यालय

बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म स्कूल

बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म स्कूल 2016-17 से काम कर रहा है और अकादमिक और तार्किक रूप से बढ़ रहा है। यह दो मास्टर्स प्रोग्राम प्रदान करता है, अर्थात् - बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्मों में एमए और हिंदू अध्ययन (सनातन) में एमए। इन कार्यक्रमों में एक समग्र पाठ्यक्रम शामिल है जिसमें हिंदू और बौद्ध परंपराओं का इतिहास, भारत की विभिन्न दार्शनिक प्रणालियों का पाठ-आधारित अध्ययन और धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन शामिल है। स्कूल पाली, संस्कृत और तिब्बती जैसी शास्त्रीय भाषाओं में भी अलग से प्रशिक्षण प्रदान करता है। भाषा घटक पर अपने मजबूत जोर के साथ, मास्टर कार्यक्रम अकादमिक विश्वसनीयता के उच्च मानकों के साथ एक योग्य स्नातकोत्तर अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने के लिए अभिन्न कौशल विकसित करने के लिए विभिन्न भाषाओं और अन्य धार्मिक ग्रंथों में लिखे गए प्राथमिक हिंदू और बौद्ध ग्रंथों को पढ़ने की सुविधा प्रदान करते हैं। छात्रों को प्रदान किए जाने वाले कौशल साहित्यिक और दार्शनिक ग्रंथों के गहन अध्ययन से लेकर पुरातात्विक प्रशिक्षण तक विस्तारित हैं।

एसबीएसपीसीआर के मास्टर कार्यक्रम छात्रों को सहयोगात्मक अनुसंधान के लिए प्रेरित करते हैं और उन्हें कैफेटेरिया मॉडल में अंतःविषय और ट्रांस-अनुशासनात्मक गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला में संलग्न करते हैं ताकि इस कार्यक्रम के स्नातक क्षेत्रीय अध्ययन, क्षेत्रीय अध्ययन, धार्मिक अध्ययन में रोजगार के लिए पात्र हो सकें। , और योग अध्ययन, ऐसे संगठन जो अंतरसांस्कृतिक और बहुसांस्कृतिक मुद्दों पर काम करते हैं। धार्मिक अध्ययन, योग और दर्शनशास्त्र में प्रशिक्षण हस्तांतरणीय अंतःविषय कौशल प्रदान करता है जो स्नातकों को पुरालेखपाल/पुस्तकालयाध्यक्ष, तंत्र और योग पर टिप्पणीकारों के रूप में पेशेवर रास्ते खोलने के अलावा इंडोलॉजी, भाषाविज्ञान, भाषाविज्ञान और दर्शनशास्त्र जैसे विभिन्न क्षेत्रों में करियर बनाने में सक्षम बनाता है। शांति कार्यकर्ता, योग प्रशिक्षक, सांस्कृतिक प्रशासक, कला क्यूरेटर इत्यादि। कार्यक्रम इंडोलॉजिकल विचारों और मूल्यों के अध्ययन और अन्य दार्शनिक और धार्मिक परंपराओं के संबंध में उनके ऐतिहासिक विकास पर विशेष जोर देता है।

तुलनात्मक और आलोचनात्मक सोच के लिए पाठ्यक्रम का कैफेटेरिया मॉडल

स्कूल पाठ्यक्रम के कैफेटेरिया मॉडल का पालन करता है, जो छात्रों को एसबीएस और विश्वविद्यालय के अन्य स्कूलों से विविध विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। हिंदू और बौद्ध परंपराओं के विकास के व्यापक सामाजिक-ऐतिहासिक-सांस्कृतिक-धार्मिक संदर्भों की जांच एक अभिनव और अंतर-

विषय पाठ्यक्रम के माध्यम से की जाती है। स्कूल आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देता है और भारत और एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में बौद्ध धर्म और हिंदू परंपराओं के व्यापक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों की खोज करता है।

<u>अध्ययन के फोकस क्षेत्र:</u>

- बौद्ध धर्म और हिंदू आध्यात्मिक परंपराओं, ग्रंथों और ध्यान प्रथाओं के लेआउट की गतिशीलता;
- प्राथमिक ग्रंथों, शिलालेखों और हिंदू और बौद्ध प्रतिमा विज्ञान, कला और अन्य कलाकृतियों का अध्ययन;
- बौद्ध, जैन और हिंदू परंपराओं और उनकी क्षेत्रीय और सांस्कृतिक संदर्भों के साथ उनकी विभिन्न शाखाओं पर जोर देने के साथ एशिया की विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं की तुलना और उनके बीच बातचीत;
- हिंदू और बौद्ध परंपराओं से संबंधित पूरे एशिया में प्रमुख स्थलों का पुरातत्व;
- बौद्ध धर्म और हिंदू परंपराओं की आधुनिक अभिव्यक्तियाँ और उनकी समकालीन प्रासंगिकता।

अनुसंधान पहल

स्कूल व्यक्तिगत और सहयोगात्मक अनुसंधान, बौद्ध और हिंदू परंपराओं के धार्मिक साहित्य के लिए अंतःविषय दृष्टिकोण और अन्य समीपस्थ दार्शनिक और सांस्कृतिक परंपराओं के संबंध में धार्मिक विचारों और मूल्यों के अध्ययन पर विशेष जोर देता है।

संकाय:

1	प्रोफेसर गोदाबरीश मिश्रा	डीन और प्रोफेसर
2	डॉ. सेराफिया हेटमैन	सह - प्राध्यापक
3	डॉ प्रांशु समदर्शी	सहायक प्रोफेसर
4	डॉ कुमुदा प्रसाद आचार्य	सहायक प्रोफेसर
5	डॉ. वेन. ब्रेंडा हुआंग जुआन ली	सहायक प्रोफेसर
6	वेन. डॉ. पूजा डबराल	सहायक प्रोफेसर
7	डॉ. राजेश्वर मुखर्जी	शिक्षण साथी
8	गेशे लुंगटोक शेराप	शिक्षण सहयोगी

पाठ्यक्रम:

स्कूल बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र और तुलनात्मक धर्म और हिंदू अध्ययन (सनातन) में मास्टर कार्यक्रम प्रदान करता है। वैश्विक पीएच.डी. कार्यक्रम बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म में पेश किया जाता है। पाठ्यक्रमों को मुख्य पाठ्यक्रम, वैकल्पिक पाठ्यक्रम और भाषा पाठ्यक्रम में विभाजित किया गया है।

बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र और तुलनात्मक धर्म में स्नातकोत्तर

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर - I (फाउंडेशनल पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

4 मुख्य पाठ्यक्रम: (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

• भारतीय दार्शनिक प्रणालियों का परिचय

• बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांत: ऐतिहासिक विकास और दार्शनिक परंपराएँ

• बौद्ध आचार

• बौद्ध धर्म के स्कूल: वैचारिक नींव और विशिष्ट सिद्धांत

1 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

• भाषा: संस्कृत/पाली/तिब्बती (कोई भी भाषा)

• 1 सेमिनार (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - II (ब्रिज पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

3 मुख्य पाठ्यक्रम: (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

• महायान बौद्ध धर्म: ग्रंथ और परंपराएँ

• बौद्ध मनोविज्ञान

• सांख्य, योग, वेदांत और तंत्र: एक तुलनात्मक अध्ययन

2 वैकल्पिक पाठ्यक्रम: (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

• भाषा: संस्कृत/पाली/तिब्बती

• पारलौकिक बुद्धि: बोधिचर्यवतार से चयन

• धार्मिक ग्रंथों का पाठ: वैष्णव, शैव और बौद्ध ग्रंथों से चयन

• 1 सेमिनार (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - III (उन्नत पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

2 मुख्य पाठ्यक्रम: (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

• बौद्ध तर्क और ज्ञान मीमांसा

• बौद्ध कला और वास्तुकला: शैक्षिक संबंध और सांस्कृतिक एकीकरण

3 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

• भाषा: संस्कृत/पाली/तिब्बती

• प्रारंभिक बौद्ध धर्म की चिंतनशील परंपराएँ: महा सतीपत्थन सुत्त में माइंडफुलनेस मेडिटेशन

• बौद्ध परिप्रेक्ष्य में शांति और सद्भाव

• मन का बौद्ध दर्शन: अभिधर्म और विज्ञानवाद परंपराएँ

• संवाद और द्वंद्वात्मकता: बौद्ध और गैर-बौद्ध ग्रंथ

• 1 सेमिनार (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - IV (विशेष पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

1 मुख्य पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट)

• बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धांत: मध्यमिका परंपराएँ

निबंध (9 क्रेडिट) 1 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट)

• संस्कृत भाषा

• पाली भाषा

• तिब्बती भाषा

• बौद्ध देवता: पाठ और अभ्यास

1 सेमिनार (1 क्रेडिट)

1 निबंध (9 क्रेडिट)

हिंदू अध्ययन में परास्नातक (सनातन)

सेमेस्टर - I (फाउंडेशनल पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

4 मुख्य पाठ्यक्रम: (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

मुख्य पाठ्यक्रम:

1. वेदों का परिचय: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद
2. प्रमुख एवं लघु उपनिषदों का परिचय
3. इतिहास का परिचय: रामायण और महाभारत
4. पुराण ग्रंथों का परिचय: विष्णु पुराण, अग्नि पुराण और भागवत-पुराण

1 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (प्रत्येक 3 क्रेडिट) (छात्र निम्नलिखित में से एक चुन सकते हैं

1. संस्कृत भाषा-1 (अनिवार्य)

2. हिंदू दर्शन में नैतिकता: पुरुषार्थ, वर्ण और आश्रम

3. भारतीय दर्शन के सिद्धांत: हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म

4. एसएचएस/एसएलएलएच/एसएमएस/एसईईएस (कैफेटेरिया मॉडल में अन्य स्कूलों से पाठ्यक्रम)

5. क्रिटिकल थिंकिंग (अतिरिक्त क्रेडिट कोर्स)

सेमिनार-I (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - II (ब्रिज पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

3 मुख्य पाठ्यक्रम: (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

1. हिंदू दर्शन के मूल सिद्धांत: छह दर्शन सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत

2. भगवद्गीता: धर्म की अवधारणा, ज्ञान, भक्ति का मार्ग और स्थितप्रज्ञ का विचार

3. वाल्मीकी रामायण: पाठ्य एवं विषयगत अध्ययन

2 वैकल्पिक पाठ्यक्रम: (प्रत्येक 3 क्रेडिट) (छात्र निम्नलिखित में से दो चुन सकते हैं)

1. संस्कृत भाषा में महारत हासिल करना (स्तर 2)

2. पतंजलि का योगसूत्र: सिद्धांत और व्यवहार

3. भरत के नाट्यशास्त्र का अध्ययन: प्रदर्शन कला की भारतीय परंपरा

1 सेमिनार (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - III (उन्नत पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

2 मुख्य पाठ्यक्रम: (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

मुख्य पाठ्यक्रम

1. प्रमुख उपनिषदों के सिद्धांत: छांदोग्य उपनिषद और बृहदारण्यक उपनिषद

2. भारतीय ज्ञान परंपरा के स्रोत: सूत्र, वर्तिका और भाष्य (टिप्पणियाँ)

3 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (प्रत्येक में 3 क्रेडिट) (छात्र निम्नलिखित में से तीन चुन सकते हैं

1. संस्कृत भाषा में महारत हासिल करना (स्तर 2)

2. वेदांत का अध्ययन: शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य

3. पंचतंत्र का अध्ययन: जीवन पाठ के कैप्सूल

4. भारतीय सौंदर्यशास्त्र- रस सिद्धांत

5. भारतीय भाषा दर्शन: पतंजलि के महाभाष्य और भर्तृहरि के वाक्यपदीय का परिचय

6. हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और खगोल विज्ञान

7. एसएचएस/एसएलएलएच/एसएमएस/एसईईएस (कैफेटेरिया मॉडल में अन्य स्कूलों से पाठ्यक्रम)

8. क्रिटिकल थिंकिंग (अतिरिक्त क्रेडिट कोर्स)

1 सेमिनार (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - IV (विशेष पाठ्यक्रम): 16 क्रेडिट

1 मुख्य पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट)

कोर कोर्स

धर्मशास्त्र का परिचय: गौतम, मनु और याज्ञवल्क्य से चयनित अंश

वैकल्पिक पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट) (छात्र निम्नलिखित में से एक चुन सकते हैं)

1. प्राचीन भारत के प्रमुख विचारकों का चयन करें: ब्रह्मगुप्त, आर्यभट्ट, वराहमिहिर भास्कर, बाणभट्ट और अभिनवगुप्त

2. नागार्जुन और शून्यता की अवधारणा

3. कौटिल्य का अर्थशास्त्र

4. संस्कृत भाषा- 4

5. एसएचएस/एसएलएलएच/एसएमएस/एसईईएस (कैफेटेरिया मॉडल में अन्य स्कूलों से पाठ्यक्रम)

1 सेमिनार (1 क्रेडिट)

1 निबंध (9 क्रेडिट)

<u>संकाय उपलब्धियाँ</u>

अनुसंधान और प्रकाशन

पुस्तकें:

डॉ. गोदाबरीशा मिश्रा - प्रोफेसर एवं डीन

जर्नल संपादन

जर्नल ऑफ होलिस्टिक साइंस रिसर्च सेंटर, सूरत के संपादक, खंड IX, जुलाई 2024, शीर्षक: समग्र दृष्टि और अभिन्न जीवन, (एचएसआरसी, सूरत में आयोजित एशियाई दर्शन सम्मेलन पर विशेष अंक)

डॉ. कुमुदा प्रसाद आचार्य - सहायक प्रोफेसर

1. आचार्य, कुमुद प्रसाद, द काव्यवनिता ऑफ कृष्णवधूता: ए स्टडी, शिवालिक प्रकाशन, 4648/21, जीएफ, अंसारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002, 2024। आईएसबीएन: 978-81-961003-0-8।

2. आचार्य, कुमुद प्रसाद, स्वप्नप्रिया (संस्कृत कविताओं का संकलन), शिवालिक प्रकाशन, 4648/21, जीएफ, अंसारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002, आईएसबीएन: 978-81-961004-3-8।

डॉ. राजेश्वर मुखर्जी - टीचिंग फेलो

मुखर्जी, आर. (2024), अष्टांग योगनिर्णय (सं.), कैवल्यधाम प्रकाशन, लोनावला, पुणे, महाराष्ट्र

किताबों में अध्याय

डॉ. गोदाबरीशा मिश्रा - प्रोफेसर एवं डीन

1. धर्म, धर्म और नैतिक सापेक्षवाद, परोपकारी दायित्व और भारतीय धर्म दर्शन में प्रेरित समन्वय, भारतीय धर्म दर्शन के परिप्रेक्ष्य, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, दिसंबर 2023, पृष्ठ 97-120।

2. "शंकर की ओन्टोलॉजिकल व्याख्या और गैर-द्वैतवाद का प्रश्न," एक विशेष खंड में जिसका शीर्षक है: "ईश्वर या दिव्य? अद्वैतवाद और आस्तिकता से परे धार्मिक पारगमन, व्यक्तित्व और अवैयक्तिकता के बीच," बर्नार्ड नित्शे, मार्कस श्मुकर द्वारा संपादित। वाल्टर डी ग्रेटर, बर्लिन, बोस्टन, 2023, पीपी 345-367।

डॉ. प्रांशु समदर्शी - सहायक प्रोफेसर

1. पुस्तक अध्याय: भारतीय संगीत की दार्शनिक प्रकृति' योजना क्लासिक्स में - कला, संस्कृति और विरासत, शुचिता चतुर्वेदी द्वारा संपादित, प्रकाशन विभाग, सरकार द्वारा प्रकाशित। भारत की, 1957 से मासिक पत्रिका योजना में प्रकाशित चयनित कार्यों के एक भाग के रूप में। आईएसबीएन: 978-93-5409-964-9।

2. पुस्तक की प्रस्तावना: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित रिसरेक्टिंग डर्बल इंडियन आर्ट फॉर्म्स नामक मोनोग्राफ के लिए। भारत का. आईएसबीएन: 9789354097812.

<u>प्रकाशित पत्र</u>

डॉ. गोदाबरीशा मिश्रा - प्रोफेसर एवं डीन

1. "अनुभव की आलोचना के रूप में दर्शन - भारतीय परिप्रेक्ष्य" जर्नल ऑफ होलिस्टिक साइंस रिसर्च सेंटर, सूरत में, खंड IX, जुलाई 2024, शीर्षक: समग्र दृष्टि और अभिन्न जीवन, (एचएसआरसी में आयोजित एशियाई दर्शन सम्मेलन पर विशेष अंक, सूरत) पृ. 225-237.

डॉ. प्रांशु समदर्शी - सहायक प्रोफेसर

1. जर्नल आलेख: "आधुनिक तकनीकों और संदर्भों का उपयोग करके लोक कला की पुनर्कल्पना", योजना, खंड में। 68, संख्या 3, प्रकाशन विभाग, सरकार द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका में 12 विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवादित और प्रकाशित। भारत का, 17-20. आईएसएसएन 0971-8400।

2. सम्मेलन की कार्यवाही: "बौद्ध परिप्रेक्ष्य से क्वांटम डिकोहेरेंस पर कुछ विचार।" क्वांटम भौतिकी में, आधुनिक विज्ञान और बौद्ध दर्शन में मस्तिष्क कार्य। नई दिल्ली: तिब्बत हाउस, 24-36। आईएसएसएन 09788195336173.

डॉ. वेन. ब्रेंडा हुआंग जुआन ली - सहायक प्रोफेसर

1. जर्नल आलेख: "निकाय में शून्यता की अवधारणा (सुन्नता) में ज्ञान (पन्ना) का प्रगतिशील विकास।" महाबोधि: अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध जर्नल। वॉल्यूम. 133, मई 2024, आईएसएसएन: 00250406, पी.पी 41-47।

वेन. डॉ. पूजा डबराल - सहायक प्रोफेसर

1. पेपर प्रकाशित "महाकारुण और प्रतीत्यसमुत्पाद: सार्वभौमिक शांति और सद्भाव के लिए बुद्ध की विरासत" में: प्रज्ञा (द विजडम), ए जर्नल ऑफ बोधगया टेम्पल मैनेजमेंट कमेटी, वॉल्यूम। XXII नंबर 1, बिहार: बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति, 2024. ISSN-2250-1983।
2. कॉन्फ्रेंस प्रोसीडिंग्स 'क्वांटम फिजिक्स, ब्रेन फंक्शन इन मॉडर्न साइंस एंड बुद्धिस्ट एंड फिलॉसफी', नई दिल्ली: तिब्बत हाउस, आईएसबीएन: 978-81-953361-7-3, नवंबर 2023 में प्रकाशित पेपर 'बौद्ध दर्शन में पदार्थ और रूप'.

डॉ. राजेश्वर मुखर्जी - टीचिंग फेलो

1. घोष, के., और मुखर्जी, आर. (2024)। अवस्थत्रय: गहरी अंतर्दृष्टि। वैज्ञानिक स्वभाव, 15(02), 2342-2348। https://doi.org/10.58414/SCIENTIFICTEMPER.2024.15.2.49 (यूजीसी केयर एंड वेब ऑफ साइंस)
2. मुखर्जी, आर., और दीक्षित, यू.एस. (2023)। भारतीय ज्ञान प्रणाली के परिप्रेक्ष्य से स्टोकेस्टिक इलेक्ट्रोडायनामिक्स पर आधारित ब्रह्मांड विज्ञान को समझना। वैज्ञानिक स्वभाव, 14(03), 641-648। https://doi.org/10.58414/SCIENTIFICTEMPER.2023.14.3.12 (यूजीसी केयर एंड वेब ऑफ साइंस)

सम्मेलन/सेमिनार/आमंत्रित वार्ता/वक्ता/संसाधन व्यक्ति में प्रस्तुतियाँ

डॉ. गोदाबरीशा मिश्रा - प्रोफेसर एवं डीन

- "महिमा धर्म और दर्शन: रूढ़िवादी से परे परोपकारिता" पर आईसीपीआर राष्ट्रीय संगोष्ठी ने "धार्मिकता की परिभाषित सीमाओं को पार करना (कट्टरपंथ, आक्रोश और मान्यता: भीम भोई, नारायण गुरु और अयोथिदास पंडितार) शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया। आईआईसी नई दिल्ली, 23-24 मई, 2024 तक।

- 20-22 मार्च, 2024 को आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुंटूर, आंध्र प्रदेश में मानव नैतिक अनुभव के साथ मन और संज्ञानात्मक विज्ञान के बौद्ध दर्शन पर वैश्विक संगोष्ठी में समापन व्याख्यान दिया, जिसका शीर्षक था, "वैज्ञानिक मिथ्या और अवैज्ञानिक सत्य के बीच: वसुबंधु का"। बौद्ध धर्म में आत्म और चेतना की खोज ”।
- 23 फरवरी, 2024 को आईकेएस डिवीजन, शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित संकाय विकास कार्यक्रम पर आईआईटी, भुवनेश्वर में तीन व्याख्यान दिए। सरकार. व्याख्यान 1 पर भारत का: वैदिक परंपराओं का सर्वेक्षण, 2. वेदांत परंपराएँ: एक और अनेक का प्रश्न, 3. भारतीय दर्शन: सिद्धांत और व्यवहार, सामग्री और समझने की विधि।
- न्याय, मीमांसा, भर्तृहरि और डब्ल्यू.ओ.वी. में शब्दार्थ की समस्याओं पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में "संचार, अर्थ पहचान और वैदिक अचूकता (पूर्व और उत्तर-मीमांसा में भाषा-समझ और अर्थ-बोध)" शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया। 12-14 फरवरी, 2024 को बी.एच.यू., वाराणसी में क्वीन्स फिलोसॉफी ऑफ लैंग्वेज।
- 27-28 जनवरी, 2024 के दौरान श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री विहार पुरी में विश्व उड़िया भाषा सम्मिलानी (उड़िया भाषा विश्व सम्मेलन) में सम्मानित अतिथि के रूप में व्याख्यान दिया।
- प्रोफेसर एके चटर्जी एंडोमेंट व्याख्यान दिया गया "तत्वमीमांसा, आदर्शवाद और परे: एके चटर्जी को अतीत और वर्तमान के बीच एक दार्शनिक लिंक के रूप में याद रखना" भारतीय दार्शनिक कांग्रेस, दर्शनशास्त्र विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, वाणी विहार भुवनेश्वर द्वारा 20 दिसंबर को आयोजित 96वां और 97वां सत्र- 23, 2024.
- ओटानी विश्वविद्यालय, जापान में विश्व की धार्मिक परंपराओं में ज्ञानोदय, बुद्धि और परिवर्तन पर एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में "स्व-समझ, निस्वार्थ कार्य और परिवर्तन (भगवद्गीता में योग: हिंदू धर्म में एक मुक्त व्यक्ति का प्रदर्शन)" शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया। 14-16 दिसंबर, 2023.
- 3-4 नवंबर, 2023 को "बौद्ध धर्म और विश्व शांति पर सामुदायिक सहभागिता" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। मेरी प्रस्तुति का विषय - "शांति के निवास का निर्माण - बौद्ध धर्म में ब्रह्मविहार का विश्लेषण।"
- 25 अगस्त, 2023 को सेंट जोसेफ कॉलेज (स्वायत्त), जखामा, नागालैंड में "भारतीय दर्शन के अनिवार्य तत्व" विषय पर मुख्य भाषण दिया। इसके अतिरिक्त, "भगवद-गीता: निष्कामकर्म और सत्य और अहिंसा की अवधारणा" विषय पर एक संसाधन व्यक्ति के रूप में कार्य किया।

डॉ. प्रांशु समदर्शी - सहायक प्रोफेसर

1. आमंत्रित व्याख्यान: 2 अप्रैल 2024 को आयुर्ज्ञान न्यास द्वारा मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में आयोजित "एनईपी, 2020 के तहत मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के लिए दृष्टिकोण" पर दो दिवसीय सम्मेलन में एक व्याख्यान दिया।

2. आमंत्रित व्याख्यान: बोधगया ग्लोबल डायलॉग्स 2024 के छठे संस्करण में '11वीं शताब्दी के इंडोनेशियाई द्वीपसमूह में मगध बौद्ध संस्कृति के शैक्षिक और लोकप्रिय पहलुओं का पता लगाना: सुमात्रा और जावा से हालिया पाठ्य और पुरालेखीय निष्कर्षों से कुछ अंतर्दृष्टि' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया गया।, 17 मार्च, नालन्दा विश्वविद्यालय, राजगीर।

3. आमंत्रित व्याख्यान: 6 फरवरी, 2024 को पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, आयुध निर्माणी, राजगीर द्वारा आयोजित '21वीं सदी में मीडिया साक्षरता का महत्व' पर एक व्याख्यान दिया।

4. आमंत्रित व्याख्यान: 26 सितंबर, 2023 को इतिहास विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय द्वारा तांत्रिक धर्म पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'बौद्ध तंत्र के पद्धतिगत और ऐतिहासिक मुद्दे: औपनिवेशिक मुठभेड़ों और भारतीय विद्वानों पर इसके प्रभाव की जांच' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

5. रिसोर्स पर्सन: 23 अगस्त से 25 अगस्त, 2023 तक मेजर बॉब खाथिंग इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन स्टडीज, अरुणाचल प्रदेश द्वारा भारतीय सेना के अधिकारियों के लिए तिब्बतोलॉजी पाठ्यक्रम के लिए 4 व्याख्यानों की एक श्रृंखला (ऑनलाइन) का आयोजन किया।

डॉ. कुमुदा प्रसाद आचार्य - सहायक प्रोफेसर

1. 10 दिसंबर 2023 को पौरणमासी पाठागरा, अभिराम सारस्वत परिषद, कटक, ओडिशा द्वारा आयोजित 'श्री अभिराम परमहंस के कार्यों में मानव मूल्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'अभिराम की कोइलिशीक्षा में मानव मूल्य' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

2. 28-29 अगस्त 2023 को संस्कृत विभाग, एफ.एम. द्वारा आयोजित 'भारतीय परंपरा और ज्ञान संचरण के आयाम' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'एक अप्रकाशित पाठ का विषयगत विश्लेषण-सीतारामचरित' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय, बालासोर, ओडिशा।

डॉ. वेन. ब्रेंडा हुआंग जुआन ली - सहायक प्रोफेसर

1. 28/10/2023 को अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ और गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस - शारदा पूणिमा समारोह में "चित्त विट्ठि (विचार प्रक्रिया) की जैविक प्रक्रिया" शीर्षक वाला एक पेपर प्रस्तुत किया।

2. विश्व साहित्य की संकल्पना में इंडिक और दक्षिण पूर्व एशियाई परिप्रेक्ष्य पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में, भाषा और साहित्य/मानविकी स्कूल, नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक पेपर शीर्षक "बौद्ध साहित्य में चित्रित बुद्धि और करुणा और एशियाई समाजों पर उनका प्रभाव" प्रस्तुत किया।, 17 - 18/11/2023.

3. होमी भाभा कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत, 21-23/03/2024 द्वारा आयोजित "माइंडफुलनेस कम्पैशनेट इंटरपर्सनल केयर फॉर पैलिएटिव पेशेंट्स" पर आमंत्रित व्याख्यान।

वेन. डॉ. पूजा डबराल - सहायक प्रोफेसर

1. बोधगया ग्लोबल डायलॉग्स 2024 के छठे संस्करण, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर, 17 मार्च, 2024 को "महाकारुण और प्रतीत्यसमुत्पाद: सार्वभौमिक शांति और सद्भाव के लिए बुद्ध की विरासत" शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

2. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, ताइवान, 8 मार्च, 2024 के अवसर पर पुरस्कार समारोह, 'बौद्ध धर्म में अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्ट महिलाएँ, 2024' के दौरान 'शून्यता का बौद्ध दृष्टिकोण' पर चर्चा का नेतृत्व किया।

3. पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, आयुध निर्माणी राजगीर, हंसराजपुर, बिहार 803121, भारत, 07 फरवरी, 2024 द्वारा आयोजित 'करुणा और बुद्धि में निहित सामाजिक कौशल को बढ़ावा देना' पर व्याख्यान दिया।

4. स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज एंड लिटरेचर/ह्यूमैनिटीज, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर द्वारा आयोजित विश्व साहित्य की संकल्पना में इंडिक और दक्षिण पूर्व एशियाई परिप्रेक्ष्य पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में 'द हार्ट सूत्र एंड इट्स कंट्रीब्यूशन टू वर्ल्ड लिटरेचर' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया। 17-18 नवंबर, 2023

5. तिब्बत हाउस, गुलमोहर हॉल, भारत द्वारा आयोजित "समय, सूक्ष्म और स्थूल पदार्थ और सत्तामीमांसा वास्तविकता, क्वांटम भौतिकी और बौद्ध दर्शन", श्रृंखला - VII सम्मेलन में 'बौद्ध दर्शन के परिप्रेक्ष्य से पदार्थ और कण' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया। पर्यावास केंद्र, नई दिल्ली, भारत। नवम्बर 25. 2023.

6. नव नालंदा महाविहार (डीम्ड यूनिवर्सिटी), बिहार, भारत द्वारा आयोजित 'बौद्ध धर्म और सनातन धर्म' पर व्याख्यान, ऑनलाइन मोड, 14 सितंबर 2023

डॉ. राजेश्वर मुखर्जी - टीचिंग फेलो

1. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में आमंत्रित व्याख्यान, चेतना के साथ पदार्थ को एकीकृत करने की खोज: सूचना के संदर्भ में 08 जून (शनिवार), 2024 को एक राष्ट्रीय ग्रीष्मकालीन स्कूल में आयोजित किया गया।

2. 23-25 दिसंबर 2023 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में भारत के उपराष्ट्रपति और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री की उपस्थिति में "वेद विज्ञान संस्कृति महाकुंभ" पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आमंत्रित व्याख्यान।

3. अनुसंधान पद्धति पर आमंत्रित व्याख्यान: प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियों के परिप्रेक्ष्य में पुनरीक्षण 'अनुसंधान पद्धति पर राष्ट्रीय कार्यशाला (एनडब्ल्यूआरएम-2023)। 16 सितंबर 2023 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में निर्धारित।

4. रामकृष्ण मिशन शिक्षण संस्थान (बी.एड. कॉलेज), कलकत्ता विश्वविद्यालय, बेलूर मठ, कोलकाता में योग पर आमंत्रित व्याख्यान-श्रृंखला सितंबर-अक्टूबर 2023\

5. 12 जनवरी 2024 को स्वामी विवेकानन्द की जयंती के अवसर पर नालन्दा विश्वविद्यालय में विशेष व्याख्यान।

6. 12 जनवरी, 2024 को स्वामी विवेकानन्द की जयंती के अवसर पर नालंदा महाविहार (मानित विश्वविद्यालय), नालंदा में आमंत्रित व्याख्यान।

7. 27.03.2024 को भारत विद्या चर्चा केंद्र, बर्दवान द्वारा आयोजित 22वें वार्षिक सम्मेलन 2024 में डॉ. राजेश्वर मुखर्जी का पूर्ण भाषण विषय: भारतीय ज्ञान प्रणाली और भारत में ज्ञान का प्रसार: पूर्व-पश्चिम संगम

पुरस्कार/शैक्षणिक मान्यता/अनुदान

डॉ. गोदाबरीशा मिश्रा - प्रोफेसर एवं डीन

भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से रु. का अनुदान प्राप्त हुआ। एसबीएसपीसीआर, नालंदा विश्वविद्यालय में "सभ्यतागत स्व की पुनः खोज: भारतीय संस्कृति, गिद्ध और इतिहास पर धर्मपाल की अनिवार्यता" विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन के लिए 2,00,000 (दो लाख)।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से रु. का अनुदान प्राप्त हुआ। प्रोफेसर राधा वल्लभ त्रिपाठी द्वारा आईसीपीआर विशिष्ट व्याख्यान के आयोजन के लिए 35,000/-

वेन. डॉ. पूजा डबराल - सहायक प्रोफेसर

8 मार्च, 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर, मियाओ गुआंग ज़ेन मंदिर, ताइवान में अंतर्राष्ट्रीय महिला ध्यान केंद्र फाउंडेशन द्वारा आयोजित, 'बौद्ध धर्म में अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्ट महिला, 2024' पुरस्कार प्राप्त किया।

परियोजनाएं (चालू)

डॉ. गोदाबरीशा मिश्रा - प्रोफेसर एवं डीन

"भारतीय दर्शन का विश्वकोश" नामक एक अंतर्राष्ट्रीय परियोजना पर काम करना, (पहले कार्ल एच. पॉटर द्वारा संपादित) अद्वैत वेदांत पर दो खंड।

अन्य

डॉ. गोदाबरीशा मिश्रा - प्रोफेसर एवं डीन

1. सिंधु केंद्रीय विश्वविद्यालय, लेह, सिस्टर निबेदिता विश्वविद्यालय, कोलकाता और इसी तरह के कई विश्वविद्यालयों के अध्ययन बोर्ड में। दिल्ली, हैदराबाद जैसे कई विश्वविद्यालयों और आईआईटी में चयन समितियों में विषय विशेषज्ञ और आईसीपीआर जैसे नीति निर्माण निकायों की कई बैठकों में भाग लिया।
2.नालंदा विश्वविद्यालय और अन्य विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों में कई पाठ्यक्रमों के लिए मॉड्यूल तैयार किए।

डॉ. प्रांशु समदर्शी - सहायक प्रोफेसर

1. पाठ्यक्रम मॉड्यूल अध्याय: यूजीसी और शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित स्वयं मंच पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के भारतीय बौद्ध धर्म के इतिहास पर एमओओसी के लिए "तंत्र की उत्पत्ति और विकास"। (एमओओसी मॉड्यूल को यूजीसी द्वारा सूचीबद्ध रेफरीड पत्रिकाओं में प्रकाशित पत्रों के बराबर माना जाता है।)
2. इंटरनेशनल यूनियन ऑफ एंथ्रोपोलॉजिकल एंड एथ्नोलॉजिकल साइंसेज (आईयूएईएस) में "समुदाय के बारे में बुद्ध के दृष्टिकोण" पर पूर्ण सत्र के लिए सत्र समन्वयक, 3 नवंबर 2023 को "बौद्ध धर्म और विश्व शांति में सामुदायिक जुड़ाव" विषय पर कांग्रेस के बाद का कार्यक्रम।
3. टाइम्स ऑफ इंडिया में समाचार पत्र का लेख; न्यू नालंदा: उपन्यास पथों का चार्टिंग, 1 अक्टूबर 2023।

डॉ. वेन. ब्रेंडा हुआंग जुआन ली - सहायक प्रोफेसर

1. संपादकीय बोर्ड के सदस्य, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नालंदा बौद्ध धर्म, फो ड्यू ट्रान द्वारा लिखित "अवलोकितेश्वर बोधिसत्व का सारांश अध्ययन" का संपादन, आईएसबीएन 978-81-969456-64।
2. वियन ट्रान न्हान टोंग के सलाहकार, हनोई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, पाठ्यक्रम मॉड्यूल: "बौद्ध धर्म में भावनात्मक प्रबंधन"

वेन. डॉ. पूजा डबराल - सहायक प्रोफेसर

1. तिब्बत हाउस, परमपावन दलाई लामा के सांस्कृतिक केंद्र, नई दिल्ली, मई 2024 में 'हिंदी में बौद्ध दर्शन पर नालंदा डिप्लोमा पाठ्यक्रम' के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्य सामग्री का संपादन और अनुवाद किया गया।

गेशे लुंगटोक शेराप - शिक्षण सहयोगी

1. महान तिब्बती व्याकरणविद् यांगचेन ड्रुबपे दोर्जी द्वारा लिखित 'ལེགས་བཤད་ལྗོན་དབང་།', 'द एलोक्वेंट वर्ड्स ऑफ लिविंग ट्री' नामक पुस्तक का अनुवाद किया। इस पुस्तक को तिब्बती व्याकरण के कणों को सीखने का मुख्य स्रोत माना जाता है। (जनवरी, 2024 में अनुवादित)
2. 'शीर्षक वाली पुस्तक का अनुवाद किया। उत्तर उत्तर ' जो आज दक्षिण भारत में डेपुंग मठ के महानतम आध्यात्मिक गुरु और विद्वान में से एक, आचार्य गेशे पाल्डेन दक्पा द्वारा लिखित शून्यता के अर्थ की कल्पना करने के कठिन बिंदुओं का एक अनुभवात्मक पुनर्विश्लेषण है। (मार्च, 2024 में अनुवादित)
3. महान तिब्बती व्याकरणविद् थुमी सम्भोटा द्वारा लिखित 'སུམ་ཅུ་པ།', 'द थर्टी वर्सेज' नामक पुस्तक का अनुवाद किया। यह पुस्तक व्याकरण के उनके आठ ग्रंथों में से एक है, जिसे सीखने के कणों का मूल पाठ माना जाता है। तिब्बती व्याकरण में. (अप्रैल, 2024 में अनुवादित)

स्नातकोत्तर छात्रों (2021-23 बैच) के शोध प्रबंध:

1. असलिहान यायला। शांतरक्षित का मध्यकालंकार: एक प्रक्षिप्त समीक्षा। पर्यवेक्षक: प्रण्शु समदर्शी।
2. फाम थी थू थाओ। पटीच्च-समुप्पाद और चतु-अरिय-सच्च (बौद्ध धर्म में प्रतीत्य समुत्पाद और चार आर्य सत्यों का एक आलोचनात्मक अध्ययन)। पर्यवेक्षक: जी मिश्रा।
3. ले थी डुयेन। महायान बौद्ध धर्म में पारमिता (पूर्णता) का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। पर्यवेक्षक: गेशे थुप्तेन लोडेन।
4. एनगुएन थी ले हुआन। बौद्ध धर्म में मध्यमा-प्रतिपदा (मध्यम मार्ग) का केंद्रीय महत्व - एक विश्लेषण। पर्यवेक्षक: जी मिश्रा।
5. यीब यू। मध्यकालीन कंबोडिया में बौद्ध धर्म को प्रोत्साहित करने में जयवर्मन सप्तम की भूमिका। पर्यवेक्षक: एलोरा त्रिबेदी।
6. हो कुआन वोंग। पाली साहित्य में पेलिएटिव केयर के लिए आध्यात्मिक हस्तक्षेप। पर्यवेक्षक: ब्रेंडा ली।

7. सुलव चकमा। चकमा के बौद्ध वंश का अनुसरण: उत्पत्ति, इतिहास और संस्कृति का परीक्षण। पर्यवेक्षक: प्रण्शु समदर्शी।
8. डोक सिसापोन। कंबोडिया की शिक्षा प्रणाली पर थेरवाद बौद्ध धर्म का प्रभाव। पर्यवेक्षक: राजेश्वर मुखर्जी।
9. थुएर्न सोना। सम्मा वाचा: प्रभावी अंतरव्यक्तिगत संवाद। पर्यवेक्षक: ब्रेंडा ली।
10. रोन रिन। ब्रह्मविहार: सामाजिक कल्याण का मूल सिद्धांत। पर्यवेक्षक: ब्रेंडा ली।
11. सिना सईदी। वैदिक और अवस्तन परंपराओं में व्यवस्था और अराजकता: एक अवधारणात्मक विश्लेषण। पर्यवेक्षक: जी मिश्रा और कुमुद प्रसाद आचार्य।
12. एनगुएन वू होआंग। बौद्ध मनोविज्ञान के अनुसार अवसाद से उबरने के दृष्टिकोण और विधियाँ। पर्यवेक्षक: गेशे थुप्तेन लोडेन।
13. लाई थी ड्रुक गिआंग। थेरीगाथा - थेरी खेमा - व्याकरणीय व्याख्या और टिप्पणी। पर्यवेक्षक: ब्रेंडा ली।
14. हो थी बिच फुयांग। महासारोपम सूत्र में उच्चतर पथ और स्थायी मुक्ति की प्राप्ति: खुशी के स्तर। पर्यवेक्षक: प्रण्शु समदर्शी।
15. फाम थान होआंग। चंपा की प्राचीन कला में द्वारपाल परंपरा की विरासत और निरंतरता, न्हान सोन द्वारपालों के विशेष संदर्भ के साथ। पर्यवेक्षक: एलोरा त्रिबेदी।
16. वो थी थियेन होआ। कौशलपूर्ण साधनों (उपाय-कौशल्य) का सिद्धांत: प्रारंभिक बौद्ध धर्म से महायान काल तक (लोटस सूत्र के विशेष संदर्भ के साथ)। पर्यवेक्षक: प्रण्शु समदर्शी।
17. शानी रंजन नारायण। निर्वासन में दिव्य स्थान का स्मरण और निर्माण: द्रेपुंग लोसेलिंग मठ (14वीं शताब्दी तिब्बत) का मामला। पर्यवेक्षक: गेशे थुप्तेन लोडेन।
18. एनगुएन है येन। छह इंद्रियों की प्रगतिशील साधना का मार्ग। पर्यवेक्षक: ब्रेंडा ली।
19. त्रान थी जिया बू। सुत्तपिटक में चित्रित मानव भावनाएँ: भय और उसके उन्मूलन का अध्ययन। पर्यवेक्षक: कुमुद प्रसाद आचार्य।
20. त्रूंग थी तुइट सूंग। बौद्ध ग्रंथों में ध्यान की अवधारणा: सतीपठान और बुद्धावतंसक के विशेष संदर्भ के साथ। पर्यवेक्षक: राजेश्वर मुखर्जी।
21. फरदा समीता मोर्न। झानसुत्त: बौद्ध ध्यान का पाठ्य और विश्लेषणात्मक अध्ययन। पर्यवेक्षक: जी मिश्रा।
22. फाम थी किम त्रिन्ह। पर्यवेक्षक: कुमुद प्रसाद आचार्य।

23. जी.ए.के गीथ कुमारथुंगा। धम्म का यात्रा पथ: बौद्ध धर्म के समेकन और आदान-प्रदान के लिए अशोक का योगदान। पर्यवेक्षक: जी मिश्रा।
24. पृथ्विन के.पी। बौद्ध अनुष्ठानात्मक प्रदर्शन में ध्वनि प्रभाव: चर्या गीति और समकालीन इलेक्ट्रॉनिक संगीत के एकीकरण का अन्वेषण। पर्यवेक्षक: प्रण्शु समदर्शी।

स्नातकोत्तर छात्रों (2022-24 बैच) के शोध प्रबंध:

1. आंग को हते। बौद्ध धर्म में सम्यक आजीविका: पालि कैनन से मठवासी और गृहस्थ साधकों के लिए अंतर्दृष्टियाँ।
   पर्यवेक्षक: डॉ. प्रण्शु समदर्शी।
2. आंग क्याव सो। कर्म और इसका संचरण: पालि और संस्कृत अभिधर्म परंपराओं से अंतर्दृष्टियाँ।
   पर्यवेक्षक: डॉ. पूजा डबराल।
3. काओ बाच वान। महायान परंपरा में तथागतगर्भ और छह पारमिता: एक आलोचनात्मक अध्ययन।
   पर्यवेक्षक: डॉ. पूजा डबराल।
4. क्रिस्टोफर नोलवान। तारा की इक्कीस स्तुतियों में पारंपरिक बौद्ध दार्शनिक पहलू और उनका बौद्ध तंत्र को समझने पर प्रभाव।
   पर्यवेक्षक: डॉ. प्रण्शु समदर्शी और डॉ. पूजा डबराल।
5. लान थी बुई। मनो और शुभ मानसिक कारकों का बौद्ध दर्शन: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
   पर्यवेक्षक: प्रो. जी. मिश्रा और डॉ. पूजा डबराल।
6. नांग केइन होम। बौद्ध परंपरा में सती (माइंडफुलनेस): आनापानसति सुत्त की पाठ्य दृष्टि।
   पर्यवेक्षक: डॉ. प्रण्शु समदर्शी।
7. एनगुएन थी क्वी सिन्ह। प्राचीन भारत में श्वास की माइंडफुलनेस का अभ्यास।
   पर्यवेक्षक: डॉ. प्रण्शु समदर्शी।
8. शुभम शांति। आचार्य अतीश के बोधिपथप्रदीप का विश्लेषणात्मक अध्ययन: तिब्बत पर इसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव।
   पर्यवेक्षक: डॉ. पूजा डबराल।
9. त्रान थी हियू। बौद्ध धर्म के नैतिक आयामों की खोज: मिन्ह दांग क्वांग की 'छोन-ली' और प्रारंभिक बौद्ध ग्रंथों में अष्टांगिक मार्ग।
   पर्यवेक्षक: डॉ. प्रण्शु समदर्शी।

10. त्रान थी हंग। बोधिचित्त और बोधिसत्त्व आदर्श: सार्वभौमिक प्रेम और करुणा के लिए एक बौद्ध दृष्टिकोण।

    पर्यवेक्षक: डॉ. पूजा डबराल।

11. जेसिन पोंगसाय्यावोंग। क्षणिकता के बौद्ध दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

    पर्यवेक्षक: डॉ. पूजा डबराल।

12. नगो थी माई लिन्ह। साराणिय: बौद्ध दृष्टिकोण से परिवार में सामंजस्य बढ़ाने की विधि।

    पर्यवेक्षक: डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली।

13. लोक चाउ। मृत्यु पर चिंतन: भय से सामना करने तक।

    पर्यवेक्षक: डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली।

14. म्यो विन टुन। थेरवाद बौद्ध धर्म में बोधिसत्त्व: एक आलोचनात्मक अध्ययन (दस पारमिता)।

    पर्यवेक्षक: डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली।

15. सोफार सेंग अर फोन। निकाय में वेसंतर सुत्त में दान का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

    पर्यवेक्षक: डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली।

16. एनगुएन थी खीम। चार आहार के दृष्टिकोण से स्वास्थ्य और कल्याण।

    पर्यवेक्षक: गेशे लुंगटोक शेरप।

17. वू थी थुई लान। मानव प्रभाव और पर्यावरणीय सामंजस्य: एक बौद्ध दृष्टिकोण।

    पर्यवेक्षक: गेशे लुंगटोक शेरप।

18. ले ड्रंग टिन। महायान सूत्रों और योगाचार ग्रंथों में "आलय-विज्ञान" और "क्लिष्ट मन" की अवधारणाओं का विकास।

    पर्यवेक्षक: गेशे लुंगटोक शेरप।

19. हुइन्ह थी किम संग। गृहस्थ जीवन से ननरी तक: वियतनामी बौद्ध धर्म में एक नवदीक्षित नन के प्रशिक्षण की खोज।

    पर्यवेक्षक: गेशे लुंगटोक शेरप।

हिंदू अध्ययन (सनातन धर्म) में एम.ए.

स्नातकोत्तर शोध प्रबंध (2022-24 बैच):

1. एनगुएन थी क्वी सिन्ह।
   प्राचीन भारत में श्वास की माइंडफुलनेस का अभ्यास।
   पर्यवेक्षक: डॉ. प्रण्शु समदर्शी।
2. फाम थी ओआन कियू।
   प्राचीन भारतीय शिक्षाशास्त्र: पारंपरिक विधियाँ और आधुनिक प्रासंगिकता।
   पर्यवेक्षक: प्रो. गोदाबरिशा मिश्रा।
3. च. प्रज्वल रेड्डी।
   गर्भाधान से जातकर्म संस्कारों का विश्लेषण: धर्मशास्त्र और आयुर्वेद परंपराओं के प्रभाव।
   पर्यवेक्षक: डॉ. कुमुद प्रसाद आचार्य।
4. अच्युत चंद्र दहाल।
   शंकर का अध्यासभाष्य: एक विश्लेषणात्मक व्याख्या (श्री वाचस्पति मिश्र की भामती के विशेष संदर्भ में)।
   पर्यवेक्षक: प्रो. गोदाबरिशा मिश्रा।
5. अंकिता बरुई।
   संतं शिवं अद्वैतं: रवींद्रनाथ टैगोर के विचारों के आलोक में औपनिषदिक ब्रह्म की दृष्टि।
   पर्यवेक्षक: प्रो. गोदाबरिशा मिश्रा।
   सह-पर्यवेक्षक: डॉ. राजेश्वर मुखर्जी।
6. निजुम सर्वरिया।
   नाट्यशास्त्र: नाट्य परंपरा का प्रतिबिंब।
   पर्यवेक्षक: प्रो. गोदाबरिशा मिश्रा।
   सह-पर्यवेक्षक: डॉ. कुमुद प्रसाद आचार्य।
7. पियूष कुमार।
   विवाह संस्कार: आधुनिक समाज के लिए संदर्भ और प्रासंगिकता।
   पर्यवेक्षक: डॉ. कुमुद प्रसाद आचार्य।

8. अवनीश गौरव।

   कौटिल्य-पूर्व राजनीतिक विचार (मंत्रियों की नियुक्ति पर विशेष जोर)।

   पर्यवेक्षक: प्रो. गोदाबरिशा मिश्रा।

9. केशव दहाल।

   सनातन उपस्थिति: श्री रमण महर्षि की चेतना पर शिक्षाओं की खोज।

   पर्यवेक्षक: डॉ. राजेश्वर मुखर्जी।

<u>आयोजित कार्यक्रम:</u>

<u>ओटानी विश्वविद्यालय के प्रतिनिधिमंडल का दौरा:</u>

12 सितंबर, 2023 को प्रोफेसर शोभा रानी दाश के नेतृत्व में ओटानी विश्वविद्यालय के एक प्रतिनिधिमंडल ने राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल, जिसमें छात्र भी शामिल थे, का एसबीएसपीसीआर के डीन और अन्य सम्मानित संकाय सदस्यों ने गर्मजोशी से स्वागत किया। यात्रा की शुरुआत कुलपति और अतिथि प्रोफेसरों के बीच एक परिचयात्मक बैठक के साथ हुई, जिसके बाद शिन बौद्ध धर्म पर एक व्याख्यान दिया गया, जिसमें जापानी बौद्ध परंपराओं पर व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान किया गया।

ओटानी विश्वविद्यालय के छात्रों के नेतृत्व में बौद्ध मंत्रोच्चार सहित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में पारंपरिक कला रूपों का प्रदर्शन किया गया, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला। बाद में, दोनों विश्वविद्यालयों के छात्र परस्पर संवादात्मक चर्चा में शामिल हुए। संयुक्त शिक्षण, अनुसंधान पहल और अन्य विद्वानों के आदान-प्रदान पर ध्यान केंद्रित करते हुए संभावित शैक्षणिक सहयोग पर चर्चा की गई। प्रतिनिधिमंडल के प्रस्थान से पहले एक कैंपस दौरे के साथ यात्रा कार्यक्रम का समापन हुआ। इस यात्रा ने साझा शैक्षणिक हितों पर प्रकाश डाला और अंतर-सांस्कृतिक और संस्थागत संबंधों को मजबूत किया।

डॉक्यूमेंट्री फिल्म "धम्म बिहार" की विशेष स्क्रीनिंग

स्कूल ने 10 अक्टूबर, 2023 को विश्वविद्यालय के मिनी ऑडिटोरियम में डॉक्यूमेंट्री फिल्म धम्म बिहार की एक विशेष स्क्रीनिंग का आयोजन किया। प्रमुख फिल्म निर्माता हर्ष नारायण द्वारा निर्देशित यह फिल्म आधुनिक जीवन पर बौद्ध ध्यान प्रथाओं के प्रभाव की जांच करती है, जो इस बात पर ध्यान केंद्रित करती है कि बिहार के नए ध्यान केंद्र इस क्षेत्र की समृद्ध बौद्ध विरासत को कैसे पुनर्जीवित कर रहे हैं। कार्यक्रम में स्क्रीनिंग के बाद निर्देशक के साथ एक इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किया गया, जिससे छात्रों को वृत्तचित्र के विषयों और बौद्ध अभ्यास में बिहार की व्यापक सांस्कृतिक विरासत पर चर्चा करने का अवसर मिला।

एसबीएसपीसीआर विशिष्ट व्याख्यान: "नालंदा परंपरा आधुनिक विज्ञान से मिलती है और दुनिया को प्रभावित करती है"

29 फरवरी, 2024 को, स्कूल ने अपने मुख्य परिसर के मिनी-ऑडिटोरियम में "नालंदा परंपरा आधुनिक विज्ञान से मिलती है और दुनिया पर प्रभाव डालती है" शीर्षक से एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया। व्याख्यान प्रसिद्ध तिब्बती शिक्षाविद् और पद्म श्री पुरस्कार विजेता, प्रोफेसर गेशे न्गवांग सामतेन द्वारा दिया गया था।

प्रो. सैमटेन ने ऐतिहासिक और समकालीन ज्ञान प्रणालियों दोनों पर प्राचीन भारत के सबसे प्रमुख शिक्षा केंद्रों में से एक, नालंदा परंपरा के गहरे प्रभाव का पता लगाया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे दर्शनशास्त्र, तर्कशास्त्र और ज्ञानमीमांसा के गहन अध्ययन के माध्यम से नालंदा ने विभिन्न भारतीय दार्शनिक स्कूलों के साथ आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर बौद्धिक विकास को आकार दिया।

एसबीएसपीसीआर साप्ताहिक व्याख्यान: "मध्यकालीन भारत में प्रकाश और छाया के चरण"

स्कूल ने 20 सितंबर, 2023 को विश्वविद्यालय परिसर के मिनी ऑडिटोरियम में "मध्यकालीन भारत में प्रकाश और छाया के चरण" विषय पर एक प्रतिष्ठित इतिहासकार श्री आभास मालदहियार द्वारा एक साप्ताहिक व्याख्यान आयोजित किया। व्याख्यान में उथल-पुथल भरी दूसरी सहस्राब्दी की तस्वीर दी गई। ई.पू. में भारत युद्ध और शांति के दौर से गुजरा। घटनाएँ दादी-नानी द्वारा अपने पोते-पोतियों को सुनाई गई कहानियों की तरह एक इतिहास के रूप में संबंधित थीं।

एसबीएसपीसीआर विशिष्ट व्याख्यान: "भारतीय इतिहास की पुनर्कल्पना"

स्कूल ने 21 सितंबर, 2023 को यूनिवर्सिटी मिनी ऑडिटोरियम में "रीइमेजिनिंग भारतीय इतिहास" विषय पर लेखक और इतिहासकार डॉ. विक्रम संपत द्वारा दिया गया एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया। इतिहास और भारतीय संदर्भ में विभिन्न आख्यान। इसे पत्थर की लकीर मानने के बजाय, इस व्याख्यान ने दर्शकों को इतिहास की लचीली और लचीली प्रकृति पर प्रकाश डाला जो इसे अवधारणा बनाने वाली हर पीढ़ी के साथ बदलती है।

धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम पर व्याख्यान

स्कूल ने प्रोफेसर बी.के. द्वारा 38 व्याख्यान ऑनलाइन और ऑफलाइन आयोजित किए हैं। स्वैन, पूर्व प्रोफेसर एवं प्रमुख, पी.जी. धर्मशास्त्र विभाग, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, ओडिशा शरद ऋतु 2023 में हिंदू अध्ययन (सनातन धर्म) कार्यक्रम में एमए के सेमेस्टर IV के छात्रों के लिए 'धर्मशास्त्र का परिचय: गौतम, मनु और याज्ञवल्क्य से चयनित अंश' पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों पर। सत्र।

नाट्यशास्त्र पाठ्यक्रम पर व्याख्यान

स्कूल ने सेमेस्टर III के छात्रों के लिए 'भारत का नाट्यशास्त्र: प्रदर्शन कला की भारतीय परंपरा' पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों पर राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी

द्वारा ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में 40 व्याख्यान आयोजित किए हैं। शरद 2023 सत्र में हिंदू अध्ययन (सनातन धर्म) कार्यक्रम में एमए।

नालंदा खंडहर और संग्रहालय की फील्ड यात्रा:

18 नवंबर, 2023 को, स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज और एसबीएसपीसीआर के छात्र अपने तीसरे सेमेस्टर के वैकल्पिक पाठ्यक्रम, लर्निंग फ्रॉम रुइन्स: नालंदा थ्रू द एजेस के हिस्से के रूप में नालंदा की शैक्षिक क्षेत्र यात्रा के लिए गए। यह पाठ्यक्रम प्राचीन नालंदा स्थल के ऐतिहासिक महत्व और स्थापत्य विरासत की खोज प्रदान करता है।

समूह रुक्मिणी स्थान मंदिर पहुंचा और छात्रों को बुद्ध की विशिष्ट शैलीगत छवि के कलात्मक महत्व का संक्षिप्त विवरण दिया गया। इस यात्रा के बाद समूह नालन्दा संग्रहालय के लिए प्रस्थान कर गया। संग्रहालय के दौरे के बाद, समूह नालंदा के खंडहरों को देखने के लिए रवाना हुआ। छात्रों ने विभिन्न स्थलों और नालंदा खंडहरों के आसपास के क्षेत्र का निर्देशित दौरा किया।

यात्रा के दौरान, छात्र साइट पर सीखने, खंडहरों की जांच करने और दुनिया के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक और प्राचीन भारत में शिक्षा के एक प्रसिद्ध केंद्र, नालंदा के समृद्ध ऐतिहासिक संदर्भ में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में लगे रहे। इस व्यावहारिक अनुभव ने छात्रों को कक्षा के ज्ञान को वास्तविक दुनिया के अवलोकनों से जोड़ने की अनुमति दी, जिससे सदियों से नालंदा के विकास और सांस्कृतिक प्रभाव के बारे में उनकी समझ में वृद्धि हुई।

पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन स्कूल

स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड एनवायरनमेंटल स्टडीज (SEES) वैश्विक स्तर पर मानव समाज द्वारा सामना किए जा रहे वर्तमान पारिस्थितिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर केंद्रित है। यह स्कूल पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन में मास्टर ऑफ साइंस (M.Sc.) और डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (Ph.D.) की डिग्री प्रदान करता है।

एम.एससी प्रोग्राम के अंतर्गत पाठ्यक्रमों को कक्षा शिक्षण, असाइनमेंट समीक्षा, प्रेजेंटेशन, प्रायोगिक कार्य, और फील्ड वर्क के माध्यम से पढ़ाया जाता है। संपर्क सत्रों के दौरान पारिस्थितिक और पर्यावरणीय मुद्दों, चुनौतियों, और सफलताओं पर आधारित केस स्टडीज पर चर्चा की जाती है। इसके अतिरिक्त, छात्रों को नियमित सेमिनार प्रस्तुतियों के लिए प्रोत्साहित किया गया ताकि उनकी प्रस्तुति कौशल और आत्मविश्वास को बढ़ावा मिले।

एम.एससी. प्रोग्राम का ढांचा

- प्रथम सेमेस्टर: चार कोर और एक वैकल्पिक पाठ्यक्रम के साथ बुनियादी अवधारणाओं पर केंद्रित।
- द्वितीय सेमेस्टर: तीन कोर और दो वैकल्पिक पाठ्यक्रम के साथ सेतु पाठ्यक्रम।
- तृतीय सेमेस्टर: दो कोर और तीन वैकल्पिक पाठ्यक्रम के माध्यम से उन्नत और विशेषीकृत अध्ययन।
- चौथा सेमेस्टर: विशेषज्ञता के लिए शोध प्रबंध।

शरद 2023 से पाठ्यक्रम में प्रयोगशाला प्रयोग जोड़े गए। छात्रों को विषयों को समझने और चयनित विषयों पर बहस करने के लिए भूमिकाएँ निभाने जैसे अभिनव और सहभागी शिक्षण पद्धतियों का उपयोग किया गया। छात्रों ने अपने शोध प्रबंध के लिए प्राथमिक और द्वितीयक डेटा संग्रह हेतु फील्ड यात्राएँ भी कीं।

अकादमिक कार्यक्रम

एम.एससी. के पाठ्यक्रम. कायय‍क्रम

फाउंर्‍ेशन पाठ्यक्रम

एम.एससी. प्रोग्राम के पाठ्यक्रम

बुनियादी पाठ्यक्रम

प्रथम सेमेस्टर (संशोधित पाठ्यक्रम)

1. पारिस्थितिकी और पर्यावरण का परिचय - 101 - कोर
2. पर्यावरण अध्ययन में फील्ड और मात्रात्मक तकनीक - 102 - कोर

3. भू-प्रक्रिया और भूगोल - 103 - कोर
4. वायुमंडलीय विज्ञान और मौसम प्रक्रियाएँ - 104 - कोर
5. पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन के लिए आवश्यक गणित - 105A - वैकल्पिक
6. नागरिक विज्ञान - 105B - वैकल्पिक
7. सेमिनार-1 - 106

सेतु पाठ्यक्रम

द्वितीय सेमेस्टर (संशोधित पाठ्यक्रम)

1. पर्यावरण प्रदूषण - 201 - कोर
2. संरक्षण जीव विज्ञान - 202 - कोर
3. भू-स्थानिक तकनीक - 203 - कोर
4. कृषि वानिकी और बीज पारिस्थितिकी - 204A - वैकल्पिक
5. पर्यावरणीय अर्थशास्त्र और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन - 204B - वैकल्पिक
6. पर्यावरणीय आपदा प्रबंधन - 204C - वैकल्पिक
7. सेमिनार-2 - 205

उन्नत पाठ्यक्रम

तृतीय सेमेस्टर (पुराना पाठ्यक्रम)

1. जलवायु परिवर्तन - 301 - कोर
2. ऊर्जा विज्ञान - 302 - कोर
3. कार्यात्मक पारिस्थितिकी - 303A - वैकल्पिक
4. जीवन चक्र मूल्यांकन और सर्कुलर अर्थव्यवस्था - 303B - वैकल्पिक
5. विष विज्ञान और पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी - 303C - वैकल्पिक
6. अनुसंधान पद्धति - 303D - वैकल्पिक
7. सेमिनार-3

विशेषीकृत पाठ्यक्रम

चौथा सेमेस्टर (पुराना पाठ्यक्रम)

1. कचरा प्रबंधन - 401 - कोर
2. जैव विविधता और संरक्षण - 402A - वैकल्पिक
3. पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन - 402B - वैकल्पिक

4. सेमिनार-4 - 403
5. शोध प्रबंध प्रस्तुति - 404

ग्लोबल पीएचडी

चार उम्मीदवारों को डॉक्टोरल स्कॉलर के रूप में चुना गया, लेकिन छात्रवृत्ति के अभाव में कोई नामांकन नहीं हुआ। इस कारण, इस अवधि के दौरान कोई पीएचडी पाठ्यक्रम आयोजित नहीं किया गया।

संकाय और कर्मचारी: पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन स्कूल

क्र.सं.	नाम	पदनाम
1	प्रो. डॉ. आर. जयशंकर	प्रोफेसर और डीन
2	डॉ. श्याम एस फर्त्याल	सह - प्राध्यापक
3	डॉ. किशोर के. धवला	सह - प्राध्यापक
4	डॉ सत्यनारायण शास्त्री	सह - प्राध्यापक
5	डॉ सायन भट्टाचार्य	सहेयक प्रोफेसर
6	डॉ मूनमून हिलोधारी	शिक्षण साथी
7	श्री मृत्युंजय पांडे	सहायक

सीस छात्र प्रोफ़ाइल;

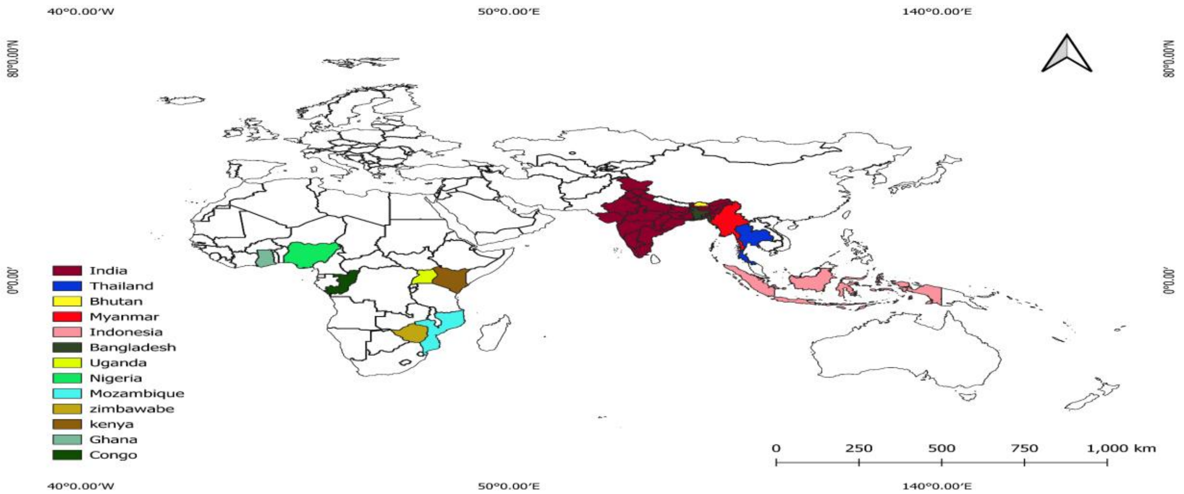

एस

सीस छात्रों, 2022 और 2023 बैचों के वैश्विक पदचिह्न का एक योजनाबद्ध प्रतिनिधित्व।

शैक्षणिक उपलब्धियाँ

सहकर्मी-समीक्षित पत्रिकाओं में प्रकाशन

1. आर. जयशंकर और ए. कक्कारा, इकोलॉजिकल इंफॉर्मेटिक्स: मेटामोर्फोज़िंग इकोलॉजी टू ए ट्रांसलेशनल डिसिप्लिन।, इकोलॉजिकल इंफॉर्मेटिक्स (2024), https://doi.org/10.1016/j.ecoinf.2024.102525

2. असुलभा, के.एस., जयशंकर, आर., सिन्सी, वी., और रामचन्द्र, टी.वी. (2024)। शहरी झीलों में सूक्ष्म शैवाल का पारिस्थितिक और आर्थिक मूल्य। आईएमआई कनेक्ट, 13(1): 6-19.

3. सिन्सी, वी., जयशंकर, आर., असुलभा, के.एस., और रामचन्द्र, टी.वी. (2024)। मछली विविधता पर आर्द्रभूमि प्रदूषण का प्रभाव। आईएमआई कनेक्ट, 13(2): 16-30।

4. रामचन्द्र, टी.वी., असुलभा, के.एस., सिन्सी, वी., और जयशंकर, आर. (2024)। मानव कल्याण के लिए आर्द्रभूमियाँ (संपादकीय)। जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल बायोलॉजी, 42(2), i-iv.

5. सिन्सी, वी., असुलभा, के.एस., जयशंकर, आर., और रामचन्द्र, टी.वी. (2024)। बैंगलोर आर्द्रभूमि का पारिस्थितिक और आर्थिक महत्व। पोल रेस., 43 (1-2): 164-170।

6. राजन एससी, विष्णु एम, मित्रा ए, एस नेद्यापरंबथ, कक्कारा ए, पिल्लई एमएस, आर जयशंकर। एवियन आवास गुणवत्ता और संरक्षण के लिए केरल, भारत में संरक्षित परिदृश्यों के भीतर मानवजनित ध्वनि स्तर की सीमा। प्रकृति विज्ञान प्रतिनिधि 2024 फ़रवरी 1;14(1):2701। डीओआई: 10.1038/एस41598-024-53153-6।

7. मुरलीधरन वी, राजन एससी, आर जयशंकर (2024) पौधों की पत्तियों की ज्यामितीय एन्ट्रॉपी: रूपात्मक जटिलता का एक उपाय। प्लस वन 19(1): e0293596। https://doi.org/10.1371/journal। पोन.0293596

13. कुरियन आयुषी, कांडा नवीन बाबू, नारायणन अय्यप्पन, जयशंकर रघुनाथन नायर, अथिरा कक्करा, सी. सुधाकर रेड्डी। जमीन के ऊपर बायोमास आकलन के लिए मशीन लर्निंग तकनीकों का तुलनात्मक विश्लेषण: पश्चिमी घाट, भारत का एक केस अध्ययन, पारिस्थितिक सूचना विज्ञान, वॉल्यूम 80, 2024, 102479, आईएसएसएन 1574-9541, https://doi.org/10.1016/j.ecoinf .2024.102479

14. कक्कारा, ए., जयशंकर, आर.एन., सी. राजन, एस., और डधवाल, वी.के. (2023)। फूलों की सुदूर संवेदन. पारिस्थितिक सूचना विज्ञान, 78, 102369. https://doi.org/10.1016/j.ecoinf.2023.102369

15. आर जयशंकर (2024)। व्यापक राष्ट्रीय प्रवीणता स्कोर: विश्वविद्यालयों का आकलन करने के लिए एक जैविक मीट्रिक। विश्वविद्यालय समाचार 62(01) जनवरी 01-07, 2024।

16. आर जयशंकर (2023)। अष्टांगिक नालंदा निर्देश मॉडल। विश्वविद्यालय समाचार, 61(28) जुलाई 10-16, 2023।

17. यादव, एच., पंसारी, एस., फर्त्याल, एस.एस. (2024)। एक निर्माणाधीन शैक्षिक परिसर में पक्षी विविधता: नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर, भारत का एक केस स्टडी। पारिस्थितिकी और पर्यावरण विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (स्वीकृत)।

18. जगनाथन, जी.के., फर्त्याल, एस.एस. (2024)। शुष्कन-संवेदनशील फैगेसी एकोर्न में अंकुरण के लिए एक वर्गीकरण प्रणाली: सुप्तता और भ्रूण अक्ष स्थिति पर ध्यान केंद्रित करना। लिनियन सोसायटी का बॉटनिकल जर्नल (स्वीकृत)। यदि = 2.3.

19. जिमेनेज़-मेजियास, पी., मंज़ानो, एस., गौड़ा, वी., ………, फ़र्त्याल, एस.एस., …… >1500 सहलेखकों (2024) के साथ। स्थिर जैविक नामकरण प्रणालियों की रक्षा करना सार्वभौमिक संचार को सक्षम बनाता है: एक सामूहिक अंतर्राष्ट्रीय अपील। बायोसाइंस, https://doi.org/10.1093/biosci/biae043। यदि = 7.6.

20. शीर्ड, जे.के., एड्रिएन्स, टी., बॉलर, डी.ई., ब्यूरमैन, ए., कैलाघन, सी.टी., कैम्प्रेस, ई.सी.एम., चौधरी, एस. एंगेल, टी., फिंच, ई.ए., गोन्नर, जे.वी., हिंग, पी-वाई., मिकुला, पी., ओह, आर.वाई.आर., पीटर्स, बी., फ़र्त्याल, एस.एस., पोकॉक, एम.जे.ओ., वाल्डचेन, जे., बॉन, ए. (2024)। नागरिक विज्ञान में उभरती प्रौद्योगिकियाँ और कीट निगरानी की संभावनाएँ। फिल. ट्रांस. आर समाज. बी - जैविक विज्ञान, 379: 20230106. आईएफ = 6.3.

21. ध्यानी, ए., चैलिल, ए.के., श्यामला, बी., अनिलकुमार सी., जोशी, जी., फर्त्याल, एस.एस. (2024)। सैंटालम एल्बम में बहुभ्रूणता - पौधों के पुनर्जनन के लिए एक दोधारी तलवार। जैव विविधता, https://doi.org/10.1080/14888386.2024.2359381। यदि = 1.8.

22. रोसबख, एस., कार्टा, ए., फर्नांडीज-पास्कुअल, ई., फरत्याल, एस.एस., डेरेल, आर., मटाना, ई., साटकैंप, ए., वंदेलुक, एफ., बास्किन, जे., बास्किन, सी. (2024)। बड़े डेटासेट बीज पारिस्थितिकी और विकासवादी जीवविज्ञान के अग्रिम ज्ञान का विश्लेषण करते हैं। न्यू फाइटोलॉजिस्ट, 242:2399-2400। यदि = 9.4.

23. जगनाथन, जी.के., कैनेलो, टी., फ़र्त्याल, एस.एस., ली, जे., कांग, एच., चमीलार्ज़। पी., वावरज़िनियाक, एम.के., तिवारी, ए., शाह, एस., लियू, बी., सांचेज़, जे.ए., बेरी, के. (2024)।

वर्तमान और भविष्य की जलवायु में फागेसी बलूत का फल का प्रजनन जीव विज्ञान। फ्लोरा, 315:152504। यदि = 1.9.

24. मोहम्मद, ए., महराना, पी., फर्त्याल, एस.एस., डिमरी, ए.पी. (2024)। अविभाजित सूडान और उसके प्रमुख शहरों में वर्षा और तापमान में अनुमानित परिवर्तन। मौसम विज्ञान और वायुमंडलीय भौतिकी, 136:11. यदि = 2.0.

25. यादव, एच., फर्त्याल, एस.एस., इवाचिडो, वाई., सासाकी, टी. (2024)। दक्षिण एशिया में देशी वृक्ष प्रजातियों की विविधता और वितरण का क्षेत्रीय मूल्यांकन। जैव विविधता और संरक्षण, 33(1):379-396. यदि = 3.4.

26. जयसूर्या, के.एम.जी.जी., फर्त्याल, एस.एस. (2024)। दो खरपतवार प्रजातियों (लुडविगिया) के बीजों का समान अंकुरण लेकिन असमान बाढ़ सहनशीलता व्यवहार: भारत के राजगीर में आम चावल के खेत में निवास करते हैं। ताइवानिया, 69(1):50-56. यदि = 0.9.

27. जयसूर्या, के.एम.जी.जी., फर्त्याल, एस.एस. (2024)। उत्तरी भारत की पच्चीस फैबेसी प्रजातियों की सुप्तावस्था, अंकुरण और संबंधित बीज पारिस्थितिक लक्षण। पादप जीवविज्ञान, 26(1):41-50. यदि = 3.9.

28. रॉबिन्सन, एम.एल., हैन, पी.जी., इनौये, बी.डी., ..., फरत्याल, एस.एस., ...ज़हर, एल.एन., झोंग, जेड., वेटज़ेल डब्ल्यू.सी. (2023)। पौधे का आकार, अक्षांश और फाइलोजेनी शाकाहारी भोजन में जनसंख्या के भीतर परिवर्तनशीलता की व्याख्या करते हैं। विज्ञान, 382:679-683. यदि = 56.9.

29. सिल्वेरा, एफ.ए.ओ., फुजेसी, एल., फार्तयाल, एस.एस., डेरेल, आर.एल.सी., वंदेलूक, एफ., वाज़क्वेज़-रामिरेज़, जे., तवसानोग्लू, सी., अबेदी, एम., सेरशेन, एकोस्टा-रोजास, डी.सी., सी -चोंग, सी., क्रूज़-तेजादा, डी.एम., जयसूर्या, जी., ऑर्डोनेज़-पारा, सी.ए., सातकैंप, ए. (2023)। विकासशील देशों में बीज पारिस्थितिकी अनुसंधान में प्रमुख बाधाओं पर काबू पाना: वैश्विक सहयोग का आह्वान। बीज विज्ञान अनुसंधान, 33(3):172-181. यदि = 2.1.

30. रोसबख, एस., कार्टा, ए., फर्नांडीज-पास्कुअल, ई., फरत्याल, एस.एस., डेरेल, आर., मटाना, ई., साटकैंप, ए., वंदेलुक, एफ., बास्किन, जे., बास्किन, सी. (2023)। वैश्विक बीज प्रसुप्ति पैटर्न मैक्रोक्लाइमेट द्वारा संचालित होते हैं, लेकिन अग्नि शासन द्वारा नहीं। न्यू फाइटोलॉजिस्ट, 240(2):555-564। यदि = 9.4.

31. फर्नांडीज-पास्कुअल, ई., कार्टा, ए., रोसबख, एस., गुजा, एल., फरत्याल, एस.एस., सिल्वेरा, एफ.ए.ओ., सी-चोंग, सी., लार्सन, जे.ई., जिमेनेज-अल्फारो, बी. (2023). सीडआर्क, प्राथमिक बीज अंकुरण डेटा का एक वैश्विक संग्रह। न्यू फाइटोलॉजिस्ट, 240(2):466-470। यदि = 9.4.

32. तियान, एल., लिआंग, डब्ल्यू., लियू, जेड., लियू, एम., फरत्याल, एस.एस., ज़ोंग, एल., कियान, जे., ज़िन, जेड., झू, जे., बा, सी. , ली., एक्स., लियू, वाई., वांग, जे., झाई, एस. (2023)। द्वितीयक पवन फैलाव के दौरान डायस्पोर्स के उत्थापन वेग पर वनस्पति संरचना का प्रभाव। पारिस्थितिक संकेतक, 155:111050। यदि = 6.9.

33. तियान, एल., लिआंग, डब्ल्यू., लियू, जेड., लियू, एम., फरत्याल, एस.एस., ज़ोंग, एल., शिन, जेड., बा, सी., ली., एक्स., लियू, वाई ., वांग, जे., झोउ, क्यू., किउ, एक्स, झाई, एस. (2023)। वनस्पति संरचना की जटिलता से द्वितीयक पवन फैलाव के दौरान वनस्पति परत की बीज-लटकाने की क्षमता कम हो जाती है। पेड़, doi.org/10.1007/s00468-023-02451-z IF = 2.3।

34. रामवंत गुप्ता, रवि दत्त शर्मा, छेदी लाल वर्मा, सत्य नारायण शास्त्री (2023)। नोनी (मोरिंडा सिट्रिफ़ोलिया) में पत्ती क्षेत्र का अनुमान लगाने के लिए गैर-विनाशकारी गणितीय मॉडल, एक्टा फिजियोलॉजी प्लांटारम (2023) 45:109।

35. लैम दोरजी तमांग, सांगे वांग्मो, सतरूपा डे, सायन भट्टाचार्य (2024)। बैक्टीरिया में आर्सेनिक प्रतिरोध के आणविक तंत्र: PRISMA मॉडल के बाद एक व्यवस्थित विश्लेषण। जियोमाइक्रोबायोलॉजी जर्नल, वॉल्यूम। 41(6): 595-612.

36. दीपा कुंडू, प्रभाकर शर्मा, सायन भट्टाचार्य, कौशिक गुप्ता, शुभलक्ष्मी सेनगुप्ता, जियानयिंग शांग (2024)। लैंटाना कैमारा एल कार्बन रिसर्च, वॉल्यूम की पत्ती और तने से प्राप्त बायोचार का उपयोग करके मेथिलीन ब्लू डाई हटाने का अध्ययन। 3: 22.

37. प्रभाकर शर्मा, अभिलाषा, कुमार अभिषेक, सायन भट्टाचार्य, शुभलक्ष्मी सेनगुप्ता, चंद्र शेखर सेठ (2024)। सियाजियम क्यूमिनी स्टेम से विकसित पोटेशियम हाइड्रॉक्साइड-सक्रिय बायोचार द्वारा पानी में सीसे को हटाना। डिस्कवर केमिकल इंजीनियरिंग 4, 17.

38. अविषेक तालुकदार, पृथा कुंडू, सायन भट्टाचार्य, नालोक दत्ता (2024)। अपशिष्ट जल में माइक्रोप्लास्टिक संदूषण: भौतिक और रासायनिक-जैविक तरीकों के माध्यम से स्रोत, वितरण, पता लगाना और उपचार। संपूर्ण पर्यावरण का विज्ञान, खंड। 916: 170254.

39. सायन भट्टाचार्य, अविषेक तालुकदार, शुभलक्ष्मी सेनगुप्ता, तुयेली दास, अभिजीत डे, कौशिक गुप्ता, नालोक दत्ता (2023)। आर्सेनिक दूषित जल निवारण: सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप एक अत्याधुनिक समीक्षा। सतत विकास के लिए भूजल, खंड। 23: 101000.

40. अविषेक तालुकदार, पृथा कुंडू, श्रायण भट्टाचार्य, सतरूपा डे, अभिजीत डे, जयंत कुमार विश्वास, पुनर्बसु चौधरी और सायन भट्टाचार्य (2023)। एशिया के विशेष संदर्भ में मैंग्रोव में माइक्रोप्लास्टिक्स: घटना, वितरण, जैवसंचय और उपचार विकल्प। संपूर्ण पर्यावरण का विज्ञान, खंड। 904:166165.
41. बस्तोला, जे.के. और हिलोधारी, एम., 2024। भूटान में शुद्ध शून्य खाना पकाने और परिवहन के लिए बायोगैस और बायोहाइड्रोजन। सतत उत्पादन और उपभोग, 45, 79-90।
42. शारनो, एम.ए. और हिलोधारी, एम., 2024. शुद्ध शून्य विमानन के लिए बायोजेट ईंधन की सामाजिक स्थिरता। सतत विकास के लिए ऊर्जा, 79,101419।

पुस्तक अध्याय:

1. अर्कज्योति शोम, सायन भट्टाचार्य, अविरूप दत्ता (2024)। जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य पर विशेष ध्यान देने के साथ भारत में पूर्वी हिमालय में स्थित एक इकोटूरिज्म हेमलेट का सामाजिक-पर्यावरणीय सर्वेक्षण। इन: बोर्थाकुर, ए., सिंह, पी. (संस्करण) द हिमालयज़ इन द एंथ्रोपोसीन। स्प्रिंगर. HTTPS://DOI.ORG/10.1007/978-3-031-50101-2_6।
2. शशि रंजन, अमन प्रकाश, राज बहादुर सिंह, प्रगल्भ तिवारी, सायन भट्टाचार्य, पोटशांगबाम नोंगदम, अब्देल रहमान अल-तवाहा, मिलन कुमार लाल, राहुल कुमार तिवारी, सायंती मंडल और अभिजीत डे (2023)। कृषि पौधों पर सूखे के तनाव का प्रभाव, और सूखा सहिष्णु फसल विकास के लिए आणविक रणनीतियाँ। इन: आफताब, टी. (सं.). पादप-पर्यावरण अंतःक्रियाओं में नए मोर्चे: नवोन्वेषी प्रौद्योगिकियां और विकास। स्प्रिंगर, पीपी. 267-287. (आईएसबीएन: 978-3-031-43729-8)।
4. प्रोथा बिस्वास, सुजाता मंडल, तुयेली दास, सतरूपा डे, मिमोसा घोराई, सायन भट्टाचार्य, अरबिंद घोष, पोटशांगबम नोंगदम, विनीत कुमार, अब्देल रहमान अल-तवाहा, एरकन बर्सल, अभिजीत डे (2023)। चावल के भूसे से जैव ईंधन का उत्पादन और इसके भविष्य के दृष्टिकोण। इन: शाह, म.प्र. (ईडी.) सतत भविष्य के लिए वैकल्पिक ईंधन के लिए हरित दृष्टिकोण। एल्सेवियर, पीपी. 25-33. (आईएसबीएन: 978-0-12-824318-3)।

5. मूर्ति, एम.एन., कुमार, एस. और धवला, के. उद्योग की पर्यावरणीय दक्षता को मापना: भारत में थर्मल पावर उत्पादन का एक केस स्टडी, संपादित खंड में अध्याय "तीन स्तंभ: सरकार, बाजार और पर्यावरण प्रबंधन के लिए समुदाय" मूर्ति और कुमार द्वारा, अकादमिक फाउंडेशन, भारत, 95-126 (2023)

6. चटर्जी, एस., धवला, के. और मूर्ति, एम.एन. भारत में सड़क परिवहन के लिए वायु प्रदूषण उन्मूलन की अनुमानित लागत: आंध्र प्रदेश और हिमाचल प्रदेश के मामले का अध्ययन, संपादित खंड "पर्यावरण मूल्यांकन और लेखांकन: भारतीय परिप्रेक्ष्य" में अध्याय मूर्ति और कुमार द्वारा, अकादमिक फाउंडेशन, भारत, 305-342 (2023)

आमंत्रित वार्ता/सम्मेलन/संगोष्ठी प्रस्तुतियाँ:

- 'बीज संग्रहण, कटाई के बाद का प्रबंधन और भंडारण' और 'बीज अंकुरण और अवकाश' पर DST-SERB एक्सेलेरेट विज्ञान विंटर इंटर्नशिप कार्यक्रम में 'इंडो-म्यांमार जैव विविधता हॉटस्पॉट के वन आनुवंशिक संसाधनों का संरक्षण' पर, मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल, भारत द्वारा 27 नवंबर 2023 को आयोजित। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।
- "घर की मीठी और मस्की महक: जैविक एथीलीन नदियों के क्षेत्र में बीज अंकुरण को fine-tune करता है" ईपोस्टर प्रस्तुत किया गया ब्रिटिश इकोलॉजिकल सोसाइटी के वार्षिक बैठक 2023 के दौरान, जो 12-15 दिसंबर 2023 को बेलफास्ट, आयरलैंड, यूके में आयोजित हुई। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।
- भारत में नागरिक विज्ञान वैकल्पिक पाठ्यक्रम को नालंदा विश्वविद्यालय में पेश करने की पहल की जा रही है, और #CitSciIndia 2023 वर्चुअल सम्मेलन के दौरान 'नागरिक विज्ञान और शिक्षा' पर पैनल चर्चा के लिए एक पैनलिस्ट के रूप में आमंत्रित किया गया, जो 1-2 दिसंबर 2023 को भारत में नागरिक विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया गया था। अधिक जानकारी के लिए, पब्लिक सत्र - नागरिक विज्ञान भारत (citsci-india.org) पर जाएं। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।
- 'पर्यावरण संरक्षण, आधुनिकीकरण और पर्वतीय क्षेत्रों में सतत विकास' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में व्याख्यान दिया, जो चाइना के भौगोलिक समाज के पर्वतीय अनुसंधान उप-समाज द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पर्वतीय विकास केंद्र (ICIMOD) और त्रिभुवन विश्वविद्यालय के केंद्रीय भूगोल विभाग के सहयोग से काठमांडू, नेपाल में ICIMOD कैंपस, 28-30 जुलाई 2024 को आयोजित किया गया था। (डॉ. सयान भट्टाचार्य)।
- अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'भूविविधता, भू-धरोहर, भू-पर्यटन, भू-शिक्षा, भू-पार्क और सतत विकास लक्ष्य' पर (आभासी) व्याख्यान दिया, जो 21-26 अक्टूबर 2023 को साफी, मोरक्को में आयोजित हुआ। (डॉ. सयान भट्टाचार्य)।
- 'सूक्ष्म प्लास्टिक के उपचार पर ऑनलाइन व्याख्यान देने के लिए एक प्रतिष्ठित वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया', जो राष्ट्रीय संस्थान पर्यावरण स्वास्थ्य में अनुसंधान (भारतीय चिकित्सा

अनुसंधान परिषद, ICMR), भोपाल, भारत द्वारा 22-23 अगस्त 2024 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में हुआ था, जिसका विषय था 'पर्यावरणीय मैट्रिक्स से सूक्ष्म प्लास्टिक्स का निष्कासन: वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ'। (डॉ. सयान भट्टाचार्य)।

- 'भूतल जल में आर्सेनिक संदूषण: स्रोत, संचयन, प्रभाव और उपचार' पर ऑनलाइन व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित वक्ता, नारुला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, JIS ग्रुप, कोलकाता द्वारा 28 मई 2024 को आयोजित। (डॉ. सयान भट्टाचार्य)।
- 'बंगाल डेल्टा में आर्सेनिक संदूषण' पर ऑनलाइन व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित वक्ता, विश्व जल दिवस 2024 मनाने के लिए आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में, जो पर्यावरणीय प्रदूषण नियंत्रण केंद्र, विज्ञान संस्थान, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान द्वारा 22 मार्च 2024 को आयोजित किया गया। (डॉ. सयान भट्टाचार्य)।
- "इकोसिस्टम सेवाओं का मूल्यांकन और महासागर लेखांकन में इसका अनुप्रयोग" पर व्याख्यान, जो 'इकोसिस्टम सेवाओं और लेखांकन पर हितधारक बैठक' - कोरिंगा मैनग्रोव्स (2023) NCCR-MoES, GOI में हुआ। (डॉ. किशोर धवला)।
- "तटीय समुदायों के लिए पैरामीट्रिक बीमा" पर व्याख्यान, जो "दक्षिण एशिया में समुद्री मछली पकड़ने के क्षेत्र को अनिश्चितताओं से बचाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी: बीमा के साथ वैश्विक अनुभव" CMFRI (2023) में हुआ। (डॉ. किशोर धवला)।

SEES संकाय की अकादमिक पहचान

1. संपादक: इकोलॉजिकल इंफॉर्मेटिक्स (एल्सेवियर) का विशेष अंक। (प्रो. आर. जयशंकर)।
2. अंतर्राष्ट्रीय नामांकक: द ब्लू प्लेनेट प्राइज, ASAHI ग्लास फाउंडेशन, जापान (2023 और 2024)। (प्रो. आर. जयशंकर नायर)।
3. 'फंक्शन इकोलॉजी' के सहायक संपादक – ब्रिटिश इकोलॉजिकल सोसाइटीज, यूके का प्रमुख Q1 जर्नल। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।
4. 'फॉरेस्ट साइंस' के गेस्ट सहायक संपादक – अमेरिकन फॉरेस्टर्स सोसाइटीज, यूएसए का आधिकारिक जर्नल। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।
5. 'सीड साइंस एंड टेक्नोलॉजी' के सहायक संपादक – इंटरनेशनल सीड टेस्टिंग असोसिएशन, स्विट्जरलैंड का आधिकारिक जर्नल। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।
6. न्यूज़लेटर की संपादकीय समिति के सदस्य — IUCN सीड कंजरवेशन स्पेशलिस्ट ग्रुप (seedconservationsg.org)। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।

7. पाविया विश्वविद्यालय, इटली द्वारा बाहरी डॉक्टोरल थेसिस मूल्यांकनकर्ता। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।
8. आगामी ISSS 2025 संयुक्त सम्मेलन के वैज्ञानिक समिति के सदस्य नियुक्त, जो 15-19 सितंबर 2015 को किंग्स पार्क, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया में 'बायनियल सीड बायोलॉजी-XV और त्रिनियल सीड इकोलॉजी-VIII सम्मेलन' के रूप में आयोजित होगा। (वैज्ञानिक समिति | ISSS 2025) (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।
9. SeedArc के संस्थापक समन्वयक सदस्य: एक वैश्विक प्राथमिक बीज अंकुरण डेटा अभिलेखागार। अधिक जानकारी के लिए, विजिट करें: https://www.unioviedo.es/seedarc/index.html। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।
10. "हेवी मेटल्स का उपचार: पर्यावरण सुरक्षा और सतत विकास की ओर एक मार्ग" पर विशेष अंक के लिए अतिथि संपादक, जो Discover Environment Journal, Springer-Nature, जर्मनी द्वारा जुलाई 2024 में प्रकाशित होगा। (डॉ. सयान भट्टाचार्य)।
11. लिनीयन सोसाइटी ऑफ लंदन (FLS) के फेलो मार्च 2023 में। (डॉ. सयान भट्टाचार्य)।
12. इकोलॉजिकल इंफॉर्मेटिक्स (एल्सेवियर), ट्रीज़ फॉरेस्ट एंड पीपल (एल्सेवियर), साइंस ऑफ द टोटल एनवायरनमेंट (एल्सेवियर), लैंड (MDPI), सस्टेनेबिलिटी (एल्सेवियर), ग्लोबल चेंज बायोलॉजी (एल्सेवियर) के समीक्षक। (प्रो. आर. जयशंकर नायर)।
13. मेटोड्स इन इकोलॉजी एंड इवोल्यूशन (विले), बायोट्रॉपिका (विले), फ्लोरा (एल्सेवियर), इंटरनेशनल जर्नल ऑफ वाइल्डलैंड फायर (CSIRO), सीड साइंस रिसर्च (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस), प्लांट स्पीसीज़ बायोलॉजी (विले), रेस्टोरेशन इकोलॉजी (विले), सीड साइंस एंड टेक्नोलॉजी (इंगेंटा कनेक्ट), जर्नल ऑफ वेजिटेशन साइंस (विले), ब्राजीलियान आर्काइव्स ऑफ बायोलॉजी एंड टेक्नोलॉजी, ग्लोबल इकोलॉजी एंड कंजरवेशन (एल्सेवियर), जर्नल ऑफ अप्लाइड इकोलॉजी (विले), साउथर्न फॉरेस्ट्स (टेलर एंड फ्रांसिस), ऑस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ बोटनी (CSIRO), फ्रेशवाटर बायोलॉजी (विले) के समीक्षक। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।
14. समीक्षक: केमोस्फेयर (एल्सेवियर), पर्यावरणीय प्रदूषण, साइंस ऑफ द टोटल एनवायरनमेंट (एल्सेवियर), इकोटॉक्सिकोलॉजी और पर्यावरणीय सुरक्षा (एल्सेवियर), जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल केमिकल इंजीनियरिंग (एल्सेवियर), एनवायरनमेंट नैनोटेक्नोलॉजी मॉनिटरिंग एंड मैनेजमेंट (एल्सेवियर), करंट रिसर्च इन एनवायरनमेंटल सस्टेनेबिलिटी (एल्सेवियर), जर्नल ऑफ सॉइल्स एंड सेडिमेंट्स (स्प्रिंगर), FEMS माइक्रोबायोलॉजी इकोलॉजी (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस), पर्यावरणीय भू-रसायन और स्वास्थ्य (स्प्रिंगर)। (डॉ. सयान भट्टाचार्य)।

15. समीक्षक: नेचुरल हैज़र्ड रिव्यूज़ (ASCE), एनर्जी पॉलिसी (एल्सेवियर) और जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल मैनेजमेंट (एल्सेवियर)।

एमएससी शोध प्रबंध का पर्यवेक्षण किया गया

1. शीला मिसा अमोफा। बिरिम उत्तरी जिले, घाना में गैलामसी - सामाजिक आर्थिक चालक और भूमि उपयोग भूमि कवर परिवर्तन। [गाइड: प्रो. आर. जयशंकर]

2. प्रवीण कुमार. नालंदा बिहार में पर्यावरण जागरूकता: एक केएपी अध्ययन। [गाइड: प्रो. आर. जयशंकर]

3. दिव्यदर्शी नाहक। उड़ीसा, भारत के जनजातीय समुदायों का पारंपरिक ज्ञान। [मार्गदर्शक: प्रो. आर. जयशंकर]

4. चार्ल्स लवंगा इसिंगोमा (एम.एससी. 2024)। कैलोट्रोपिस प्रोसेरा में कीट शाकाहारी पैटर्न पर रात में कृत्रिम प्रकाश के प्रभाव की खोज। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल द्वारा पर्यवेक्षण)।

5. बहादुर सिंह गुरुंग (एम.एससी. 2024)। ।कैसे 'इको' इकोटूरिज्म है? जिग्मेचू इकोटूरिज्म, भुटा का एक केस स्टडी। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल द्वारा पर्यवेक्षण)।

6. मोहम्मद ईमान अली दीवान (एम.एससी. 2024)। मैपिंग ने बांग्लादेश के जंगली पौधों के बीज अंकुरण पारिस्थितिकी पर अध्ययन प्रकाशित किया। (डॉ. श्याम एस. फर्त्याल द्वारा पर्यवेक्षण)।

7. चेनजेराई ज़िति (एम.एससी. 2024)। फार्म से फोर्क तक: नालंदा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के डाइनिंग हॉल में प्लेट अपशिष्ट को कम करने के लिए मेनू को नया रूप देना। (डॉ. एस.एन. शास्त्री के साथ डॉ. श्याम एस. फर्त्याल द्वारा पर्यवेक्षण)

8. अमर शक्ति चकमा (एम.एससी. 2024)। चटगांव पहाड़ी इलाकों में वनों का क्षरण और संरक्षण में ग्राम सामान्य वन की भूमिका। (डॉ. सयान भट्टाचार्य द्वारा पर्यवेक्षण)।

9. एस्तेर अकोथ अमोलो (एम.एससी. 2024)। केन्या में घरेलू उपभोग के लिए पानी की ढुलाई में लिंग की भूमिका: होमाबे काउंटी के कोनुओंगा में स्थित वेस्ट कासिपुल वार्ड में स्वास्थ्य मुद्दे और पर्यावरणीय बाधाएं। (डॉ. सायन भट्टाचार्य द्वारा पर्यवेक्षण)।

10. पेमा लादेन (एम.एससी. 2024)। नकारात्मक उत्सर्जन और कम कार्बन भुगतान समय के साथ उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में जैव ऊर्जा का विस्तार। (डॉ. मूनमून हिलोधारी द्वारा पर्यवेक्षण)।

12. सौम्या अदिति (एम.एससी. 2024)। भारत में स्वच्छ परिवहन ईंधन के रूप में बायोहाइड्रोजन के संसाधन और स्थिरता। (डॉ. मूनमून हिलोधारी द्वारा पर्यवेक्षण)।

13. दावा ज़म (एम.एससी. 2023)। भूटान की राष्ट्रीय नीतियों में सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के एकीकरण का विश्लेषण। (डॉ. किशोर के. धवला द्वारा पर्यवेक्षण)।

14. लेडी डेपाज़ कैबलेरो (एम.एससी. 2023)। लैंगिक समानता और जलवायु कार्रवाई: एसडीजी और महिला मानवाधिकार से एक विश्लेषण। (डॉ. किशोर के. धवला द्वारा पर्यवेक्षण)।

15. यट्टा एस्तेर कल्लोन (एम.एससी. 2023)। वायु प्रदूषकों का स्थानिक-अस्थायी वितरण और मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव: फ़्रीटाउन, सिएरा लियोन का एक केस अध्ययन। (डॉ. सत्यनारायण शास्त्री द्वारा पर्यवेक्षण)।

16. सांगे वांग्मो (एम.एससी. 2023)। दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में चावल के लिए जलवायु-स्मार्ट कृषि का विश्लेषण: PRISMA मॉडल के बाद एक प्रणालीगत समीक्षा अध्ययन। (डॉ. सायन भट्टाचार्य द्वारा पर्यवेक्षण)।

17. केल्विन मुतुगी किथाका (एम.एससी. 2023), केन्या में अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में जल स्रोतों को प्रभावित करने वाली चुनौतियाँ: एमबीरे साउथ, एम्बु काउंटी में स्थित किआम्बेरे वार्ड में एक केस अध्ययन। (डॉ. सायन भट्टाचार्य द्वारा पर्यवेक्षण)।

18. एनेट नबम्पेंजे, (एम.एससी. 2023)। युगांडा में जैविक खेती और सतत विकास लक्ष्य: जलवायु परिवर्तन, कोविड-19 और यूक्रेन-रूस संघर्ष के प्रभावों को संबोधित करना। (डॉ. सायन भट्टाचार्य द्वारा पर्यवेक्षण)।

19. श्री आकर्ष पासी (एम.एससी. 2023)। एनटीएफपी और वन सीमांत समुदाय: रायसेन (म.प्र.) के कुकवाड़ा और बेलगांव गांवों से एक केस अध्ययन। (डॉ. सायन भट्टाचार्य द्वारा पर्यवेक्षण)।

20. ईशा गुप्ता (एम.एससी. 2023)। फ्लोराइड के विशेष संदर्भ में बिहार, भारत में भूजल की स्थिति और संदूषण। (डॉ. सायन भट्टाचार्य द्वारा पर्यवेक्षण)।

21. सुभ्रजीत लेंका (एम.एससी. 2024): भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान की कार्बन भंडारण क्षमता: एक निवेश मॉडल दृष्टिकोण। (डॉ. किशोर धवला द्वारा पर्यवेक्षण)

22. बेदायुति डैश (एम.एससी. 2024): कार्बन खजाने का अनावरण: बांग्लादेश के कमालगंज उपजिला में इन्वेस्ट का उपयोग करके कार्बन भंडारण का एक मात्रात्मक विश्लेषण। (डॉ. किशोर धवला द्वारा पर्यवेक्षण)

23. दावा ज़म (एम.एससी. 2023): भूटान की राष्ट्रीय नीतियों में सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के एकीकरण का विश्लेषण। (डॉ. किशोर धवला द्वारा पर्यवेक्षण)

24. लेडी डेपाज़ कैबलेरो (एम.एससी. 2023): लैंगिक समानता और जलवायु कार्रवाई: एसडीजी और महिला मानवाधिकार से एक विश्लेषण। (डॉ. किशोर धवला द्वारा पर्यवेक्षण)

पीएच.डी. इनका पर्यवेक्षण किया गया

1. अनुराग वर्मा (पीएचडी)। 2020-2024. - बिहार के नालंदा जिले में भूजल गुणवत्ता पर पारंपरिक वर्षा जल संचयन प्रणाली का प्रभाव, पुरस्कृत, पर्यवेक्षक: डॉ. श्याम एस. फर्त्याल)।

2. अर्कज्योति शोम (पीएचडी)। 2020-2024. पौधों की कार्यात्मक विशेषताओं के माध्यम से भारतीय आर्द्रभूमि की पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का आकलन (पुरस्कृत, पर्यवेक्षक: श्याम एस. फर्त्याल)।

3. राकेश कुमार (पीएच.डी.). 2020-2024. संशोधित बायोचार का उपयोग करके दूषित मिट्टी और पानी से फ्लोराइड का उपचार, नालंदा विश्वविद्यालय (पुरस्कृत, पर्यवेक्षक: डॉ. किशोर के धवला)।

4. निशिता आइवी (पीएचडी)। 2020-2024. कोसी-गंगा बाढ़ क्षेत्र में आर्सेनिक संदूषण: जोखिम का आकलन और जोखिम को कम करने के विकल्प। (पुरस्कृत, पर्यवेक्षक: डॉ. सयान भट्टाचार्य)।

सहयोग:

1. बंगाल की खाड़ी के पश्चिमी तट के साथ महत्वपूर्ण तटीय आवासों की पारिस्थितिकी तंत्र आधारित सेवाओं (ईबीएस) का आर्थिक मूल्यांकन, एनसीसीआर-जीओआई, बीओबीपी। (डॉ. किशोर के धवाला).

2. बंगाल की खाड़ी में नीली अर्थव्यवस्था के मूल्यांकन और प्रबंधन के लिए शासन और संस्थागत ढांचा, MoEF&CC-GoI, नॉर्वे एकीकृत महासागर प्रबंधन, और BOBP। (डॉ. किशोर के धवाला).

3. मार्च 2023 में नालंदा विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। (डॉ. सत्यनारायण शास्त्री)।

4.नालंदा विश्वविद्यालय और ओस्ट्रावा विश्वविद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर। अक्टूबर 2023. (प्रो. आर. जयशंकर).

क्षेत्रीय कार्य/अन्य गतिविधियाँ

फ़ील्ड गतिविधि 1: रिमोट सेंसिंग और जीआईएस अध्ययन से संबंधित फ़ील्ड दौरा

दिनांक: 20 नवंबर 2023

फील्ड अध्ययन द्वारा संचालित: स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड एनवायरनमेंट स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय के छात्र।

पर्यवेक्षण: डॉ. मूनमून हिलोधारी

उद्देश्य

क्षेत्र यात्रा का उद्देश्य राजगीर क्षेत्र का एलयूएलसी डेटा एकत्र करना, राजगीर पहाड़ियों के परिदृश्य पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता की जांच करना, अध्ययन क्षेत्र की ऊंचाई को मापना और प्रदान किए गए राजगीर टोपोशीट के लिए कुछ जीसीपी (ग्राउंड कंट्रोल पॉइंट) प्रदान करना था। जीपीएस (जियोग्राफिक पोजिशनिंग सिस्टम) की मदद।

टिप्पणियों

यात्रा सुबह 9 बजे विश्वविद्यालय परिसर से शुरू की गई। डॉ. हिलोधारी ने जीपीएस ग्रामीण एट्रेक्स 30X का उपयोग करके भौगोलिक स्थिति प्रणाली (जीपीएस) का उपयोग करने का तरीका दिखाया। राजगीर कृषि क्षेत्र, सौन बंधार गुफा और बुद्ध मंदिर जैसे स्थलों का दौरा किया गया। प्रत्येक साइट से, जीपीएस स्थान, परिदृश्य, ऊंचाई और एलयूएलसी प्रकार का डेटा रिकॉर्ड किया गया था।

तालिका 1: जीपीएस डेटा

GCP no.	Coordinate		Elevation (m)	LULC Type	N-E-W-S Landscape
	Lat	Long			
1	$25^0$1'14.89''	$85^0$24'22.52''	61	कृषि परती भूमि	एन- रोड, ई-बिल्डिंग, डब्ल्यू-इलेक्ट्रिक ग्रिड, एस- पहाड़ी
2	$25^0$0'6.01''	$85^0$26'47.20''	208	इकोटोन वाला चट्टानी पहाड़ी इलाका	एन- पहाड़ी ई-ग्रिधकुट मंदिर डब्ल्यू-मिश्रित वनस्पति, एस-साल वन.
3	$25^0$0'16.35''	$85^0$25'4.84''	78	*स्वर्ण भंडार गुफाएँ*	एन-हिल ढलान ई-राजगीर पार्क डब्ल्यू-मंदिर एस-मिश्रित वनस्पति

राजगीर जैव विविधता (वनस्पतियों और जीवों) से समृद्ध है और प्राचीन स्मारकों और धार्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। उल्लेखनीय पुरातात्विक स्थलों और वन क्षेत्र के अलावा, यह क्षेत्र पारिस्थितिकीविदों, पुरातत्वविदों, भूवैज्ञानिकों, सामाजिक वैज्ञानिकों और भूमि उपयोग योजनाकारों के लिए एक आदर्श

अध्ययन क्षेत्र है। राजगीर जैसे पहाड़ी क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास और संरक्षण प्रयासों को और मजबूत करने के लिए आरएस एंड जीआईएस जैसे आधुनिक उपकरण और तकनीकें उपयोगी हो सकती हैं।

चित्र 1. एलयूएलसी अध्ययन के भाग के रूप में एसईईएस, नालंदा विश्वविद्यालय के छात्रों का फील्ड दौरा।

क्षेत्र गतिविधि 2: नेकपुर और मेयार में जलभृत रिचार्ज पिट, गंगा जल लिफ्ट परियोजना और जलाशय, गिरियक में जल उपचार संयंत्र का क्षेत्र दौरा

दिनांक: 29 अप्रैल 2023

फील्ड अध्ययन द्वारा संचालित: स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड एनवायरनमेंट स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय के छात्र।

पर्यवेक्षण: डॉ. किशोर धवाला और डॉ. सत्यनारायण शास्त्री

उद्देश्य

सेमेस्टर II के छात्रों के साथ जल संरक्षण और पुनर्भरण परियोजना पर नेकपुर, महियानपुर और गिरियक बांध का क्षेत्र दौरा।

चित्र 2. जलभृत प्रभार अध्ययन के भाग के रूप में एसईईएस, नालंदा विश्वविद्यालय के छात्रों का क्षेत्र दौरा।

फ़ील्ड गतिविधि 3: नालंदा विश्वविद्यालय परिसर में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन

क्षेत्रीय अध्ययन 8-10 जून 2023 के दौरान स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड एनवायरमेंट स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा आयोजित किया गया था और इसकी देखरेख प्रोफेसर आर जयशंकर नायर ने की थी।

उद्देश्य

विश्व पर्यावरण दिवस 2023 उत्सव की थीम "प्लास्टिक प्रदूषण को हराएं" के अनुरूप, स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड एनवायरनमेंट स्टडीज (एसईईएस), नालंदा विश्वविद्यालय ने प्लास्टिक को कम करने के लिए 8-10 जून 2023 के दौरान परिसर के भीतर एक प्लास्टिक अपशिष्ट मूल्यांकन क्षेत्र कार्य का आयोजन किया। बरबाद करना।

टिप्पणियाँ और सिफ़ारिशें

i) जागरूकता और प्रशिक्षण

-स्रोत पर अपशिष्ट पृथक्करण पर जागरूकता बढ़ाएं और नियमित अंतराल पर प्रगति की निगरानी करें।

-विश्वविद्यालय/एसईईएस प्रत्येक चौथे शनिवार (या किसी भी शुक्रवार) को एक स्वच्छ और हरित अभियान का आयोजन कर सकता है।

-विभिन्न प्रकार के कचरे के सुरक्षित प्रबंधन और संग्रह पर कचरा संग्रहण कर्मियों को प्रशिक्षित करें।

ii) अपशिष्ट से ऊर्जा

-परिसर में उत्पन्न होने वाले कचरे का लगभग आधा (46%) हिस्सा कागज और कार्टन/कार्डबोर्ड का होता है। कचरे का यह कार्बनिक अंश बायोगैस और जैविक उर्वरक का उत्पादन करने के लिए अवायवीय पाचन (एडी) के लिए जा सकता है।

iii) प्लास्टिक का उपयोग कम करें

-कैंपस के कचरे में प्लास्टिक की बोतलें और बहुस्तरीय प्लास्टिक लगभग 44% है। बहुस्तरीय प्लास्टिक का सामान्य स्रोत खाद्य पैकेजिंग और परोसने वाली प्लेटें हैं।

-विश्वविद्यालय समुदाय द्वारा प्लास्टिक की पानी की बोतल के स्थान पर धातु या लकड़ी की बोतल का उपयोग करें

-फिर से भरने योग्य पानी डिस्पेंसरों की संख्या बढ़ाना

-विभिन्न आयोजनों में प्लास्टिक कप की जगह स्टील और सिरेमिक प्लेट और कप का उपयोग करें।

-विश्वविद्यालय भुगतान के आधार पर नालंदा सिरेमिक मग प्रदान कर सकता है।

-नालंदा विश्वविद्यालय के लोगो के साथ छोटी पुन: प्रयोज्य बोतलें पेश करें, जो एकल-उपयोग वाली प्लास्टिक की बोतलों को कम करती हैं।

-छात्रों को सड़क विक्रेताओं से पॉलिथीन कवर/बैग से बचने के लिए प्रोत्साहित करें।

iv) धातु अपशिष्ट का पुनर्चक्रण करें

-यूनिवर्सिटी का लगभग 10% कचरा धातु का कचरा है जिसमें धातु के डिब्बे, खाद्य पैकेजिंग सामग्री जैसी चीजें शामिल हैं। कचरे के इस हिस्से को पास के धातु रीसाइक्लिंग प्लांट में भेजा जाना चाहिए।

v) निर्माण और भूदृश्य अपशिष्ट का प्रबंधन करें

-निर्माण स्थलों पर निर्माण अपशिष्ट (सीमेंट बैग, कंक्रीट मलबा, प्लास्टिक सामग्री) का उचित प्रबंधन नहीं है। सजावटी पौधे और पेड़ लगाने के बाद प्लास्टिक की थैलियों का भी उचित निपटान नहीं किया जाता है। कचरे की इस श्रेणी को कम करने के लिए प्रासंगिक तंत्र अपनाए जाने चाहिए।

vi) प्रयोगशाला अपशिष्ट का प्रबंधन करें

-लैब का कचरा खतरनाक और जहरीला हो सकता है और इसलिए इसे सावधानी से संभालना चाहिए। वर्तमान में एसईईएस प्रयोगशाला में उत्पन्न प्रयोगशाला कचरे के लिए कोई विशिष्ट निपटान योजना नहीं है। प्रयोगशाला कचरे को संभालने के लिए उचित कार्रवाई की आवश्यकता है।

vii) अपशिष्ट प्रबंधन सेल बनाएं

- संकायों, छात्रों, प्रशासन और अन्य संबंधित हितधारकों से युक्त एक समर्पित अपशिष्ट प्रबंधन सेल होने से एनयू को प्लास्टिक कचरे को कम करने और नेट ज़ीरो, ग्रीन और सस्टेनेबल कैंपस लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

चित्र 3ए. छात्रों को अपशिष्ट प्रबंधन और हैंडलिंग टीम, नालंदा विश्वविद्यालय के सदस्यों के साथ देखा।

चित्र 3बी. परिसर के अंदर अपशिष्ट प्रबंधन प्रक्रिया

चित्र 3सी. एसईईएस के छात्रों द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के हिस्से के रूप में आयोजित गतिविधियाँ और परिसर के अंदर उत्पन्न होने वाले विभिन्न प्लास्टिक कचरे के प्रकार।

आमंत्रित व्याख्यान

पारिस्थितिकी और संरक्षण संस्कृति विज्ञान; इंटरनेट के युग में उभरते क्षेत्र।

वक्ता: प्रोफेसर इवान जारिक, पेरिस विश्वविद्यालय, सैकले, फ्रांस।

दिनांक और मोड: 23 नवंबर 2023, 15.00 से 16.30 बजे (ऑनलाइन)।

प्रोफेसर इवान ने अपने संबोधन की शुरुआत iEcology का परिचय देते हुए की और कंजर्वेशन कल्चरोमिक्स और सिटीजन साइंस के बीच अंतर समझाया। कल्चरोमिक्स अध्ययन का एक उभरता हुआ क्षेत्र है जो

डिजिटल ग्रंथों के बड़े निकायों में शब्द आवृत्तियों में परिवर्तन के मात्रात्मक विश्लेषण के माध्यम से मानव संस्कृति को समझने का प्रयास करता है। कल्चरोमिक्स अनुसंधान प्रकृति संरक्षण में अभ्यास करने वालों को सांस्कृतिक रुझानों पर प्रतिक्रिया करने, इसकी सामाजिक प्रासंगिकता का निर्माण करने और उसे पुनर्जीवित करने में मदद कर सकता है।

वे क्षेत्र जहां संरक्षण के अभ्यास और विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए सांस्कृतिक विज्ञान का उपयोग किया जा सकता है:

(1) संरक्षण-उन्मुख निर्वाचन क्षेत्रों को पहचानना और प्रकृति में सार्वजनिक रुचि का प्रदर्शन करना, (2) संरक्षण प्रतीकों की पहचान करना, (3) लगभग वास्तविक समय की पर्यावरणीय निगरानी और संरक्षण निर्णय लेने में सहायता के लिए नए मेट्रिक्स और उपकरण प्रदान करना, (4) आकलन करना संरक्षण हस्तक्षेपों का सांस्कृतिक प्रभाव, और (5) संरक्षण मुद्दों को तैयार करना और सार्वजनिक समझ को बढ़ावा देना।

कल्चरोमिक्स अनुसंधान का एक रोमांचक नया क्षेत्र खोलता है, जो संरक्षणवादियों को प्राकृतिक दुनिया के साथ मानवीय संबंधों का पता लगाने और उन्हें आकार देने के लिए नए उपकरणों से लैस करता है। उन्होंने iEcology (संरक्षण के लिए नवीन उपकरण) पर एक दर्जन से अधिक अध्ययन प्रस्तुत किए और पिछले दशक में अनुशासन के विकास को चित्रित किया।

पेरिस विश्वविद्यालय, सैकले, फ्रांस के डॉ इवान जारिक द्वारा आईइकोलॉजी पर ऑनलाइन व्याख्यान में तल्लीन छात्र और शिक्षक।

कार्यशाला का आयोजन: चक्रीय अर्थव्यवस्था और स्थिरता की ओर बस परिवर्तन

स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड एनवायरनमेंट स्टडीज (एसईईएस), नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा सोसाइटी फॉर एनवायरमेंट एजुकेशन एंड डेवलपमेंट (एसईईडी), लखनऊ और काउंसिल ऑन एनर्जी एनवायरनमेंट एंड वॉटर (सीईईडब्ल्यू), नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया गया।

22 एवं 23 फरवरी 2024, नालन्दा विश्वविद्यालय।

दो दिनों के विचार-विमर्श में भारत के भीतर और बाहर के विशेषज्ञों की सार्थक प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। इसके परिणामस्वरूप न्यायसंगत परिवर्तन और सतत विकास पर नालंदा अनुशंसा सामने आई।

Nalanda Recommendation on Just Transition and Sustainable Development

Nālandā UNIVERSITY

WORKSHOP ON JUST TRANSITION TOWARDS CIRCULAR ECONOMY & SUSTAINABILITY
School of Ecology and Environment Studies (SEES), Nalanda University
Society for Environment Education & Development (SEED), Lucknow
Council on Energy Environment and Water (CEEW), New Delhi
22 & 23 FEBRUARY 2024, NALANDA UNIVERSITY

[14] Green infrastructure and technology investment should be ensured to mitigate greenhouse gas emissions and build climate resilience. Research and innovation in clean energy, sustainable agriculture, water management, and ecosystem restoration should be supported in academic and research institutions.

[15] Closing the Loop: A Blueprint for a Plastic-Free Tomorrow: Conveys the idea of a closed-loop system where plastics are recycled and repurposed rather than discarded. Due to its versatility, plastic waste is crucial for fostering a sustainable environment. There is a need to empower youth, specifically students, to take an active role in reducing the ecological footprint, promoting recycling, and creating a culture of responsible waste management.

[16] Awareness about greenwashing should be created on a broader scale, specifically misleading claims about environmental practices, making products or practices appear more environmentally friendly than they are. There is a need to assess eco-friendly claims critically and scientifically for consumers to make informed choices that contribute to sustainability rather than fall prey to deceptive marketing tactics.

Prof. Dr R. Jaishanker
Dean, School of Ecology
and Environment Studies
Nalanda University.

Prof. Dr Vimal Katiyar
Dean (Research)
Indian Institute of Technology
Guwahati.

Dr Ram Boojh
Society for Environment
Education and Development
fmr. UNESCO/UNEP Ecology Advisor.

Dr Vaibhav Chaturvedi
Fellow, Council on
Energy, Environment and Water
New Delhi.

22 February 2024
Rajgir, India.

WORKSHOP ON JUST TRANSITION TOWARDS CIRCULAR ECONOMY & SUSTAINABILITY
School of Ecology and Environment Studies (SEES), Nalanda University
Society for Environment Education & Development (SEED), Lucknow
Council on Energy Environment and Water (CEEW), New Delhi
22 & 23 FEBRUARY 2024, NALANDA UNIVERSITY

उचित परिवर्तन और सतत विकास पर नालंदा अनुशंसाओं का विमोचन। बाएं से दाएं: प्रोफेसर डॉ. विमल कटियार, डीन, आईआईटी गुवाहाटी, डॉ. विभव चतुर्वेदी, सीनियर फेलो, सीईईडब्ल्यू, नई दिल्ली; डॉ. राम बूझ, निदेशक, एसईईडी लखनऊ, प्रोफेसर डॉ. आर. जयशंकर, डीन एसईईएस, नालंदा विश्वविद्यालय, प्रोफेसर डॉ. अभय कुमार सिंह मानद कुलपति (आई), नालंदा विश्वविद्यालय, डॉ. आर.पी. सिंह परिहार, रजिस्ट्रार, नालंदा विश्वविद्यालय।

छात्र बहस

05 अप्रैल 2024 को सुबह 11.30 बजे "औद्योगिक देश विकासशील देशों के लिए रोल मॉडल हैं, जो औद्योगिक देशों के समान अतिउपभोग के समान स्तर प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं" विषय पर एक छात्र बहस आयोजित की गई थी।

एसईईएस (सेम2) के छात्रों को दो समूहों में विभाजित किया गया और उन्होंने केंद्रीय विचार के पक्ष और विपक्ष में तर्क दिया। इस सुव्यवस्थित गतिविधि ने छात्रों को आलोचनात्मक सोच, सार्वजनिक भाषण और नेतृत्व गुण विकसित करने की अनुमति दी।

एसईईएस कक्षा में चल रही छात्र बहस का एक स्नैपशॉट।

कैम्पस की गतिविधियाँ

विश्व पर्यावरण दिवस 2023

नालंदा विश्वविद्यालय के पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन स्कूल ने 05 जून, 2023 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का बीड़ा उठाया। इस दिन को नालंदा विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण अभियान के रूप में मनाया गया। परिसर में एक निर्दिष्ट स्थान पर देशी पेड़ों के 51 पौधे लगाए गए। अभियान का उद्घाटन माननीय कुलपति (प्रभारी) प्रोफेसर डॉ. अभय सिंह ने किया और इसमें विश्वविद्यालय के कई संकाय और प्रशासनिक कर्मचारियों ने भाग लिया। वृक्षारोपण अभियान के बाद प्रोफेसर आर. जयशंकर का एक सूचनात्मक व्याख्यान और प्लास्टिक अपशिष्ट: खतरे और चुनौतियां पर एक मल्टी-मीडिया प्रस्तुति हुई।

चित्र 4. नालंदा विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस 2023 के स्मरणोत्सव की झलकियाँ।

उपेक्षित चट्टानी चट्टानों का संरक्षण

भारतीय वन्यजीव संस्थान से प्रशिक्षित पारिस्थितिकीविज्ञानी और नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन, बैंगलोर के वरिष्ठ शोधकर्ता श्री जितिन विजयन ने 9 मई, 2024 को एसईईएस का दौरा किया और एसईईएस छात्रों के साथ बातचीत की।

उन्होंने अपने वर्तमान शोध पर चर्चा की, जो भारत में उपेक्षित रॉक आउटक्रॉप्स के संरक्षण पर केंद्रित है। उन्होंने OCELOTS (उष्णकटिबंधीय प्रणालियों की अनुभवात्मक शिक्षा के लिए ऑनलाइन सामग्री) नेटवर्क के लिए एक ऑनलाइन शिक्षण मॉड्यूल (नीचे लिंक) विकसित करने का अपना अनुभव साझा किया। OCELOTS उष्णकटिबंधीय पारिस्थितिकी में शिक्षण मॉड्यूल की एक ओपन-एक्सेस, ऑनलाइन संसाधन लाइब्रेरी बनाने के लिए उष्णकटिबंधीय पारिस्थितिकी शोधकर्ताओं, सक्रिय शिक्षण शिक्षाशास्त्र विशेषज्ञों, सॉफ्टवेयर डेवलपर्स और मीडिया विशेषज्ञों को एक साथ लाता है। इन मॉड्यूल का उद्देश्य सांस्कृतिक और भौगोलिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाकर, पारिस्थितिकी में सिद्धांत-आधारित तर्क और मात्रात्मक कौशल को बढ़ाकर और छात्रों के जीव विज्ञान सीखने के तरीके को बदलकर स्नातक जीव विज्ञान पाठ्यक्रमों में उत्साह जगाना है।

अमेरिकी सरकार स्नातक जीव विज्ञान शिक्षा में अनुसंधान समन्वित नेटवर्क में राष्ट्रीय विज्ञान फाउंडेशन के कार्यक्रम के माध्यम से OCELOTS को वित्त पोषित करती है। OCELOTS कार्यशालाओं का आयोजन और नेतृत्व करता है जो नेटवर्क प्रतिभागियों को नवीन, इंटरैक्टिव शिक्षण सामग्री बनाकर और इन सामग्रियों को दुनिया भर में आसानी से अनुकूलित करने के लिए साझा करने के साधनों को विकसित करके एक सुलभ तरीके से स्नातक जीव विज्ञान पाठ्यक्रम में उष्णकटिबंधीय जीव विज्ञान लाने में सक्षम बनाता है।

श्री वी. जितिन ने एसईईएस के छात्रों को चट्टानी परिदृश्यों से प्रभावित राजगीर पहाड़ियों की रॉक आउटक्रॉप जैव विविधता का अध्ययन करने के बारे में वास्तविक क्षेत्र की स्थितियों में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया।

बदलती चट्टानें हमें चट्टानी क्षेत्र में रहने वाले जानवरों पर भूमि-उपयोग परिवर्तन के प्रभावों के बारे में क्या बता सकती हैं?

समावेशी शिक्षाशास्त्र: आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने में भूमिका निभाना:

संरक्षण पारिस्थितिकी पाठ्यक्रम के सेमेस्टर II के भाग के रूप में, छात्रों को भूमिका दृश्य और अभिनय परिदृश्य के लिए आमंत्रित किया गया था। प्रस्तुत चुनौतियों (परिदृश्यों) को कैसे संबोधित किया जाए, इस पर सुझाव प्राप्त किए गए। यह नालंदा विश्वविद्यालय के एम्फीथिएटर में आयोजित एक इंटरैक्टिव सत्र था।

समझने के लिए भूमिका निभाने की झलकियाँ

अल्पकालिक कार्यक्रम

डॉ. सत्यनारायण शास्त्री ने अप्रैल-मई 2023 के दौरान भू-सूचना विज्ञान पर एक अल्पकालिक कार्यक्रम प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम ऑनलाइन आयोजित किया। भाग लेने वाले सोलह छात्रों में से बारह ने सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूरा किया।

प्रयोगशाला के बारे में

प्रयोगशाला पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन स्कूल, नालंदा विश्वविद्यालय में शैक्षणिक कार्यक्रमों का एक अभिन्न अंग है। इसका उपयोग मास्टर के छात्रों और डॉक्टरेट शोधकर्ताओं दोनों द्वारा किया जाता है। प्रयोगशाला के दो पंख हैं: क्रमशः सूखा और गीला। इसमें अनुसंधान प्रयासों की एक विस्तृत श्रृंखला का समर्थन करने के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं हैं।

ड्राई लैब कम्प्यूटेशनल और सॉफ्टवेयर संसाधनों से सुसज्जित है, जिसमें रिमोट सेंसिंग डेटा विश्लेषण और भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस), जीवन चक्र मूल्यांकन (एलसीए), पर्यावरण डेटा एनालिटिक्स और तकनीकी-आर्थिक विश्लेषण (टीईए) की क्षमताएं शामिल हैं।

वेट विंग में इन्वेंट्री यूवी-विज़ स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, टीओसी एनालाइजर, केजेल्डहल एनालाइजर, फ्यूम हुड, माइक्रोवेव, ऑप्टिकल माइक्रोस्कोप, ओवन, मफल फर्नेस, रेफ्रिजरेटर, बीओडी इनक्यूबेटर, सीओडी इनक्यूबेटर, छलनी शेकर, बैलेंस, कॉलम सेटअप, वॉटर डिस्टिलेशन से फैली हुई है। यूनिट, स्टिरर और डेसीकेटर। ये पौधे, पानी, मिट्टी और हवा के विश्लेषण में मदद करते हैं और मुख्य रूप से घरेलू छात्रों और शोधकर्ताओं की विश्लेषणात्मक जरूरतों को पूरा करते हैं। जिन मापदंडों का आमतौर पर विश्लेषण किया जाता है उनमें पीएच, ईसी, टीडीएस, डीओ, टीओसी, टीएन और पीने योग्य पानी में अनुमापन या स्पेक्ट्रोफोटोमेट्रिक तकनीकों के माध्यम से सीधे मापा या निर्धारित भारी धातुएं शामिल हैं। भौतिक और रासायनिक गुणों और सूक्ष्म मौसम संबंधी माप के लिए मिट्टी का नमूना विश्लेषण।

इसके अलावा, प्रयोगशाला नैनो और सूक्ष्म आकार के प्रदूषकों को चिह्नित करने और छोटे पैमाने पर प्रदूषक परिवहन प्रयोगों का संचालन करने के लिए सुसज्जित है। क्षेत्र-स्तरीय जांच के लिए, प्रयोगशाला जल स्तर डेटा, भूजल प्रवाह पैटर्न और हाइड्रोलिक चालकता माप सहित हाइड्रोजियोलॉजिकल जानकारी की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती है। हम जल गुणवत्ता मापदंडों (जैसे, पीएच, ईसी, टीडीएस, डीओ) का विश्लेषणात्मक माप भी प्रदान करते हैं और जीपीएस, कैमरा ट्रैप और दूरबीन जैसे उपकरणों के माध्यम से

पारिस्थितिक माप की सुविधा प्रदान करते हैं। विभिन्न क्षेत्रीय अध्ययनों के लिए मिट्टी के नमूने और खुदाई करने वालों सहित क्षेत्रीय उपकरणों का एक वर्गीकरण उपलब्ध है।

लैब को लगातार अपग्रेड किया जा रहा है। हम कुछ और उपकरण (जैसे, एएएस, आईसीपी-एमएस, हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग सेंसर) प्राप्त करने की आशा करते हैं।

प्रयोगशाला उपयोग की सीमा

एसईईएस प्रयोगशाला कई पाठ्यक्रमों में प्रयोगों की सुविधा प्रदान करके शैक्षिक कार्यक्रमों का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन पाठ्यक्रमों में पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण जल विज्ञान, दूषित जल विज्ञान, अपशिष्ट प्रबंधन और मृदा पर्यावरण में नैनोमटेरियल्स शामिल हैं। प्रयोगशाला की वाद्य क्षमताओं का उपयोग मिट्टी, पानी और वायु विश्लेषण के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है, जिसमें कई उपकरण सक्रिय रूप से कार्यरत हैं।

प्रयोगशाला मास्टर शोध प्रबंध करने वाले छात्रों के लिए एक जीवंत केंद्र है। ये छात्र व्यापक प्रयोगशाला या क्षेत्र प्रयोगों से युक्त विविध अनुसंधान परियोजनाओं में लगे हुए हैं। उनके काम का दायरा अलग-अलग होता है, और कुछ लोग प्रयोगशाला से संबंधित गतिविधियों पर केंद्रित स्वतंत्र अध्ययन के अवसरों का विकल्प चुनते हैं। उचित रिकॉर्ड-कीपिंग सुनिश्चित करने के लिए, टीओसी एनालाइज़र, केजेल्डहल एनालाइज़र और स्पेक्ट्रोफोटोमीटर जैसे प्रमुख उपकरणों के लिए लॉगबुक पेश की गई हैं। इसके अतिरिक्त, छात्रों के पास चुनिंदा पाठ्यक्रमों में उपयोग के लिए जीपीएस डिवाइस, फ़ील्ड-स्तरीय पीएच और ईसी मीटर और जल-स्तर मीटर सहित छोटे फ़ील्ड उपकरण उधार लेने का विकल्प होता है। उधार लिए गए उपकरणों के लिए, उनके उपयोग को ट्रैक करने के लिए लॉगबुक का सावधानीपूर्वक रखरखाव किया जाता है।

संरक्षा विशेषताएं

एसईईएस प्रयोगशाला में सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है, और छात्रों और कर्मचारियों दोनों की सुरक्षा के लिए कड़े उपाय किए गए हैं। प्रयोगशाला में उपयोग किए जाने वाले सभी रसायनों के लिए एक सामग्री सुरक्षा डेटा शीट (एमएसडीएस) रजिस्टर का सावधानीपूर्वक रखरखाव किया जाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि सुरक्षा जानकारी आसानी से उपलब्ध है। इसके अलावा, अतिरिक्त एहतियाती उपाय के रूप में हाल ही में एक अग्निशामक यंत्र स्थापित किया गया है। हम कठोर सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करते हैं, खासकर जब केंद्रित एसिड, मजबूत आधार और अन्य संभावित खतरनाक रसायनों को संभालते हैं। छात्रों

को प्रयोगशाला कर्मचारियों की उपस्थिति में काम करने के लिए लगातार याद दिलाया जाता है, खासकर विशेष उपकरणों का उपयोग करते समय।

चित्र 5बी. एसईईएस प्रयोगशाला (डिजिटल)

ऐतिहासिक अध्ययन स्कूल

ऐतिहासिक अध्ययन स्कूल का लक्ष्य एक जीवंत वातावरण प्रदान करना है जो महत्वपूर्ण और समावेशी ऐतिहासिक जांच और विश्लेषण को प्रोत्साहित करता है। इंटरैक्टिव निर्देशात्मक विधियां और व्यापक पाठ्यक्रम जो विषयों को फैलाते हैं, उन मूल्यों, कौशल और ज्ञान पर जोर देते हैं जो ठीक उन्हीं पंक्तियों के साथ अतीत को फिर से बनाने के लिए प्रासंगिक हैं। स्कूल में छात्रों को एक ऐसी छात्रवृत्ति के निर्माण के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण, दृष्टिकोण और तरीकों की कठोरता का मार्गदर्शन दिया जाता है जो नए प्रश्न उठाता है, नई अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करता है, और नालंदा परंपरा की ऐतिहासिक विरासत और ताकत को ध्यान में रखते हुए वर्तमान को बदलने के रास्ते खोलता है।

ऐतिहासिक अध्ययन स्कूल संकाय सदस्यों और स्नातक छात्रों का एक गतिशील समुदाय है। स्कूल ऐतिहासिक कल्पना से संबंधित मौलिक प्रश्नों की एक खुली लेकिन कठोर, वैज्ञानिक जांच करता है। स्कूल एशियाई और गैर-एशियाई संदर्भों में समय, स्मृति और इतिहास के बीच अंतर्संबंधों को फिर से परिभाषित करने और पुनर्विचार करने के लिए समर्पित है।

ऐतिहासिक अध्ययन स्कूल में संकाय मानव समझ के लिए महत्वपूर्ण सभी प्रश्नों को शामिल करने के लिए ऐतिहासिक अध्ययन करता है। इन प्रश्नों में शामिल है कि मनुष्य अतीत को कैसे बनाते या समझते हैं, अतीत की ऐतिहासिक समझ वर्तमान को कैसे बदल सकती है, और वर्तमान अतीत से कैसे निर्मित या निर्मित होता है।

स्कूल में संकाय सदस्य मानवविज्ञान, समाजशास्त्र, पुरातत्व, धार्मिक अध्ययन, दर्शन, आर्थिक इतिहास, राजनीति विज्ञान, अंतरराष्ट्रीय संबंध, भाषाशास्त्र, दृश्य अध्ययन सहित इतिहास के अपने शोध और शिक्षण को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की पद्धतियों और अनुशासनात्मक पृष्ठभूमि को जोड़ते हैं। और कला इतिहास.

स्कूल में छात्र वैश्विक इतिहास, सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, बौद्धिक, कला, धार्मिक और मौखिक और दृश्य इतिहास की आलोचनात्मक समझ विकसित करने की उम्मीद कर सकते हैं। ऐतिहासिक अध्ययन स्कूल ऐसे अनुसंधान को शुरू करने और बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है जो ऐतिहासिक एजेंटों और ताकतों की श्रेणियों, अवधारणाओं और संदर्भों की गहरी समझ के साथ शुरू होता है। साथ ही, जब हम अतीत की व्याख्या और पुनर्निर्माण करते हैं तो यह मानवीय अनुभव की अनुमानित सार्वभौमिक श्रेणियों के साथ गंभीर रूप से जुड़ता है।

एसएचएस मास्टर पाठ्यक्रम: सेमेस्टर - I [पतन 2022]

(फाउंडेशनल पाठ्यक्रम)

16 क्रेडिट

 4 मुख्य पाठ्यक्रम (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

1. विश्व इतिहास: एक सिंहावलोकन

2. एशिया में सभ्यताओं का जन्म

3. भारत का सांस्कृतिक इतिहास

4. इतिहास और पुरातत्व

 कैफेटेरिया मॉडल के तहत 1 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट)

• दक्षिण एशियाई इतिहास

• भारत का समुद्री इतिहास

 1 सेमिनार कोर्स (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर – II [वसंत 2023] (ब्रिज पाठ्यक्रम)

16 क्रेडिट

 3 मुख्य पाठ्यक्रम (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

 भारतीय कला, सौंदर्य और वास्तुकला

 जातीय पुरातत्व

 एशिया और उससे आगे के मार्ग

 कैफेटेरिया मॉडल के तहत 2 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट)

 दक्षिण एशिया का प्रागैतिहासिक और आद्य-ऐतिहासिक पुरातत्व

 भारत का आर्थिक इतिहास

 चिंतनशील परंपराएँ: भारत और चीन

 1 सेमिनार कोर्स (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - III [पतन 2022] (उन्नत पाठ्यक्रम)

16 क्रेडिट

• 2 मुख्य पाठ्यक्रम (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

• हिंद महासागर में समुद्री अंतर्संबंध: संस्कृति को पोर्टेबल बनाना

• ऐतिहासिक पुरातत्व

• कैफेटेरिया मॉडल के तहत 3 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट)

• भक्ति संस्कृतियों का इतिहास: भारत में सूफीवाद और भक्ति

• सदियों से भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंध

• विज्ञान और प्रौद्योगिकी का इतिहास

- भारत और दक्षिण पूर्व एशिया
- युगों के माध्यम से नालंदा: खंडहरों से सीखना

• 1 सेमिनार कोर्स (1 क्रेडिट)

सेमेस्टर - IV [वसंत 2023] (विशेष पाठ्यक्रम)

16 क्रेडिट

• 1 मुख्य पाठ्यक्रम (प्रत्येक 3 क्रेडिट)

• फ्रेमिंग इतिहास: इतिहासलेखन

• कैफेटेरिया मॉडल के तहत 1 वैकल्पिक पाठ्यक्रम (3 क्रेडिट)

• पर्यावरण इतिहास

• भारतीय पुनर्जागरण [1757-1917]

• 1 सेमिनार कोर्स (1 क्रेडिट)

• 1 निबंध (9 क्रेडिट)

संकाय

नाम	पदनाम
अभय कुमार सिंह	प्रोफेसर एवं डीन; और
राजीव रंजन चतुर्वेदी	अंतरिम कुलपति
श्रीषा उडुपा	सह - प्राध्यापक
कशशफ गनी	सह - प्राध्यापक
एलोरा ट्राइबेडी	सहायक प्रोफेसर
प्रांशु समदर्शी	सहायक प्रोफेसर
तोसाबंता पधान	सहायक प्रोफेसर
अमिता सत्याल	शिक्षण साथी
मारियस प्रोकोपोविक्ज़	विजिटिंग फैकल्टी (एसोसिएट प्रोफेसर)

एसएचएस शैक्षणिक उपलब्धियां और गतिविधियां (अप्रैल 2022-जुलाई 2023)

संकाय प्रकाशन	24
आमंत्रित वार्ता सहित प्रस्तुतियों, सेमिनारों/सम्मेलनों में भाग लिया	31
पीएचडी थीसिस का पर्यवेक्षण किया गया	4
मास्टर के शोध प्रबंध निर्देशित	21
प्रतिष्ठित/आमंत्रित व्याख्यान	6
ऑनलाइन प्रमाणपत्र/अल्पकालिक कार्यक्रम	2
पत्रिकाओं का संपादक/संपादकीय मंडल	1

पुस्तकें/पुस्तक अध्याय/लेख

चतुर्वेदी, आर. आर., "बदलते युग में आसियान और भारत के बीच सांस्कृतिक संबंध" प्रबीर डे (सं.), थर्टी इयर्स ऑफ आसियान-इंडिया रिलेशंस: टुवार्ड्स इंडो-पैसिफिक, नई दिल्ली: द एशिया फाउंडेशन और केडब्ल्यू पब्लिशर्स, 2023, पीपी 319-330.

चतुर्वेदी, आर. आर., "आसियान-इंडिया रैप्सोडी ऑफ कल्चरल एक्सचेंजेस", टॉमी कोह, हर्नैख सिंह और मो थुजर (सं.), आसियान एंड इंडिया: द वे फॉरवर्ड, सिंगापुर: वर्ल्ड साइंटिफिक, 2023, पीपी. 111-117 में।

चतुर्वेदी, आर. आर., "बंगाल की खाड़ी में भारत की नीली अर्थव्यवस्था का मानचित्रण: अवसर और बाधा", जर्नल ऑफ़ द इंडियन ओशियन रीजन, खंड 18, 2022 - अंक 2: स्वर्गीय डॉ. सैम बेटमैन को समर्पित विशेष खंड, पृष्ठ 99-115 .

चतुर्वेदी, आर. आर., "द बे एंड बिम्सटेक: अपॉच्र्युनिटीज़ एंड इम्पेरेटिव्स", पूर्वोदय (सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान की द्विभाषी पत्रिका), वॉल्यूम। तृतीय, अंक क्रमांक 2, मार्च-अप्रैल 2023।

चतुर्वेदी, आर. आर., "शांत कूटनीति दक्षिण चीन सागर तनाव को कम कर सकती है", द हिंदू, 13 जुलाई 2023।

चतुर्वेदी, आर. आर., "रीडिस्कवरिंग द बे ऑफ बंगाल", द हिंदू, 29 सितंबर, 2022।

चतुर्वेदी, आर. आर., "बंगाल की खाड़ी की बहुसंख्यक भूमिका" (बंगाल की खाड़ी की बढ़ती भूमिका), प्रभात खबर, 29 सितंबर 2022।

चतुर्वेदी, आर. आर., "भारत-वियतनाम संबंध, मजबूत से मजबूत की ओर", द हिंदू, 21 जुलाई 2022।

गनी, के., "क्रिएटिंग स्पेस फॉर पाइटी एंड डायलॉग: नॉर्थ अमेरिकन सूफी डिवोशनलिज्म", जर्नल ऑफ इकोनामिकल स्टडीज, वॉल्यूम 57, नंबर 2, स्प्रिंग 2022

गनी, के., "द एंशिएंट पोर्ट ऑफ़ ताम्रलिप्ति: इंडियाज़ विंडो टू द बे एंड बियॉन्ड", पूर्वोदय, वॉल्यूम। 3, क्रमांक 1, जनवरी-फरवरी 2023

गनी, के., "भारत की विरासत के प्रतीक के रूप में मंदिर", पूर्वोदय, खंड। 1, क्रमांक 6, सितंबर-अक्टूबर 2022

गनी, के., "दारा शुकोह (1615-1659), एस.आर. में।" भट्ट और नीरजा अरुण गुप्ता (संस्करण), भारतीय दार्शनिकों और विचारकों का पैनोरमा, विश्वकोश संग्रह, सांची बौद्ध-इंडिक अध्ययन विश्वविद्यालय, भोपाल, 2023

ग़नी, के., "लोकेटिंग द अर्ली मॉडर्न इन साउथ एशियन सूफ़ीज़म", मीना भार्गव और प्रत्यय नाथ (संस्करण) में, द अर्ली मॉडर्न इन साउथ एशिया: क्वेरिंग मॉडर्निटी, पीरियोडाइज़ेशन, एंड हिस्ट्री, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2022

गनी, के., "मध्यकालीन बंगाल में सूफ़ीवाद की अभिव्यक्तियाँ", ए.के.एम. में शाहनवाज (सं.), ऐतिहासिक अब्दुल करीम: जिबोन ओ कर्मा, इतिहास अकादमी, ढाका, 2022

गनी, के., "हसन राजा के भक्ति गीतों में सांस्कृतिक बहुलवाद", काजी सुफीर रहमान (सं.), दक्षिण एशिया और परे में इस्लामी आध्यात्मिकता के आयाम, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता, 2022

पधान, टी. एट.अल. 2022. नरसिंहपुर, नर्मदा घाटी क्षेत्र (मध्य भारत) में चतुर्धातुक भूविज्ञान और कशेरुकी पेलियोन्टोलॉजिकल घटनाओं पर नए क्षेत्र अवलोकन, जियोलॉजिकल सोसायटी, लंदन, विशेष प्रकाशन, 515 (प्रकाशन के लिए स्वीकृत)। डीओआई: https://doi.org/10.1144/SP515-2020-243 (अंतर्राष्ट्रीय)

पधान, टी. और आलोक कुमार कानूनगो। 2023. दफन पुरातत्व: भारत में हड़प्पा कब्रें और एक नीति दस्तावेज़ की आवश्यकता, पुरातत्व और मानव विज्ञान ओपन एक्सेस, 4 (4), 00061 (डीओआई: https://10.31031/AAOA.2023.04.000610)। (अंतरराष्ट्रीय)

पधान, टी. 2023. पश्चिमी ओडिशा में शिकार इकट्ठा करने की परंपराओं का नृवंशविज्ञान, (पी. गोयल, अभ्यान, जी.एस., और एस. चन्नारायपटना एड.) दक्षिण एशिया में परिदृश्य, पर्यावरण और मनुष्यों को एकीकृत करते हुए पुरातत्व में पशु, पुरातत्व विभाग, विश्वविद्यालय केरल का, पृष्ठ 197-210।

पधान, टी. 2023. मेघालय में गनोल, नदी बेसिन, पश्चिम गारो हिल्स में पुरातात्विक जांच, रॉक कला पर विशेष जोर के साथ पूर्वोत्तर भारत में प्रागैतिहासिक और पुरातात्विक संस्कृतियों की समानताएं और विस्तार, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) नई दिल्ली .

ट्राइबेडी, ई., "स्मॉल लाइफ़ मैटर: रिलोकेटिंग एंड रीअसेसिंग गोधा, द इंडियन मॉनिटर लिज़र्ड, इन इंडियन आर्ट एंड लिटरेचर, एनिमल्स इन आर्कियोलॉजी: इंटीग्रेटिंग लैंडस्केप्स, एनवायरनमेंट एंड ह्यूमन्स इन

साउथ एशिया, वॉल्यूम 2 (पंकज गोयल, अभयान जी.एस., और शारदा चन्नरायपटना एड.), पीपी. 545-568। तिरुवनंतपुरम: पुरातत्व विभाग, केरल विश्वविद्यालय।
2022.

ट्राइबेडी, ई., "ओड टू द ग्रेट क्वीन ऑफ स्पेल्स: सिरपुर के अद्वितीय बौद्ध धातु-टुकड़े में आइकोनोग्राफिक प्रोग्राम का पुनर्मूल्यांकन" भारतीय कला और पुरातत्व के नए पहलुओं में, सी. बी. पाटिल और विनय कुमार द्वारा संपादित, पीपी। शारदा पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली, पृ. 177-193

ट्राइबेडी, ई., "सिनलेस्स पिटीशन: ए हाल ही में पुनर्प्राप्त की गई पचना हिल, बिहार से वज्रतारा मंडल की अंकित छवि" जर्नल ऑफ बंगाल आर्ट, वॉल्यूम में। 26, इंटरनेशनल सेंटर फॉर स्टडी ऑफ बंगाल आर्ट, ढाका, बांग्लादेश, पीपी.711-738, आईएसएसएन 1607-1344।

ट्राइबेडी, ई., "फ्रॉम ट्राइबल टू सेक्रेड: द चेंजिंग गेज़ ऑन गोधा (इंडियन मॉनिटर लिज़र्ड) इन एंटिकिटी" बर्लिनर इंडोलॉजिशे स्टडीयन/बर्लिन इंडोलॉजिकल स्टडीज, वॉल्यूम 26, वीडलर बुचवरलाग, बर्लिन, जर्मनी, पीपी. 7-38, आईएसबीएन 978-3-89693-771-1.

सत्याल, ए. "एक नए प्रकार का समुद्री इतिहास।" कलाकल्प आईजीएनसीए जर्नल ऑफ आर्ट्स। खंड VII, संख्या 1 (जुलाई 2022): 1-22।

प्रबीर डे (सं.) में "बदलते युग में आसियान और भारत के बीच सांस्कृतिक संबंध", एईएएन-भारत संबंधों के तीस साल: इंडो-पैसिफिक की ओर, नई दिल्ली: एशिया फाउंडेशन और केडब्ल्यू पब्लिशर्स, 2023, पीपी.319-330 .

“आसियान-भारत सांस्कृतिक आदान-प्रदान की लय: टॉमी कोह, हर्नाइख सिंह और मो थुज़ार (संस्करण), आसियान और भारत: आगे का रास्ता, सिंगापुर: विश्व वैज्ञानिक, 2023, पीपी., 111-117 में।

"सॉफ्ट डिप्लोमेसी के माध्यम से भारत-दक्षिणपूर्व एशिया संबंधों को बढ़ाना", मेकांग-गंगा नीति संक्षिप्त #13, आसियान भारत केंद्र, विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली, जनवरी 2024।

बारिक. के, टी. पधान, एस. झंकार, एस. मिश्रा, एस.आर.नायक, 2023. कलंगापाली साइट से माइक्रोलिथिक असेंबल, मध्य ओंग घाटी, ओडिशा, पूर्वी भारत, जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजिकल स्टडीज इन

इंडिया, वॉल्यूम 3 (1), आईएसएसएन: 2582 -9831, एआरएफ, प्रकाशन, नई दिल्ली। डीओआई: https://doi.org/10.47509/JASI.2023.v03i01.01

ट्राइबेडी, एलोरा। अलोका परासर सेन द्वारा संपादित अध्याय "फोर्ज्ड थ्रू मल्टीपल एंटिटीज: रीविजिटिंग अर्बन लैंडस्केप्स ऑफ अर्ली ओडिशा", हैंडबुक ऑन अर्बन हिस्ट्री ऑफ अर्ली इंडिया, स्प्रिंगर नेचर स्विट्जरलैंड एजी, गेवरबेस्ट्रैस 11, 6330 चाम, स्विट्जरलैंड, पीपी.321-341; आईएसबीएन: 978-981-97-6229-3

(आगामी) ट्राइबेडी, एलोरा। इतिहस्बिद ओ अतित-लिखन: प्राचीन भारत में "अबिश्वरनिया राखलदास बंद्योपाध्याय", डॉ. कणाद सिन्हा द्वारा संपादित, बुकपोस्ट प्रकाशन, कोलकाता, भारत (बंगाली में)

(आगामी) ट्राइबेडी, एलोरा, वर्मा, अतुल कुमार। "भूमिका के प्रसारण की पहेली: तेलहारा, बिहार से आर्य-अष्टमहाभय तारा की एक अप्रकाशित छवि," जर्नल ऑफ बंगाल आर्ट, इंटरनेशनल सेंटर फॉर स्टडी ऑफ बंगाल आर्ट, वॉल्यूम 29, ढाका, बांग्लादेश, आईएसएसएन 1607-1344, पीपी। 223-245

प्रस्तुतियाँ/सेमिनार/सम्मेलन/आमंत्रित वार्ता (सत्र की अध्यक्षता सहित)

1. चतुर्वेदी, आर. आर., दिल्ली डायलॉग (भारत का प्रमुख वार्षिक ट्रैक 1.5 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन) XII: इंडो-पैसिफिक में पुलों का निर्माण में भाग लिया। 16-17 जून 2022 नई दिल्ली में।

2. 22 जुलाई 2022 को आईएसईएएस-यूसोफ इशाक इंस्टीट्यूट वेबिनार में चतुर्वेदी, आर. आर., 'वियतनाम - भारत व्यापक रणनीतिक साझेदारी: वास्तविक महत्व या झूठा वादा?'

3. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा आयोजित प्रोजेक्ट मौसम - "जलाधिपुरयात्रा" पर पहले राष्ट्रीय सम्मेलन में, हिंद महासागर के किनारे के देशों के साथ अंतर-सांस्कृतिक संबंधों की खोज में, "आसियान-भारत सांस्कृतिक आदान-प्रदान का पुनर्जीवन",

5. चतुर्वेदी, आर.आर. -6 सितंबर 2022. प्रोजेक्ट मौसम पर पहले राष्ट्रीय सम्मेलन - "जलाधिपुरयात्रा" में "अमूर्त सांस्कृतिक विरासत लिंक और पूरे हिंद महासागर में आदान-प्रदान" पर एक सत्र की अध्यक्षता और संचालन चतुर्वेदी, आर. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, 5-6 सितंबर 2022।

6. सर्टिफिकेट प्रोग्राम में चतुर्वेदी, आर.आर., "बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में नीली अर्थव्यवस्था, ऊर्जा और अन्य संसाधन" - बंगाल की खाड़ी एक परिचय, बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र, नालंदा विश्वविद्यालय, 20 सितंबर 2022।

7. भारत सरकार के आंतरिक थिंक-टैंक, समकालीन चीन अध्ययन केंद्र (सीसीसीएस) में चतुर्वेदी, आर.आर., "चीन और दक्षिण पूर्व एशिया: परिधि में प्रभाव", 'चीन की विदेश नीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध' पर प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी नए युग में', 18-19 अक्टूबर 2022 को सुषमा स्वराज भवन, रिज़ल मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली, भारत में।

8. गनी, के., फ़ारसी कॉस्मोपोलिस और ट्रांस-रीजनल रिलेशंस, "इंडो-फ़ारसी हेरिटेज" पर लघु अवधि ऑनलाइन पाठ्यक्रम, नालंदा विश्वविद्यालय, 06 मई 2023।

9. गनी, के., दक्षिण एशिया में सूफीवाद का बदलता चेहरा, सांस्कृतिक कूटनीति, सांस्कृतिक संवर्धन और सार्वजनिक संपर्क तकनीक पर कार्यशाला, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर), कोलकाता, 15 जुलाई 2022।

10. गनी, के., प्रोफेसर फ्रैंक जे. कोरोम, इस्लामिक एशिया में अध्ययन केंद्र, तुलनात्मक साहित्य विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, 06 जनवरी 2023 द्वारा 'दक्षिण एशियाई डायस्पोरा में सूफीवाद का लोकतंत्रीकरण' पर एक व्याख्यान की अध्यक्षता की।

11. सत्याल, अमिता। "स्पाइस रूटों को पुनर्जीवित करना: वैश्विक चुनौतियों का उत्तर देना।" रिसर्च सेंटर फॉर सोसाइटी एंड कल्चर, नेशनल रिसर्च एंड इनोवेशन एजेंसी (बीआरआईएन), जकार्ता, इंडोनेशिया के सहयोग से नेगेरी रेम्पा फाउंडेशन द्वारा आयोजित स्पाइस रूट 2022 पर अंतर्राष्ट्रीय फोरम में मुख्य वक्ता, 20-23 सितंबर 2022। ऑनलाइन।

12. सत्याल, अमिता। "नीले रंग में संस्कृति: संस्कृति को पोर्टेबल बनाना - बंगाल की खाड़ी।" बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र, नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित व्याख्यान, लघु अवधि पाठ्यक्रम ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला, बंगाल की खाड़ी: एक परिचय, 26 सितंबर 2022। ऑनलाइन।

13. सिंह, ए.के., "बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में कला और वास्तुकला", सर्टिफिकेट प्रोग्राम में - बंगाल की खाड़ी एक परिचय, बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र, नालंदा विश्वविद्यालय, 19 सितंबर 2022।

14. सिंह, ए.के., "फ़ारस की खाड़ी में भारतीय विरासत", प्रोजेक्ट मौसम पर पहले राष्ट्रीय सम्मेलन में - "जलाधिपुरयात्रा", भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा आयोजित हिंद महासागर रिम देशों के साथ क्रॉस-सांस्कृतिक संबंधों की खोज, 5 -6 सितंबर 2022.

15. सिंह, ए.के. ने प्रोजेक्ट मौसम पर पहले राष्ट्रीय सम्मेलन - "जलाधिपुरयात्रा" में "हिंद महासागर रिम के साथ आर्थिक व्यापार" पर एक सत्र की अध्यक्षता और संचालन किया, जो हिंद महासागर रिम देशों के साथ क्रॉस-सांस्कृतिक संबंधों की खोज कर रहा था, जिसका आयोजन किया गया था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, 5-6 सितंबर 2022।

16. सिंह, ए.के., "भारतीय धर्म और दर्शन", अलज़ारा विश्वविद्यालय, तेहरान में ऑनलाइन व्याख्यान।

17. सिंह, ए.के. ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) के सहयोग से देशकाल सोसाइटी द्वारा आयोजित चौथे संस्करण बोधगया ग्लोबल डायलॉग्स, 2022 में एक सत्र की अध्यक्षता की।

18. सिंह, ए.के., 'ऐतिहासिक कनेक्शन: फाउंडेशन और माइग्रेशन' इंडो-फ़ारसी हेरिटेज शॉर्ट-टर्म ऑनलाइन कोर्स में, नालंदा विश्वविद्यालय, 4 मई 2023।

19. ट्राइबेडी, ई., पुरातनता के बाद: दक्षिण एशियाई पुरातत्व और कला के लिए यूरोपीय संघ के 25वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पूर्वी भारत से पूर्व आधुनिक तारा मूर्तियों के आदान-प्रदान और पुन: उपयोग, मानविकी विभाग, यूनिवर्सिटेट पोम्पेउ फाबरा, बार्सिलोना (स्पेन)), 04-08 जुलाई 2022.

20. ट्राइबेडी, ई., मगध के हाशिये से: चौराहे पर लिच्छवी विरासत पर ब्रिटिश अकादमी सम्मेलन में भूमि संबंध और वैचारिक सूत्रीकरण (600-1200 सीई): दक्षिण एशिया में पुरातत्व, प्रारंभिक मध्ययुगीन ग्रंथों और विरासत के बीच संबंधों की खोज , ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय डरहम विश्वविद्यालय, ऑल सोल्स कॉलेज, यूनाइटेड किंगडम के सहयोग से, 5-7 सितंबर 2022 (ऑनलाइन)।

21. ट्राइबेडी, ई., लैंडस्केप पुरातत्व सम्मेलन के 7वें संस्करण में शेखपुरा हिल्स, बिहार, भारत के आसपास का अनएक्सप्लोर्ड लैंडस्केप, सत्र 04। लोग और उनके परिदृश्य: वैश्विक दक्षिण और सीमाओं से परे संवाद, इयासी-सुसेवा, रोमानिया, 10 -15 सितंबर, 2022 (ऑनलाइन)।

22. ट्राइबेडी, ई., 'अमोघपाशा' अवलोकितेश्वर का प्रकटीकरण: हिंद महासागर में साझा सांस्कृतिक विरासत पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दक्षिण बिहार और मलय-जावानीस विश्व, सत्र IV: संस्कृति और विरासत: इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, न्यू में संदर्भ में स्मारक दिल्ली, भारत, 8 से 10 फरवरी 2023।

23. ट्राइबेडी, ई., दक्षिण एशियाई पुरातत्व पर 15वीं वार्षिक कार्यशाला में बिहार की शेखपुरा पहाड़ियों के आसपास के परिदृश्य की खोज, हार्टविक कॉलेज, यूएसए द्वारा आयोजित, 3-5 मार्च, 2023 (ऑनलाइन)।

24. पधान, टी और जी. खानसिली। 2022. इंडो-पैसिफिक प्रागितिहास एसोसिएशन की 22वीं कांग्रेस में, 6-12 नवंबर, 2022, चियांग माई, थाईलैंड में ऊपरी महानदी बेसिन, पूर्वी भारत में पुरातात्विक जांच।

25. पधान, टी 2023. राजगीर पहाड़ियों का पुरापाषाण पुरातत्व, 17-19 फरवरी, 2023, 53वीं भारतीय पुरातत्व सोसायटी (आईएएस), 48वीं भारतीय प्रागैतिहासिक और चतुर्धातुक अध्ययन सोसायटी (आईएसपीक्यूएस) और 44वीं इतिहास और संस्कृति सोसायटी का संयुक्त वार्षिक सम्मेलन (एचसीएस) पं. में आयोजित किया गया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, ग्रेटर नोएडा द्वारा आयोजित दीन दयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान।

26. पधान टी. (सह-लेखक) 2022. इंडो-पैसिफिक प्रागितिहास एसोसिएशन की 22वीं कांग्रेस में, मध्य भारत के नर्मदा घाटी के नरसिंहपुर क्षेत्र से नए कशेरुकी जीवाश्म और संबद्ध भूवैज्ञानिक संदर्भ, 6-12 नवंबर, 2022, चियांग माई, थाईलैंड.

27. पधान, टी. (सह-लेखक) 2023. मध्य भारत से प्रोबोसिडियन जीवाश्मों का एक नया संयोजन और एसोसिएटेड स्ट्रैटिग्राफिक और टेफोनोमिक अवलोकन।' 17-19 फरवरी, 2023, 53वें भारतीय पुरातत्व सोसायटी (आईएएस) का संयुक्त वार्षिक सम्मेलन। प्रागैतिहासिक और चतुर्धातुक अध्ययन के लिए 48वीं भारतीय सोसायटी (आईएसपीक्यूएस) और 44वीं इतिहास और कल्चर सोसायटी (एचसीएस) का आयोजन पं. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, ग्रेटर नोएडा द्वारा आयोजित दीन दयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान।

28. संयोजक और वक्ता, बिम्सटेक कोलोक्वियम (इंटरनेशनल), सेंटर फॉर बे ऑफ बंगाल स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित

29. 20 फरवरी 2024 को सेंटर फॉर ईस्ट एशियन स्टडीज, क्राइस्ट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) और "भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच रक्षा और सुरक्षा संवाद" पर दूसरे वर्चुअल पैनल चर्चा में "भारत-अमेरिका सुरक्षा कूटनीति का निर्माण" किया गया। राइजिंग पॉवर्स इनिशिएटिव (आरपीआई), इलियट स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी, यूएस कॉन्सुलेट जनरल चेन्नई के सहयोग से।

30. संयोजक एवं वक्ता छठा बोधगया संवाद (अंतर्राष्ट्रीय) 16-17 मार्च 2024, नालंदा विश्वविद्यालय

31. "भारत के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रबंधन" पर ऑनलाइन विशेषज्ञ वार्ता - सरला बिड़ला विश्वविद्यालय, रांची में, 18 मार्च 2024

32. पधान, टी. 2024. बिहार संग्रहालय, पटना और कला, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के पुरातत्व निदेशालय द्वारा आयोजित 8वीं इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ सोसाइटी ऑफ साउथ एशियन

आर्कियोलॉजी (एसओएसएए) में राजगीर, बिहार के आसपास हाल के पुरातत्व अन्वेषणों से अंतर्दृष्टि युवा, बिहार सरकार, 04 - 07 अप्रैल, 2024 को आयोजित किया गया।

33. पधान, टी. 2024 (सह-लेखक)। दक्षिण एशियाई पुरातत्व सोसायटी (एसओएसएए) की 8वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में शेखपुरा और नेकपुर के विशेष संदर्भ में राजगीर घाटी से लिथिक संयोजन का प्रारंभिक विश्लेषण, बिहार संग्रहालय, पटना और पुरातत्व निदेशालय, कला, संस्कृति और युवा विभाग द्वारा आयोजित किया गया। बिहार सरकार, 04-07 अप्रैल, 2024 को आयोजित।

34. पधान, टी (सह-लेखक)। 2023. फोरकास्टिंग फॉसिल्स: इंटरनेशनल यूनियन फॉर क्वाटरनेरी रिसर्च (INQUA), 13 - 20 जुलाई 2023, रोम, इटली में पूर्वी नर्मदा बेसिन, भारत में पूर्वानुमानित मॉडल के लिए पेलियोन्टोलॉजिकल और प्रासंगिक विशेषताओं का संयोजन।

35. पधान, टी 2023. दक्षिणी बिहार के राजगीर हिल्स में हाल की पुरातात्विक जांच का अनावरण, भारतीय पुरातत्व में हालिया रुझान पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, सेंटर फॉर एडवांस स्टडी डिपार्टमेंट ऑफ हिस्ट्री, अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ द्वारा आयोजित, 25-26 सितंबर, 2023 .

36. पधान टी. 2023। पुरातत्व सर्वेक्षण/उत्खनन के लिए नीति निर्माण की आवश्यकता, बिहार के राजगीर और इसके आसपास के क्षेत्र का एक केस स्टडी, ''क्षेत्रीय स्तर के प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला "2035 तक उत्खनन के लिए दृष्टि से परे की तलाश'' के लिए आमंत्रित किया गया। पूर्वी क्षेत्र के संभावित पुरातत्व स्थलों पर एक सूची की तैयारी के लिए एएसआई उत्खनन शाखा भुवनेश्वर द्वारा 15-16 अक्टूबर 2023 को मेजबानी की गई।

37. पधान टी. 2023. प्राचीन साहित्य में राजगीर की खोज: ऐतिहासिक भूगोल और हाल की पुरातात्विक खोज, भाषा और साहित्य/मानविकी स्कूल, नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "विश्व साहित्य की संकल्पना में भारतीय और दक्षिण पूर्व एशियाई परिप्रेक्ष्य" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में, 17वीं -18 नवंबर 2023

38. पधान टी. 2024. रेनशॉ विश्वविद्यालय, कटक, ओडिशा द्वारा 21-22 जनवरी 2024 को आयोजित ओडिशा में पुरातत्व अनुसंधान पर राष्ट्रीय सम्मेलन में महानदी बेसिन की पुरापाषाणिक रणनीति और निपटान पैटर्न।

39. पधान, टी. 2024. मानव बस्ती का पता लगाना: राजगीर शहर, बिहार के आसपास एक ऐतिहासिक यात्रा, उत्खनन शाखा, पटना के छात्रों और कर्मचारियों के लिए विशेष व्याख्यान दिया गया, और डी.जी. कार्यालय, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली, 10 फरवरी 2024 को।

40. पधान टी. 2024. रागिर का ऐतिहासिक पुरातत्व, हालिया निष्कर्ष, सुंदरगढ़ कॉलेज, ओडिशा द्वारा "पूर्वी भारत के ऐतिहासिक और पुरातत्व अनुसंधान में हालिया रुझान" पर राष्ट्रीय सम्मेलन, 10-11 फरवरी, 2024 को आयोजित किया गया।

41. ट्राइबेडी ई., आमंत्रित ऑनलाइन व्याख्यान, विषय: भय के महासागर को पार करना: व्याख्यान श्रृंखला 'धार्मिक नींव - दक्षिण एशिया में निर्मित पर्यावरण पर हालिया शोध' में भारत में तारा के पंथ की मठवासी नींव और मध्यकालीन परिवर्तनों का अनावरण,' 18 अप्रैल, 2024 को गेन्ट विश्वविद्यालय, बेल्जियम द्वारा आयोजित

42. ट्राइबेडी ई., फिजिकल मोड में आमंत्रित पेपर प्रस्तुति: 'बोधिसत्व की करुणा की छाया में: प्रीमॉडर्न श्रीलंका में तारा के पंथ की 'स्थानीय प्रतिभा' का पुनर्परीक्षण'' शीर्षक से 'ए स्टडी ऑफ द' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में नाविकों के रक्षक के रूप में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर: हिंद महासागर में समुद्री व्यापार के संबंध में श्रीलंका में महायान बौद्ध धर्म, 13 जून को जी. डुकोयूर (स्ट्रासबर्ग विश्वविद्यालय) और ओसमंड बोपेराच्ची (सीएनआरएस-ईएनएस / बर्कले, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय) द्वारा आयोजित, 2024 यूनिवर्सिटी पैलेस, स्टार्सबर्ग विश्वविद्यालय, फ्रांस

43. ट्राइबेडी ई., भौतिक मोड में आमंत्रित शोध पत्र प्रस्तुति: 'अमोघपाश' अवलोकितेश्वर का प्रकटीकरण: हिंद महासागर में साझा सांस्कृतिक विरासत पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दक्षिण बिहार और मलय-जावानीस विश्व, सत्र IV: संस्कृति और विरासत: स्मारक भारतीय अंतर्राष्ट्रीय केंद्र और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली, भारत में आयोजित संदर्भ, 8 से 10 फरवरी 2023

44. ट्राइबेडी ई., एलोरा ट्राइबेडी द्वारा आमंत्रित ऑनलाइन व्याख्यान, विषय: ओडिशा में तारा का पंथ: ओडिशा में पुरातत्व अनुसंधान में हालिया प्रगति पर ओडिशा इतिहास कांग्रेस और आईसीएचआर प्रायोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के 43वें सत्र में पुरातत्व आयाम: मुद्दे और पर्सपेक्टिव्स, इतिहास विभाग, रेवेनशॉ विश्वविद्यालय, कटक, ओडिशा द्वारा OIMSEAS, भुवनेश्वर के सहयोग से आयोजित, 20-22 जनवरी 2024

45. ट्राइबेडी ई., एलोरा ट्राइडी द्वारा आमंत्रित मुख्य प्रस्तुति, विषय: एन रूट बुद्ध-क्षेत्र: तीर्थयात्रा और ज्ञानोदय की भूमि में 'द्रव स्थान', 'ज्ञानोदय के परिदृश्य: बोधगया, राजगीर और' पर बोधगया वैश्विक संवाद के छठे संस्करण में 'नालंदा' का आयोजन 16 और 17 मार्च, 2024 को 'नालंदा विश्वविद्यालय' और 'देशकाल सोसाइटी' द्वारा 'नालंदा विश्वविद्यालय' में किया गया।

46. ट्राइबेडी ई., एलोरा ट्राइबेडी द्वारा संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित व्याख्यान, विषय: 9 मार्च, 2024 को INTACH, बिहार चैप्टर और बेगुसराय संग्रहालय, बेगुसराय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में बिहार में सूर्य पूजा का इतिहास और संस्कृति

47. ट्राइबेडी ई., 7 फरवरी, 2024 को पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, ऑर्डिनेंस फैक्ट्री, नालंदा, राजगीर, बिहार में 21वीं सदी के सामाजिक कौशल पर आमंत्रित वार्ता

एसएचएस संकाय के लिए महत्वपूर्ण निमंत्रण

1. सिंह, ए.के., सम्मानित अतिथि, हेरिटेज सोसाइटी, पटना द्वारा 23-25 जून 2023 को आयोजित हेरिटेज सोसाइटी ग्लोबल हेरिटेज कॉन्क्लेव का दूसरा वार्षिक सम्मेलन।

2. पधान, टी., 18 मई 2022 को मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल और पुरातत्व संग्रहालय, नालंदा, बिहार में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित हैं।

3. चतुर्वेदी, आर. आर., को बिहार लोक प्रशासन एवं ग्रामीण विकास संस्थान (BIPARD), गया, 14 में नव नियुक्त बिहार प्रशासनिक सेवा अधिकारियों और भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारियों को "विरासत संरक्षण और पुरातनता कानून" पर व्याख्यान/प्रेरण प्रशिक्षण देने के लिए आमंत्रित किया गया। 15 अक्टूबर, 2022.

4. पधान, टी., पीजी डिप्लोमा छात्रों, सेमेस्टर- I (बैच 2022-24) के भारतीय और विश्व प्रागितिहास पाठ्यक्रमों पर व्याख्यान की श्रृंखला देने के लिए आमंत्रित, पंडित दीन दयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, ग्रेटर नोएडा। उतार प्रदेश।

5. सिंह, ए.के., 14 अक्टूबर को बिहार इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एंड रूरल डेवलपमेंट (BIPARD), गया में नव नियुक्त बिहार प्रशासनिक सेवा अधिकारियों और भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारियों को "भारतीय विरासत और पुरावशेष" पर व्याख्यान/प्रवेश प्रशिक्षण देने के लिए आमंत्रित किया गया। 2022.

6. पी.जी. के भारतीय और विश्व प्रागैतिहासिक पाठ्यक्रमों पर व्याख्यान की एक श्रृंखला देने के लिए आमंत्रित किया गया। डिप्लोमा छात्र, सेमेस्टर- I (बैच 2023-24), पंडित दीनदयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश, जून-जुलाई 2023।

8. 15-16 अक्टूबर को एएसआई उत्खनन शाखा भुवनेश्वर द्वारा आयोजित पूर्वी क्षेत्र के संभावित पुरातत्व स्थलों पर एक सूची की तैयारी के लिए क्षेत्रीय स्तर के प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला "2035 तक उत्खनन के लिए दृष्टि से परे की तलाश" में एक पेपर प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया है। 2023.

9. पधान टी. 2023, को स्टोन टूल कार्यशाला आयोजित करने और सोमैया कॉलेज, मुंबई में आयोजित महाराष्ट्र सांस्कृतिक विरासत, पुरातत्व और संग्रहालय: एक पूर्वव्यापी और आगे का रोडमैप' (6-7 अगस्त) में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। 8 अगस्त 2023 को पुरातत्व और संग्रहालय निदेशालय, महाराष्ट्र।

10. 8 जुलाई 2023 को सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय के सहयोग से पुरातत्व और संग्रहालय निदेशालय महाराष्ट्र द्वारा आयोजित "महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत, पुरातत्व और संग्रहालय: एक पूर्वव्यापी और आगे का रोडमैप" पर एक दिवसीय स्टोन टूल नैपिंग कार्यशाला के लिए संसाधन व्यक्ति।

11. पी.जी. में 'पुरापाषाणिक पुरातत्व का परिचय' विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। इतिहास विभाग, संबलपुर विश्वविद्यालय, ज्योति विहार बुर्ला 8 दिसंबर 2023 को

12. ट्राइबेडी ई., समर-2024 के लिए विजिटिंग प्रोफेसर, प्रोजेक्ट: इतिहास, समाजशास्त्र, पुरातत्व और धर्मों का मानवविज्ञान | HiSAAR, स्ट्रासबर्ग विश्वविद्यालय, फ्रांस

13. ट्राइबेडी ई. ने 18वीं से पुरावशेषों के दस्तावेजीकरण पर राष्ट्रीय स्मारक और पुरावशेष मिशन [एनएमएमए] और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण [एएसआई] के क्षेत्रीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम में पूर्वी भारत की बौद्ध और ब्राह्मणवादी छवियों के दस्तावेजीकरण पर प्रशिक्षण प्रदान किया। 20 दिसंबर, 2023

14. ट्राइबेडी ई., ने स्मारकों और पुरावशेषों पर राष्ट्रीय मिशन [एनएमएमए] और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण [एएसआई] के पुरावशेषों के दस्तावेज़ीकरण पर क्षेत्रीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'मध्य भारत की बौद्ध और ब्राह्मणवादी छवियों के दस्तावेज़ीकरण' पर प्रशिक्षण प्रदान किया। 21 से 23 फरवरी, 2024

15. ट्राइबेडी ई., 'नाविकों के संरक्षक और संरक्षक के रूप में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर' नामक अंतर्राष्ट्रीय संयुक्त अनुसंधान परियोजना में आमंत्रित विद्वान, ने विश्वविद्यालय के सहयोग से फ्रेंच सेंटर नेशनल डे ला रेचेर्चे साइंटिफिक (ईएनएस-सीएनआरएस), पेरिस, फ्रांस को प्रायोजित किया। मार्च, 2023 से मार्च, 2025 तक कैलिफ़ोर्निया बर्कले, यूएसए और पुरातत्व विभाग, श्रीलंका सरकार के

एसएचएस संकाय द्वारा बाहरी थीसिस/शोध प्रबंध का मूल्यांकन

1. 2022: विवेक सिंह, मध्य नर्मदा घाटी, मध्य प्रदेश (भारत) में एच्यूलियन लैंडस्केप और तकनीकी अनुकूलन, (आईआईएसईआर, मोहाली पीएचडी थीसिस)।

2. 2023: अंजेलिना पैट्रिक, छोटे राज्यों की विदेश नीति रणनीतियाँ: भारत और चीन के साथ श्रीलंका का जुड़ाव, 1995-2019, (जेएनयू एम.फिल शोध प्रबंध)।

3. 2023: शिखर चौहान, द बॉर्डर एंड पंजाबी आइडेंटिटी, (जेएनयू एम. फिल. शोध प्रबंध)।

पत्रिकाओं का संपादक/संपादकीय मंडल

पधान, टी., प्रधान संपादक (क्रॉसरेफ और डोई इंडेक्स जर्नल), जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजिकल स्टडीज इन इंडिया 2022। खंड- 1, 2, एआरएफ प्रकाशन, दिल्ली।

जर्नल संपादक

प्रधान संपादक (क्रॉसरेफ और डोई इंडेक्स जर्नल), जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजिकल स्टडीज इन इंडिया 2023। खंड- 3 एआरएफ प्रकाशन, दिल्ली।

समन्वय कार्य/अल्पकालिक पाठ्यक्रम/अतिरिक्त क्रेडिट पाठ्यक्रम

चतुर्वेदी, आर. आर., संकल्पित (प्रो. अभय कुमार सिंह के साथ), बंगाल की खाड़ी पर 12 सप्ताह (36 घंटे) के ऑनलाइन प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम का समन्वय और अध्यक्षता की।

गनी, के., "इंडो-फ़ारसी हेरिटेज", नालंदा विश्वविद्यालय, 2023 पर लघु अवधि के ऑनलाइन पाठ्यक्रम की संकल्पना और समन्वय (प्रो. अभय कुमार सिंह, डीन, एसएचएस के साथ)।

स्नातकोत्तर शोध-प्रबंधों का निर्देशन

1. 2022: त्शेवांग डेमा, "भूटान में अनुष्ठान और सांस्कृतिक परंपराएं" (प्रेक्षक: घनी, के.)
2. 2022: कर्मा निदुप, "भूटान के आधुनिकीकरण की ओर परिवर्तन का इतिहास: राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य" (प्रेक्षक: चतुर्वेदी, आर. आर.)
3. 2022: दिव्येंदु डी. कश्यप, "प्रागैतिहासिक मानव गतिशीलता: जलवायु, पर्यावरण और रोग के मध्य संबंधों की खोज, 70,000-20,000 बी.पी." (प्रेक्षक: सत्याल, ए.)
4. 2022: मिताली दीक्षित, "ऋग्वेद के ऐतिहासिक, पाठ्य और साहित्यिक पहलुओं की खोज" (प्रेक्षक: सत्याल, ए.)
5. 2022: पेमा छोडेन, "छोडपाला: भूटान का एक फसल अनुष्ठान" (प्रेक्षक: पाधन, टी.)
6. 2022: अनोचा सिम्मा, "धार्मिक व्यक्तित्वों का सांस्कृतिक आत्मसात और लोकप्रिय संस्कृति में परिवर्तन" (प्रेक्षक: त्रिबेड़ी, ई.)
7. 2022: गुयेन क्वोक अन्ह, "नालंदा विश्वविद्यालय का इतिहास और पुनरुद्धार: एक आलोचनात्मक अध्ययन" (एसबीएसपीसीआर, प्रेक्षक: त्रिबेड़ी, ई.)

8. 2022: गुयेन थी कुआ, "नालंदा महाविहार में संरक्षण: शिक्षा पर प्रभाव" (एसबीएसपीसीआर, प्रेक्षक: त्रिबेड़ी, ई.)
9. 2022: त्रुओंग थी अन्ह तूयेट, "वियतनामी संस्कृति, साहित्य और कला में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर" (एसबीएसपीसीआर, प्रेक्षक: त्रिबेड़ी, ई.)
10. 2022: दीपक कुमार, "ओदंतपुरी महाविहार का स्थानांतरण: बिहार शरीफ में नई पुरातात्त्विक खोजों के संदर्भ में" (एसबीएसपीसीआर, प्रेक्षक: त्रिबेड़ी, ई.)
11. 2023: नमगय दोर्जी, "भूटान के विकास का दार्शनिक आधार: ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस" (प्रेक्षक: घनी, के.)
12. 2023: किनले दोर्जी, "भूटान के विकास और भूमि मार्गों का ऐतिहासिक अध्ययन" (प्रेक्षक: चतुर्वेदी, आर. आर.)
13. 2023: ताशी पेनजोर, "16वीं से 21वीं सदी तक भूटानी मुद्रा का विकास" (प्रेक्षक: पाधन, टी.)
14. 2023: यूनि सपुत्री, "इंडोनेशिया में भारतीय धरोहर की खोज: अचे समुदाय का नृवंशीय दृष्टिकोण से अध्ययन" (प्रेक्षक: त्रिबेड़ी, ई.)
15. 2023: सौर होल, "प्राचीन खमेर पर भारतीय प्रभाव: अंकोरवाट का अध्ययन" (प्रेक्षक: सिंह, ए. के.; सह-प्रेक्षक: त्रिबेड़ी, ई.)
16. 2023: येब यू, "मध्यकालीन कंबोडिया में बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने में जयवर्मन सप्तम की भूमिका" (एसबीएसपीसीआर, प्रेक्षक: त्रिबेड़ी, ई.)
17. 2023: अक्षया आकृति, "पाला कालीन विशाल बुद्ध प्रतिमाओं और उनके तांत्रिक संदर्भ का अध्ययन" (प्रेक्षक: सिंह, ए. के.)
18. 2023: फाम थान होआंग, "प्राचीन चंपा कला की विरासत: न्हन सोन द्वारपाल परंपरा और उनकी निरंतरता" (एसबीएसपीसीआर, प्रेक्षक: त्रिबेड़ी, ई.)
19. 2023: डो क्वांग होआंग थांग, "बौद्ध धर्मग्रंथीय साहित्य में राजनयिक संबंध: विश्व व्यवस्था में परस्पर निर्भरता का आदर्श" (प्रेक्षक: डॉ. पी. समाधर्शी)
20. 2023: लेकी दोर्जी, "चित्रों के माध्यम से अतीत को समझना: भूटान के दृश्य इतिहास का अध्ययन" (प्रेक्षक: उदुपा, एस.)
21. 2023: बंबांग विड्योनार्को, "जावा-दीप: 15वीं-17वीं शताब्दी में समुद्री मार्गों के माध्यम से ज्ञान का प्रसार" (प्रेक्षक: सत्याल, ए.)
22. 2023: बंबांग विड्योनार्को, "जावा-दीप: 15वीं-17वीं शताब्दी में जावा में ज्ञान का प्रसार और वैधता" (प्रेक्षक: सत्याल, ए.)

23. सौम्या कृष्णा, "भारतीय अर्थव्यवस्था का उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण और इसका 1991 से 2000 तक बॉलीवुड फिल्मों में प्रकट होना" (मई 2024)
24. सिंग्ये रिनचेन, "भारत और चीन की छाया में भूटान की विदेश नीति का इतिहास" (मई 2024)
25. सोनम डेकी, "भूटान का प्रागैतिहासिक काल: तिमु राजा रॉक आर्ट स्थल का अध्ययन" (2024, स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर)
26. रिनचेन वांगडी, "भूटान के दक्षिण-पूर्वी मोंगर जोंगखाग में पुरातात्विक जांच" (2024, स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर)
27. स्तुति कुशवाहा, "धर्म: पुरातात्विक धरोहरों के संरक्षण और संरक्षण में खतरा - गोपांचल रॉक-कट जैन स्मारक का अध्ययन" (2024, स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर)
28. पूर्वा व्यास, "रायसेन परिसर की प्रागैतिहासिक रॉक आर्ट: रामचज्जा रॉक शेल्टर्स समूह का अध्ययन" (पी.जी. डिप्लोमा, 2021-2023, पं. दीनदयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान, ग्रेटर नोएडा)
29. कुदान कुमार, "बिहार का प्रागैतिहासिक काल: एक समीक्षा" (पी.जी. डिप्लोमा, 2021-2023, पं. दीनदयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान, ग्रेटर नोएडा)
30. रिज़्का पर्नामासारी, "नेकर्स: दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रारंभिक आदान-प्रदान के सांस्कृतिक वस्तु के रूप में इंडोनेशिया के कांस्य ड्रम," एसएचएस (मई 2024, मुख्य प्रेक्षक: स्टूडेंट आईडी: 10122012, एम.ए. इतिहास, बैच: 2022-2024)
31. अल महमूद, "सामूहिक स्मृति का निर्माण: 'खोए' सिनेमा हॉल के रूप में बांग्लादेश के सांस्कृतिक स्थान," एसएचएस (मई 2024, मुख्य प्रेक्षक: स्टूडेंट आईडी: 10122019, एम.ए. इतिहास, बैच: 2022-2024)
32. वा सोवन्न, "प्राचीन खमेर कला और वास्तुकला की नींव: नोकोर फ्नोम से चेनला तक," एसएचए (मई 2024, मुख्य प्रेक्षक: स्टूडेंट आईडी: 10122014, एम.ए. इतिहास, बैच: 2022-2024)

त्रिबेड़ी ई. ने "स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज" के लिए 11 मार्च 2024 को नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के एमेरिटस प्रोफेसर रॉब लिनरोथ द्वारा "द ट्रांसकॉन्टिनेंटल मूवमेंट्स ऑफ 'द इम्मूवेबल वन: अचला इमेजेज इन इंडिया एंड अब्रॉड" शीर्षक से एक विशिष्ट व्याख्यान का समन्वयन किया।

डॉक्टोरल शोध निर्देशन

1. आजाद हिंद गुलशन नंदा, "प्रारंभिक भारत के महाविहार (8वीं-9वीं शताब्दी ईस्वी): नेटवर्क, अंतःक्रियाएं और सांस्कृतिक आदान-प्रदान" (प्रेक्षक: सिंह, ए. के.)

2. ले दिन कुयोंग, "बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान का एक आलोचनात्मक अध्ययन: भारत में आरंभ से लेकर 5वीं शताब्दी ईस्वी तक" (एसबीपीसीआर, प्रेक्षक: सिंह, ए. के.)
3. गुयेन थी हुआंग (एसबीएसपीसीआर), "बौद्ध साहित्य में महिलाओं की चित्रण शैली में बदलाव और उनके ज्ञान प्राप्ति के प्रयास: एक सामाजिक-ऐतिहासिक अध्ययन" (मुख्य प्रेक्षक: त्रिबेड़ी, ई.)
4. सौरजित घोष (एसबीएसपीसीआर), "भिक्षुणी संघ का बौद्ध आध्यात्मिक और सामाजिक परिवेश में योगदान: भारत में धर्म का अभ्यास करने वाली महिला मठीय परंपराओं के सशक्तिकरण के संदर्भ में"
    - सह-प्रेक्षक: अप्रैल 2022-अप्रैल 2023
    - मुख्य प्रेक्षक: मई-जुलाई 2023 (त्रिबेड़ी, ई.)
5. श्रीलेखा के. आर., "पाकिस्तान की अफगानिस्तान नीति (1999-2008): सुरक्षा और रणनीतिक चिंताएं," पीएचडी शोध प्रबंध, फरवरी 2024।
6. एन. लोली, "बांग्लादेश की जुम्मा जनजातियों की बदलती पहचान: एक समाजशास्त्रीय और राजनीतिक अध्ययन," पीएचडी शोध प्रबंध, अप्रैल 2024।
7. गुयेन थी हुआंग (स्टूडेंट आईडी: 030120003, एसबीएसपीसीआर), "बौद्ध साहित्य में महिलाओं की चित्रण शैली में बदलाव और उनके ज्ञान प्राप्ति के प्रयास: एक सामाजिक-ऐतिहासिक अध्ययन," 31 दिसंबर 2023 को प्रस्तुत।
8. सौरजित घोष (स्टूडेंट आईडी: 030120003, एसबीएसपीसीआर), "भिक्षुणी संघ का बौद्ध आध्यात्मिक और सामाजिक परिवेश में योगदान: भारत में धर्म का अभ्यास करने वाली महिला मठीय परंपराओं के सशक्तिकरण के संदर्भ में," 31 दिसंबर 2023 को प्रस्तुत।

विशिष्ट/ आमंत्रित व्याख्यान

1. डॉ. विक्रम संपत, "भारतीय इतिहास की पुनर्कल्पना," 21 सितंबर 2023।
2. श्री सी. एस. आर. राम, संयुक्त सचिव (बीआईएमएसटीईसी और सार्क), भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, "बीआईएमएसटीईसी और खाड़ी: समुद्री सुरक्षा को मजबूत करना," 21 जुलाई 2023।
3. वाइस एडमिरल जी. अशोक कुमार, पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएसएम (सेवानिवृत्त), राष्ट्रीय समुद्री सुरक्षा समन्वयक, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय, भारत सरकार, "बीआईएमएसटीईसी और खाड़ी: समुद्री सुरक्षा को मजबूत करना," 21 जुलाई 2023।

4. प्रो. एस. के. श्रीवास्तव, कुलपति, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार, "खाड़ी के लिए सुरक्षा खतरों का मानचित्रण," 21 जुलाई 2023।
5. प्रो. पी. कृष्णन, निदेशक, बे ऑफ बंगाल प्रोग्राम इंटर-गवर्नमेंटल ऑर्गनाइजेशन (बीओबीपी-आईजीओ), चेन्नई, "समुद्री सुरक्षा का पुनर्परिभाषण: बंगाल की खाड़ी में गैर-पारंपरिक खतरे," 21 जुलाई 2023।
6. प्रो. संजय चतुर्वेदी, डीन, सामाजिक विज्ञान संकाय, दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, "समुद्री सुरक्षा का उप-क्षेत्रीयकरण: आवश्यकताएं, अवसर और चुनौतियां," 21 जुलाई 2023।

एसएचएस फील्ड ट्रिप्स में भागीदारी

1. 2022: ऐतिहासिक अध्ययन के स्कूल का फील्ड ट्रिप - बाराबर और नागार्जुनी गुफाएं, गया, 19 नवंबर।
2. 2022: ओरिएंटेशन प्रोग्राम फील्ड ट्रिप - नालंदा खंडहर और राजगीर, 10 अगस्त।
3. 2023: ऐतिहासिक अध्ययन के स्कूल का फील्ड ट्रिप - राजगीर के विभिन्न पुरातात्विक स्थलों का दौरा, 4 मार्च।

भाषा, साहित्य और मानविकी स्कूल

यह स्कूल विश्व की भाषाओं और साहित्य को समझने के लिए शैक्षणिक कार्यक्रम और पाठ्यक्रम प्रदान करता है, जो पूर्वी समाजों में कल्पित दृष्टिकोण के ढांचे में काम करता है। प्राच्य विचार प्रक्रियाएं (एशिया और उसके बाहर के कई देशों की पाठ्य और जीवंत परंपराओं का व्यापक प्रभाव) दुनिया भर में विभिन्न विद्वतापूर्ण प्रयासों में स्वीकृत रही हैं। स्कूल के एम.ए. और पीएच.डी. कार्यक्रम इन विद्वतापूर्ण प्रयासों को समझने पर ध्यान केंद्रित करते हैं और एक उभरते हुए विश्व दृष्टिकोण को अपनाते हैं, जो पूरे विश्व को सह-अस्तित्व के एकीकृत स्थान के रूप में मानता है और सभी प्राणियों के प्रति आपसी सम्मान की भावना रखता है।

मुख्य/प्रमुख क्षेत्र

स्कूल मानविकी के पुनःसंवेदन और पुनर्विचार, एशियाई और गैर-एशियाई संदर्भों में भाषा, साहित्य, संस्कृति और जीवन के बीच अंतर्संबंधों पर केंद्रित है। यह मानविकी को एक ज्ञान क्षेत्र के रूप में परिभाषित करने वाले मौलिक प्रश्नों पर गहन शोध करता है। प्राचीन नालंदा महाविहार की परंपरा और विश्वविद्यालय के व्यापक दर्शन के अनुरूप, स्कूल एक विविध, वैश्विक और जीवंत बौद्धिक संस्कृति को बढ़ावा देने और बनाए रखने की कोशिश करता है। इसका उद्देश्य छात्रों को विश्व साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और समृद्ध विविधता के दृष्टिकोणों को समझने में सक्षम बनाना है।

शोध और शिक्षण स्कूल में ऐसे अभिव्यक्ति रूपों को समेटते हैं, जो गद्य, कविता, नाटक, प्रदर्शन, फिल्म, और उन सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में पाए जाते हैं, जिनमें ये अभिव्यक्तियां आकार लेती हैं और उन्हें प्रभावित करती हैं। स्कूल की विशेषज्ञता समय में सबसे प्राचीन पांडुलिपियों से लेकर 21वीं सदी के साहित्य तक और स्थान में एशिया, यूरोप, अफ्रीका, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे महाद्वीपों के साहित्य तक फैली हुई है।

फैकल्टी की विशिष्ट विशेषज्ञता के क्षेत्र में साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन, विश्व साहित्य, भारतीय काव्यशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र, दृश्य अध्ययन, डिजिटल मानविकी और प्रदर्शन परंपराएं शामिल हैं। स्कूल ने शैक्षणिक सत्र 2021-22 से विश्व साहित्य (अंग्रेजी) में दो-वर्षीय पूर्णकालिक मास्टर कार्यक्रम शुरू किया है। यह कार्यक्रम विश्व साहित्य के क्षेत्र में व्यापक ज्ञान आधार प्रदान करता है।

फैकल्टी सदस्य

1. प्रो. पंचानन मोहंती (कार्यवाहक डीन, 21 जून 2024 तक)
2. प्रो. सुशांत कुमार मिश्रा (डीन)
3. प्रो. श्रवण कुमार शर्मा (आमंत्रित प्रोफेसर)
4. प्रो. चंद्रानी चटर्जी (आमंत्रित प्रोफेसर)
5. प्रो. सुधीर कुमार (आमंत्रित प्रोफेसर)
6. प्रो. अतनु भट्टाचार्य (आमंत्रित प्रोफेसर)
7. प्रो. बालाजी रंगनाथन
8. डॉ. श्रीशा उडुपा, एसोसिएट प्रोफेसर
9. डॉ. मीर इस्लाम, असिस्टेंट प्रोफेसर
10. डॉ. पूजा डबराल, असिस्टेंट प्रोफेसर
11. डॉ. कुमुदा प्रसाद आचार्य, असिस्टेंट प्रोफेसर
12. डॉ. स्मिता सिंह, टीचिंग फेलो
13. सुश्री दिव्या शर्मा, टीचिंग एसोसिएट

एम.ए. कार्यक्रम (विश्व साहित्य - अंग्रेजी) में प्रस्तावित पाठ्यक्रम

1. विश्व साहित्य का परिचय
2. शैली की आधारभूत बातें: कविता
3. भारतीय और पश्चिमी साहित्यिक सिद्धांतों का अंतःविषय अध्ययन
4. साहित्य और दर्शन
5. साहित्य का परिचय
6. आलोचनात्मक चिंतन
7. बौद्ध विचार और साहित्यिक विश्लेषण
8. शैक्षणिक लेखन (1 क्रेडिट)
9. विश्व साहित्य का सिद्धांत
10. शैली की आधारभूत बातें: नाटक
11. डोस्तोएव्स्की, काफ्का, कामू और कोएत्ज़ी में चेतना का चित्रण
12. पाठ और स्क्रीन: अनुकूलन

13. साहित्यिक अनुवाद (1 क्रेडिट)
14. महाकाव्य परंपराएं: होमर, डांटे और मिल्टन
15. शैली की आधारभूत बातें: कथा
16. तर्क, विश्वास और कल्पना: डन, ब्लेक और होल्डरिन
17. पर्यावरणीय काव्यशास्त्र: साहित्य और पारिस्थितिकी
18. भक्ति साहित्य
19. सांस्कृतिक आख्यान: रामायण परंपराएं
20. संस्कृत साहित्यिक सिद्धांत
21. साहित्यिक आलोचना और सिद्धांत
22. डिजिटल मानविकी
23. प्रकृति, विज्ञान और साहित्य
24. संरचनावाद और भारतीय विचार प्रणालियां
25. भारतीय और पश्चिमी साहित्यिक सिद्धांतों का अंतःविषय अध्ययन
26. बौद्ध विचार और साहित्यिक विश्लेषण
27. अनुवाद अध्ययन: सिद्धांत और विचारधारा
28. अनुवाद अध्ययन का परिचय

पीएच.डी. स्तर के पाठ्यक्रम

1. अनुसंधान पद्धति
2. यूरोप में भाषा अध्ययन का इतिहास
3. भारोपीय भाषा अध्ययन: उत्पत्ति और विकास

शैक्षणिक उपलब्धियां

डॉ. दिव्या शर्मा

प्रकाशन:

1. "योग और ध्यान का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव," जर्नल ऑफ आयुर्वेद एंड इंटीग्रेटेड मेडिकल साइंसेज, 9(5), 144-153।
2. "सफल वृद्धावस्था को प्रोत्साहित करने का सक्रिय दृष्टिकोण," ए-जेएमआरएचएस, 2024; 2(2): 39-44।
3. "योग के आठ अंगों का व्यावहारिक दृष्टिकोण," एनल्स ऑफ योगा एंड फिजिकल थेरेपी, वॉल्यूम 6, इश्यू 1 (सितंबर-2023)।

4. "प्राथमिक योग अभ्यासों का फेफड़ों की कार्यक्षमता और वृद्ध जनसंख्या में संज्ञानात्मक प्रदर्शन पर प्रभाव: एक प्रायोगिक अध्ययन," इंडियन जर्नल ऑफ जेरोंटोलॉजी (यूजीसी केयर – स्वीकृत और प्रकाशन की प्रतीक्षा में)।
5. "पुनर्स्थापनात्मक योग के विशेष उपयोग के साथ योग का वृद्ध स्वास्थ्य पर प्रभाव," सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन योगा एंड नेचुरोपैथी – इंडियन जर्नल ऑफ योगा एंड नेचुरोपैथी (स्वीकृत और प्रकाशन की प्रतीक्षा में)।
6. "यौन विकारों के लिए योग की उपचारात्मक संभावना और इसका इलाज," इंडियन जर्नल ऑफ हेल्थ, सेक्सुअलिटी एंड कल्चर (यूजीसी केयर – स्वीकृत और प्रकाशन की प्रतीक्षा में)।

सम्मेलन और कार्यशालाएँ:

1. प्रतिष्ठित विषय विशेषज्ञ - योग पर राष्ट्रीय संगोष्ठी: जीवन के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण, सरकार। कॉलेज, रजमिलान मध्य प्रदेश

2. योग कार्यशाला (भारत योग माला श्रृंखला) 10 अप्रैल, 2024 को

3. योग विशेषज्ञ के रूप में प्रसार भारती, दूरदर्शन पर "बिहार-बिहान" कार्यक्रम (10 एपिसोड की श्रृंखला)

4. बिहार राज्य के केन्द्रीय विद्यालय, प्राचार्यों के लिए 02 दिवसीय योग कार्यशाला का आयोजन किया गया।

अन्य शैक्षणिक उपलब्धियाँ:

1.नालंदा विश्वविद्यालय समुदाय के लिए एक महीने का योग पाठ्यक्रम (15 मार्च 2024 - 14 अप्रैल 2024)।

2. 22 दिसंबर से 31 दिसंबर, 2023 के बीच निर्धारित एक भारत श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी) कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्रों के साथ सूरत।

डॉ. पूजा डबराल:

अनुसंधान और प्रकाशन

प्रकाशित पत्र

1) महाकारुण और प्रतीत्यसमुत्पाद: सार्वभौमिक शांति और सद्भाव के लिए बुद्ध की विरासत" में: प्रज्ञा (द विजडम), ए जर्नल ऑफ बोधगया टेम्पल मैनेजमेंट कमेटी, वॉल्यूम। XXII नंबर 1, बिहार: बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति, 2024. ISSN-2250-1983।

2) सम्मेलन की कार्यवाही 'क्वांटम भौतिकी, आधुनिक विज्ञान और बौद्ध और दर्शन में मस्तिष्क कार्य', नई दिल्ली: तिब्बत हाउस, आईएसबीएन: 978-81-953361-7-3, नवंबर 2023 में प्रकाशित पेपर 'बौद्ध दर्शन में पदार्थ और रूप' .

सम्मेलनों/सेमिनारों/आमंत्रित वार्ताओं/वक्ता/संसाधन व्यक्ति में प्रस्तुतियाँ

1. बोधगया ग्लोबल डायलॉग्स 2024 के छठे संस्करण, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर, 17 मार्च, 2024 को 'महाकारुण और प्रतीत्यसमुत्पाद: सार्वभौमिक शांति और सद्भाव के लिए बुद्ध की विरासत' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।
2. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, ताइवान, 8 मार्च, 2024 के अवसर पर पुरस्कार समारोह, 'बौद्ध धर्म में अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्ट महिलाएँ, 2024' के दौरान 'शून्यता का बौद्ध दृष्टिकोण' पर चर्चा का नेतृत्व किया।
3. पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, ऑर्डिनेंस फैक्ट्री राजगीर, हंसराजपुर, बिहार 803121, भारत, 07 फरवरी, 2024 द्वारा आयोजित 'करुणा और बुद्धि में निहित सामाजिक कौशल को बढ़ावा देना' पर व्याख्यान दिया।
4. स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज एंड लिटरेचर/ह्यूमैनिटीज, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर द्वारा आयोजित विश्व साहित्य की संकल्पना में इंडिक और दक्षिण पूर्व एशियाई परिप्रेक्ष्य पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में 'द हार्ट सूत्र एंड इट्स कंट्रीब्यूशन टू वर्ल्ड लिटरेचर' शीर्षक से पेपर प्रस्तुत किया। 17-18 नवंबर, 2023.
5. तिब्बत हाउस, गुलमोहर हॉल, इंडिया हैबिटेट द्वारा आयोजित सम्मेलन "समय, सूक्ष्म और स्थूल पदार्थ और ओन्टोलॉजिकल वास्तविकता, क्वांटम भौतिकी और बौद्ध दर्शन", श्रृंखला - VII में 'बौद्ध दर्शन के परिप्रेक्ष्य से पदार्थ और कण' शीर्षक वाला पेपर प्रस्तुत किया गया। केंद्र, नई दिल्ली, भारत। नवम्बर 25. 2023.
6. नव नालंदा महाविहार (डीम्ड यूनिवर्सिटी), बिहार, भारत द्वारा आयोजित 'बौद्ध धर्म और सनातन धर्म' पर व्याख्यान, ऑनलाइन मोड, 14 सितंबर 2023

पुरस्कार/शैक्षणिक मान्यता/अनुदान

- 8 मार्च, 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'बौद्ध धर्म में अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्ट महिला, 2024' पुरस्कार प्राप्त हुआ।

परियोजनाएं (चालू)

- फाउंडेशन फॉर इंडियन हिस्टोरिकल एंड कल्चरल रिसर्च (एफआईएचसीआर) के भारत में बौद्ध धर्म की यात्रा पर परियोजना में सलाहकार के रूप में शामिल हुए। साल 2024.

अन्य

तिब्बत हाउस, परम पावन दलाई लामा के सांस्कृतिक केंद्र, नई दिल्ली, मई 2024 में 'हिंदी में बौद्ध दर्शन पर नालंदा डिप्लोमा पाठ्यक्रम' के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्य सामग्री का संपादन और अनुवाद किया गया। (बौद्ध दर्शन पर नालंदा पाठ्यक्रम की पेशकश) तिब्बत हाउस द्वारा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए व्यक्तिगत और ऑनलाइन दोनों तरह से उपलब्ध हैं।)

प्रोफेसर सुशांत कुमार मिश्रा

प्रकाशन:

1. भारतीय संदर्भों में अनुवाद अधिनियम के अनुरूप पाठ्य अध्ययन पर यूरोपीय समानांतर परंपराएं: चार्ल्स बल्ली और सॉसर के उत्तराधिकारी, अनुवाद आज, खंड 17, 2023 (2022 में प्रस्तुत लेख), जर्नल ऑफ नेशनल ट्रांसलेशन मिशन, सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज, मैसूर [https://www.ntm.org.in/भाषाएँ/english/NewTT-vol17n2.aspx] [यूजीसी केयर सूचीबद्ध और व्यापक रूप से अनुक्रमित]

2. एफएलई एट लेस स्ट्रैटेजीज डी अप्रेंटिसेज डेस एप्रेंटेंट्स डेब्यूटेंट्स ए ट्रैवर्स लेस पॉडकास्ट एट लेस करेक्शन वोकल्स, कैराइवेटी, जनवरी-जून 2023, बीएचयू, वाराणसी (यूजीसी केयर सूचीबद्ध)

3. शास्त्रीय ग्रीक और लैटिन से अनुवाद: यूरोपीय भाषाओं की महाकाव्य परंपराओं में कथा का परिवर्तन, कैराइवेटी, जुलाई-दिसंबर 2023, बीएचयू, वाराणसी (यूजीसी केयर सूचीबद्ध)

4. अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा में "बहुभाषी शिक्षा: मन, अनुवाद और शिक्षाशास्त्र" पुस्तक अध्याय (डॉ. बिमल चरण स्वैन और डॉ. राजलक्ष्मी दास द्वारा संपादित), कुणाल बुक्स, नई दिल्ली -110002 आईएसबीएन: 9789395651462

5. "एनईपी 2020 में आवश्यकता आधारित शिक्षा की ओर: हितधारकों के रूप में शिक्षार्थियों के लिए एक प्रतिक्रिया", रोडमैप टू रिफॉर्म में पुस्तक अध्याय: एनईपी-2020 को लागू करना (डॉ. अनुराधा दीपक, राकेश कुमार और डॉ. दिनेश कुमार द्वारा संपादित), जेनिक बुक्स, आगरा, आईएसबीएन 9788197446887

दिए गए व्याख्यान और कार्यशाला सत्र आयोजित/भाग लिए गए:

1. "भारत-यूरोपीय भाषाई सातत्य में परिधीय केन्द्रितता", 23 मार्च 2024, https://indica.events/eventscenters/bhartiya-भाषा/ रिकॉर्डिंग https://www.youtube.com/watch?v=-eTgarcWwpc&list =PLplXz64H2WtFjdDopMAq1V3cML00s8zce&index=4. पर उपलब्ध है

2. "शब्द, ध्वनि, छवि ग्रहण और धारणा", तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद अध्ययन में ऑनलाइन पुनश्चर्या पाठ्यक्रम एचआरडीसी डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, 7 फरवरी 2024

3. 25 मार्च को एटेलियर डी फ़ोनेटिक डू फ़्रैन्कैस (फ़्रेंच फ़ोनोलॉजी पर कार्यशाला), स्कूल ऑफ़ लिबरल आर्ट्स एंड साइंस, मोदी यूनिवर्सिटी ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी का आयोजन किया गया।

4. "सामग्री और भाषा एकीकृत शिक्षण", भाषा क्षितिज पर संकाय विकास कार्यक्रम: वैश्विक दक्षताओं के लिए शिक्षकों को सशक्त बनाना एमिटी विश्वविद्यालय, कोलकाता, 24 जुलाई 2024

5. "क्रॉस कल्चरल कम्युनिकेशन स्किल", भाषा क्षितिज पर संकाय विकास कार्यक्रम: वैश्विक दक्षताओं के लिए शिक्षकों को सशक्त बनाना एमिटी यूनिवर्सिटी, कोलकाता, 25 जुलाई 2024

6. 22 मार्च, 2024 को विदेशी भाषा विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी द्वारा आयोजित कार्यशाला "भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में फ्रेंच के शिक्षकों के लिए कौशल वृद्धि कार्यक्रम' में फ्रेंच ध्वन्यात्मक पहलुओं के शिक्षण पर एक तकनीकी सत्र आयोजित किया गया।

7. राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, सीआईआईएल, मैसूर द्वारा अनुवाद के परिचय पर 2 सप्ताह के गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 15 जून को "तकनीकी शब्दों का अनुवाद: रुझान और परंपराएं" आयोजित किया गया।

8. राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, सीआईआईएल, मैसूर द्वारा अनुवाद के परिचय पर 2 सप्ताह के गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 16 जून को "समानांतर पाठों पर शैलीगत अभ्यास" आयोजित किया गया।

9. 6 मई, 2024 को गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद अध्ययन विभाग में "अंडरस्टैंडिंग द लुमिएरेस: ए ट्रिस्ट विद इंडिक सोर्सेज" पर एक सार्वजनिक व्याख्यान दिया गया।

10. 3 से 7 अगस्त, 2024 1 से 10 अगस्त 2024 तक आयोजित भारतीय काव्य विश्वकोश को पढ़ने और अंतिम रूप देने के लिए साहित्य अकादमी कार्यशाला में सक्रिय भागीदारी

11. कोलोके इंटरनेशनल में "नोवेल्स पिस्ट्स डे रीचर्चेस: लेस कंट्रीब्यूशन्स डेस फेमेस डान्स ल'एस्पेस फ्रैंकोफोन एन इंडे" पर समापन भाषण (सेरेमनी डे क्लोचर) दिया गया। पांडिचेरी विश्वविद्यालय (भारत) और यूनिवर्सिटी बोर्डो मॉन्टेन (फ्रांस) 9-11 सितंबर, 2024 को

12. एस.एन. में 'भारतीय भाषा परिवार और एक भाषाई क्षेत्र के रूप में भारत' विषय पर पांच दिवसीय सामग्री विकास कार्यशाला में ऑनलाइन सक्रिय भागीदारी। सिन्हा कॉलेज, जहानाबाद, भारतीय भाषा समिति (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के सहयोग से आयोजित

पीएच.डी. पर्यवेक्षण:

1. पर्यवेक्षण के तहत दो पीएचडी (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से) प्रदान की गईं:

मैं।

उम्मीदवार का नाम: रीना पुरी (विषय: टूरिज्म ए ट्रैवर्स ला क्लास इनवर्सी)

द्वितीय उम्मीदवार का नाम: राजपाल चौधरी (विषय: उने एट्यूड कम्पैरी डेस ट्रेडक्शंस डू टेक्स्ट संस्कृत डी महाभारत एन ट्रोइस लैंग्वेज (फ्रांसीसी, अंग्रेजी और हिंदी)

अन्य आयोजनों और शैक्षणिक समितियों में सदस्यता:

1. 7 नवंबर, 2023 को इंटर-स्कूल डिबेट कार्यक्रम के लिए जज (ऑनलाइन उपस्थिति)

2. कई राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी कार्यशालाओं में सक्रिय भागीदारी और सामग्री तैयार करना

3. सदस्य, गुजरात विश्वविद्यालय, बी.बी.एम. जैसे विभिन्न संस्थानों में कई उच्च स्तरीय समितियाँ (चयन समितियाँ, अध्ययन बोर्ड, डॉक्टरेट थीसिस मूल्यांकन समितियाँ आदि)। कोयलांचल विश्वविद्यालय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अंग्रेजी और विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्व विद्यालय (वर्धा), एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (गाजियाबाद) आदि।

एसएलएलएच में पर्यवेक्षित एम.ए. शोध प्रबंध:

संख्या: छह

क्र.	छात्र का नाम	नामांकन क्र.	विषय
1.	ऐन सेवी	050522002	खमेर-रीमकर पाठ और इंदै रामायण-वाल्मीकि पाठ के बीच तुलना
2.	लुकमान हकीम	050522004	अनुवाद की राजनीति - अंग्रेजी में विश्व साहित्यिक ग्रंथों की पहचान, अंतर और प्रासंगिकता
3.	श्रुति कुमारी	050522008	टैगोर के अनुवाद के माध्यम से कबीर के गीतों का विषयगत अध्ययन
4.	खोएमोन छे	050522009	आधुनिक कम्बोडियन साहित्य पर विश्व साहित्य का प्रभाव
5.	इंदा लेस्तारी	050522014	दसियाह के चित्र में जावानीस महिलाओं की

			स्वतंत्रता का प्रतिनिधित्व: रतिह कुमला द्वारा उपन्यास सिगरेट गर्ल का एक नारीवादी साहित्यिक विश्लेषण
6.	मुहम्मद नूर खुजैनी	050522015	सुजिवो तेजो द्वारा रहवाना पुतिह कठपुतली थियेटर का एक अध्ययन

विद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम

1. 17-18 नवंबर, 2023 को "विश्व साहित्य की संकल्पना में भारतीय और दक्षिण पूर्व एशियाई परिप्रेक्ष्य" पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। भारत और विदेश के प्रतिष्ठित विद्वानों और प्रतिभागियों ने इस संगोष्ठी में योगदान दिया। (संयोजक: प्रो. सुशांत कुमार मिश्र)

2. विशेष/प्रतिष्ठित व्याख्यान (प्रो. सुशांत कुमार मिश्रा द्वारा समन्वित):

मैं प्रो. एलेन डेसौलिएरेस, इनाल्को, पेरिस

द्वितीय. प्रो. मौलौद मैडौन, ईएसएसईसी, पेरिस

iii. प्रो. ओलिवर आरिफॉन, यूनिवर्सिटी लिब्रे डी ब्रुक्सलेज़, बेल्जियम

[उपर्युक्त 1 और 2 में सेमिनार और व्याख्यान की रिकॉर्डिंग नालंदा विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है]

डॉ. मीर इस्लाम, सहायक। प्रोफ़ेसर- एसएलएल/एच

लेख

2024:

1. इस्लाम, मीर. धीमेपन पर विचार: साहित्य, दर्शन और दर्द पर जे. एम. कोएत्ज़ी के विचार। शैक्षिक प्रशासनिक: सिद्धांत और व्यवहार। 2024, 30(4), 4319-4325। आईएसएसएन: 2148-2403

2. इस्लाम, मीर, जे.एम. कोएत्ज़ी के जीवन और माइकल के. राउटलेज पुस्तक श्रृंखला में स्मृति, प्रवासन और विकलांगता की खोज। (आगामी 2024)।

3. इस्लाम, मीर. "अमिताव घोष की द हंग्री टाइड में सीमाओं की राजनीति।" पॉट्सडैम विश्वविद्यालय, जर्मनी का जर्नल। (आगामी 2024)

2023:

4. इस्लाम, मीर, माँ बनना और बनना: संस्कृतियों और साहित्य में दर्द, प्यार और देखभाल का मार्ग। जर्नल ऑफ़ री अटैच थेरेपी एंड डेवलपमेंट डायवर्सिटीज़। eISSN: 2589-7799. 2023 अक्टूबर; 6(10): 2082-2095

5. इस्लाम, मीर. दर्द की धमनियाँ: जे. एम. कोएत्ज़ी की असंतोष की कहानियाँ। नामीबियाई अध्ययन जर्नल, 34 एस1 (2023): 2923-2951। आईएसएसएन: 2197-5523

विशेषज्ञ/संसाधन व्यक्ति के रूप में व्याख्यान हेतु आमंत्रित

विजिटिंग फैकल्टी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय। पाठ्यक्रम पढ़ाया गया: कथा का परिचय (सितंबर 2023)

किताब:

• एकान्त पथ में। ट्रांस. मीर इस्लाम. 2024. आईएसबीएन 978-81-965038-8-8

• इस्लाम, मीर. पृथ्वी की गूँज: जे. एम. कोएट्ज़ी के जीवन में इकोक्रिटिकल आवाज़ें और माइकल के. मित्तल प्रकाशन का समय। दिल्ली। 2024. आईएसबीएन: 978-81-19291- 81-6 (आगामी)।

मास्टर शोध प्रबंध, 2024

1. कुंजांग चोडेन की द सर्कल ऑफ कर्मा: एन इनसाइट इनटू भूटानी कल्चर एंड ट्रेडिशन।

2. ऐलिस वॉकर की द कलर पर्पल में स्वयं की खोज: मुक्ति की यात्रा

3. शेहान करुणातिलका की द सेवेन मून्स ऑफ माली अल्मेडिया: सामाजिक-राजनीतिक पहलुओं का प्रतिनिधित्व

4. युद्ध और शांति: माइकल ओंडात्जे की वॉरलाइट में युद्ध के बाद के प्रभावों का प्रतिनिधित्व

5. दर्दनाक स्मृति और क्षणिक विषयपरकता: लूज़ ग्लौक की ए विलेज लाइफ का एक अध्ययन

डॉ स्मिता सिंह

टीचिंग फेलो, स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज एंड लिटरेचर/ह्यूमैनिटीज (एसएलएल/एच)

शैक्षणिक उपलब्धियाँ (विद्वान प्रकाशन, सम्मेलनों में भागीदारी आदि)

सेमिनारों/सम्मेलनों में भागीदारी/प्रस्तुति - अंतर्राष्ट्रीय

• जुलाई 2024 में ऑक्सफोर्ड महिला नेतृत्व संगोष्ठी, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, लंदन, यूके में "द फेमिनिन डिवाइन: एक्सप्लोरिंग द एसेंस ऑफ द यूनिवर्स इन इंडियन वैदिक लिटरेचर" शीर्षक से अपना शोध प्रस्तुत किया।

• 21-22 जून 2024 को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस में आयोजित पर्यावरणीय मानविकी और वैश्विक दक्षिण: पारिस्थितिक न्याय के लिए परिप्रेक्ष्य पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "छठ पूजा: वैश्विक दक्षिण में समकालीन पर्यावरणीय स्थिरता के साथ पारंपरिक पारिस्थितिक प्रथाओं को जोड़ना" शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया। अध्ययन, शिमला।

• 27-28 मार्च 2024 को थिम्पू, भूटान में आयोजित बौद्ध अध्ययन और दर्शन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICBSP-24) में "बुद्धचरित में रस के दार्शनिक और सौंदर्य संबंधी आयामों का अनावरण: एक साहित्यिक अन्वेषण" पर अपना शोध प्रस्तुत किया।

• 29 जनवरी से 2 फरवरी 2024 के बीच आयोजित स्वास्थ्य मानविकी: स्वास्थ्य, साहित्य, कला, समाज और संस्कृति के अंतर्संबंध पर राष्ट्रीय सम्मेलन में "हार्मोनाइजिंग फिलॉसफी: द हार्ट सूत्र एंड योगा ऑन मेंटल वेल-बीइंग" पर एक पेपर प्रस्तुत किया। पीजी मनोविज्ञान विभाग, एसडीएनबीवी महिला कॉलेज (मद्रास विश्वविद्यालय से संबद्ध) के सहयोग से पीजी अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित किया गया।

• "वेदांत दर्शन और डब्ल्यू.बी.येट्स द्वारा चयनित कविताओं में सार्वभौमिकता का विचार", विश्व साहित्य की संकल्पना में इंडिक और दक्षिण पूर्व एशियाई परिप्रेक्ष्य पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, संख्या 17-18 2023, भाषा और साहित्य/मानविकी स्कूल, नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित , राजगीर, बिहार।

पीयर रिव्यूड/यूजीसी केयर सूचीबद्ध/वेब ऑफ साइंस इंडेक्स्ड जर्नल में पेपर प्रकाशन

• “अद्वैत वेदांत और पश्चिम बंगाल में पारगमन की काव्यात्मक खोज।” येट्स पोएट्री", साहित्यिक आवाज, वॉल्यूम। 1, संख्या 2, जनवरी 2024। ए पीयर रिव्यूड जर्नल ऑफ इंग्लिश स्टडीज, वेब ऑफ साइंस और यूजीसी केयर द्वारा अनुक्रमित।

सम्मेलन की कार्यवाही में सहकर्मी द्वारा समीक्षित प्रकाशन

• "झुंपा लाहिड़ी के चुनिंदा कार्यों में भोजन और नारीवाद की संस्कृति"। अंग्रेजी भाषा, साहित्य और मानविकी का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। खंड 7 अंक 4. अप्रैल 2019। आईएसएसएन: 2321-7065।

पाडुलिपि मई 2024 में प्रस्तुत की गई

• "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड द आइडिया ऑफ जेंडर इन सेलेक्ट फीमेल साइंस फिक्शन राइटर्स", दृष्टि: द साइट, यूजीसी केयर लिस्टेड, वॉल्यूम XIII, नवंबर 2024 का अंक II। आगामी प्रकाशन।

पुस्तक अध्याय/अनुवादित कहानी:

• खेमानी, कुसुम। "एक पारस पत्थर" (एक पारस पत्थर)। सच कहती कहानियाँ, डॉ. स्मिता द्वारा अनुवादित, प्रोफेसर बनिब्रत महंत द्वारा संपादित, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, आगामी प्रकाशन।

• डॉ स्मिता. "माई पीरियड, माई प्राइड: रीडिंग मासिक धर्म, री-स्पेसिंग मासिक धर्म स्वास्थ्य"। मासिक धर्म संबंधी आख्यानों को पुनः-अंतराल देना। डॉ. रज़ीना पी आर द्वारा संपादित। अमेज़ॅन किंडल डायरेक्ट पब्लिशिंग, सितंबर 2022, पीपी 43-49।

• स्मिता. "वैकल्पिक मर्दाना प्रथाओं और पर्यावरण विकास के सकारात्मक अंतर्संबंध का आकलन: उत्तर औपनिवेशिक पर्यावरण अध्ययन में एक नई पद्धति"। अंग्रेजी में आधुनिक और उत्तर आधुनिक साहित्य: बनने का आग्रह। संपादन डॉ. सिया राम राय ने किया। मैकमिलन, 2019, पीपी 227-231।

• स्मिता. "होम अवे होम: बाउंड्रीज़ एंड बियॉन्ड"। उत्तर औपनिवेशिक साहित्य में स्थानीय और वैश्विक। संपादक: डॉ. पुण्यश्री पांडा, ऑथर्सप्रेस, 2014।

आमंत्रित व्याख्यान

• महिला और राजनीति पर एक पाठ्यक्रम के लिए "द फेमिनिन सेक्रेड: द कॉस्मिक एसेंस इन वैदिक थॉट" पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया, स्कूल ऑफ पब्लिक अफेयर्स, अमेरिकन यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन, डीसी, यूएसए। (ऑनलाइन)

• बौद्ध अध्ययन विभाग, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, 8 दिसंबर 2023 द्वारा आयोजित एक कार्यशाला में "अकादमिक लेखन" पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया।

• 23-24 दिसंबर 2023 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), पटना में "भाषा, साहित्य और संचार" व्याख्यान श्रृंखला पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया।

• केईटी के वी.जी. के इंग्लिश लिटरेरी एसोसिएशन (ईएलए) द्वारा आयोजित "मासिक धर्म साहित्य और स्वास्थ्य" के बारे में बात करने के लिए "ब्लीडिंग नैरेटिव्स" नामक कार्यक्रम में एक संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया। वेज़ कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स, 30 अगस्त 2022।

डॉ. कुमुदा प्रसाद आचार्य:

शैक्षणिक उपलब्धियां:

अनुसंधान और प्रकाशन:

• आचार्य, कुमुद प्रसाद, द काव्यवनिता ऑफ कृष्णवधूता: ए स्टडी, शिवालिक प्रकाशन, 4648/21, जीएफ, अंसारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002, 2024। आईएसबीएन: 978-81-961003-0-8।

• आचार्य, कुमुद प्रसाद, स्वप्नप्रिया (संस्कृत कविताओं का संकलन), शिवालिक प्रकाशन, 4648/21, जीएफ, अंसारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002, आईएसबीएन: 978-81-961004-3-8।

सम्मेलनों/सेमिनारों/आमंत्रित वार्ताओं/वक्ता/संसाधन व्यक्ति में प्रस्तुतियाँ:

10 दिसंबर 2023 को पौरणमासी पथगारा, अभिराम सारस्वत परिषद, कटक, ओडिशा द्वारा आयोजित 'श्री अभिराम परमहंस के कार्यों में मानव मूल्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'अभिराम की कोइलिशीक्षा में मानव मूल्य' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

28-29 अगस्त 2023 को संस्कृत विभाग, एफ.एम. द्वारा आयोजित 'भारतीय परंपरा और ज्ञान संचरण के आयाम' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'एक अप्रकाशित पाठ का विषयगत विश्लेषण-सीतारामचरित' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय, बालासोर, ओडिशा।

डॉ. श्रीषा उडुपा

मास्टर के शोध प्रबंध का पर्यवेक्षण किया गया

1. 2024: किनले शेरिंग (50522001), द एपिक ट्रेडिशन ऑफ भूटान: ए स्टडी ऑफ नामथर खंड्रो ड्रोवा ज़ंगमो (पर्यवेक्षक: श्रीशा उडुपा)।

2. 2024: सिल्वी रामा यूलियान ब्रोअर्स (50522003), द मेडेंस: ए साइकोएनालिटिकल स्टडी (पर्यवेक्षक: श्रीषा उडुपा)।

3. 2024: नूर काहयानी (50522004), एका कुर्नियावान का मैन टाइगर (लेलाकी हरिमौ): विश्व साहित्य के ढांचे में एक अध्ययन (पर्यवेक्षक: श्रीषा उडुपा)।

4. 2024: मई थू (50522017), एनी एर्नाक्स हैपनिंग: ए स्टडी इन नैरेटिव हेर्मेनेयुटिक्स (पर्यवेक्षक: श्रीशा उडुपा)।

5. 2024: मोहम्मद रावशन येज़दानी (50522018), साहित्यिक अध्ययन के क्षेत्र में संकट और विश्व साहित्य का उद्भव: दक्षिण एशिया से एक अध्ययन (पर्यवेक्षक: श्रीशा उडुपा)।

6. 2024: स्तुति कुशवाह (010122016), सांस्कृतिक विरासत का डिजिटल संरक्षण: जैन रॉक-कट गुफा, ग्वालियर का एक केस स्टडी" (पर्यवेक्षक: श्रीषा उडुपा, सह-पर्यवेक्षक: तोसाबंता पधान)।*

प्रबंधन अध्ययन स्कूल

प्रबंधन अध्ययन स्कूल का उद्देश्य भावी प्रबंधकों और कार्यपालकों को प्रशिक्षित करना है, जो न केवल सतत विकास के लिए बाजार की वर्तमान प्रवृत्तियों के प्रति संवेदनशील होंगे, बल्कि स्थिरता की बहुआयामी वैश्विक चुनौतियों के समाधान भी निकालेंगे। यह संस्थान अपने दृष्टिकोण में अद्वितीय है, क्योंकि यह भावी प्रबंधकों को अंतःविषय दृष्टिकोण से प्रबंधन समस्याओं का समाधान करने और न केवल वित्तीय जोखिम बल्कि आधुनिक संगठनों के समक्ष पर्यावरणीय और सामाजिक जोखिमों का प्रबंधन करने के लिए भी तैयार करता है।

हितधारक परामर्श

हितधारकों की परामर्श प्रक्रिया में शिक्षाविदों और उद्योग जगत के विशेषज्ञों से संपर्क किया गया, ताकि प्रबंधन अध्ययन संस्थान के लिए विस्तृत रूपरेखा तैयार की जा सके। इसी संदर्भ में, डॉ. मनोज वर्गीज (पूर्व निदेशक, फेसबुक इंडिया और पूर्व एचआर प्रमुख, एशिया-प्रशांत, गूगल) ने नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर परिसर का दौरा किया और सतत विकास और प्रबंधन में एमबीए कार्यक्रम की रूपरेखा, पात्रता मानदंड, प्रवेश प्रक्रिया और शुल्क संरचना को अंतिम रूप दिया गया।

रणनीतिक रूपरेखा और पाठ्यक्रम की तैयारी

आगामी महीनों में संस्थान का मिशन, दृष्टि और रणनीतिक प्राथमिकताओं को परिभाषित किया गया। विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम विवरण और रूपरेखाएं तैयार की गईं। सभी पाठ्यक्रमों के लिए अध्ययन सामग्री की पहचान की गई और इन्हें पाठ्यक्रम की रूपरेखाओं में जोड़ा गया। विश्वविद्यालय पुस्तकालय में कार्यक्रम से संबंधित पुस्तकें और पत्रिकाओं को उपलब्ध कराने के प्रयास किए गए।

प्रबंधन और स्थिरता विषयों में विदेशी विश्वविद्यालयों और उद्योगों के विशिष्ट शिक्षकों से संपर्क किया गया और उन्हें सतत विकास और प्रबंधन में एमबीए के विभिन्न पाठ्यक्रमों को पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया गया।

विद्यालय से संबंधित जानकारी जैसे कि फैकल्टी, कार्यक्रम की संरचना और विवरण वेबसाइट पर अपडेट किए गए और 2020-21 शैक्षणिक वर्ष से कार्यक्रम शुरू करने के लिए एक प्रवेश रणनीति तैयार की गई।

शिक्षण का दृष्टिकोण

संस्थान का उद्देश्य भावी प्रबंधकों और कार्यपालकों को प्रशिक्षित करना है, जो न केवल सतत विकास के लिए बाजार की वर्तमान प्रवृत्तियों के प्रति संवेदनशील होंगे, बल्कि स्थिरता की वैश्विक चुनौतियों के समाधान भी खोजेंगे। हमारे व्यापक अंतःविषय दृष्टिकोण के तहत, ज्ञान सृजन और इंटरैक्टिव और गैर-परंपरागत शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से अनुभवात्मक शिक्षण, समाधान-प्रधान सोच और आलोचनात्मक जिज्ञासा पर जोर दिया जाएगा। छात्रों/कार्यपालकों को तकनीकी प्रबंधक के रूप में प्रशिक्षित किया जाएगा।

भविष्य की योजना

आने वाले वर्षों में, हमारा प्रयास रहेगा कि विश्वविद्यालयों, निगमों और संस्थानों के साथ बहु-हितधारक साझेदारी की जाए, विशेष रूप से यह सुनिश्चित करने के लिए कि संस्थान स्थायी प्रबंधन और अन्य उभरते प्रबंधन प्रतिमानों के एक अनूठे ज्ञान केंद्र के रूप में वैश्विक नेतृत्व हासिल करे। जिम्मेदार प्रबंधन शिक्षा के अंतरराष्ट्रीय मंचों पर नेटवर्किंग के माध्यम से, स्कूल में हमारा प्रयास छात्रों और विद्वानों को विभिन्न धाराओं से आकर्षित करना होगा, ताकि नालंदा विश्वविद्यालय की 21वीं सदी के लिए एक अभिनव ज्ञान केंद्र के रूप में दृष्टि को साकार किया जा सके।

मिशन

उत्तरदायी प्रबंधन और अन्य उभरते प्रबंधन क्षेत्रों में सतत विकास के मॉडल बनाने के लिए प्रबंधन अध्ययन संस्थान को एक वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करना।

रणनीतिक प्राथमिकताएं

नेतृत्व विकास में उत्कृष्टता प्राप्त करना, ताकि संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों में योगदान किया जा सके।

व्यावहारिक शिक्षण विधियों के माध्यम से स्थिरता में एक वैश्विक ज्ञान केंद्र का निर्माण।

जिम्मेदार प्रबंधन में बहु-हितधारक साझेदारी बनाने के लिए कॉरपोरेट्स, संस्थानों और उद्योगों के साथ नेटवर्किंग स्थापित करना।

नवीन सिद्धांत और व्यवहार के माध्यम से ASEAN और व्यापक अर्थव्यवस्थाओं में स्थिरता को एकीकृत करना।

पाठ्यक्रम

बुनियादी पाठ्यक्रम

मुख्य पाठ्यक्रम

संगठनात्मक व्यवहार

प्रबंधकीय लेखा

मात्रात्मक विधियां

मैक्रो इकोनॉमिक्स और मौद्रिक नीति

स्थिरता प्रबंधन

व्यावसायिक कानून

व्यवसाय संचार में संगोष्ठी

अतिरिक्त क्रेडिट कोर्स: शैक्षणिक लेखन और आलोचनात्मक सोच

सेतु पाठ्यक्रम

मुख्य पाठ्यक्रम

प्रबंधकीय अर्थशास्त्र

व्यवसाय रणनीति और नीति

सतत विपणन रणनीतियां

व्यावसायिक नैतिकता और कॉर्पोरेट प्रशासन

सामाजिक उद्यमिता और स्थिरता

मानव संसाधन प्रबंधन

व्यवसाय संचार में संगोष्ठी

अतिरिक्त क्रेडिट कोर्स: आलोचनात्मक सोच और अंतःविषय शोध

इंटर्नशिप

उन्नत पाठ्यक्रम

मुख्य पाठ्यक्रम

स्थिरता रिपोर्टिंग और वित्त

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वित्त

वैकल्पिक/कैफेटेरिया मॉडल

ब्लू इकॉनमी

नई अक्षय ऊर्जा संसाधन

समेकित जल संसाधन प्रबंधन

कृषि और विकास

गरीबी और सतत विकास

जलवायु परिवर्तन और विकास

सतत शहरीकरण और विकास

संस्कृति, दर्शन, सौंदर्यशास्त्र और प्रबंधन

शैक्षणिक लेखन

व्यवसाय विश्लेषण

कॉर्पोरेट अनुभव/प्रबंध प्रबंधपत्र

फैकल्टी

आंतरिक फैकल्टी

क्र.	**संकाय**	**पदनाम**	**विशेषज्ञता का क्षेत्र**
1.	प्रोफेसर सपना ए नरूला	प्रोफेसर एवं डीन	व्यवसाय स्थिरता, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, रणनीतिक योजना, स्थायी व्यवसाय रणनीति
2.	डॉ आनंद कुमार	सहेयक प्रोफेसर	मात्रात्मक तकनीक, जल संसाधन प्रबंधन, नीली अर्थव्यवस्था, सामाजिक उद्यमिता
3.	डॉ. मुनीर ए मैग्री	शिक्षण साथी	गरीबी और सतत विकास, जलवायु परिवर्तन और विकास, कृषि और विकास, कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी

अंतर्राष्ट्रीय विजिटिंग फैकल्टी

क्र	**विजिटिंग फैकल्टी**	**पद का नाम**	**विशेषज्ञता का क्षेत्र**
4.	प्रो. अंबिका जुत्शी	प्रोफेसर एवं प्रमुख दक्षिणी क्वींसलैंड विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया	व्यावसायिक नैतिकता और नेतृत्व, कॉर्पोरेट प्रशासन
5.	प्रो. सीजर मैरोला	लेखक स्थिरता के लिए सलाहकार समिति के सदस्य, हार्वर्ड विश्वविद्यालय, यूएसए	सतत शहरीकरण, स्मार्ट शहर

6.	डॉ. माइकल दियोहा	ऊर्जा विशेषज्ञ कैलिफोर्निया ऊर्जा आयोग, यू.एस	नवीकरणीय ऊर्जा
7.	डॉ श्रीरंगन राजगोपाल	सीईओ यूमोबी सॉल्यूशंस कॉर्पोरेशन, एनजे, यूएसए	संगठनात्मक व्यवहार, मानव संसाधन प्रबंधन
8.	डॉ अभिषेक कुमार	सहायक प्रोफेसर साउथेम्प्टन विश्वविद्यालय, यूके	व्यापार विश्लेषण, सूक्ष्मअर्थशास्त्र और मौद्रिक नीति

विजिटिंग फैकल्टी (भारत)

क्र.	विजिटिंग फैकल्टी	पद का नाम	विशेषज्ञता का क्षेत्र
9.	प्रो. बी. के. सिक्का	कार्यकारी निदेशक, इक्विकैप वेंचर्स प्राइवेट। लिमिटेड	कृषि व्यवसाय
10.	प्रो अंजल प्रकाश	अनुसंधान निदेशक एवं एसोसिएट प्रोफेसर, भारती इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक पॉलिसी, इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी), हैदराबाद	जलवायु परिवर्तन
11.	डॉ. अघिला शशिधरन	सहायक प्रोफेसर जिंदल ग्लोबल बिजनेस स्कूल, सोनीपत, भारत	प्रबंधकीय लेखांकन, वित्त
12.	प्रोफेसर रविंदर कुमार	प्रोफ़ेसर वाणिज्य और व्यवसाय विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली	व्यापार कानून
13.	डॉ गोपाल सारंगी	सहेयक प्रोफेसर टेरी स्कूल ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, नई दिल्ली	नवीकरणीय ऊर्जा

14.	डॉ. सुनील कुमार	सहेयक प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय	अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वित्त
15.	डॉ. अमित टुटेजा	निदेशक कनेक्टिंग ड्रीम्स फाउंडेशन	सामाजिक उद्यमिता और स्थिरता

उद्योग से संकाय (सत्र विवरण सहित)

क्र	उद्योग से संकाय	पद का नाम	बातचीत का विषय	तारीख
16.	श्री राहुल प्रसाद	सलाहकार, शेल इंडिया	तेल और गैस उद्योग के लिए डीकार्बोनाइजेशन रणनीतियाँ	01.9.2023
17.	डॉ सुगंधा श्रीवास्तव	ब्रिटिश अकादमी पोस्ट-डॉक्टोरल फेलो, स्मिथ स्कूल ऑफ एंटरप्राइज एंड एनवायरनमेंट, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यूके	हरित प्रतिस्पर्धात्मकता और नवीनता	13.09.2023
18.	श्री शैलेश त्यागी	साथी, डेलॉइट भारत/ऑस्ट्रेलिया	डीकार्बोनाइजेशन रणनीतियाँ	20.09.2023
19.	सुश्री जलजाक्षी	सीके-कॉर्पोरेट आउटरीच, अनुदीप फाउंडेशन, भारत	भारत में डिजिटल साक्षरता और एसडीजीएस	13.10.2023
20.	श। आशीष गुप्ता	डीजीएम, भारत पेट्रोलियम	भारत में निष्कर्षण उद्योगों में ईएसजी में प्रगति	19.01.2024
21.	श्री नवीन पाटीदार	सीईओ। आगा खान ग्रामीण फाउंडेशन। भारत	भारत में आगा खान द्वारा ग्रामीण विकास पहल	08.03.2024

शैक्षणिक उपलब्धियां

सहकर्मी-समीक्षित प्रकाशन

1. मैग्री, एम.ए., काहिल, डी., रूक्स, जे.. (2024)। गैर-लकड़ी वन उत्पाद: विकास, विकास और अनुसंधान। जैव विविधता, 1-22. (टेलर और फ्रांसिस) उद्धरण स्कोर 2, स्कोपस Q2

2. बगदीम, एस., सिद्दीकी, ए., नरूला, एस.ए., फरहान, एन.एच., और मैग्री, एम.ए. (2024)। पर्यावरणीय व्यय पर फर्म-विशिष्ट और व्यापक आर्थिक निर्धारकों का प्रभाव: विनिर्माण फर्मों से अनुभवजन्य साक्ष्य। अर्थव्यवस्थाएँ, 12(7), 159. प्रभाव कारक 2.4; स्कोपस Q2. एबीडीसी बी (संबंधित लेखक)

3. कुमार, पी., कुमार, एम....कुमार ए. एट अल.. (2023)। भूजल में फ्लोराइड संदूषण और मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव और उसके निवारण पर एक समीक्षा: एक स्थायी दृष्टिकोण। पर्यावरण विष विज्ञान और फार्माकोलॉजी, एल्सेवियर, 104356। डीओआई: https://doi.org/10.1016/j.etap.2023.104356 आईएफ: 4.30; एसजेआर: Q1.

4. कुमार, पी., सिंह, एस., गेसम, ए....कुमार ए., एट अल. (2024)। ई-अपशिष्ट संदूषण, विषाक्तता और इसके प्रबंधन के लिए स्थायी सफाई दृष्टिकोण पर एक समीक्षा। विष विज्ञान, 153904 आईएफ: 4.8; एसजेआर:Q1.

सम्मेलन प्रस्तुति

1. केंचो डब्ल्यू, कुमार ए, मैग्री एम. ए., 2024; कृषि वानिकी प्रथाओं के माध्यम से सतत आजीविका और जलवायु परिवर्तन अनुकूलन: भूटान का एक मामला। 14-19 दिसंबर, 2024 को झेंग्झौ, चीन में एल्सेवियर द्वारा आयोजित 7वें अंतर्राष्ट्रीय इको-शिखर सम्मेलन कांग्रेस में मौखिक प्रस्तुति के लिए स्वीकृत

2. मैग्री, एम.ए., 2024। "एकीकृत स्थिरता की ओर: एक जिम्मेदार व्यवसाय ढांचे के माध्यम से भारत में कृषि-व्यवसायों का मूल्यांकन" नामक एक सार को इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर बिजनेस एंड सोसाइटी में मौखिक प्रस्तुति के लिए स्वीकार किया गया था; 35वां वार्षिक सम्मेलन, मैरीलैंड, यूएसए; 13-16 जून, 2024

3. मैग्री एम, काहिल डी, रूक्स जे, नरूला एस (2024); गैर-लकड़ी वन उत्पादों का एक एकीकृत मूल्य श्रृंखला विश्लेषण: भारत के झारखंड राज्य का एक मामला 2024 फ्लेयर (वन और आजीविका: मूल्यांकन, अनुसंधान और सगाई) को प्रस्तुत किया गया, रोम, इटली में 3-7 अक्टूबर को होने वाली वार्षिक बैठक, 2024, यूनिवर्सिटी ऑफ नोट्रे डेम यूएसए के साथ साझेदारी में।

4. सिंह, सी.के., द्विवेदी, पी., कुमार, ए., गार्जंती, ई., वॉकर, डी., सावंत, ए.डी., ... और वैन गीन, ए. (2023, दिसंबर)। हिमालय तक रावी नदी के बाढ़ क्षेत्र के जलभृतों में उच्च आर्सेनिक के स्रोत का पता लगाना। एजीयू फ़ॉल मीटिंग एब्स्ट्रैक्ट्स में (वॉल्यूम 2023, संख्या 208, पीपी. एच33वी-208)।

5. कुमार ए., सिंह सी.के. वैन गीन, ए. (2024) रावी बाढ़ के मैदान, पंजाब, भारत में आर्सेनिक वितरण की स्थानिक विविधता। पेपर आईडी: 23 को 9वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस और पर्यावरण में आर्सेनिक पर प्रदर्शनी में स्वीकार किया गया। ग्लोबल क्लाइमेट चेंज परिदृश्य के तहत आर्सेनिक और अन्य प्रदूषक, जल सुरक्षा और एक स्वास्थ्य विषय पर इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ ग्राउंडवॉटर फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट, स्टॉकहोम, स्वीडन द्वारा कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (केआईआईटी), भुवनेश्वर, ओडिशा, भारत में 20 अक्टूबर को आयोजित किया गया। -24, 2024.

7. वर्मा, ए., कुमार। ए., फरत्याल एस. एट अल., (2024) सत्र 1: विभिन्न प्राकृतिक सेटिंग्स में प्रदूषकों का स्रोत और वितरण। पेपर आईडी: 21 "बिहार, भारत के ऐतिहासिक रूप से समृद्ध सिंचाई क्षेत्र में नाइट्रेट संदूषण स्रोत" 9वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस और पर्यावरण में आर्सेनिक पर प्रदर्शनी में प्रस्तुत किया गया। ग्लोबल क्लाइमेट चेंज परिदृश्य के तहत आर्सेनिक और अन्य प्रदूषक, जल सुरक्षा और एक स्वास्थ्य विषय पर इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ ग्राउंडवॉटर फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट, स्टॉकहोम, स्वीडन द्वारा कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (केआईआईटी), भुवनेश्वर, ओडिशा, भारत में 20 अक्टूबर को आयोजित किया गया। -24, 2024.

8. वर्मा, ए., कुमार। ए., फ़र्त्याल एस. एट अल., (2024)। "भूजल में नाइट्रेट संवर्धन और संबंधित मानव स्वास्थ्य जोखिम: मध्य-गंगा के मैदान से एक केस अध्ययन" 14-18 अक्टूबर, 2024 को उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय के 2024 जल और स्वास्थ्य सम्मेलन में स्वीकार किया गया।

9. आइवी, एन., धवला, के., कुमार, ए., संधि, ए. (2023)। नियमित सत्र 5: 86006। "कोशी-गंगा बाढ़ क्षेत्र, बिहार, भारत में भूजल आर्सेनिक संदूषण और संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों का आकलन" वुपर्टल, जर्मनी में पहला संयुक्त अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन। ICOBTE और ICHMET 6-10 सितंबर, 2023।

आयोजन/क्षेत्र/कॉर्पोरेट दौरा

1-2 दिसंबर, 2023 को स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज द्वारा 'नेट जीरो फ्यूचर की ओर संक्रमण' विषय के तहत ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया।

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज नालंदा विश्वविद्यालय ने 1-2 दिसंबर, 2023 को अपने ऐतिहासिक राजगीर परिसर में "नेट ज़ीरो की ओर संक्रमण" शीर्षक से एक वैश्विक स्थिरता कॉन्क्लेव की मेजबानी की। इस कार्यक्रम में उद्योग जगत की प्रमुख हस्तियां और दुनिया भर के सम्मानित विद्वान वक्ता के रूप में शामिल हुए। 200 से अधिक उपस्थित लोगों ने वैश्विक स्थिरता संबंधी चिंताओं और संभावित समाधानों पर विचारोत्तेजक चर्चाओं का अवलोकन किया। उद्घाटन सत्र में नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति (प्रथम) प्रोफेसर अभय कुमार सिंह ने भाग लिया; प्रोफेसर सपना ए नरूला, डीन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, मुख्य अतिथि प्रोफेसर नवा सुब्रमण्यम। मानद प्रोफेसर, आरएमआईटी, ऑस्ट्रेलिया और डीन, अमृता बिजनेस स्कूल, अमृता विश्वविद्यालय और सम्मानित अतिथि डॉ. रजत पंवार, एसोसिएट प्रोफेसर और एसएनआर सर्टिफिकेट के निदेशक, ओरेगन स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए; डॉ. मोहन येलिशेट्टी, प्रोफेसर रिसोर्स इंजीनियरिंग, मोनाश यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया, सम्मानित अतिथि डॉ. रमेश मित्तल, निदेशक, राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, सम्मानित अतिथि श्री अभिषेक रंजन- वैश्विक निदेशक और प्रमुख ईएसजी , ब्रिलियो एवं प्रबंध ट्रस्टी ब्रिलियो फाउंडेशन

दो दिवसीय सम्मेलन में प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई, जिनमें उद्योग और अकादमिक विशेषज्ञों ने वैश्विक स्थिरता चुनौतियों के संबंध में विभिन्न चिंताओं पर प्रकाश डाला, जो चुनौतियों से निपटने के लिए महत्वपूर्ण समाधान हैं।

जिन विषयों पर विचार-विमर्श किया गया उनमें निम्नलिखित शामिल हैं

1. पैनल चर्चा: नेट ज़ीरो की ओर मार्ग: व्यावसायिक रणनीतियाँ और नवाचार
2. पैनल चर्चा: सर्कुलर इकोनॉमी और अपशिष्ट प्रबंधन: उभरती अर्थव्यवस्था में संभावनाएं
3. पैनल चर्चा: अनिवार्य सीएसआर का एक दशक: भारत के अनुभव से अन्य देश क्या सीख सकते हैं?
4. पैनल चर्चा: व्यवसाय को पुनर्परिभाषित करना: सतत परिणामों के लिए सामाजिक उद्यमिता

MINI AUDITORIUM

Nālandā
UNIVERSITY
SCHOOL OF MANAGEMENT STUDIES
GLOBAL SUSTAINABILITY CONCLAVE
TRANSITION TOWARDS NET ZERO FUTURE
DEC 01-02, 2023
HYBRID MODE
Deloitte.
Cargill
BukitAsam
Shell
Bharat Petroleum
MONASH University
brillio
LG
DEC 01 & 02, 2023
SCHOOL OF MANAGEMENT STUDIES
NALANDA UNIVERSITY

Nālandā
UNIVERSITY
SCHOOL OF MANAGEMENT STUDIES
GLOBAL SUSTAINABILITY CONCLAVE
TRANSITION TOWARDS NET ZERO FUTURE
DEC 01-02, 2023
HYBRID MODE
Redefining Business: Social Entrepreneurship for Sustainable Outcomes
Day 02 | 10:00 Am IST Onwards
Dr. Amit Tuteja
CEO-Connecting Dreams Foundation-New Delhi
Dr. Uday Wankawala
CEO- Atal Incubation Center Rambhau Mhalgi Prabodhini
Dr. Yashveer Singh
CO-founder and Global Director, Ashoka Young Changemakers
Dr. Anubha Prasad
GM & Regional Head, Bihar and Jharkhand, SIDBI
Dr. Rana Singh
Director, Chandragupta Institute of Management, Patna
Ms. Harsha Mukherjee
Managing Director, IICSR Goa
Mr. Vijoy Prakash
Chairman cum CEO, Atal Incubation Centre, - Bihar Vidyapith, Patna.
Mr. Amar Singh Yadav
CEO and Founder, Aseries Envirotek India Pvt Ltd
DEC 01 & 02, 2023
SCHOOL OF MANAGEMENT STUDIES
NALANDA UNIVERSITY

एक्सपोज़र विजिट- 19 मार्च, 2024

स्थान: चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान, पटना; बी-हब, पटना और पटना स्मार्ट सिटी परियोजना।

संचालनकर्ता: स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय

प्रतिभागी: सतत विकास और प्रबंधन में एमबीए के छात्र (सूची अनुलग्नक 1 के रूप में संलग्न है)

संकाय समन्वयक: डॉ. आनंद कुमार और डॉ. मुनीर मैग्री

यात्रा की तिथि: 19 मार्च, 2024

एक्सपोज़र विजिट का उद्देश्य

• एक्सपोज़र विजिट का समग्र उद्देश्य यह जानना था कि इनक्यूबेशन सेंटर, स्टार्ट-अप सेल उन युवा दिमागों की कैसे मदद करते हैं जो छोटे पैमाने पर स्टार्ट-अप शुरू करने की इच्छा रखते हैं।

• उभरते पर्यावरणीय और सामाजिक मुद्दों के जवाब में नवाचार, सहयोग और नए व्यवसाय विकास के अवसरों की पहचान करें।

• सीखें कि नौकरियां और आर्थिक अवसर कैसे पैदा करें, सतत विकास को बढ़ावा दें और गरीबी, असमानता और जलवायु परिवर्तन जैसे सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों का समाधान कैसे करें।

• सामाजिक प्रभावों को मापने और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए उचित तरीके डिज़ाइन करें

• चक्रीय अर्थव्यवस्था, शुद्ध शून्य संक्रमण, अपशिष्ट और जल प्रबंधन सहित टिकाऊ शहरीकरण के विभिन्न पहलुओं को जानें

एक्सपोज़र विजिट के बारे में

सीआईएमपी पटना

19 मार्च को एमबीए छात्रों ने दो संकाय सदस्यों के साथ चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान, पटना का दौरा किया; बी-हब, पटना और पटना स्मार्ट सिटी परियोजना। निदेशक सीआईएमपी डॉ. राणा सिंह, सीएओ श्री कुमोद कुमार और अन्य अधिकारियों के नेतृत्व में सीआईएमपी टीम ने हमारा स्वागत किया और हमें सीआईएमपी द्वारा स्टार्ट-अप सेल सहित शुरू की गई विभिन्न पहलों और कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी; सीआईएमपी बीआईआईएफ कार्यक्रम और ये सभी पहल युवा उद्यमियों को उनके स्टार्ट-अप सपनों को साकार करने में कैसे मदद करती हैं।

सीआईएमपी के निदेशक ने भारत के स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र के कई पहलुओं पर एक इंटरैक्टिव सत्र की सुविधा प्रदान की। डॉ. राणा सिंह ने सीआईएमपी बीआईआईएफ पहल के प्राथमिक लक्ष्यों के बारे में विस्तार से बताया, जिसमें एडू-टेक, फिन-टेक, एड-टेक, ई-कॉमर्स और हेल्थ-टेक क्षेत्रों में नए व्यवसाय बनाना शामिल है। डॉ. सिंह ने व्यवसायों से संबंधित ऊष्मायन गतिविधियों के लिए भौतिक बुनियादी ढांचे और सहायता प्रणालियों की स्थापना के महत्व पर विस्तार से बताया। डॉ. सिंह ने स्टार्ट-अप में निवेश के अवसरों पर भी चर्चा की और सलाह, विशेषज्ञ परामर्श और व्यावसायिक सलाह जैसे पेशेवर संसाधनों के साथ नेटवर्किंग की सुविधा के महत्व पर जोर दिया; एक नवाचार आधारित उत्पाद परीक्षण सुविधा; और उद्यमशीलता गतिविधियाँ। डॉ. सिंह ने स्टार्ट-अप में निवेश के अवसरों के बारे में भी बात की।

चित्र: निदेशक और सीएओ सीआईएमपी छात्रों के साथ बातचीत करते हुए

बी-हब

सीआईएमपी इंटरैक्टिव सत्र के बाद, छात्र बी-हब की ओर बढ़े। बी-हब पटना के प्रमुख श्री राजीव कुमार, सीआईएमपी के निदेशक डॉ. राणा सिंह, सीएओ श्री कुमोद कुमार ने छात्रों और संकाय सदस्यों का स्वागत किया।

निदेशक सीआईएमपी और प्रमुख बी-हब ने छात्रों के साथ संस्थान की कई महत्वपूर्ण गतिविधियों पर चर्चा की। बातचीत के दौरान छात्रों को बताया गया कि बी-हब बिहार में इनोवेटर्स के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर रहा है। यह अच्छी तरह से स्थापित इनक्यूबेटर बेहतरीन उद्यमशीलता संसाधन और सुविधाएं प्रदान करता है और बिहार की स्टार्टअप कंपनियों के लिए सबसे अधिक मांग वाला सह-कार्य और सह-सीखने का माहौल है। अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी, सलाहकारों, निवेशकों, उपभोक्ताओं और सरकारी एजेंसियों तक पहुंच की सुविधा के अलावा, बी-हब व्यवसाय विकास को बढ़ावा देने के लिए विशेष ऑफ़लाइन और ऑनलाइन कार्यक्रमों का आयोजन करता है। बी-हब उभरते व्यवसायों को असाधारण उद्यमों के निर्माण के लिए समान आकांक्षाओं वाले उत्साही उद्यमियों के नेटवर्क से आसानी से जुड़ने के लिए एक वातावरण प्रदान करता है। बी-हब के हर पहलू को एक जीवंत स्टार्टअप समुदाय को विकसित करने, नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए रणनीतिक रूप से योजनाबद्ध किया गया है। इसका उद्देश्य ऐसे वातावरण को बढ़ावा देना है जो रचनात्मकता और सहयोग को बढ़ावा दे, जिससे इच्छुक उद्यमियों का मनोबल और उत्पादकता बढ़े।

छात्रों को बी-हब सुविधा का दौरा कराया गया और न्यूट्रिगो प्राइवेट लिमिटेड के मालिकों सहित कई युवा उद्यमियों के साथ ज्ञानवर्धक बातचीत की गई। लिमिटेड और कृषि प्राइवेट लिमिटेड।

पटना स्मार्ट सिटी

सीआईएमपी और बी-हब के गहन दौरे के बाद छात्रों ने संकाय सदस्यों के साथ पटना स्मार्ट सिटी परियोजना मुख्यालय का दौरा किया। पटना स्मार्ट सिटी के सीईओ मोहम्मद शमशाद और उनकी टीम के सदस्यों के साथ बातचीत से छात्रों को दिन-प्रतिदिन परिचालन प्रबंधन को समझने में मदद मिली। अपवाद प्रबंधन, और पटनासिटी का आपदा प्रबंधन जिसने न केवल पटना में अपराध दर, दुर्घटनाओं को कम करने में मदद की है बल्कि सीधे एसडीजी 11 (टिकाऊ शहर और समुदाय) को पूरा करने में भी मदद की है। इन दौरों ने छात्रों को "वॉर रूम" के रूप में जाने जाने वाले सहयोगात्मक कार्यक्षेत्र का अवलोकन करने का अवसर भी प्रदान किया। ये कमरे उन स्थानों के रूप में काम करते हैं जहां किसी संगठन की परिचालन गतिविधियां, जिसमें निगरानी, विनियमन और कमांडिंग शामिल हैं, वास्तविक समय में आयोजित की जाती हैं और जहां निर्णय लेने वाले घटना प्रतिक्रिया गतिविधियों की देखरेख और प्रबंधन करते हैं। सामान्य

तौर पर, इस भ्रमण ने छात्रों को शहरी स्थिरता को मजबूत करने के लिए नवीन दृष्टिकोणों के प्रभावकारी समामेलन को समझने में मदद की।

पटना स्मार्ट सिटी के सीईओ और सीएफओ छात्रों से बातचीत करते हुए

एक्सपोज़र विजिट 2- अप्रैल 26, 2024

स्थान: बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना और आईसीएआर पूर्वी क्षेत्रीय परिसर, पटना

संचालनकर्ता: स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय

प्रतिभागी: एमबीए सतत विकास और प्रबंधन के छात्र

(सूची अनुलग्नक 1 के रूप में संलग्न है)।

संकाय समन्वयक: प्रो. सपना ए. नरूला, डीन, एसएमएस

डॉ आनंद कुमार

डॉ. मुनीर ए. मैग्री

यात्रा की तिथि: 26 अप्रैल, 2024।

एक्सपोज़र विजिट का उद्देश्य

• इस एक्सपोज़र विजिट का समग्र उद्देश्य एमबीए छात्रों को जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ती चुनौतियों से निपटने के लिए टिकाऊ कृषि प्रथाओं से अवगत कराना था।

• दायर प्रदर्शन के माध्यम से एकीकृत फ्रेमिंग दृष्टिकोण सीखना और वैश्विक खाद्य सुरक्षा चुनौतियों की जांच करने के लिए उपयोग किए जाने वाले उन्नत उपकरणों और तकनीकों को समझना।

• ग्रामीण समुदाय में आजीविका के विकल्पों में विविधता लाने और एसडीजी हासिल करने में पशुधन के महत्व को समझना।

• कक्षा के सैद्धांतिक प्रशिक्षण और वास्तविक जीवन के माहौल में व्यावहारिक शिक्षा के बीच अंतर को पाटना।

एक्सपोज़र विजिट के बारे में

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय:

26 अप्रैल, 2024 को, सतत विकास और प्रबंधन में एमबीए के छात्रों ने प्रोफेसर सपना ए नरूला और दो अन्य संकाय सदस्यों के साथ पटना में बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूर्वी क्षेत्र परिसर का दौरा किया। इस अवसर पर बीएएसयू के कुलपति डॉ.रामेश्वर सिंह, निदेशक अनुसंधान डॉ. वी.के.सक्सेना, निदेशक डॉ. जे.के. प्रसाद, डीन, बीवीसी, डॉ. ए.के. शर्मा, छात्र कल्याण

अधिकारी के साथ अन्य अधिकारियों ने संकाय और छात्रों का स्वागत किया। बीएएसयू के वीसी डॉ. सिंह ने प्रोफेसर सपना ए नरूला, डीन, एसएमएस को सम्मानित किया।

उद्घाटन भाषण के दौरान डॉ. प्रसाद ने संकाय सदस्यों और छात्रों, नालंदा विश्वविद्यालय और बीएएसयू के अधिकारियों का स्वागत किया। डॉ. प्रसाद, डीन, बीवीसी ने उन विभिन्न पहलों और कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी जो बीएएसयू पटना और अन्य स्टेशनों और परिसरों यानी किशनगंज, पूर्णिया, गया आदि में पेश कर रहा है। इसके अलावा, डॉ. प्रसाद ने बीएएसयू में वर्तमान अनुसंधान परियोजनाओं और आगामी सुविधाओं के बारे में चर्चा की। डॉ. प्रसाद ने अनुसंधान निष्कर्षों, विस्तार और आउटरीच कार्यक्रमों और प्रशिक्षणों के माध्यम से राज्य के विकास में बीएएसयू के योगदान पर विशेष रूप से जोर दिया।

प्रोफेसर सपना ए नरूला, डीन, एसएमएस ने स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज और पारस्परिक अनुसंधान रुचि के क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी। प्रोफेसर नरूला ने दुनिया भर में वर्तमान जलवायु संकट में एसएमएस की कार्यप्रणाली और स्थिरता शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने खाद्य सुरक्षा मुद्दों और अनुसंधान संस्थानों के बीच सहयोग के महत्व पर जोर दिया।
बातचीत सत्र के बाद, संकाय सदस्यों के साथ छात्रों ने बीएएसयू में अनुसंधान सुविधाओं का दौरा किया। डॉ. प्रसाद ने छात्रों के साथ प्रत्येक अनुसंधान सुविधाओं और प्रयोगशालाओं के बारे में चर्चा की और पशु प्रजनन, पशुधन स्वास्थ्य को बढ़ाने, पशुधन पोषण और रोग नियंत्रण जैसे क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान करने के लिए ऐसी सुविधाओं की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

अधिकारियों द्वारा बीएएसयू पशु चिकित्सालय का एक निर्देशित दौरा आयोजित किया गया और छात्रों को पशु देखभाल के लिए प्रत्यक्ष रूप से उन्नत सुविधाओं को देखने का अवसर मिला। अस्पताल में छात्रों ने सर्जरी, रेडियोलॉजी और पैथोलॉजी जैसे विभिन्न विभागों का दौरा किया और व्यापक पशु देखभाल में उनके योगदान का पता लगाया।

बीएएसयू परिसर का एक्सपोज़र दौरा पशु फार्म के दौरे के साथ समाप्त हुआ। छात्र ने पशु आईवीएफ केंद्र का दौरा किया जहां पहले कृत्रिम बछड़े का जन्म हुआ था। छात्रों ने पोषण संबंधी चुनौतियों पर काबू पाने और सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में आईवीएफ तकनीक के महत्व को समझने के लिए विशेषज्ञों के साथ भी बातचीत की। बीएएसयू के अधिकारियों ने परिसर में उपलब्ध वर्मीकंपोस्टिंग गड्ढों के साथ-साथ कंपोस्टिंग विधि और मिट्टी की उर्वरता के लिए जैविक खाद के महत्व का भी प्रदर्शन किया।

माननीय कुलपति, रामेश्वर सिंह, प्रोफेसर सपना ए नरूला, डीन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय को सम्मानित करते हुए

माननीय कुलपति, बीएएसयू की बातचीत; छात्रों के साथ डीन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय और अन्य अधिकारी

माननीय कुलपति बीएएसयू प्रोफेसर सपना ए नरूला को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

पूर्वी क्षेत्र के लिए आईसीएआर क्षेत्रीय परिसर

दोपहर में छात्रों और संकाय सदस्यों ने आईसीएआर-आरसीईआर का दौरा किया। आगमन पर आईसीएआर-आरसीईआर के निदेशक डॉ. अनुप दास और उनके वैज्ञानिकों की टीम ने डीन, संकाय और छात्रों का स्वागत किया। डॉ. दास ने प्रोफेसर सपना ए नरूला, डीन, एसएमएस को सम्मानित किया और छात्रों को संस्थान और टिकाऊ कृषि और खाद्य सुरक्षा मुद्दों के लिए आईसीएआर-आरसीईआर द्वारा किए गए शोध के बारे में जानकारी दी। डॉ. दास ने आसियान देशों में चल रही चुनौतियों और खाद्य सुरक्षा मुद्दों पर भी छात्रों से बातचीत की।

प्रोफेसर सपना ए नरूला, डीन, एसएमएस ने स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज और पारस्परिक अनुसंधान रुचि के क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी। प्रोफेसर नरूला ने दुनिया भर में वर्तमान जलवायु संकट में टिकाऊ कृषि के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से स्थायी आजीविका के निर्माण पर जोर दिया। उन्होंने खाद्य सुरक्षा मुद्दों और अनुसंधान संस्थानों के बीच सहयोग के महत्व पर भी जोर दिया।

इंटरैक्टिव सत्र के बाद छात्र आईसीएआर-आरसीईआर के वैज्ञानिकों की टीम के साथ विभिन्न फसल पैटर्न और तंत्र, एकीकृत कृषि प्रणाली, जैविक नियंत्रण, नवीन मिट्टी की उर्वरता को संयोजित करने वाली प्रभावी आईपीएम रणनीतियों के कार्यान्वयन की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रदर्शन

स्थलों की ओर बढ़े। फसल की पैदावार में सुधार के लिए प्रबंधन तकनीक, यानी जैविक और जैव उर्वरक। छात्रों को पशुधन खेती प्रदर्शन इकाइयों और मत्स्य पालन तालाबों में भी ले जाया गया।

बीएएसयू और आईसीएआर-आरसीईआर पटना के क्षेत्र दौरे ने टिकाऊ कृषि और आजीविका क्षेत्र में इन संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिकाओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की। छात्रों को अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार गतिविधियों की गहरी समझ प्राप्त हुई जो पशुपालन, टिकाऊ कृषि प्रथाओं और समग्र कृषि विकास में प्रगति में योगदान करती हैं।

चित्र: आईसीएआर-आरसीईआर के वैज्ञानिक, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, नालंदा विश्वविद्यालय के डीन, संकाय और छात्र

चित्र: आईसीएआर-आरसीईआर के वैज्ञानिकों के साथ प्रदर्शन स्थलों पर संकाय और छात्र

चित्र: आईसीएआर के वैज्ञानिकों के साथ मवेशी फार्म और न्यूट्री गार्डन में संकाय और छात्र

<u>छात्रों द्वारा कॉर्पोरेट अनुभव/निबंध परियोजनाएँ (2022-24)</u>

<u>छात्रों द्वारा निबंध परियोजनाएँ (2022-24)</u>

छात्र का नाम	देश	पर्यवेक्षक का नाम
केंचो वांग्मो	भूटान	डॉ मुनीर ए मैग्री
दस दोरजी	भूटान	प्रोफेसर सपना ए नरूला
शेरिंग दोरजी	भूटान	डॉ आनंद कुमार
लक्ष्मी छेत्री	भूटान	डॉ मुनीर ए मैग्री

छात्रों द्वारा कॉर्पोरेट अनुभव (2022-24)

अंतरराष्ट्रीय

छात्र का नाम	मेज़बान करने वाला संगठन
अक्षय सिंह	विश्व संसाधन संस्थान (डब्ल्यूआरआई)
शुभम् सुंदरम	इन्फोसिस लिमिटेड

संजय कुमार राय	INBAR- अंतर्राष्ट्रीय बांस और रतन संगठन, Ind
सोनम दोरजी	डंगसम प्लॉयमर्स लिमिटेड, भूटान सरकार
सोमचन मन्यचन	जनसंख्या शिक्षा और विकास एसोसिएशन, लाओ पीडीआर
सुपावाडी जेमुअक	न्यू जेन एकेडमी, थाईलैंड
रिनि विद्या सुसंति	कृषि मंत्रालय, मध्य जावा, इंडोनेशिया
रिज़ल मौला	शिक्षा अनुसंधान और संस्कृति मंत्रालय, इंडोनेशिया

राष्ट्रीय

छात्र का नाम	मेज़बान संगठन
सौरव कुमार सिन्हा	तेल एवं प्राकृतिक गैस लिमिटेड (ओएनजीसी) नई दिल्ली, भारत
विसर्ग मिश्र	ऑक्टस ईएसजी, मुंबई, भारत
रवि साह रौनियार	वैल्यू नेटवर्क वेंचर्स सलाहकार सेवाएँ। बैंगलोर, भारत
देव क्वात्रा	मजार्स ईएसजी एडवाइजरी, भारत
सैमुअल त्रिपुरा	मेसो कंस्ट्रक्टिविस्ट एलएलपी, भारत
पापोन सरकार	मजार्स ईएसजी एडवाइजरी, भारत
शुभ्रा मिश्रा	कनेक्टिंग ड्रीम्स फाउंडेशन, भारत

<u>छात्रों द्वारा ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप परियोजनाएँ (2023-25)</u>

छात्रों का नाम	मेज़बान संगठन	आंतरिक पर्यवेक्षक
आदि विजया	जन प्रतिनिधि परिषद, इंडोनेशिया	डॉ मुनीर मैग्री
अंतोरा रे	कनेक्टिंग ड्रीम्स फाउंडेशन, नई दिल्ली	डॉ मुनीर मैग्री
आशीष गौरव	यूएन ग्लोबल कॉम्पैक्ट	डॉ मुनीर मैग्री
चेंगलेब ह्युन	मेकांग नदी आयोग, कंबोडिया	डॉ आनंद कुमार

चिबुएज़े पीटर एडेज़े	KIMS अस्पताल हैदराबाद	डॉ मुनीर मैग्री
ह्नीन नन्दर वाई	पटना स्मार्ट सिटी, पटना	डॉ आनंद कुमार
जॉय देब प्रताप सिन्हा	डेवलपमेंट एक्शन सोसायटी, कोलकाता	डॉ मुनीर मैग्री
क्याव तुन आंग	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-आरसीईआर पटना	डॉ मुनीर मैग्री
मैथ्यू सुजोन मोंडोल	हार्मनी इंक, नई दिल्ली	डॉ मुनीर मैग्री
मोहम्मद असदुल्लाह	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-आरसीईआर पटना	डॉ आनंद कुमार
एमडीअशरफुज्जमां अशरफ	कनेक्टिंग ड्रीम्स फाउंडेशन, नई दिल्ली	डॉ आनंद कुमार
मोहिनी रत्न	भारत पेट्रोलियम लिमिटेड	डॉ आनंद कुमार
प्रीति झा	पटना स्मार्ट सिटी, पटना	डॉ मुनीर मैग्री
पुनर्जी गायथ डम्बोरागामा	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-आरसीईआर पटना	डॉ आनंद कुमार
रेन केरिन	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-आरसीईआर पटना	डॉ मुनीर मैग्री
रोसमिता छेत्री	पर्यावरण संरक्षण के लिए भूटान ट्रस्ट फंड, भूटान	डॉ आनंद कुमार
शोभा विश्वनाथ सुजाता	इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड	डॉ आनंद कुमार
सृष्टि कोंडा	यूएन ग्लोबल कॉम्पैक्ट	डॉ मुनीर मैग्री
श्रुति कुमार	इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड	डॉ आनंद कुमार
वेला रेत्ना विद्यास्तुति	पीटी बारामुल्टी सुकसेसराना टीबीके, इंडोनेशिया	डॉ आनंद कुमार
विष्णु दास	यूएन ग्लोबल कॉम्पैक्ट	डॉ आनंद कुमार
यी मोन सो	पटना स्मार्ट सिटी, पटना	डॉ मुनीर मैग्री

सीखने के केंद्र

बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र

बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल-बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र, नालंदा विश्वविद्यालय, भारत सरकार द्वारा समर्थित शैक्षणिक पहल है। भारत के माननीय प्रधान मंत्री ने अगस्त 2018 में नालंदा विश्वविद्यालय में केंद्र स्थापित करने की घोषणा की। केंद्र का उद्देश्य विभिन्न अनुशासनात्मक कोणों, विशेष रूप से "सभ्यता, इतिहास" के माध्यम से बंगाल की खाड़ी क्षेत्र के पहलुओं में अनुसंधान का नेतृत्व करना है। कला, संस्कृति, भाषाएँ, विरासत, वैश्विक समुद्री व्यापार मार्ग और समुद्री कानून"। अन्य अनुसंधान क्षेत्र सुरक्षा, व्यापार, विकास, समुद्र विज्ञान, पर्यावरण और समुद्री पारिस्थितिकी होंगे।

केंद्र के दोहरे लक्ष्य ऐतिहासिक, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर बंगाल की खाड़ी के निरंतर महत्व को उजागर करना है, साथ ही हमारे मौजूदा ज्ञान आधार का विस्तार करना है ताकि यह बंगाल की खाड़ी के लंबे और जुड़े इतिहास, गहरी आध्यात्मिकता, जटिलता से अवगत हो सके। नेटवर्क, समुद्री मार्ग और व्यापार, विविध पारिस्थितिकी और रणनीतिक वैश्विक प्रासंगिकता। इस क्षेत्र में अनुसंधान का महत्व अत्यधिक महत्व के कई मुद्दों, विशेष रूप से सुरक्षा और पर्यावरण के लिए आसन्न चुनौतियों को अधिक उपयोगी और पारस्परिक रूप से लाभकारी तरीकों से संबोधित करने के लिए संयुक्त क्षमताओं को बढ़ाना है। बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र का उद्घाटन सितंबर 2022 में किया गया था। इस केंद्र द्वारा अगस्त, 2022 में बंगाल की खाड़ी: एक परिचय नामक एक लघु कार्यक्रम की पेशकश शुरू की गई थी।

सामान्य पुरालेख संसाधन केंद्र

सामान्य पुरालेख संसाधन केंद्र (सीएआरसी), नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर, भारत एक डिजिटल पुरालेख है जो भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की सहमति से स्थापित किया गया है। केंद्र एशिया से संबंधित जानकारी और संसाधनों को संरक्षित और साझा करता है - इसके इतिहास, भौतिक संस्कृति, व्यापार नेटवर्क, विरासत, धार्मिक विचारों और प्रथाओं, मौखिक और प्रदर्शनकारी परंपराओं, सभ्यता और बातचीत के एशियाई नेटवर्क पर प्रकाश डालता है - इसके अलावा निरंतर शैक्षिक अवसरों को डिजाइन और पेश करता है। इन क्षेत्रों की खोज. क्षेत्रीय शांति और दूरदर्शिता को बढ़ावा देना विश्वविद्यालय के मूलभूत उद्देश्यों में से एक है, केंद्र पूरे एशिया, विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया से समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं, विरासत, इतिहास और सभ्यतागत आदान-प्रदान से संबंधित डिजिटल संग्रह को क्यूरेट करने का प्रयास

करता है ताकि समझ को बढ़ाया जा सके। अतीत की सांस्कृतिक कनेक्टिविटी और आदान-प्रदान के साथ-साथ विश्व स्तर पर उस समझ को साझा करें।

केंद्र क्लस्टर बनाने के लिए एक पोर्टल प्रदान करता है, जो एशिया में ज्ञान के विभिन्न रूपों के उत्पादन, संचलन, उपभोग, विनियोग, भंडारण और पुन: उपयोग की डिजिटल स्थितियों को पूरा करता है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर विविध सांस्कृतिक संसाधन ज्ञान नेटवर्क बनाते हैं, जो ज्ञान मानचित्र के दोनों आयामों को पूरा करते हैं: ज्ञान की संरचना (ज्ञान की भौतिक अभिव्यक्ति का वर्गीकरण और संहिताकरण) और ज्ञान का प्रसार (अभिव्यक्ति के तरीके और पहुंच का प्रश्न)).

केंद्र के विचार की परिकल्पना 2015 में मेकांग-गंगा सहयोग (एमजीसी) शिखर सम्मेलन में की गई थी। वर्ष 2000 में स्थापित मेकांग-गंगा सहयोग (एमजीसी) भारत और मेकांग क्षेत्र के देशों के बीच सहयोग बढ़ाने पर केंद्रित है। . कंबोडिया, लाओस, म्यांमार, वियतनाम और थाईलैंड। एमजीसी के तहत सहयोग के प्रमुख क्षेत्र पर्यटन, संस्कृति, शिक्षा और परिवहन एवं संचार हैं, जिसका उद्देश्य दोनों क्षेत्रों के लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करना है। अपने वर्तमान स्वरूप में, केंद्र आसियान 2018 में कनेक्टिविटी के लिए एक संयुक्त आह्वान के जवाब में उभरा।

इस प्रकार, केंद्र एक एकल, साझा ज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर एशिया के एकीकरण के लिए क्षेत्रीय नेताओं की साझा आकांक्षाओं पर काम करता है, जो एशिया को एकीकृत करने के अलावा, इसे सुसंगत भी बनाता है। ये दोनों, वास्तव में, अविभाज्य हैं, और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं, यह देखते हुए कि एशिया अभी भी कितना विविधतापूर्ण है, और इसके सदस्य-राष्ट्र विकास के विभिन्न चरणों में बने हुए हैं।

संघर्ष समाधान एवं शांति अध्ययन केंद्र

विश्वविद्यालय ने आगामी शैक्षणिक वर्ष से कार्यक्रम पेश करने के लिए स्कूल ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस में संघर्ष समाधान और शांति अध्ययन केंद्र की स्थापना की है। शांति निर्माण के माध्यम से संघर्ष को सुलझाने और अपनी वैश्विक पहुंच का विस्तार करने के लिए बातचीत को बढ़ावा देने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मंच बनाने के लिए, प्राचीन नालंदा महाविहार की शानदार विरासत और इसे दिए गए नए जनादेश दोनों को आगे बढ़ाने के लिए नालंदा विश्वविद्यालय विशिष्ट रूप से तैनात है। इसी सटीक संदर्भ में शांति निर्माण और संघर्ष समाधान अध्ययन केंद्र की कल्पना की गई है। केंद्र का मुख्य उद्देश्य यह जांचना है कि हम संघर्ष को कैसे हल कर सकते हैं और सकारात्मक शांति पैदा करके संघर्ष को हल करने वाले परिणामों की तलाश कर सकते हैं। उस हद तक, केंद्र संघर्ष को समझने के नए तरीकों के माध्यम से बदलाव की कल्पना करता है जो इसके माध्यम से बातचीत करने में सक्षम बनाता है।

केंद्र का उद्देश्य एक सामंजस्यपूर्ण, अंतर्राष्ट्रीय और अंतरसांस्कृतिक मंच प्रदान करके संघर्ष समाधान और शांति निर्माण को सुविधाजनक बनाना है जो नए ज्ञान के निर्माण और सार्थक संवाद का समर्थन करता है। केंद्र शुरू में शांति और संघर्ष अध्ययन में अल्पकालिक कैप्सूल पाठ्यक्रमों की पेशकश करने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गोलमेज चर्चाओं की मेजबानी करने पर ध्यान केंद्रित करेगा ताकि किसी भी संकट से गुजरने वाला कोई भी देश संकट की परवाह किए बिना वास्तविक प्रयास में केंद्र की गोलमेज चर्चाओं का विकल्प चुन सके। उसके स्तर या कारण का।

संक्षेप में, केंद्र के प्रयास इसके निम्नलिखित जुड़वां विश्वासों द्वारा निर्देशित होते हैं:

1. मौजूदा संघर्ष को एक अवसर के रूप में मानें, संभावित रूप से शांति के उद्भव के लिए एक स्थल के रूप में, जैसे कि बुद्ध ने इस बात पर जोर दिया कि अज्ञानता ज्ञान के उद्भव का स्थल कैसे हो सकती है;
2. आलोचनात्मक ज्ञान और सार्थक संवाद की शक्ति में न केवल किसी भी रूप में संघर्ष को संबोधित करना, प्रबंधित करना और बदलना है बल्कि भविष्य में होने वाले संघर्ष को रोकना भी है।

हाल के घटनाक्रम

संघर्ष समाधान और शांति अध्ययन केंद्र ने महात्मा गांधी के जन्मदिन के अवसर पर 02 अक्टूबर, 2023 से अपना संचालन शुरू किया। पहली पहल के रूप में, इस केंद्र ने भारत के माननीय प्रधान मंत्री की परिकल्पना के अनुसार स्वच्छता ही सेवा 2023 के हिस्से के रूप में 02 अक्टूबर, 2023 को विश्वविद्यालय परिसर में एक स्वच्छता अभियान का आयोजन किया।

<u>वैश्विक पीएचडी कार्यक्रम</u>

नालंदा विश्वविद्यालय 4-वर्षीय वैश्विक पीएच.डी. प्रदान करता है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए दो स्तरों पर कार्यक्रम: नियमित और अंशकालिक। नियमित पीएच.डी. के लिए. विद्यार्थियों, यह पूर्णतः आवासीय कार्यक्रम है। अंशकालिक पीएच.डी. के लिए. कार्यक्रम, स्कूलों द्वारा निर्धारित संपर्क कार्यक्रमों/कार्यशालाओं के अनुसार।

अंशकालिक वैश्विक पीएच.डी. यह केवल कामकाजी पेशेवरों या सेवानिवृत्त व्यक्तियों या किसी ऐसे व्यक्ति के लिए पेश किया जाता है जिसने चालीस वर्ष की आयु पूरी कर ली है और अनुसंधान में गहरी रुचि रखता है। अनुसंधान के क्षेत्र विश्वविद्यालय के उद्देश्यों और शासनादेशों के अनुसार हैं ताकि अनुसंधान के उभरते क्षेत्रों या भारतीय ज्ञान परंपराओं पर नया ज्ञान पैदा किया जा सके।

चार साल की वैश्विक पीएच.डी. के लिए क्रेडिट आवश्यकताएँ। कार्यक्रम:
- कोर्सवर्क: 32 क्रेडिट (प्रथम सेमेस्टर)
- थीसिस: 60 क्रेडिट
- अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय सम्मेलनों/मंचों में प्रकाशन/प्रस्तुतियाँ: 8 क्रेडिट
- प्री-सबमिशन सेमिनार प्रस्तुति: 10 क्रेडिट
- मौखिक परीक्षा: 20 क्रेडिट

कुल 130 क्रेडिट

डॉक्टरेट विद्वान अतिरिक्त क्रेडिट जमा कर सकते हैं। प्रतिलेख ऐड-ऑन क्रेडिट को प्रतिबिंबित करेगा। थीसिस जमा करने के लिए कोई अतिरिक्त समय/सेमेस्टर नहीं दिया जाता है। कार्यक्रम की कुल अवधि 8 सेमेस्टर की है; जमा करने का न्यूनतम समय चौथा सेमेस्टर पूरा होने के बाद है।

अल्पकालिक कार्यक्रम

नालंदा विश्वविद्यालय ने छात्रों को विभिन्न भाषाओं और विशिष्ट क्षेत्रों में दक्षता हासिल करने में सक्षम बनाने पर ध्यान देने के साथ 2018 से अल्पकालिक कार्यक्रमों की पेशकश शुरू की है। विश्वविद्यालय ने विविधीकरण और सामुदायिक सहभागिता के इरादे से इन कार्यक्रमों की पेशकश शुरू की है। ये कार्यक्रम उन प्रयासों का हिस्सा हैं जो एनयू ने आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों के साथ जुड़ने के उद्देश्य से शुरू किए हैं।

प्रारंभ में संस्कृत, अंग्रेजी और कोरियाई में प्रवीणता प्रमाणपत्र और डिप्लोमा की पेशकश की गई। धीरे-धीरे, पाली, योग, रिमोट सैंसिंग और भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) कार्यक्रमों को प्रस्तावित कार्यक्रमों की सूची में जोड़ा गया। इसके अलावा ज्ञान के उभरते क्षेत्रों में नए लघु पाठ्यक्रम जैसे कि नालंदा विरासत; बंगाल की खाड़ी: एक परिचय; नवाचार एवं नेतृत्व; चेतना अध्ययन: आधुनिक विज्ञान और प्राचीन भारतीय ज्ञान का परिप्रेक्ष्य आदि की पेशकश की जा रही है।

भाषा दक्षता पाठ्यक्रम संबंधित भाषाओं के साथ-साथ अनुवाद कौशल प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। भाषा प्रयोगशाला सत्र इन पाठ्यक्रमों का एक अभिन्न अंग हैं। प्रयोगशाला की प्राथमिक भूमिका एक ऐसा वातावरण बनाना है जहां छात्र जो भाषा सीख रहे हैं उसे बोलने में सहज महसूस करें, और जहां उन्हें दूसरी या तीसरी भाषा सीखने की यात्रा में आवश्यक सहायता मिल सके। उन्नत भाषा अधिग्रहण कार्यक्रमों के उपयोग के माध्यम से, छात्र विदेशी भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

यहां छात्र अपनी आवश्यकताओं और वैश्विक रुझानों को ध्यान में रखते हुए, भाषा अधिग्रहण के लिए ऑडियो और विजुअल सहायता सहित मल्टी-मीडिया संसाधनों तक पहुंचते हैं।

पाठ्यक्रम

डिप्लोमा पाठ्यक्रम	**सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम**
1. संस्कृत में डिप्लोमा	1. संस्कृत में प्रवीणता का प्रमाण पत्र
2. अंग्रेजी में डिप्लोमा	2. पाली में प्रवीणता का प्रमाण पत्र
3. कोरियाई में डिप्लोमा	3. अंग्रेजी में दक्षता का प्रमाण पत्र
4. पाली में डिप्लोमा	4. कोरियाई भाषा में प्रवीणता का प्रमाण पत्र

5. योग में डिप्लोमा

5. योग में सर्टिफिकेट
6. रिमोट सेंसिंग और जीआईएस में प्रमाणपत्र
7.नालंदा विरासत में प्रमाणपत्र
8. बंगाल की खाड़ी में प्रमाणपत्र: एक परिचय
9. नवप्रवर्तन एवं नेतृत्व में प्रमाणपत्र
10. चेतना अध्ययन में प्रमाणपत्र
11. इंडो-फ़ारसी विरासत में प्रमाणपत्र
12. भू-सूचना विज्ञान में प्रमाणपत्र

संकाय

क्र	नाम	पद का नाम
1.	पंचानन मोहंती	विजिटिंग फैकल्टी और डीन (आई/सी), एसएलएल/एच
2.	अभय कुमार सिंह	प्रोफेसर और डीन, एसएचएस (सहयोजित संकाय)
3.	सुशांत कुमार मिश्रा	प्रोफेसर, एसएलएल/एच
4.	राजीव चतुर्वेदी	एसोसिएट प्रोफेसर, एसएचएस (सहयोजित संकाय)
5.	सत्य नारायण शास्त्री	एसोसिएट प्रोफेसर, एसईईएस (सहयोजित संकाय)
6.	श्रीषा उडुपा	एसोसिएट प्रोफेसर, एसएलएल/एच
7.	मीर इस्लाम	सहायक प्रोफेसर, एसएलएल/एच और डिप्टी डीन, एसटीपी
8.	कशशफ गनी	सहायक प्रोफेसर, एसएचएस (सहयोजित संकाय)
9.	एलोरा ट्राइबेडी	सहायक प्रोफेसर, एसएचएस (सहयोजित संकाय)
10.	प्रांशु समदर्शी	सहायक प्रोफेसर, एसएचएस और एसबीएसपीसीआर (सहयोजित संकाय)
11.	कुमुदा प्रसाद आचार्य	सहायक प्रोफेसर, एसएलएल/एच और एसबीएसपीसीआर
12.	ब्रेंडा ली	सहायक प्रोफेसर, एसबीएसपीसीआर (सहयोजित संकाय)
13.	स्मिता सिंह	टीचिंग फेलो, एसएलएल/एच
14.	सतरूपा सेन	टीचिंग एसोसिएट, एसएलएल/एच
15.	गेशे थुबटेन लोडेन	टीचिंग एसोसिएट, एसएलएल/एच और एसबीएसपीसीआर
16.	के. धम्मपाल	टीचिंग एसोसिएट, एसएलएल/एच

17.	दिव्या शर्मा	टीचिंग एसोसिएट, एसएलएल/एच
18.	गेशे लुंगटोक	टीचिंग एसोसिएट, एसएलएल/एच और एसबीएसपीसीआर
19.	ग्रेस ली	कोरियाई भाषा प्रशिक्षक, एसएलएल/एच

भाषा प्रयोगशाला में अल्पकालिक कार्यक्रमों के छात्र

आसियान-भारत विश्वविद्यालय नेटवर्क (एआईएनयू)

संकाय विनिमय कार्यक्रम

आसियान-भारत विश्वविद्यालयों का नेटवर्क (एआईएनयू)

आसियान-इंडिया नेटवर्क ऑफ यूनिवर्सिटीज (एआईएनयू) की कल्पना भारत और आसियान के प्रमुख संस्थानों और विश्वविद्यालयों के बीच संबंधों के माध्यम से बने ज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में की गई है, जिसमें नोडल संस्थान के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय है। इस पहल को क्षेत्र-विशिष्ट चिंताओं से जुड़ने के लिए ज्ञान उत्पादन के प्रतिमानों को तैयार करने और मजबूत करने में निवेश किया गया है।

भारत के माननीय प्रधान मंत्री ने जनवरी 2018 में नई दिल्ली में आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन में भारत और आसियान के बीच अधिक अंतर-विश्वविद्यालय आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालयों का एक नेटवर्क स्थापित करने की घोषणा की। भारत सरकार ने एआइएनयू के गठन के साथ-साथ उसके भरण-पोषण का नेतृत्व करने के लिए नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर को नामित किया है। AINU को 29 अगस्त 2022 को आसियान मुख्यालय, जकार्ता में लॉन्च किया गया था।

जनवरी 2018 में नई दिल्ली में आसियान-भारत स्मारक शिखर सम्मेलन में भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा आसियान-भारत विश्वविद्यालयों के नेटवर्क की घोषणा की गई थी।

1. सहयोगी उद्यम के तहत AINU भाग लेने वाले विश्वविद्यालयों को भारत और आसियान के संस्थानों के साथ जुड़ने का मौका प्रदान करता है। यह ज्ञान साझा करने को प्रोत्साहित करेगा और अंततः भारत और आसियान के तहत एक संसाधन पूल के निर्माण को बढ़ावा देगा। यह कौशल, योग्यता, सर्वोत्तम प्रथाओं और जानकारी के आदान-प्रदान सहित ज्ञान साझा करने के अवसर

प्रदान करेगा। यह सहयोग उभरते बहु-ध्रुवीय विश्व में एशिया-प्रशांत से क्षमता निर्माण और क्षेत्रीय विचारकों के निर्माण को सुनिश्चित करेगा।

2. AINU को तीन मोर्चों पर भारत और आसियान के बीच एक संयुक्त परियोजना के रूप में योजनाबद्ध किया गया है:
   - फैकल्टी एक्सचेंज
   - डॉक्टरेट छात्र विनिमय
   - संयुक्त पीएचडी अनुसंधान पर्यवेक्षण/संयुक्त अनुसंधान

फोकस क्षेत्र

AINU द्वारा खोजे जाने वाले प्रमुख क्षेत्र हैं;

1. इंजीनियरिंग
2. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
3. नीति और कानून निर्माण
4. व्यापार और निवेश
5. शांति एवं सुरक्षा
6. सतत विकास
7. मानविकी
8. धर्म
9. सांस्कृतिक अंतर्विरोध
10. नीली अर्थव्यवस्था

इन क्षेत्रों में, AINU न केवल सूचना और विचारों के मुक्त प्रवाह को सक्षम करेगा, बल्कि क्षेत्रीय सहयोग को भी प्रोत्साहित करेगा और भारत और आसियान क्षेत्र के संस्थानों को इन क्षेत्रों में शिक्षण और अनुसंधान का समर्थन करके वैश्विक अनुसंधान परिदृश्य में एक प्रमुख भूमिका निभाने में सक्षम बनाएगा।

AINU-फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम

कार्यक्रम में भारत और आसियान सदस्य देशों के भाग लेने वाले संस्थानों के संकाय सदस्यों का आदान-प्रदान शामिल है। विनिमय की अवधि एक सेमेस्टर के लिए होगी। यात्रा के दौरान, संकाय सदस्य को पाठ्यक्रम पेश करने और संयुक्त/सहयोगात्मक अनुसंधान करने की आवश्यकता होगी। यह कार्यक्रम ज्ञान, विशेषज्ञता और कौशल के आदान-प्रदान को सक्षम करेगा। यह क्षेत्र में शैक्षणिक क्षेत्र में भी गतिशीलता लाएगा। आपसी सहायता, सतत प्रगति और समान विकास के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए,

AINU की परिकल्पना एक सामूहिक ज्ञान नेटवर्क के रूप में की गई है। भारत और आसियान के कई प्रमुख संस्थान और विश्वविद्यालय पहले ही AINU कंसोर्टियम का हिस्सा बनने के लिए रुचि की अभिव्यक्ति साझा कर चुके हैं।

नालंदा विश्वविद्यालय केंद्र, नीमराना

नीमराना में नालंदा विश्वविद्यालय केंद्र राजस्थान के अलवर के ऐतिहासिक शहर नीमराना में स्थित है। यह राजस्थान के रेगिस्तान और अरावली पहाड़ियों के चौराहे पर है। यह केंद्र पारिस्थितिक संरक्षण के प्रति सतत दृष्टिकोण में विविधता लाने की पहल का हिस्सा है।

नालंदा विश्वविद्यालय केंद्र, नीमराना, आधुनिक समाज में पर्यावरण प्रबंधन और संरक्षण के विभिन्न पहलुओं से संबंधित पाठ्यक्रमों की एक श्रृंखला प्रदान करता है। पाठ्यक्रम छात्रों के बीच पर्यावरणीय स्वास्थ्य और संरक्षण के बुनियादी मूल्यों को विकसित करने और उस आधार पर दुनिया भर में मानव जाति के सामने आने वाली पर्यावरणीय चुनौतियों पर चर्चा करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

केंद्र वर्तमान में 4-वर्षीय ऑनर्स प्रोग्राम बी.एससी. प्रदान करता है। पर्यावरण कानून और नीति में डिप्लोमा के अलावा पारिस्थितिकी (पर्यावरण और जल प्रबंधन) में। यह वन और जैव विविधता कानून और नीति में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है; प्रदूषण नियंत्रण और अपशिष्ट प्रबंधन: कानून और नीति; तटीय क्षेत्र और सतत बुनियादी ढाँचा: कानून और नीति; पर्यावरणीय प्रभाव आकलन और आपदा प्रबंधन: कानून और नीति; ऊर्जा कानून और नीति; जल कानून और नीति; जलवायु परिवर्तन और जलवायु न्याय का कानून; खनन और खनिज कानून; सतत व्यवसाय: कानून और प्रबंधन; पशु कानून और नीति.

समझौता ज्ञापन/सहयोग

रिपोर्ट की अवधि के दौरान नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा निम्नलिखित समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर/आरंभ किए गए:

क्र.	वर्ष	संस्थान	देश
1	2024	सलामांका विश्वविद्यालय	स्पेन
2	2024	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर	भारत
3	2024	भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद	भारत
4	2024	भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान (IIITM), ग्वालियर	भारत
5	2024	केलानिया विश्वविद्यालय	श्रीलंका
6	2024	भारतीय ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अनुसंधान फाउंडेशन, बेंगलुरु	भारत
7	2024	यूनिवर्सिटास इंडोनेशिया	इंडोनेशिया
8	2024	उबोन रतचथानी विश्वविद्यालय	थाईलैंड
9	2024	भारतीय प्रबंधन संस्थान, (आईआईएम) बोधगया	भारत
10	2024	चियांग माई विश्वविद्यालय	थाईलैंड
11	2024	राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, (एनआईटी) दिल्ली	भारत
12	2024	प्रबंधन और अर्थशास्त्र विश्वविद्यालय, बट्टामबांग	कंबोडिया
13	2024	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, (आईआईटी) कानपुर	भारत
14	2024	नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल एजुकेशन एंड रिसर्च (एनआईपीईआर), गुवाहाटी	भारत
15	2024	डॉ बी आर अंबेडकर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), जालंधर	भारत
16	2024	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण	भारत
17	2023	एशियाई संगम, शिलांग	भारत
18	2023	पाथफाइंडर फाउंडेशन	श्रीलंका
19	2023	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय (आईजीएनटीयू), अमरकंटक	भारत
20	2023	ओस्ट्रावा विश्वविद्यालय	चेक रिपब्लिक
21	2023	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, (आईआईटी) रूड़की	भारत
22	2023	विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए), नई दिल्ली	भारत
23	2023	बंगाल की खाड़ी कार्यक्रम, अंतर-सरकारी संगठन (बीओबीपी-आईजीओ), चेन्नई	भारत

<u>छात्र निबंध</u>

ऐतिहासिक अध्ययन स्कूल (2020-22 और 2021-23 का बैच)

मास्टर के शोध प्रबंध प्रस्तुत किए गए

क्र	नाम	निबंध का शीर्षक
1.	त्शेवांग देमा	भूटान में अनुष्ठान और सांस्कृतिक परंपराएँ
2.	कर्म निदुप	आधुनिकीकरण की ओर भूटान के संक्रमण का इतिहास: राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक
3.	दिव्येंदु डी कश्यप	प्रागितिहास में मानव गतिशीलता: जलवायु, पर्यावरण और बीमारी के बीच संबंधों की खोज, 70,000-20,000 बीपी
4.	मिताली दीक्षित	ऋग्वेद के ऐतिहासिक, पाठ्य और साहित्यिक पहलुओं की खोज
5.	पेमा चोडेन	चोदपाला: भूटान का एक फसल अनुष्ठान
6.	अनोचा सिम्मा	लोकप्रिय संस्कृति में धार्मिक हस्तियों का सांस्कृतिक विनियोग और परिवर्तन
7.	नामगे दोरजी	भूटान के विकासात्मक दर्शन के रूप में सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता
8.	किनले दोरजी	भूमि मार्ग और भूटान का विकास: एक ऐतिहासिक अध्ययन
9.	ताशी पेनजोर	16वीं से 21वीं सदी तक भूटानी सिक्के के विकास का पता लगाना
10.	यूनी सपुत्री	इंडोनेशिया में भारतीय विरासत का पता लगाना: नृवंशविज्ञान परिप्रेक्ष्य से आचे समुदाय का केस अध्ययन
11.	सोर होल	प्राचीन खमेर पर भारतीय प्रभाव: अंगकोर वाट का एक अध्ययन
12.	अक्षय आकृति	पाल काल की विशाल बुद्ध प्रतिमाओं और उनके तांत्रिक संदर्भ का एक अध्ययन
13.	दो क्वांग होआंग थांग	बौद्ध विहित साहित्य में राजनयिक संबंध: विश्व व्यवस्था में परस्पर निर्भरता का आदर्श
14.	लेकी दोरजी	छवियों के माध्यम से अतीत को समझना: भूटान के दृश्य इतिहास में एक अध्ययन
15.	बंबांग विद्योनार्क	जावा-द्वीप: 15वीं-17वीं शताब्दी ईस्वी में दक्षिण पूर्व एशिया में समुद्री मार्गों

		पर ज्ञान का प्रसारण
16.	बंबांग विद्योनार्क	'जावा-द्वीप: 15वीं-17वीं शताब्दी के दौरान जावा में ज्ञान संचरण और वैधीकरण'

पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन स्कूल

एमएससी निबंध प्रस्तुत (2021-23 और 2022-24 का बैच)

क्र	नाम	निबंध का शीर्षक
1.	शीला मिस्सा अमोफा। गलामसे	सामाजिक-आर्थिक चालक और भूमि उपयोग भूमि कवर परिवर्तन।
2.	प्रवीण कुमार	नालंदा बिहार में पर्यावरण जागरूकता: एक केएपी अध्ययन
3.	दिव्यदर्शी नाहक	उड़ीसा, भारत के जनजातीय समुदायों का पारंपरिक ज्ञान
4.	चार्ल्स लवंगा इसिंगोमा	कैलोट्रोपिस प्रोसेरा में कीट शाकाहारी पैटर्न पर रात में कृत्रिम प्रकाश के प्रभाव की खोज।
5.	बहादुर सिंह गुरुंग	इकोटूरिज्म कैसा है 'इको'? जिग्मेचू इकोटूरिज्म, भुटा का एक केस स्टडी।
6.	मोहम्मद इमान अली दीवान	मैपिंग ने बांग्लादेश के जंगली पौधों के बीज अंकुरण पारिस्थितिकी पर अध्ययन प्रकाशित किया।
7.	चेंजेराई ज़िति	फार्म से फोर्क तक: नालंदा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के डाइनिंग हॉल में प्लेट अपशिष्ट को कम करने के लिए मेनू को नया रूप देना।
8.	अमर शक्ति चकमा	चटगांव पहाड़ी इलाकों में वनों का क्षरण और संरक्षण में ग्राम सामान्य वन की भूमिका।
9.	एस्तेर अकोथ अमोलो	केन्या में घरेलू उपभोग के लिए पानी की ढुलाई में लिंग की भूमिका: होमाबे काउंटी के कोनुओंगा में स्थित वेस्ट कासिपुल वार्ड में स्वास्थ्य मुद्दे और पर्यावरणीय बाधाएं।
10.	पेमा लादेन	नकारात्मक उत्सर्जन और कम कार्बन भुगतान समय के साथ उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में जैव ऊर्जा का विस्तार।
11.	सौम्या आदित्रि	भारत में स्वच्छ परिवहन ईंधन के रूप में बायोहाइड्रोजन के संसाधन और स्थिरता।

12.	दावा ज़म	भूटान की राष्ट्रीय नीतियों में सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के एकीकरण का विश्लेषण।
13.	लेडी डेपाज़ कैबलेरो	लैंगिक समानता और जलवायु कार्रवाई: एसडीजी और महिला मानवाधिकार से एक विश्लेषण।
14.	यट्टा एस्तेर कल्लोन	वायु प्रदूषकों का स्थानिक-अस्थायी वितरण और मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव: फ़्रीटाउन, सिएरा लियोन का एक केस अध्ययन।
15.	सांगे वांग्मो	दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में चावल के लिए जलवायु-स्मार्ट कृषि का विश्लेषण: PRISMA मॉडल के बाद एक प्रणालीगत समीक्षा अध्ययन।
16.	केल्विन मुतुगी किथाका	केन्या में अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में जल स्रोतों को प्रभावित करने वाली चुनौतियाँ: एमबीरे दक्षिण, एम्बु काउंटी में स्थित किआम्बेरे वार्ड में एक केस अध्ययन।
17.	एनेट नबम्पेंजे	युगांडा में जैविक खेती और सतत विकास लक्ष्य: जलवायु परिवर्तन, कोविड-19 और यूक्रेन-रूस संघर्ष के प्रभावों को संबोधित करना।
18.	आकाश पासी	एनटीएफपी और वन सीमांत समुदाय: रायसेन (म.प्र.) के कुकवाड़ा और बेलगांव गांवों से एक केस अध्ययन।
19.	ईशा गुप्ता	फ्लोराइड के विशेष संदर्भ में बिहार, भारत में भूजल की स्थिति और संदूषण।
20.	शुभ्रजीत लेंका	भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान की कार्बन भंडारण क्षमता: एक निवेश मॉडल दृष्टिकोण।
21.	बेदायुति डैश	कार्बन खजाने का अनावरण: बांग्लादेश के कमालगंज उपजिला में इन्वेस्ट का उपयोग करके कार्बन भंडारण का एक मात्रात्मक विश्लेषण।
22.	दावा ज़म	भूटान की राष्ट्रीय नीतियों में सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के एकीकरण का विश्लेषण।
23.	लेडी डेपाज़ कैबलेरो	लैंगिक समानता और जलवायु कार्रवाई: एसडीजी और महिला मानवाधिकार से एक विश्लेषण।

बौद्ध अध्ययन, दर्शन एवं तुलनात्मक धर्म विद्यालय

मास्टर शोध प्रबंध प्रस्तुत (2021-23 और 2022-24 का बैच)

क्र	नाम	निबंध का शीर्षक
1.	असलिहान यायला	शांतरक्षित का मध्यमकालंकार: एक घटनात्मक समीक्षा।
2.	फाम थी थू थाओ	पेटिका-समुप्पा और कैटूर-एरिया-सक्का (बौद्ध धर्म में आश्रित उत्पत्ति और चार महान सत्य का एक महत्वपूर्ण अध्ययन)
3.	ले थी डुयेन	महायान बौद्ध धर्म में पूर्णता (परमी) का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
4.	गुयेन थी ले हुयेन	बौद्ध धर्म में मज्झिमा-पतिपदा ((मध्यम मार्ग) की केंद्रीयता - एक विश्लेषण।
5.	हाँ यू	मध्यकालीन कंबोडिया में बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने में जयवर्मन VII की भूमिका।
6.	हो कुआन वोंग	पाली साहित्य में प्रशामक देखभाल में आध्यात्मिक हस्तक्षेप
7.	सुलाव चकमा	चकमास के बौद्ध वंश का पता लगाना: उत्पत्ति, इतिहास और संस्कृति की पूछताछ करना।
8.	डॉक सिसापोन	कंबोडिया की शिक्षा प्रणाली पर थेरवाद बौद्ध धर्म का प्रभाव।
9.	थौरन सोना	सम्मा वाचा: प्रभावी पारस्परिक संचार
10.	रॉन रिन	ब्रह्मविहार: समाज कल्याण का मूल सिद्धांत।
11.	सिना सईदी	वैदिक और अवेस्तान परंपराओं में व्यवस्था और अराजकता: एक वैचारिक विश्लेषण।
12.	गुयेन वु होआंग	बौद्ध मनोविज्ञान के अनुसार दृष्टिकोण और अवसाद पर काबू पाने के तरीके।
13.	लाई थी ट्रक गियांग	थेरीगाथा - थेरी खेमा - व्याकरणिक व्याख्या और टिप्पणी।
14.	हो थी बिच फुओंग	उच्च पथ पर आरोहण और सतत मुक्ति: महासरोपमा सुत्त में खुशी के स्तर।
15.	फाम थान होआंग	न्हाण पुत्र द्वारपाल के विशेष संदर्भ के साथ चंपा की प्राचीन कला में द्वारपाल परंपरा की विरासत और निरंतरता
16.	वो थी थिएन होआ	कुशल साधनों का सिद्धांत (उपाय-कौशल्य): प्रारंभिक बौद्ध धर्म से महायान काल तक (कमल सूत्र के विशेष संदर्भ के साथ)

17.	शनिरंजन नारायण	स्मृति प्रतिधारण और निर्वासन में दिव्य स्थान का निर्माण: डेपुंग लोसेलिंग मठ (14वीं शताब्दी का तिब्बत) का मामला।
18.	गुयेन है येन	छह इंद्रियों की खेती का प्रगतिशील तरीका
19.	ट्रान थी जिया बुउ	सुत्तपिटक में चित्रित मानवीय भावनाएँ: भय और उसके उन्मूलन का अध्ययन
20.	ड्रूओंग थी तुयेट सुओंग	बौद्ध ग्रंथों में माइंडफुलनेस की अवधारणा: सतीपत्थन और बुद्धवतंसक के विशेष संदर्भ में
21.	फ़राडा समितामोर्न	झानसुत: बौद्ध ध्यान का एक पाठ्य और विश्लेषणात्मक अध्ययन
22.	फाम थी	किम त्रिन्ह
23.	जी.ए.के गीथ कुमारथुंगा	धम्म की यात्रा: बौद्ध धर्म में एकीकरण और आदान-प्रदान के लिए अशोक का योगदान
24.	प्रिथ्विन के.पी	बौद्ध प्रदर्शनात्मक अनुष्ठानों में ध्वनि प्रभाव: कैर्या गीति और समकालीन इलेक्ट्रॉनिक संगीत के एकीकरण की खोज।
25.	आंग को हटे	बौद्ध धर्म में सही आजीविका: मठवासी और सामान्य अभ्यासकर्ताओं के लिए पाली कैनन से अंतर्दृष्टि
26.	आंग क्याव सो	कम्मा और उसका प्रसारण: पाडी और संस्कृत अभिधर्म परंपराओं से अंतर्दृष्टि
27.	काओ बाख वान	महायान परंपरा में तथागतगर्भ और छह पारमिता: एक महत्वपूर्ण अध्ययन
28.	क्रिस्टोफर नोलवान	तारा की इक्कीस स्तुतियों में पाए जाने वाले पारंपरिक बौद्ध दार्शनिक पहलू और बौद्ध तंत्र को समझने पर उनका प्रभाव
29.	लहन थी बुई	मन और संपूर्ण मानसिक कारकों का बौद्ध दर्शन: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
30.	नांग कीन होम	बौद्ध परंपरा में माइंडफुलनेस: अनापानसति सुत्त के पाठ्य परिप्रेक्ष्य
31.	गुयेन थी क्वी सिंह	प्राचीन भारत में श्वास की सचेतनता के अभ्यास
32.	शुभम् शांति	आचार्य अतिश के बोधिपथप्रदीप का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन: तिब्बत पर इसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

33.	ट्रान थी हिउ	बौद्ध धर्म के नैतिक आयामों की खोज: मिन्ह डांग क्वांग के चोन-ली और प्रारंभिक बौद्ध ग्रंथों में आठ गुना पथ
34.	ट्रैन थी हंग	बोधिचित्त और बोधिसत्व आदर्श: सार्वभौमिक प्रेम और करुणा के लिए एक बौद्ध दृष्टिकोण
35.	ज़ायसिन पोंगक्सैयावोंग	क्षणिकता के बौद्ध दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन
36.	नगो थी माई लिन्ह	सारनिया: बौद्ध परिप्रेक्ष्य में सामंजस्यपूर्ण परिवार को बढ़ावा देने की विधि
37.	लोक चौ	मृत्यु पर चिंतन: भय से टकराव तक
38.	मायो विन ट्यून	थेरवाद बौद्ध धर्म में बोधिसत्व: आलोचनात्मक अध्ययन (दस पारमी)
39.	सोफ़र सेंग अर फ़ोन	निकाय में वेसंतरा सुत्त में दाना पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
40.	गुयेन थी खिएम	चार पोषक तत्वों के परिप्रेक्ष्य में स्वास्थ्य और कल्याण
41.	वु थी थुय लैन	पर्यावरण-पर्यावरणीय सद्भाव पर मानवीय प्रभाव: एक बौद्ध परिप्रेक्ष्य
42.	ले डुंग टिन	महायान सूत्र और योगाचार ग्रंथों में "आलय-चेतना" और "पीड़ित मन" की अवधारणाओं का विकास
43.	हुइन्ह हुइन्ह थी किम संग	ननरी का घर: वियतनामी बौद्ध धर्म में एक नौसिखिया नन के प्रशिक्षण की खोज
44.	गुयेन थी क्वी सिंह	प्राचीन भारत में श्वास संबंधी सचेतनता के अभ्यास
45.	फाम थी ओन्ह किउ	प्राचीन भारतीय शिक्षाशास्त्र: पारंपरिक तरीके और आधुनिक प्रासंगिकता
46.	चौ. प्रज्वल रेड्डी	गर्भाधान से लेकर जातकर्म संस्कार तक का विश्लेषण: धर्मशास्त्र और आयुर्वेद परंपराओं से निहितार्थ
47.	अच्युत चंद्र दहल	शंकर का अध्यायभाष्य: एक विश्लेषणात्मक व्याख्या (श्री वाचस्पति मिश्र की भामती के विशेष संदर्भ में)
48.	अंकिता बारुई	संतम शिवम अद्वैतम: टैगोर के विचार के आलोक में औपनिसदम ब्रह्मा के प्रति एक दृष्टिकोण
49.	निज़ुम सरवरिया	नाट्यशास्त्र: नाट्य परंपरा का प्रतिबिंब

50.	पीयूष कुमार	विवाह संस्कार: आधुनिक मनुष्य के लिए संदर्भ और प्रासंगिकता
51.	अवनीश गौरव	कौटिल्य पूर्व राजनीतिक विचार (मंत्रियों की नियुक्ति पर विशेष बल)
52.	केशव दहल	शाश्वत उपस्थिति: चेतना पर श्री रमण महर्षि की शिक्षाओं की खोज

भाषा एवं साहित्य/मानविकी विद्यालय

मास्टर शोध प्रबंध प्रस्तुत (2022-24 का बैच)

क्र	नाम	निबंध का शीर्षक
1.	ऐन सेवी	खमेर-रीमकर पाठ और इंदै रामायण-वाल्मीकि पाठ के बीच तुलना
2.	लुकमान हकीम	अनुवाद की राजनीति - अंग्रेजी में विश्व साहित्यिक ग्रंथों की पहचान, अंतर और प्रासंगिकता
3.	श्रुति कुमारी	टैगोर के अनुवाद के माध्यम से कबीर के गीतों का विषयगत अध्ययन
4.	खोएमोन छे	आधुनिक कम्बोडियन साहित्य पर विश्व साहित्य का प्रभाव
5.	इंदा लेस्तारी	दसियाह के चित्र में जावानीस महिलाओं की स्वतंत्रता का प्रतिनिधित्व: रतिह कुमला द्वारा उपन्यास सिगरेट गर्ल का एक नारीवादी साहित्यिक विश्लेषण
6.	मुहम्मद नूर खुजैनी	सुजिवो तेजो द्वारा रहवाना पुतिह कठपुतली थियेटर का एक अध्ययन

प्रबंधन अध्ययन स्कूल

छात्रों द्वारा कॉर्पोरेट अनुभव/निबंध परियोजनाएँ (2022-24)

अंतरराष्ट्रीय

क्र	छात्र का नाम	सिटिज़नशिप	मेज़बान करने वाला संगठन	पर्यवेक्षक का नाम
1	अक्षय सिंह	भारत	विश्व संसाधन संस्थान (डब्ल्यूआरआई)	डॉ आनंद कुमार
2	शुभम् सुंदरम	भारत	इन्फोसिस लिमिटेड	प्रोफेसर सपना ए नरूला
3	संजय कुमार राय	नेपाल	INBAR- अंतर्राष्ट्रीय बांस और रतन संगठन, Ind	प्रोफेसर सपना ए नरूला
4	सोनम दोरजी	भूटान	डंगसम प्लॉयमर्स लिमिटेड,	डॉ मुनीर ए मैग्री

			भूटान सरकार	
5	सोमचन मन्यचन	लाओस	जनसंख्या शिक्षा और विकास एसोसिएशन, लाओ पीडीआर	डॉ आनंद कुमार
6	सुपावाडी जेमुअक	थाईलैंड	न्यू जेन एकेडमी, थाईलैंड	डॉ मुनीर ए मैग्री
7	रिनि विद्या सुसंति	इंडोनेशिया	कृषि मंत्रालय, मध्य जावा, इंडोनेशिया	डॉ मुनीर ए मैग्री
8	रिज़ल मौला	इंडोनेशिया	शिक्षा अनुसंधान और संस्कृति मंत्रालय, इंडोनेशिया	डॉ मुनीर ए मैग्री

राष्ट्रीय

क्र	छात्र का नाम	सिटिज़नशिप	मेज़बान करने वाला संगठन	पर्यवेक्षक का नाम
1	सौरव कुमार सिन्हा	भारत	तेल एवं प्राकृतिक गैस लिमिटेड (ओएनजीसी) नई दिल्ली, भारत	प्रोफेसर सपना ए नरूला
2	विसर्ग मिश्र	भारत	ऑक्टस ईएसजी, मुंबई, भारत	प्रोफेसर सपना ए नरूला
3	रवि साह रौनियार	नेपाल	वैल्यू नेटवर्क वेंचर्स सलाहकार सेवाएँ। बैंगलोर, भारत	डॉ आनंद कुमार
4	देव क्वात्रा	भारत	मजार्स ईएसजी एडवाइजरी, भारत	प्रोफेसर सपना ए नरूला
5	सैमुअल त्रिपुरा	बांग्लादेश	मेसो कंस्ट्रक्टिविस्ट एलएलपी, भारत	डॉ मुनीर ए मैग्री
6	पापोन सरकार	बांग्लादेश	मजार्स ईएसजी एडवाइजरी, भारत	डॉ आनंद कुमार
7	शुभ्रा मिश्रा	भारत	कनेक्टिंग ड्रीम्स फाउंडेशन, भारत	डॉ आनंद कुमार

सितंबर, 2023 में नालंदा विश्वविद्यालय में वैशाली लोकतंत्र महोत्सव का आयोजन किया गया

उपाधियाँ/प्रमाणपत्र/डिप्लोमा विवरण

शैक्षणिक वर्ष 2023-24 नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि का प्रतीक रहा, क्योंकि हमने अपने छात्रों की उपलब्धियों का जश्न मनाया, जिन्होंने अपने शैक्षणिक कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरे किए। डिग्रियों, डिप्लोमा और प्रमाणपत्रों का वितरण विश्वविद्यालय की अंतरविषयक शिक्षा, वैश्विक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक समृद्धि को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

स्नातकोत्तर डिग्रियाँ

2022-24 बैच के स्नातक छात्रों को निम्नलिखित क्षेत्रों में स्नातकोत्तर डिग्रियाँ प्रदान की गईं:

- ऐतिहासिक अध्ययन में स्नातकोत्तर
- पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन में स्नातकोत्तर
- बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र और तुलनात्मक धर्मों में स्नातकोत्तर
- हिंदू अध्ययन (सनातन धर्म) में स्नातकोत्तर
- सतत विकास एवं प्रबंधन में एम.बी.ए.
- विश्व साहित्य में स्नातकोत्तर

इन कार्यक्रमों ने छात्रों को विशेष ज्ञान, अनुसंधान कौशल, और वैश्विक चुनौतियों का सामना करने और शिक्षा, नीति निर्माण और सतत विकास में योगदान देने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण से सुसज्जित किया।

डिप्लोमा

नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर ने विशेष अध्ययन क्षेत्रों में डिप्लोमा भी प्रदान किए, जिससे छात्रों के भाषाई और समग्र कौशल को बढ़ावा मिला। डिप्लोमा निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रदान किए गए:

- अंग्रेज़ी
- कोरियाई
- योग

प्रमाणपत्र

शैक्षणिक विविधता और व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करने के लिए, विभिन्न भाषाओं और केंद्रित विषयों में प्रमाणपत्र प्रदान किए गए:

- **भाषाएँ:** अंग्रेज़ी, फ्रेंच, कोरियाई, पाली, संस्कृत, तिब्बती और जापानी।
- **विशेष अध्ययन:** योग और बौद्ध मनोविज्ञान की परिचयात्मक शिक्षा।

यह विस्तृत शैक्षणिक प्रस्ताव नालंदा विश्वविद्यालय की बौद्धिक जिज्ञासा और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने की विरासत को दर्शाता है, जो अपने छात्रों को शिक्षा, समाज और वैश्विक विमर्श में सार्थक योगदान देने के लिए तैयार करता है।"

सम्मेलन एवं सेमिनार

- ज्ञान के प्रसार के एक भाग के रूप में, उच्च अध्ययन और तुलनात्मक फोकस के लिए, नालंदा विश्वविद्यालय नई ज्ञान प्रणाली के विषयों/उभरते क्षेत्रों में सम्मेलन और सेमिनार आयोजित करता है। रिपोर्ट की अवधि के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए गए:
- नालंदा विश्वविद्यालय ने सिनर्जिया फाउंडेशन के सहयोग से, शनिवार, 14 सितंबर 2024 को "बिम्सटेक एंड द बे: साझा संस्कृतियां, साझा मूल्य, साझा भविष्य" नामक एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। राजदूत पंकज सरन, माननीय सदस्य, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड , भारत सरकार ने मुख्य भाषण दिया। इस सम्मेलन ने साझा सांस्कृतिक, आर्थिक और रणनीतिक मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करते हुए बिम्सटेक देशों और बंगाल की खाड़ी के बीच गतिशील परस्पर क्रिया पर चर्चा करने के लिए एक मूल्यवान मंच प्रदान किया। इस सम्मेलन में पूरे क्षेत्र के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों और प्रतिनिधियों की चर्चाओं और प्रस्तुतियों की एक आकर्षक श्रृंखला भी थी, क्योंकि इस सम्मेलन में भारत, नेपाल, श्रीलंका, थाईलैंड, सिंगापुर और ताइवान के कई प्रतिष्ठित वक्ताओं ने भाग लिया था।
- स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज और सेंटर फॉर बे ऑफ बंगाल स्टडीज ने 09 जुलाई, 2024 को विश्वविद्यालय में "बिम्सटेक और खाड़ी भविष्य को नेविगेट करने" पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। श्री जयदीप मजूमदार, सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए और उद्घाटन भाषण दिया।
- कैवल्यधाम की भारत योग माला श्रृंखला के हिस्से के रूप में, नालंदा विश्वविद्यालय ने 10 अप्रैल, 2024 को विश्वविद्यालय में कैवल्यधाम के सहयोग से एक योग कार्यशाला का आयोजन किया। कैवल्यधाम अकादमिक उत्कृष्टता के विभिन्न संस्थानों में योग कार्यशालाओं का आयोजन करके देश भर में लोगों के समग्र कल्याण को बढ़ाने के लिए भारत योग माला श्रृंखला का जश्न मनाता है।
- आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर (AKTC) के सहयोग से स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज ने 09 फरवरी, 2024 को विश्वविद्यालय परिसर में "जो खो गया है उसे पुनर्स्थापित करना: विरासत, वास्तुकला और संस्कृति" पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।
- स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज एंड लिटरेचर/ह्यूमैनिटीज ने 17-18 नवंबर, 2023 के दौरान विश्वविद्यालय में 'विश्व साहित्य की संकल्पना में भारतीय और दक्षिण पूर्व एशियाई परिप्रेक्ष्य' पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

छात्र

नालंदा विश्वविद्यालय छात्र विकास को बढ़ाने और विविधता को बढ़ावा देने के साथ-साथ अपने छात्रों सहित परिसर समुदाय के भीतर समावेशन में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहा है। कक्षा से परे भी उत्कृष्ट शिक्षा का खुला माहौल, अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान और अंतरराष्ट्रीय अभिविन्यास इन क्षेत्रों में नालंदा विश्वविद्यालय की स्पष्ट सफलताओं के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके कार्यक्रम विश्व के कोने-कोने से छात्रों को आकर्षित करते रहे। नालंदा में अंतर्राष्ट्रीय छात्र समुदाय 30 से अधिक राष्ट्रीयताओं का प्रतिनिधित्व करता है। शैक्षणिक वर्ष 2023-24 के लिए, विश्वविद्यालय में मास्टर्स, ग्लोबल पीएचडी, पोस्ट-डॉक्टरल फ़ेलोशिप और लघु कार्यक्रमों सहित कुल मिलाकर लगभग 1200 छात्र थे।

बौद्ध जप के दौरान वियतनाम के छात्र

अंतर्राष्ट्रीय छात्र

विश्वविद्यालय एक सीमाहीन सीखने का अनुभव प्रदान करता है। इस प्रकार, नालंदा के अधिकांश छात्र अंतर्राष्ट्रीय हैं। लगभग 21 देशों के छात्र परिसर में एक साथ रहते हैं, जिससे इसका बहु-सांस्कृतिक ताना-बाना समृद्ध होता है। चूंकि विश्वविद्यालय दुनिया के भावी विचारकों को आकार देने में लगा हुआ है, इसलिए इसका प्राथमिक ध्यान सार्वभौमिक शांति और वैश्विक सद्भाव को बढ़ावा देना है। इसलिए, नालंदा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संगम पर अद्वितीय है क्योंकि यह अपने अंतरराष्ट्रीय छात्रों को एक घर प्रदान करने और एशिया और दुनिया के भावी नेताओं को एक साथ लाने का प्रयास करता है।

देशों के छात्र

अर्जेंटीना

बांग्लादेश

भूटान

कंबोडिया

जर्मनी

भारत

इंडोनेशिया

केन्या

लाओस

मोज़ाम्बिक

म्यांमार

नेपाल

नाइजीरिया

कांगो गणराज्य

सर्बिया

सेरा लिओन

श्रीलंका

टर्की

यूनाइटेड किंगडम

वियतनाम

ज़िम्बाब्वे

अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्तियाँ

- शैक्षणिक वर्ष 2023-24 के लिए, विश्वविद्यालय ने कई छात्रवृत्ति योजनाओं का विस्तार देखा है। पिछले एक वर्ष में छात्रवृत्ति स्लॉट की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि और विविधता लाई गई है। मेधावी छात्रों के लाभ के लिए कई नई छात्रवृत्तियाँ भी शुरू की गई हैं।
- मास्टर्स और ग्लोबल पीएच.डी. के लिए आसियान फ़ेलोशिप (आसियान सदस्य देशों के छात्रों के लिए)। विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा

- मास्टर्स और ग्लोबल पीएचडी के लिए बिम्सटेक छात्रवृत्ति। विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा। (बिम्सटेक देशों के छात्रों के लिए)
- नालंदा विश्वविद्यालय के लिए एनयू-भूटान छात्रवृत्ति (भूटान के छात्रों के लिए)
- थाई बंदोबस्ती छात्रवृत्ति (थाईलैंड के छात्रों के लिए)
- ICCR छात्रवृत्ति (अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए)
- पेयोंग राय ली छात्रवृत्ति (एक छात्र के लिए ट्यूशन शुल्क छूट):
- भिक्षु/नन छात्रों के लिए छात्रवृत्ति (ट्यूशन शुल्क माफी)
- अकादमिक छात्रवृत्ति में नालंदा विश्वविद्यालय उत्कृष्टता (ट्यूशन शुल्क माफी)
- अंतर्राष्ट्रीय मेधावी छात्रों के लिए नालंदा विश्वविद्यालय छात्रवृत्ति (ट्यूशन शुल्क माफी)
- यूनाइटेड रिपब्लिक ऑफ तंजानिया के मानद कौंसल द्वारा स्थापित प्रोफेसर सुनैना सिंह मेरिट स्कॉलरशिप (ट्यूशन शुल्क माफी)।

छात्र जीवन

छात्र कैंपस समुदाय का एक मूल्यवान हिस्सा हैं और उनकी समग्र देखभाल, कल्याण और स्वास्थ्य विश्वविद्यालय की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए, विश्वविद्यालय सक्रिय रूप से अपने आवासीय हॉल, 24x7 कैंपस स्वास्थ्य केंद्र, रोजमर्रा के परिवहन के लिए बसों और बातचीत,

पारस्परिक सांस्कृतिक जागरूकता और सहकारी समझ की भावना को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन की गई गतिविधियों की श्रृंखला की निगरानी करता है।

छात्रों को नालंदा में अध्ययन के दौरान छात्र समितियों और क्लबों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। वे विश्वविद्यालय के किसी भी क्लब और सोसायटी से जुड़ना चुन सकते हैं। इन समूहों में शामिल होने से छात्रों को अपने संचार, संगठन और सामाजिक कौशल विकसित करने का अवसर मिलता है जो वास्तविक दुनिया की स्थितियों में मूल्यवान साबित होंगे। छात्र स्वयंसेवक इन क्लबों को चलाते हैं, क्योंकि विश्वविद्यालय केवल वित्तीय सहायता और सुविधाएं प्रदान करता है। इन क्लबों की कई गतिविधियाँ संकाय और कर्मचारियों की भागीदारी के लिए भी खुली हैं। छात्रों के लिए उपलब्ध कुछ विकल्प हैं: स्पोर्ट्स क्लब, अवेयरनेस सोसाइटी, लिटरेरी सोसाइटी, एनवायरनमेंट क्लब, कल्चरल एंड आर्ट्स सोसाइटी, करियर रिसोर्स सेल और सोशल क्लब। ये संगठन समय-समय पर गतिविधियों की एक श्रृंखला आयोजित करते हैं और परिदृश्य का पता लगाने के साथ-साथ साथियों से बातचीत करने और सीखने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक हैं।

भावी छात्रों और उनके गुरुओं को परिसर का पता लगाने और वर्तमान छात्रों के साथ बातचीत करने के लिए परिसर का दौरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। फ्रंट ऑफिस न्यूनतम पांच और अधिकतम दस छात्रों के लिए समूह भ्रमण की भी व्यवस्था करता है। भावी और मौजूदा छात्रों के लिए सभी प्रासंगिक जानकारी छात्र पुस्तिका पर प्रदान की गई है, जो एक विस्तृत दस्तावेज़ है जिसे विश्वविद्यालय की वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है।

Aerial View of Amphitheatre

लिंग-अनुकूल परिसर

नेट-ज़ीरो और पर्यावरण अनुकूल सिद्धांतों को बनाए रखने के साथ-साथ नालंदा विश्वविद्यालय परिसर को अधिक लिंग अनुकूल और स्वच्छ बनाने के उद्देश्य से, विश्वविद्यालय ने परिसर समुदाय की महिला सदस्यों के लाभ के लिए सुविधाओं की स्थापना शुरू की। परिसर के विभिन्न स्थानों पर सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन और सेनेटरी अपशिष्ट भस्मक मशीनों की खरीद की आवश्यकता को पहले 2022 में पहचाना गया था। परिसर राजगीर के बाजारों से कुछ दूरी पर है, आपातकालीन और सेनेटरी पैड की तत्काल पहुंच को महिलाओं के लिए आवश्यक माना गया था कैंपस में। समिति प्रभारी ने तीन परिसर स्थानों: शिक्षण, संकाय और महिला आवासीय ब्लॉकों में सैनिटरी पैड वेंडिंग मशीनों की स्थापना का निरीक्षण किया। अब ये मशीनें क्रियाशील हैं और प्राप्त फीडबैक के अनुसार उपयोगी साबित हो रही हैं।

इसके अलावा, सैनिटरी नैपकिन जैसे चिकित्सा अपशिष्टों को घरेलू कचरे के रूप में फेंक दिया जाता है, लेकिन इन्हें अन्य पुनर्चक्रण योग्य वस्तुओं से मैन्युअल रूप से अलग किया जाना चाहिए। निस्तारित नैपकिन रोगजनकों के पनपने और संक्रामक रोगों को फैलाने के लिए जगह बनाते हैं। महिला आवासीय हॉलों से उत्पन्न सैनिटरी कचरे को स्वच्छ तरीके से रीसाइक्लिंग करने के मुद्दे को संबोधित करने और महिला छात्रों और कर्मचारियों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए, उक्त समिति के प्रस्तावों के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सेनेटरी पैड इंसीनरेटर मशीनें खरीदी गईं। ये मशीनें पर्यावरण के अनुकूल और स्वच्छ तरीके से एक विशेष तापमान पर इस्तेमाल किए गए नैपकिन को जलाती हैं। फिलहाल ये मशीनें महिला आवासीय हॉलों में लगाई गई हैं। परिसर में महिलाओं की संख्या बढ़ने पर विश्वविद्यालय अधिक वेंडिंग और इंसीनरेटर मशीनें खरीदेगा।

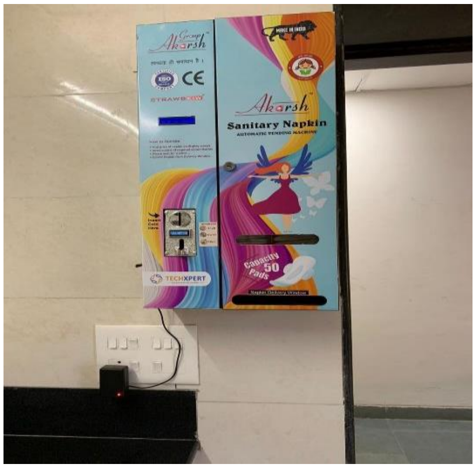

महिला आवासीय हॉलों में स्वच्छता अपशिष्ट भस्मक मशीन स्थापित की गई; कैंपस के तीन स्थानों पर सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीनें लगाई गई हैं

<u>पुस्तकालय</u>

विश्वविद्यालय पुस्तकालय सेवाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने और विश्वविद्यालय समुदाय की बौद्धिक जांच, अनुसंधान और आजीवन सीखने की जरूरतों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसका उद्देश्य नवीन सेवाओं के माध्यम से सूचना तक निर्बाध पहुंच प्रदान करना है जो बौद्धिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है और अंतःविषय क्रॉस-कैंपस अनुसंधान को बढ़ावा देता है।

ऑनलाइन संसाधन:

- ब्रिल की ई-जर्नल्स
- आर्थिक एवं राजनीतिक साप्ताहिक
- अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी
- जेएसटीओआर
- ओयूपी ई-जर्नल
- दक्षिण एशियाई इतिहास और संस्कृति
- स्कोपस

सदस्यता:

1. भारतीय विश्वविद्यालयों का संघ
2. डेलनेट
3. ईएसएस, इनफ्लिबनेट के मुख्य सदस्य
4. भारत की राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी

लाइब्रेरी स्वचालन:

यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी को कोहा सॉफ्टवेयर के साथ स्वचालित किया गया है - दुनिया का पहला फ्री और ओपन सोर्स इंटीग्रेटेड लाइब्रेरी मैनेजमेंट सिस्टम।

संस्थागत डिजिटल रिपॉजिटरी:

- यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी ने डी-स्पेस में एक संस्थागत डिजिटल रिपोजिटरी स्थापित की है। यह विश्वविद्यालय के छात्रों, विद्वानों और संकाय सदस्यों के विद्वतापूर्ण और बौद्धिक आउटपुट को संग्रहीत करने के लिए एक खुला स्रोत वेब एप्लिकेशन है।
- डिस्कवरी सेवा:

- लाइब्रेरी ने समन डिस्कवरी सर्विस की सदस्यता ली है, जो एक ऑनलाइन खोज उपकरण है जो एकल खोज बॉक्स का उपयोग करके लाइब्रेरी ई-संसाधनों का एकीकृत सूचकांक प्रदान करता है।

रिमोट लॉग-इन/सिंगल साइन-ऑन:

- लाइब्रेरी ने रिमोट एक्सएस के माध्यम से ई-संसाधनों तक रिमोट एक्सेस लागू किया है।

अनुसंधान सहायता उपकरण:

- टर्निटिन (साहित्यिक चोरी विरोधी): यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी ने टर्निटिन की सदस्यता ले ली है, यह छात्रों और विद्वानों द्वारा अंतिम रूप से प्रस्तुत करने से पहले लेखों, असाइनमेंट, शोध पत्रों, शोध प्रबंधों और थीसिस के लिए समानता सूचकांक की जांच करने में मदद करता है।
- व्याकरण: लाइब्रेरी में ऑनलाइन प्रूफरीडिंग टूल का लाइसेंस प्राप्त संस्करण है जो व्याकरण, विराम चिह्न और शैली के लिए पाठ की जांच करता है, और एक प्रासंगिक वर्तनी जांचकर्ता की सुविधा प्रदान करता है।

उधार लेने की सुविधाएं:

पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं को प्रदान की जाने वाली उधार सुविधा नीचे दी गई है:

सदस्य	पुस्तकों की संख्या	दिन	नवीनीकरण
पीएच.डी. छात्र	10 पुस्तकें	15 दिन	5 बार
परास्नातक छात्र	5 पुस्तकें	15 दिन	2 बार

उधार ली गई एनयूएल सामग्री को हुई किसी भी हानि/क्षति/विकृति के लिए उधारकर्ता जिम्मेदार होगा। यदि पुस्तक खो जाती है/क्षतिग्रस्त हो जाती है/विकृत हो जाती है, तो उपयोगकर्ता को विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष/उप पुस्तकालयाध्यक्ष को लिखित रूप से रिपोर्ट करना होगा। उधारकर्ता को दस्तावेज़ के उसी या नवीनतम संस्करण को 100/- रुपये जुर्माने के साथ बदलना होगा या अतिदेय शुल्क के अलावा ऐसे

दस्तावेज़ की दोगुनी कीमत का भुगतान करना होगा। हालाँकि, बिना छपी किताब पर जुर्माना किताब की कीमत का तीन गुना होगा। यदि दस्तावेज़ किसी श्रृंखला का हिस्सा बनता है, तो उधारकर्ता से पूरे सेट के प्रतिस्थापन के लिए शुल्क लिया जाएगा।

दस्तावेज़ों की देखभाल:

जब किताबें एनयूएल को वापस कर दी जाती हैं, तो उपयोगकर्ता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसकी ज़िम्मेदारी का विधिवत निर्वहन किया गया है और दस्तावेज़ उसके नाम से रद्द कर दिया गया है। इश्यू काउंटर छोड़ने से पहले, उपयोगकर्ताओं को खुद को संतुष्ट करना चाहिए कि उन्हें उधार दी गई वस्तु अच्छी स्थिति में है या नहीं। यदि नहीं, तो उन्हें तुरंत मामले को इश्यू काउंटर पर एनयूएल स्टाफ की जानकारी में लाना चाहिए। अन्यथा, वापसी के समय देखी गई क्षति के लिए उसे उत्तरदायी ठहराया जाएगा।

पुस्तकालय सेवाएँ:

उपयोगकर्ताओं को निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान की जाती हैं:

- अभिलेखीय सेवाएँ (संस्थागत डिजिटल भंडार)
- ग्रंथ सूची संबंधी सेवाएँ
- वर्तमान जागरूकता सेवा (सीएएस)
- दस्तावेज़ वितरण सेवाएँ (डीडीएस)
- सूचना साक्षरता (आईएल)
- अंतर पुस्तकालय ऋण (आईएलएल)
- पुस्तकालय विस्तार सेवाएँ
- समाचारपत्र कतरन सेवाएँ
- उपयोगकर्ताओं के लिए ओरिएंटेशन प्रोग्राम
- संदर्भ सेवाएँ
- रिप्रोग्राफी सेवाएँ
- सूचना का चयनात्मक प्रसार (एसडीआई)
- वेब-आधारित ओपेक https://lib.nalandauniv.edu.in/

पुस्तकालय के कार्य घंटे:

एनयू लाइब्रेरी गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गांधी जयंती, होली और दिवाली जैसी पांच छुट्टियों को छोड़कर सभी दिन खुली रहती है। एनयूएल खुलने का समय इस प्रकार है:

सोमवार से शुक्रवार: सुबह 8.30 बजे से शाम 8.30 बजे तक।

शनिवार, रविवार और अन्य सार्वजनिक छुट्टियाँ: सुबह 9.00 बजे से शाम 6.00 बजे तक।

गर्मी की छुट्टियों के दौरान पुस्तकालय विश्वविद्यालय के नियमित समय के अनुसार खुला रहता है (अर्थात सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक)

<u>सुविधाएँ</u>

कैंपस सुविधाएं समग्र सीखने की प्रक्रिया के साथ-साथ छात्रों के मानसिक और शारीरिक विकास को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सीखने, सिखाने और अनुसंधान जैसी शैक्षणिक गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने की दिशा में पर्याप्त और सही लॉजिस्टिक समर्थन एक महत्वपूर्ण योगदान है। इसे ध्यान में रखते हुए, नालंदा विश्वविद्यालय ने रिपोर्टिंग वर्ष के दौरान कुछ महत्वपूर्ण सुविधाएं प्रदान की हैं और उनका रखरखाव किया है।

1. निवास हॉल

लगभग एक सहस्राब्दी (1000 वर्ष) के बाद, फिर से उभरते हुए नालंदा विश्वविद्यालय में, छात्र परिसर में आवास में रहने के लिए चले गए हैं। इसके साथ, नालंदा ने अपने नए अवतार में अगस्त 2022 में 'अमृत काल' के उद्भव के साथ एक और मील का पत्थर हासिल किया है।

निवास कक्ष, नालंदा के विहारों की तरह, एक बहुत ही संक्षिप्त इकाई का प्रतिनिधित्व करते हैं। केंद्रीय गीली भूमि के साथ सार्वजनिक रीढ़ सभी समूहों और सुविधाओं को एक साथ जोड़ती है। प्रत्येक क्लस्टर 80-100 छात्रों को शिक्षा प्रदान करता है और वर्तमान में कुल 24 इमारतों में लगभग 450 क्षमता वाले निवास हॉल हैं। महिलाओं के लिए तथागत निवास हॉल

अजातशत्रु निवास भवन

आवास हॉल्स

सभी निवास हॉल छात्रों को उनकी पसंद के आधार पर कमरे आवंटित किए जाते हैं, लेकिन पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर। इनडोर और आउटडोर गेम्स, कॉमन हॉल, कंप्यूटर लैब, वाई-फाई, छात्रों की पेंट्री आदि जैसी सभी सुविधाएं रेजिडेंस हॉल की सीमाओं के भीतर प्रदान की जाती हैं।

2. डाइनिंग हॉल एवं कैफेटेरिया

रेजिडेंस हॉल में भोजन क्षेत्र अपने छात्रों के लिए उनकी विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और भोजन की आदतों को ध्यान में रखते हुए संतुलित भोजन सुनिश्चित करता है। विश्वविद्यालय छात्रों और कर्मचारियों को स्वच्छतापूर्वक तैयार भोजन परोसने के लिए वातानुकूलित भोजन सुविधा से सुसज्जित है। विश्वविद्यालय मामूली कीमत पर चाय/कॉफी, शीतल पेय और स्वस्थ खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराने के लिए परिसर में एक कैफेटेरिया भी चला रहा है।

विश्वविद्यालय परिसर में डाइनिंग हॉल और कैफेटेरिया

3. परिवहन

छात्रों को निवास हॉल से शैक्षणिक ब्लॉक और पुस्तकालय तक ले जाने और सप्ताह के सभी दिनों में उनकी वापसी के लिए लगातार शटल सेवाएं प्रदान की जाती हैं। निकटवर्ती शहरों के लिए परिवहन सुविधाएं

साप्ताहिक और/या मासिक आधार पर उपलब्ध हैं। उपरोक्त व्यवस्थाओं के अलावा अनुरोध पर निकटवर्ती हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशनों के लिए विशेष आदेशित परिवहन सेवाएं भी प्रदान की जाती हैं।

छात्रों के लिए शटल सेवा

4. चिकित्सा सुविधा एवं स्वास्थ्य देखभाल

विश्वविद्यालय ने नालंदा समुदाय की जरूरतों का ख्याल रखने के लिए 2018 में पांच बिस्तरों वाला प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र/मिनी-अस्पताल स्थापित किया। स्वास्थ्य देखभाल केंद्र की सेवाओं का विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों द्वारा 24x7 उपयोग किया जा रहा है। स्वास्थ्य देखभाल केंद्र में नियमित आधार पर विशेषज्ञों के दौरे के अलावा, रेजिडेंट डॉक्टरों और नर्सों की सुविधा भी प्रदान की जाती है। एक्स-रे, पैथोलॉजी प्रयोगशाला, फार्मेसी और एम्बुलेंस जैसी महत्वपूर्ण चिकित्सा सुविधाएं चौबीसों घंटे उपलब्ध कराई जाती हैं। सुविधा का उपयोग विश्वविद्यालय द्वारा समय-समय पर समीक्षा और निर्धारित नीतियों द्वारा निर्देशित होता है और स्वास्थ्य केंद्र नालंदा समुदाय को सर्वोत्तम स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान कर रहा है। वर्तमान में मुख्य परिसर में उन्नत चिकित्सा उपकरणों के साथ 13 बिस्तरों वाला मिनी अस्पताल स्थापित किया गया है।

300 सीटों वाला सुषमा स्वराज सभागार

100 सीटों वाला मिनी ऑडिटोरियम

6. संचार केंद्र

विश्वविद्यालय में एक अंग्रेजी संचार केंद्र है, जो एक निर्देशात्मक सुविधा है जिसे विश्वविद्यालय समुदाय को किसी भी स्तर पर उनकी संचार आवश्यकताओं में सहायता करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह लेखन प्रक्रिया में मदद करता है - विचार निर्माण और संगठन से लेकर शैली, व्याकरण, निबंध की रूपरेखा और संपादन रणनीतियों तक। केंद्र आवश्यकतानुसार छात्रों की सहायता के लिए एक-पर-एक संचार करता है। छात्र विशिष्ट समस्याओं में व्यक्तिगत सहायता के लिए संचार केंद्र से संपर्क कर सकते हैं। नालंदा विश्वविद्यालय का संचार केंद्र अपने संचार और लेखन कौशल को बेहतर बनाने के इच्छुक छात्रों को उपचारात्मक/विशेष सहायता प्रदान करने के लिए कक्षाओं के साथ-साथ संचारी अंग्रेजी ट्यूटोरियल के मॉड्यूल भी चलाता है।

7. कंप्यूटर लैब

कैंपस कंप्यूटर लैब उपयोगकर्ताओं को निर्देशात्मक उपयोग के साथ-साथ अनुसंधान के लिए मल्टीमीडिया सेवाएं, कंप्यूटिंग-संबंधित सेवाएं और वर्कस्टेशन प्रदान करके उच्च शिक्षा के साथ प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने का काम करती हैं। विश्वविद्यालय के पास एक कंप्यूटर लैब है जो नवीनतम तकनीक और सॉफ्टवेयर से सुसज्जित है, जिसमें सभी आवश्यक अनुसंधान उपकरण, जैसे जीआईएस, मैटलैब और मिनीटैब शामिल हैं। सभी स्कूलों में शोधकर्ता और छात्र कक्षा में जो सीखते हैं उसका अभ्यास करने के लिए या अपनी परियोजनाओं पर काम करने के लिए संबंधित प्रयोगशाला का उपयोग कर सकते हैं, खासकर यदि उन्हें विशेष तकनीकी सहायता की आवश्यकता होती है।

8. भाषा प्रयोगशाला

भाषा प्रयोगशाला सुविधा स्थापित होने की प्रक्रिया में है। इसे विदेशी भाषा सीखने के लिए एक समर्पित स्थान बनाने की योजना है, जहां छात्र ऑडियो या ऑडियो-विजुअल सामग्री तक पहुंच सकते हैं। यह एक शिक्षक को छात्र ऑडियो को सुनने और प्रबंधित करने की अनुमति देता है, जिसे हेडसेट के माध्यम से या अलग-अलग 'साउंड बूथ' में व्यक्तिगत छात्रों तक पहुंचाया जाता है। भाषा प्रयोगशालाएं एक-पर-एक कोचिंग, समूह अभ्यास और वार्तालाप के माध्यम से भाषा अधिग्रहण और दक्षता को बढ़ावा देने में अद्वितीय हैं कौशल.

9. खेल

नालंदा विश्वविद्यालय इस दृष्टिकोण का समर्थन करता है कि खेल किसी के व्यक्तित्व को आकार देने और अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विश्वविद्यालय ने हमारे पास उपलब्ध अल्प बुनियादी ढांचे के भीतर आवासीय हॉलों में छात्रों के उपयोग के लिए एक खेल वातावरण विकसित किया है। टेबल टेनिस जैसे इनडोर खेलों के लिए सुविधाएं प्रदान की गई हैं, जबकि आउटडोर मनोरंजक क्षेत्रों में वॉलीबॉल और बैडमिंटन कोर्ट हैं। शीर्ष अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त सभी खेलों के लिए एक प्रमुख खेल परिसर निर्माणाधीन है। ।

अजातशत्रु आवासीय हॉल में क्रिकेट मैच

10. समाज

विश्वविद्यालय मुख्य रूप से छात्रों की रचनात्मक ऊर्जा और गतिशीलता को एक मजबूत चरित्र और एक एकीकृत व्यक्तित्व के निर्माण की दिशा में रचनात्मक दिशाओं में निर्देशित करने के उद्देश्य से विभिन्न छात्र समाजों का समर्थन करता है। संस्कृति, साहित्य, कला, संगीत, नृत्य, प्रकृति और खेल गतिविधियों के विविध तत्वों को आत्मसात करके, छात्र सामुदायिक सेवा के माध्यम से अपने साथ-साथ दूसरों के जीवन को समृद्ध कर सकते हैं, खोजकर्ता के रूप में अपने बाहरी कौशल को निखार सकते हैं और फोटोग्राफिक कौशल विकसित कर सकते हैं। नालंदा विश्वविद्यालय स्पोर्ट्स क्लब, अवेयरनेस सोसाइटी, लिटरेरी सोसाइटी, एनवायरनमेंट क्लब, सोसाइटी फॉर कल्चर एंड आर्ट्स के साथ-साथ कैरियर रिसोर्स सेल जैसे कुछ नामों के माध्यम से छात्र हित की विस्तृत श्रृंखला से मेल खाने के लिए व्यापक पाठ्येतर गतिविधियों का समर्थन करता है।

11. अनुभवात्मक शिक्षण और आउटरीच

बिहार सरकार और स्थानीय समुदायों के साथ जुड़ने के लिए कई आउटरीच कार्यक्रम डिज़ाइन किए गए थे। कार्यक्रमों का उद्देश्य संरचित जमीनी स्तर के जुड़ाव की संस्कृति का निर्माण करना है, जो विश्वविद्यालय की एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट विशेषता है। सीखना तब सर्वोत्तम होता है जब छात्र सीखने की प्रक्रिया में मानसिक और शारीरिक रूप से सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। नालंदा में क्षेत्रीय यात्राओं को सीखने का महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। इसलिए, प्रत्येक स्कूल निर्धारित अंतराल पर पर्यवेक्षित और सुरक्षित मनोरंजक क्षेत्र यात्राएं आयोजित करता है, जब छात्र सीधे जानकारी तक पहुंच कर अधिक समग्र और एकीकृत तस्वीर का अनुभव करते हैं। इस प्रकार, फ़ील्ड यात्राएँ नियमित आधार पर व्यावहारिक और इंटरैक्टिव अनुभव के साथ पाठ्य सामग्री को पूरक करके कक्षा में सीखने को बढ़ाने का काम करती हैं।

<u>नेट ज़ीरो कैम्पस निर्माण</u>

40 Hectares of Waterbodies

- संरचनाएं और साइट विकास कार्य, हालांकि, वास्तव में मई 2017 के बाद शुरू किए गए थे, जो मार्च 2022 में 95% से अधिक है। नालंदा के लिए सकारात्मक/रचनात्मक छवि बनाने के उद्देश्य से, पांच इमारतों का निर्माण पूरा हो चुका है और विश्वविद्यालय है वर्तमान में यह अपने नये परिसर से कार्य कर रहा है।
- प्रमुख कार्य पैकेजों (17 गैर-आवासीय भवनों) के तहत निर्माण का ग्राफ मई 2017 में मात्र 0.28% से बढ़कर लगभग 95% के करीब पहुंच गया।
- शैक्षणिक, प्रशासनिक, सुविधाओं और संबद्ध सेवाओं और साइट विकास कार्यों सहित विश्वविद्यालय भवनों के निर्माण की प्रगति का ग्राफ 2017 के अंत में ग्राउंड जीरो से बढ़कर 2022 तक 95% से अधिक हो गया है, जो कि COVID-19 महामारी बाधाओं के बावजूद है। पिछले दो वर्षों के दौरान. संकाय/कर्मचारियों के लिए छात्र छात्रावासों और आवासों के निर्माण में 85% से अधिक प्रगति हासिल की गई है।
- छात्रों ने मुख्य परिसर के अंदर नए आवासीय हॉल में रहना शुरू कर दिया है। अगस्त 2022। कर्मचारियों ने टीजीई मुख्य परिसर के अंदर क्वार्टरों में रहना शुरू कर दिया है। जून 2023.
- पैकेज 1ए में 12.5 किलोमीटर आंतरिक सड़क नेटवर्क का निर्माण और 100 एकड़ जल निकाय बनाने के लिए मिट्टी का काम शामिल था, जो अप्रैल 2018 में 100% पूरा हो गया था।

- पैकेज 1बी में 84 भवनों/संरचनाओं का निर्माण शामिल है जिसमें शैक्षणिक, प्रशासनिक, सुविधाएं और उपयोगिता भवन शामिल हैं जिनमें आंतरिक सेवाएं और संबद्ध साइट विकास कार्य आदि शामिल हैं, जो 95% से अधिक पूरे हो चुके हैं। जबकि कुछ इमारतें पहले से ही चालू हैं, अन्य इमारतों में इंटीरियर और फर्निशिंग का काम प्रगति पर है और अगले छह महीने तक पूरा होने का लक्ष्य है।
- पैकेज 1सी के तहत 528 क्षमता वाले छात्र आवासीय हॉल (24 भवन) का काम 100% पूरा हो चुका है और लगभग 1000 वर्षों के बाद, फिर से उभरते हुए नालंदा विश्वविद्यालय में, छात्रों ने परिसर में छात्रावास आवास पर कब्जा कर लिया है जो कि एक मील का पत्थर रहा है। छात्र और शोधकर्ता समुदाय क्योंकि यह प्राचीन नालंदा था। इस पैकेज में संकाय और गैर-शिक्षण के लिए आवास भी शामिल हैं, जिसमें उनकी उपयोगिता संरचनाएं (95 इमारतें) पूरी होने वाली हैं (85% से अधिक) और इसे दिसंबर 2022 तक पूरा करने का लक्ष्य है।
- परिसर के पूर्वी हिस्से और प्रशासनिक भवनों में बिजली पहुंचाने के लिए पैकेज 4ए के तहत विद्युतीकरण का उच्च कार्य पूरा हो चुका है और अब यह विश्वविद्यालय के लिए लाभकारी उपयोग है।
- परिसर में 100 एकड़ से अधिक [40 हेक्टेयर के बराबर] जल निकायों को विकसित और पूरा किया गया है। निर्माण के लिए आवश्यक पानी भी जल निकायों में जमा वर्षा जल से लिया जा रहा है।
- पुरस्कार विजेता 'एकीकृत जल प्रबंधन योजना' परिसर के भीतर वर्षा जल और सतही अपवाह के संग्रह, अतिरिक्त पानी की बर्बादी पर नियंत्रण और मांग प्रबंधन सिद्धांतों के लिए है।
- परिसर केवल साइट पर ही वर्षा के पानी को एकत्र करके संचालित किया जा रहा है।
- पीएसयू को काम सौंपे जाने के बाद, दैनिक आधार पर बिजली की आवश्यकता को पूरा करने के लिए परिसर में नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के लिए ।LR1.3 ऑन-ग्रिड से जुड़े सौर फार्म के साथ 6.5MWdc विकसित किया जा रहा है। परिसर में सौर पार्क का विकास पूरा होने के कगार पर है और इसने अब तक 90% से अधिक प्रगति हासिल कर ली है।
- परिसर में और आसपास के क्षेत्र में एकत्रित कचरे से बायोगैस और नवीकरणीय ऊर्जा उत्पन्न करने के उद्देश्य से परिसर में बायोगैस संयंत्र विकास कार्य प्रगति पर है। एकीकृत अपशिष्ट प्रबंधन दृष्टिकोण के साथ, प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय से अनुकरणीय ज्ञान और संसाधन साझा करने के विचार के साथ स्थानीयता के बीच स्थायी बंधन के साथ कचरे से हरित बायोगैस उत्पन्न करना स्थानीय समाज में एक आदर्श बदलाव होगा।
- विद्युत स्थापना, बिजली आपूर्ति, एचवीएसी, जल आपूर्ति, जल उपचार प्रणाली, अग्निशमन प्रणाली, सीवेज निपटान प्रणाली, भवन प्रबंधन प्रणाली, बागवानी सहित नेट-जीरो टिकाऊ हरित

परिसर विकास के लिए आंतरिक और बाहरी सेवाओं से युक्त विभिन्न 16 अन्य कार्य पैकेज इमारतों के समग्र समापन को सुनिश्चित करने के लिए लैंडस्केप कार्य, इंटीरियर और फर्निशिंग कार्य, ऑडियो विजुअल कार्य, चारदीवारी निर्माण आदि को समानांतर रूप से पूरा किया जा रहा है। 6.5 मेगावाट क्षमता के सौर फार्म का समापन अगले तीन महीनों में निर्धारित है। निर्माण के अगले चरण की कुछ और इमारतों का निर्माण हाल ही में शुरू हुआ है जिसे पूरा होने में एक साल और लगेगा।

- पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के साथ-साथ परियोजना और निर्माण की निगरानी और मूल्यांकन करने के लिए परियोजना निगरानी समिति की स्थापना की गई। कार्य की प्रगति और गुणवत्ता की समीक्षा के लिए समिति द्विमासिक बैठक करती है। समिति विश्वविद्यालय को आगे की योजना बनाने और बाधाओं, यदि कोई हो, को दूर करने का सुझाव देती है।
- तकनीकी मुद्दों और निर्माण प्रगति में विश्वविद्यालय की निगरानी और सलाह देने के लिए एक नोडल अधिकारी की नियुक्ति। नोडल अधिकारी परिसर का दौरा करते हैं और नियमित आधार पर कार्यों की समीक्षा करते हैं और परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
- भारत सरकार के विभिन्न नियामक निकायों को मिलाकर नेट-ज़ीरो कैंपस संचालन समिति का गठन करना। समिति के सम्मानित मार्गदर्शन से विश्वविद्यालय ने निम्नलिखित सफलतापूर्वक पूरा किया है:
    - ❖ विशेषज्ञों द्वारा नेट-जीरो रणनीति के लिए स्मार्ट दृष्टिकोण का कार्यान्वयन।
    - ❖ हाइब्रिड नवीकरणीय प्रणाली के लिए उपयुक्त नियामक प्रावधान बनाया गया है, जिससे देश में हरित और स्वच्छ ऊर्जा को प्रोत्साहित करने के लिए एक आदर्श बदलाव आया है।
    - ❖ यूएसएआईडी, बीईई, सीईआरसी, एनआईएसई, ब्रेडा और एसबीपीडीसीएल जैसी विशेषज्ञ एजेंसियों द्वारा सुझाई गई नेट-जीरो रणनीति के लिए स्मार्ट दृष्टिकोण का कार्यान्वयन।
    - ❖ केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग (सीईआरसी), ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) और अमेरिकी-भारतीय साझेदारी एजेंसी (यूएसएआईडी) की मदद से ऊर्जा कुशल प्रणाली की स्थापना की प्रक्रिया शुरू की गई।
    - ❖ परिसर में पाइप्ड प्राकृतिक गैस (पीएनजी) लाइन का वितरण नेटवर्क पूरा हो गया, और प्रधान मंत्री ऊर्जा गंगा गैस पाइपलाइन परियोजना के तहत विश्वविद्यालय परिसर में पीएनजी आपूर्ति प्रदान करने के लिए डी-टूरिंग शुरू की गई और संयुक्त

उद्यम द्वारा पूरा होने की सूचना दी गई। आईओसीएल-अडानी को पीएनजी नियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) द्वारा सिटी गैस वितरण एजेंसी के रूप में नियुक्त किया गया है। माननीय कुलपति की पहल और पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से डी-टूरिंग से न केवल विश्वविद्यालय को सुविधा होगी बल्कि 100 से अधिक गांवों की स्थानीय आबादी के लिए भी यह फायदेमंद होगा।

❖ * इसके बाद विश्वविद्यालय 28.09.2019 को जारी SECI लेटर ऑफ अवार्ड के माध्यम से MNRE से 5 MWac समर्थन के लिए 3,49,77,775/- रुपये की कुल वित्तीय सहायता प्राप्त करने में सक्षम हुआ। सीपीएसयू वायबिलिटी गैप फंडिंग (वीजीएफ) योजना के तहत 69,95,555 रुपये प्रति मेगावाट की दर से वित्तीय सहायता सभी प्रतिभागियों के बीच अधिकतम है, और अद्वितीय दृष्टिकोण है क्योंकि यह आम तौर पर शैक्षणिक संस्थान के मामले में नहीं होता है जैसा कि सदस्यों द्वारा व्यक्त किया गया है। अपनी 5वीं बैठक के दौरान नेट-शून्य संचालन समिति। यह सहायता विश्वविद्यालय के लिए नेट-जीरो कैंपस के विकास और कैंपस निर्माण के अनूठे दृष्टिकोण के लिए फंड के उपयोग में सहायक होगी।

❖ ❖ नेट-जीरो कैंपस के बेहतर और कुशल कामकाज के लिए बीएमएस, एससीएडीए, डीएएलआई और रेडियो फ्रीक्वेंसी सिस्टम जैसे विभिन्न एकीकृत ऑटोमेशन को क्रियान्वित किया जा रहा है।.

कैम्पस सोलर फार्म पर

नेट शून्य कैम्पस निर्माण

- नेट ज़ीरो कैंपस विकसित करने के लिए प्रमुख स्थिरता सुविधाओं में शामिल हैं, नेट ज़ीरो ऊर्जा, नेट ज़ीरो पानी, नेट ज़ीरो अपशिष्ट और नेट ज़ीरो उत्सर्जन। स्वदेशी दृष्टिकोण के साथ नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की विशेषता वाली यह संकर अवधारणा और विभिन्न नवीन प्रौद्योगिकियों के साथ इसका एकीकरण भविष्य में अन्य आगामी परियोजनाओं/परिसरों और सामुदायिक निर्माण मॉडल के निर्माण के लिए तर्कसंगत दृष्टिकोण का उदाहरण हो सकता है। विभिन्न स्तरों पर काम करने वाली निष्क्रिय विधियों के लिए कुछ सबसे महत्वपूर्ण और स्वदेशी पहलू और अवधारणाओं के पैलेट हैं: -
- इमारतों को ठंडा/गर्म करने के लिए डेसिकैंट इवेपोरेटिव (DEVAP) तकनीक का उपयोग,
- एचवीएसी प्रणाली के लिए सौर एकीकृत थर्मल भंडारण प्रौद्योगिकी,
- स्मार्ट एलईडी लाइटिंग, DALI ऑक्यूपेंसी सेंसर के साथ एकीकृत
- सामान्य पकी हुई मिट्टी की ईंटों के स्थान पर कंप्रेस्ड स्टैबिलाइज्ड अर्थ ब्लॉक्स (सीएसईबी) ब्लॉकों का उपयोग।
- भूकंपीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए चिनाई के एकीकृत बक्से का उपयोग,
- थर्मल प्रतिरोध बढ़ाने के लिए मोटी गुहा दीवारों का उपयोग,
- पीने योग्य पानी की मांग को कम करने के लिए जलवायु उपयुक्त भूदृश्य डिजाइन,
- विकेंद्रीकृत जल उपचार (DeWAT) प्रणाली,
- कुशल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली के लिए रणनीतियाँ,
- बायोगैस संचालित कंबाइंड हीट एंड पावर (सीएचपी) इंजन,
- सौर पीवी कैप्टिव पावर प्लांट,
- चयनित देशी पौधों आदि के उपयोग के माध्यम से हवा को ठंडा करने के साथ-साथ सफाई भी।
- स्वचालित दृष्टिकोण (स्काडा/स्मार्ट ग्रिड, आईबीएमएस, पीएलसी आदि)।

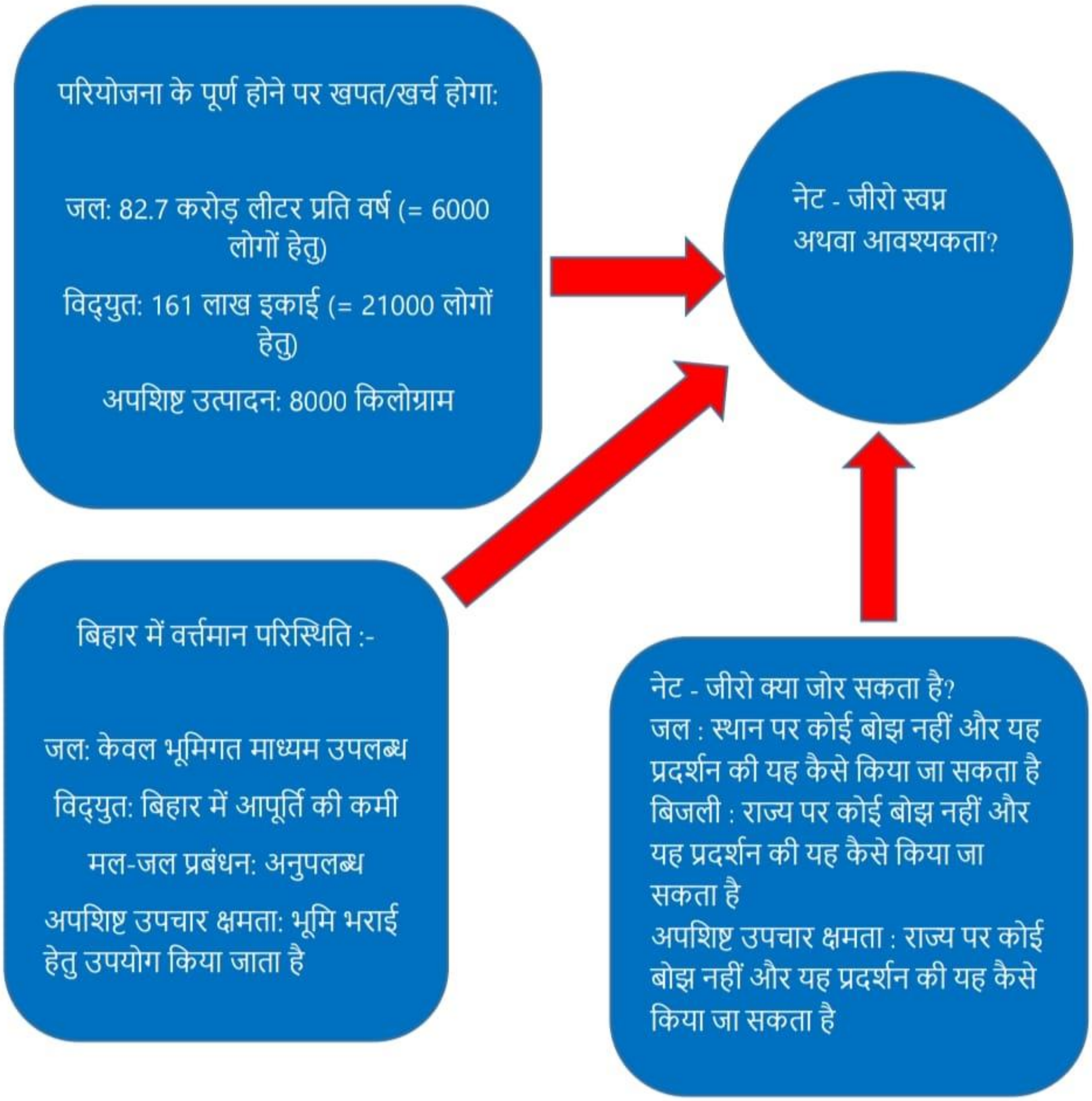

नेट ज़ीरो: यथार्थ में परिवर्तित एक स्वप्न

Administrative Block | Wing - 1

यह परिसर कार्बन तटस्थ और शून्य अपशिष्ट परिसर बनाने के लिए प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के योजना सिद्धांतों के साथ अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को जोड़ता है। पूरा मास्टर प्लान अपने आप में संक्रमणकालीन है, क्योंकि यह साइट के बड़े इको-सिस्टम में परिसर के एकीकरण को दर्शाता है।

नालंदा विश्वविद्यालय परियोजना ग्रीन रेटिंग फॉर इंटीग्रेटेड हैबिटेट असेसमेंट - लार्ज डेवलपमेंट्स (जीआरआईएचए एलडी) के तहत जीआरआईएचए परिषद के साथ पंजीकृत है। मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा मास्टर प्लान की रेटिंग मूल्यांकन की समीक्षा की जा रही है।

अनुकूलन दृष्टिकोण

वार्षिक ऊर्जा मांग को पूरा करने के लिए समग्र इष्टतम और मिश्रित दृष्टिकोण:-

मांग पक्ष प्रबंधन सिद्धांतों और तकनीकी-व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य दृष्टिकोण के तहत कुशल और मिश्रित तरीके से मांग को कम करना।

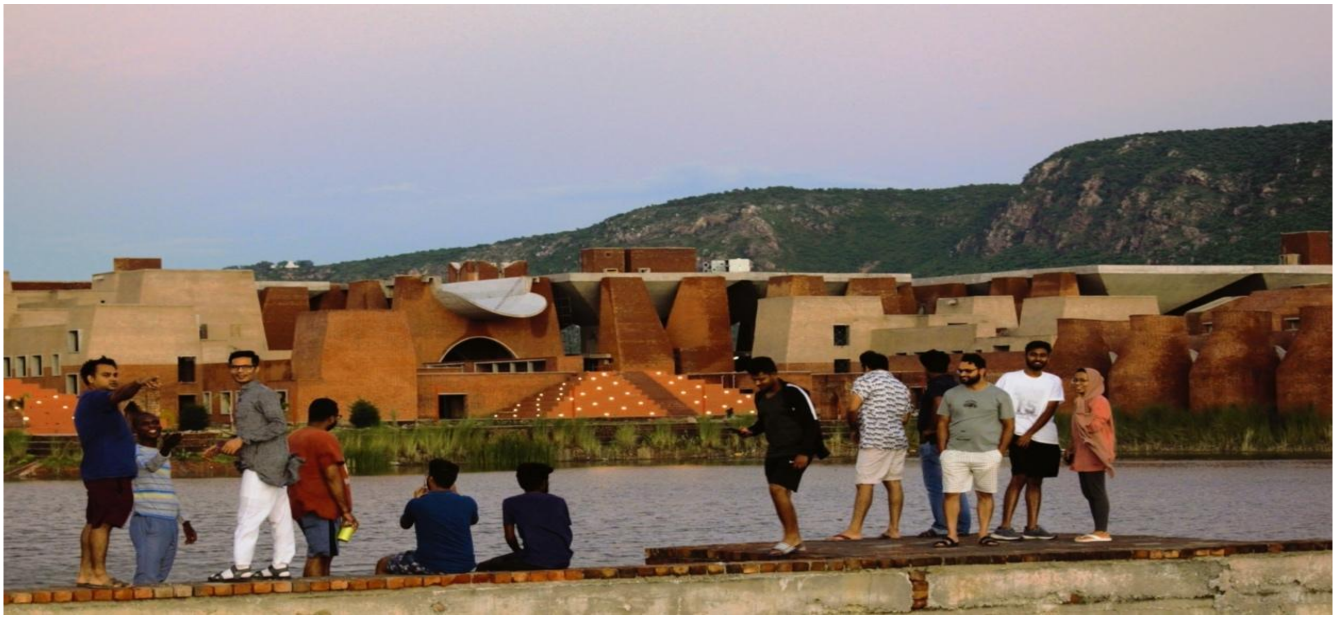

कैम्पस जीवन

हरित एवं टिकाऊ परिसर

पुरस्कार, सम्मान और मान्यता

#पुरस्कार

1) न्यूयॉर्क में ग्रीन एंड सस्टेनेबल कैंपस के लिए लीडरशिप अवार्ड, 2022।

2) एमजीएनसीआरई, डीओई, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2021 में ग्रीन चैंपियन पुरस्कार।

3) 2020 में GRIHA काउंसिल द्वारा अद्वितीय, हरित, शुद्ध-शून्य उत्सर्जन और टिकाऊ दृष्टिकोण पुरस्कार के लिए बड़े विकास की श्रेणी में GRIHA फाइव स्टार मास्टरप्लान रेटिंग।

4) 2019 में GRIHA परिषद द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा उपयोग की श्रेणी में अनुकरणीय प्रदर्शन पुरस्कार।

5) 2019 में ग्रीन मेंटर्स एजेंसी, अहमदाबाद द्वारा ग्रीन यूनिवर्सिटी पुरस्कार।

6) 2018 में गृह परिषद द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा उपयोग दृष्टिकोण की श्रेणी में अनुकरणीय प्रदर्शन पुरस्कार।

7) 2017 में GRIHA परिषद द्वारा इस परिसर की एकीकृत जल प्रबंधन प्रणाली के लिए अनुकरणीय प्रदर्शन पुरस्कार।

8) 2017 में गृह परिषद द्वारा निष्क्रिय वास्तुकला दृष्टिकोण की श्रेणी में अनुकरणीय प्रदर्शन पुरस्कार।

 # मान्यता

9) यूएसएआईडी ने 28 जनवरी 2022 को ऊर्जा दक्षता बाजार परिवर्तन पर अपने मैत्री कॉन्क्लेव के दौरान, भविष्य और उत्कृष्टता के लिए संदर्भ मॉडल के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय के नेट-शून्य परिसर में विचारों के पैलेट को मान्यता दी है और औपचारिक रूप से लॉन्च किया है।

10) ऊर्जा दक्षता और स्वच्छ ऊर्जा पर ब्रिक्स कार्यशाला

11) नेट ज़ीरो एंड सस्टेनेबल कैंपस में 2021 में एमजीएनसीआरई, डीओई, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा ग्रीन चैंपियन पुरस्कार शामिल है।

12) ऑनसाइट कैप्टिव सोलर फार्म 2019 के लिए एसईसीआई के माध्यम से एमएनआरई द्वारा वीजीएफ समर्थन, अधिकतम और पहला शैक्षणिक संस्थान।

नालंदा विश्वविद्यालय
31 मार्च 2024 के लिए तुलन पत्र

राशि रुपये में

निधि स्रोत	अनुसूची	वर्तमान वर्ष	विगत वर्ष
समग्र/ पूंजीगत निधि	1	15,33,52,64,493.00	13,57,32,90,709.00
निर्दिष्ट/उद्दिष्ट /धर्मदाय निधि	2	23,96,75,098.00	22,41,75,370.00
चालू देनदारी और प्रावधान	3	1,69,76,93,056.00	99,25,63,124.00
कुल		17,27,26,32,647.00	14,79,00,29,203.00

पूंजी उपयोग	अनुसूची	वर्तमान वर्ष	विगत वर्ष
अचल संपत्तियां	4		
मूर्त परिसंपत्तियां		4,38,52,73,066.00	4,05,69,49,019.00
अमूर्त परिसंपत्तियां		5,39,459.00	11,32,100.00
पूंजीगत कार्य प्रगति पर		10,60,64,45,038.00	9,27,08,72,402.00
उद्दिष्ट /धर्मदाय निधि का निवेश	5		
दीर्घावधि		23,75,25,875.00	22,23,18,765.00
लघु अवधि			
वर्तमान संपत्तियाँ	6	1,79,42,53,324.00	73,39,16,303.00
ऋण, अग्रिम और जमा	7	24,85,95,885.00	50,48,40,614.00
कुल		17,27,26,32,647.00	14,79,00,29,203.00

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां	21
आकस्मिक देयताएं और लेखों पर टिप्पणियाँ	22

वी. आर. श्रीनिवासन
वित्त अधिकारी

नालंदा विश्वविद्यालय

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय व्यय लेखा विवरण

Nālandā UNIVERSITY

राशि रुपये में

विवरण	अनुसूची	वर्तमान वर्ष	विगत वर्ष
(ए) आय			
शैक्षणिक प्राप्तियां	8	4,42,69,868.00	3,63,59,646.00
अनुदान/अनुवृत्ति	9	39,77,67,439.00	36,59,49,243.00
निवेश से आय	10	2,29,89,078.00	1,32,60,602.00
अर्जित ब्याज	11	1,32,54,274.00	37,68,447.00
अन्य आय	12	1,71,00,072.00	2,93,76,693.00
पूर्व अवधि आय	13	7,30,484.00	14,66,546.00
कुल (ए)		**49,61,11,215.00**	**45,01,81,177.00**
(बी) व्यय			
कर्मचारी भुगतान और लाभ (स्थापना व्यय)	14	16,54,02,317.00	14,24,98,340.00
शैक्षणिक व्यय	15	3,77,15,051.00	3,52,06,349.00
प्रशासनिक और सामान्य व्यय	16	17,02,05,285.00	16,56,70,047.00
परिवहन व्यय	17	45,87,446.00	1,06,11,361.00
मरम्मत और अनुरक्षण	18	37,87,534.00	51,06,641.00
मूल्यह्रास	4	23,44,33,754.00	20,43,11,637.00
अन्य व्यय	19	1,95,306.00	3,68,825.00
पूर्व अवधि व्यय	20	1,58,74,500.00	64,87,680.00
कुल (बी)		**63,22,01,193.00**	**57,02,60,880.00**
पूंजीगत निधि में हस्तान्तरित अधिशेष/ घाटा की राशि		**(13,60,89,978.00)**	**(12,00,79,703.00)**

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां 21

आकस्मिक देयताएं और लेखों पर टिप्पणियाँ 22

वी. आर. श्रीनिवासन
वित्त अधिकारी

नालंदा विश्वविद्यालय

31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्तियां और भुगतान की लेखा विवरण

प्राप्तियां	वर्तमान वर्ष (राशि रुपये में)	विगत वर्ष (राशि रुपये में)	भुगतान	वर्तमान वर्ष (राशि रुपये में)	विगत वर्ष (राशि रुपये में)
1) प्रारंभिक शेष			**1)व्यय**		
रोकड़ शेष		-	**स्थापना व्यय**		
<u>बैंक में रोकड़</u>		-	वेतन और भत्ते	16,16,14,494.00	14,19,24,059.00
धर्मदाय निधि से निवेश	22,23,18,765.00	21,03,40,177.00	**शैक्षणिक व्यय**	3,82,15,025.00	3,74,42,895.00
बचत खाता	35,55,60,521.00	33,99,66,114.00	**प्रशासनिक व्यय**		-
जमा खाता	36,78,73,521.00	19,88,39,414.00	आधारभूत संरचना	7,69,07,185.00	11,96,77,840.00
2) प्राप्त अनुदान		-	संचार	1,22,33,924.00	65,20,195.00
भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से	3,00,00,00,000.00	2,90,00,00,000.00	अन्य	9,66,96,846.00	3,50,45,632.00
3)उद्दिष्ट/ धर्मदाय निधि से प्राप्त		-	वित्तीय लागत	2,19,871.00	1,19,263.00
4) प्रायोजित परियोजना के विरुद्ध प्राप्ति		-	**परिवहन खर्च**	48,85,832.00	1,25,86,182.00
छात्रवृत्ति-प्रोजेक्ट नेली	8,60,507.00		**मरम्मत एवं रखरखाव**	39,00,193.00	1,08,79,599.00
छात्रवृत्ति-प्रोफेसर सुनैना सिंह	1,75,000.00		**2) अचल संपत्तियों और पूंजीगत कार्य प्रगति पर व्यय**		-
5) प्राप्त ब्याज		-	अचल संपत्तियों की खरीद	15,59,74,383.00	16,98,55,179.00
सावधि जमा/बचत खाते पर ब्याज (अनुदान)	2,21,64,578.00	1,72,56,761.00	पूंजीगत कार्य प्रगति	1,81,83,15,727.00	2,07,94,63,004.00
अग्रिम पर ब्याज	1,62,16,894.00	1,51,93,559.00	**3) उद्दिष्ट/ धर्मदाय निधि के तहत भुगतान**		
6) आसियान से छात्रवृति के लिए प्राप्ति	-	9,46,17,485.00	**4) प्रायोजित परियोजनाओं से भुगतान**		-
7)शैक्षणिक प्राप्तियाँ	3,20,45,223.00	4,06,90,674.00	**5) विदेश मंत्रालय को ब्याज का भुगतान**	2,88,91,221.00	91,41,674.00
8) निवेश से आय		-	**6) जमा और अग्रिम**		-
उद्दिष्ट / धर्मदाय निधि से (शुद्ध)	1,52,91,110.00	1,19,78,588.00	सुरक्षा जमा की वापसी	-	8,50,00,000.00
अन्य निवेश	3,90,19,867.00	1,26,67,322.00	रोकी गई राशि जारी करना	7,43,12,027.00	4,83,49,648.00
9) अन्य आय	12,15,993.00	1,17,08,851.00	ठेकेदार को अग्रिम	15,11,13,924.00	40,70,86,013.00
10) अन्य प्राप्तियाँ			कर्मचारी को अग्रिम	53,932.00	9,22,369.00
प्रतिभूति जमा	5,33,40,169.00	5,57,42,519.00	ईएमडी जारी करना	30,00,000.00	26,00,000.00
ईएमडी	1,35,000.00	42,84,064.00	**7) छात्रवृत्ति के तहत छात्रों को वजीफा और यात्रा व्यय का भुगतान**	1,63,79,843.00	1,33,36,109.00
पूर्व अवधि आय			**8) सांविधिक करों का भुगतान**	12,24,32,306.00	12,64,75,409.00
अवधान रुपया (शुद्ध)	9,56,596.00	6,92,665.00	**9) वैच 2020-22 और 2021-23 के लिए आसियान फंड का अव्ययित शेष वापस किया गया**	1,39,80,529.00	
कर्मचारी से अग्रिम (वसूली)	17,377.00	2,99,035.00	**10) डीएसटी परियोजना (योग का दीर्घकालिक प्रभाव) का अव्ययित शेष वापस किया गया**	21,63,602.00	
व्यवहार्यता अंतर निधि की प्राप्ति		1,74,88,888.00	**11) ऐ आई एन यू फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम - यात्रा और अन्य खर्चों की प्रतिपूर्ति**	4,09,936.00	
टीडीएस रिफंड प्राप्त हुआ	25,130.00		**12) अवधान राशि की वापसी**	9,78,358.00	
आईसीसीआर- वैशाली महोत्सव	2,62,768.00		**13) छात्र शुल्क वापसी**	4,17,996.00	
सी-20 (नालंदा विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित)	1,34,505.00				
बुद्ध पर सामुदायिक सहभागिता	50,000.00				
लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (भारतीय भाषा समिति) -(शुद्ध)	2,82,299.00				
देशकाल सोसायटी	1,16,360.00		**14) समापन शेष**		-
अनुसंधान एवं सूचना प्रणाली	4,78,944.00		हाथ में रोकड़		-
आईसीपीआर - राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला	35,000.00		**<u>बैंक में रोकड़</u>**		
11) ठेकेदार को अग्रिम (वसूली)	38,97,81,344.00	17,36,83,841.00	धर्मदाय निधि से निवेश	23,75,25,874.00	22,23,18,765.00
ठेकेदारों से अन्य कटौती	17,49,17,633.00	2,40,52,542.00	बचत खाता	85,39,29,005.00	35,55,60,521.00
12) सांविधिक करों की वसूली	10,34,87,563.00	12,26,75,378.00	जमा खाता	92,22,10,634.00	36,78,73,521.00
कुल	**4,79,67,62,667.00**	**4,25,21,77,877.00**	**कुल**	**4,79,67,62,667.00**	**4,25,21,77,877.00**

-

-

वी. आर. श्रीनिवासन

वित्त अधिकारी

<u>उभरता हुआ नालंदा: मीडिया कवरेज</u>

11 देशों के छात्रों और संकाय सहित नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर के एक प्रतिनिधिमंडल ने 21 फरवरी, 2024 को संसद भवन, नई दिल्ली में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ से मुलाकात की।

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने बिहार के राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय परिसर का दौरा किया और इसकी ऐतिहासिक विरासत पर जोर दिया, छात्रों से भारत के सभ्यतागत मूल्यों को बनाए रखते हुए शांति, प्रगति और स्थिरता का समर्थन करने का आग्रह किया।

नालंदा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री अरविंद पनगढ़िया ने 28 फरवरी, 2024 को विश्वविद्यालय परिसर में एक अत्याधुनिक चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन किया, जो विश्वविद्यालय के चल रहे पुनर्निर्माण प्रयासों में एक महत्वपूर्ण प्रगति है। उन्होंने एक समावेशी वातावरण को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया जो विश्वविद्यालय समुदाय की विविध आवश्यकताओं को संबोधित करता है, समग्र विकास और कल्याण के लिए नालंदा की प्रतिबद्धता को मजबूत करता है।

कुलाधिपति प्रो. अरविंद पनगढ़िया और अंतरिम कुलपति प्रो. अभय कुमार सिंह ने 28 फरवरी, 2024 को ऐतिहासिक नालंदा खंडहर विरासत स्थल का दौरा किया। वे अपने समर्पण की पुष्टि करते हुए, नालंदा विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण में प्रयासों को अधिकतम करने के लिए रणनीतियों की खोज करते हुए ज्ञान और ज्ञान के दोहन पर चर्चा में शामिल हुए। सीखने और उत्कृष्टता के वैश्विक केंद्र के रूप में अपनी विरासत को बहाल करना।

Nalanda University and Synergia Foundation join hands for a Key Global Conference

Nalanda University, Rajgir and Synergia Foundation, Bengaluru based independent think-tank, have joined hands for a two-day global conference on 13-14th September 2024 at the net-zero Nalanda campus in Rajgir. This event will bring together policymakers, thought leaders and subject matter experts, from the BIMSTEC nations, for a series of high-level consultations aimed at fostering multifaceted cooperation among Southeast Asian countries. With a focus on how regional interconnectedness can drive sustainable development, discussions will also delve into the key role that Nalanda University, as a Centre of Educational Excellence, can play in enhancing regional cooperation and peace. On 13th September, Nalanda University warmly welcomed the visitors to its campus. As per the Conference Coordinator, Dr. Rajeev Ranjan Chaturvedy, " Throughout the conference, visitors and participants will engage in high-level dialogues, while also immersing themselves in Nalanda's rich historical legacy with a visit to the UNESCO World Heritage site, the incredible Nalanda Ruins. Our students will benefit from this wonderful opportunity to gain firsthand insights among BIMSTEC member nations functioning and understanding of key strategic issues." He also mentioned, "This conference will culminate on 14th September with keynote addresses by the Nalanda University Vice Chancellor and Synergia Foundation President, alongside prominent representatives from BIMSTEC nations. These sessions will be followed by engaging panel discussions designed to generate actionable insights for the region's future. A keynote address by Ambassador Pankaj Saran, Member, National Security Advisory Board, Govt of India, shall be a highlight of the day. Nalanda University is committed to playing a proactive role as a key facilitator in bringing together future leaders from Southeast Asia to promote regional peace and enhance understanding of critical issues affecting the region."

पार-अंतर्राष्ट्रीय खतरों से निपटने को ले सहयोगात्मक ढांचे की आवश्यकता पर दिया जोर : राजदूत सरन

राजगीर (एसएनबी)। नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर और सायनर्जिया फाउंडेशन, बेंगलुरु ने 13-14 सितम्बर 2024 को नालंदा विश्वविद्यालय के परिसर में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का उद्देश्य साझा समृद्धि और सुरक्षा के भविष्य की खोज करना था। इसमें भारत, नेपाल, श्रीलंका, थाईलैंड, सिंगापुर, और ताइवान के विशेषज्ञ, विचारक और गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। सम्मेलन की शुरुआत भारत सरकार के राष्ट्रीय सुरक्षा परामर्श बोर्ड के सदस्य, राजदूत पंकज सरन के उद्घाटन भाषण से हुई।

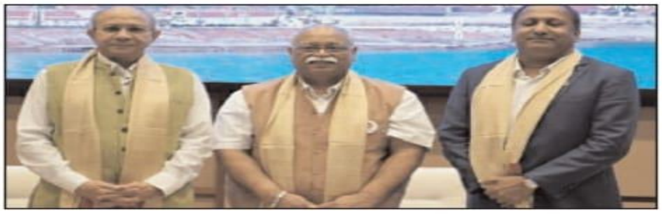

सम्मेलन में भाग लेते राजदूत।

राजदूत सरन ने बिम्सटेक देशों की जटिल सुरक्षा परिस्थितियों पर प्रकाश डाला। आतंकवाद, साइबर हमलों और क्षेत्रीय अस्थिरता जैसे पार-अंतर्राष्ट्रीय खतरों से निपटने के लिए सहयोगात्मक ढांचे की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने क्षेत्रीय नेताओं से सक्रिय .ष्टिकोण अपनाने की अपील की। जिसमें शांति, स्थिरता और विकास के प्रति साझा प्रतिबद्धता हो। नालंदा विश्वविद्यालय के अंतरिम कुलपति, प्रो. अभय कुमार सिंह ने विशेष उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने वसुधैव कुटुम्बकम (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) की प्राचीन अवधारणा का उल्लेख करते हुए बिम्सटेक देशों की आपसी जुड़ाव की बात की। प्रो. सिंह ने भविष्य के सहयोग के लिए तीन प्रमुख क्षेत्रों पर जोर दिया। सांस्.तिक और शैक्षिक पहलों की भूमिका, धर्म (नैतिक आचरण) की महत्वपूर्णता और प्र.ति के साथ सतत जीवन जीने की आवश्यकता। उन्होंने कहा कि शांति थोपी नहीं जा सकती, बल्कि इसे आशा, सुरक्षा और समझ के माध्यम से उत्पन्न करना होता है। अंतरविषयक अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से कहा नालंदा क्षेत्र की महत्वपूर्ण चुनौतियों के लिए व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करने के लिए विशेष रूप से सक्षम है। सायनर्जिया फाउंडेशन के अध्यक्ष टॉबी साइमन ने क्षेत्रीय सहयोग पर अमूल्य .ष्टिकोण साझा किया और सामान्य चुनौतियों के समाधान के लिए रणनीतिक सिफारिशें प्रदान कीं।

नालंदा विश्वविद्यालय में दो दिवसीय डाक टिकट प्रदर्शनी 'नालंदापेक्स' का भव्य शुभारंभ

■ **सहारा न्यूज ब्यूरो**

राजगीर।

नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर में आज दो दिवसीय जिला स्तरीय डाक टिकट प्रदर्शनी नालंदा पेक्स का उद्घाटन हुआ। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन बिहार के ग्रामीण विकास और संसदीय कार्य मंत्री श्रवण कुमार द्वारा किया गया, जिसमें सांसद कौशलेंद्र कुमार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का आयोजन डाक विभाग, नालंदा डिवीजन द्वारा किया गया। इस अवसर पर नालंदा विश्वविद्यालय पर एक विशेष कवर भी जारी किया गया। इस कार्यक्रम में सम्मानित अतिथियों में विधायक कौशल किशोर, बिहार के मुख्य डाक महाप्रबंधक अनिल कुमार,

डाक टिकट प्रदर्शित कर मंच से कार्यक्रम की शुभारंभ करते मुख्य अतिथि व अन्य।

नालंदा विश्वविद्यालय के अंतरिम कुलपति प्रोफेसर अभय कुमार सिंह, आयुध फैक्ट्री के महानिदेशक अनिल कुमार गुप्ता, और नालंदा विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार श्री रमेश प्रताप सिंह परिहार भी उपस्थित थे। प्रदर्शनी के पहले दिन जिले के विभिन्न स्कूलों के लगभग 900 छात्रों ने पत्र लेखन, चित्रकला, प्रश्नोत्तरी, डाक टिकट डिजाइनिंग और सांस्कृतिक प्रदर्शन जैसी प्रतियोगिताओं में भाग लिया, जिसका आयोजन डाक विभाग द्वारा किया गया था।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री श्रवण कुमार ने कहा, फिलेटली केवल एक शौक नहीं है, बल्कि हमारे देश की विरासत से जुड़ने का एक माध्यम है। यह प्रदर्शनी युवा छात्रों में जिज्ञासा और सीखने की भावना को प्रज्वलित करेगी और उन्हें भारत के समृद्ध इतिहास की गहरी समझ प्रदान करेगी। नालंदा विश्वविद्यालय के अंतरिम कुलपति प्रोफेसर अभय कुमार सिंह ने कहा, "सांस्.तिक धरोहर और शैक्षिक गतिविधियों को बढ़ावा देने से हमारी युवा पीढ़ी रचनात्मक और बौद्धिक खोजों में रुचि लेती है, और फिलेटली जिज्ञासा को बनाए रखने में योगदान करती है। यह प्रदर्शनी गुरुवार, 19 सितंबर तक जारी रहेगी, जिसमें और भी गतिविधियाँ और दुर्लभ व पुराने डाक टिकटों की खोज की जाएगी।

दैनिक भास्कर बिहारशरीफ भास्कर पटना, शनिवार, 16 सितंबर, 2023

नालंदा विश्वविद्यालय में दो दिवसीय वैशाली फेस्टिवल ऑफ डेमोक्रेसी शुरू, प्रधानमंत्री का संदेश सुनाया गया

बिहारी संस्कृति- परंपराओं की खास पहचान युवा सभ्यता को नहीं भूलें : रामनाथ कोविंद

प्रमोद कुमार | राजगीर

नालंदा विश्वविद्यालय में शुक्रवार से दो दिवसीय वैशाली फेस्टिवल ऑफ डेमोक्रेसी शुरू हो गया। सेमिनार का उद्घाटन पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद, राज्यपाल राजेन्द्र आर्लेकर, असम के मुख्यमंत्री हेमंत विस्बा सरमा, राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर, केन्द्रीय संस्कृति राज्यमंत्री मीनाक्षी लेखी, आसीसीसीआर के अध्यक्ष विनय सहस्त्रबुद्धे ने दीप प्रज्जवलित कर किया। कार्यक्रम में नेपाल, श्रीलंका, चिली और मिश्र के राजदूत शामिल हुए। इस अवसर पर लेखिका प्रियदर्शी दत्ता की पुस्तक इंडिया : द मेनस्प्रीन ऑफ डेमोक्रेटिक ट्रेडिशंस का विमोचन किया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संदेश को भी सुनाया गया। इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि बिहारी संस्कृति और परंपराओं की एक पहचान रही है। खासकर युवाओं को अपनी संस्कृति और सभ्यताओं को नहीं भूलना चाहिए। बिहार में काफी पौराणिक और ऐतिहासिक स्थल रहे हैं। यह भगवान बुद्ध और महावीर से जुड़ी पावन भूमि रही है। उन्होंने कहा कि हर विवाद का निपटारा शांति से ही किया जा सकता है। बिहार के राज्यपाल के रूप में भी हमने काफी दिनों तक काम किया। राज्यपाल रहते राजगीर और नालंदा आकर यहां की ऐतिहासिक और पौराणिक स्थलों को देखा। यहां कई ऐसे अवशेष पड़े हुए हैं जो हमारे प्राचीन इतिहास को बताते हैं।

प्रियदर्शी दत्ता की पुस्तक इंडिया : द मेनस्प्रीन ऑफ डेमोक्रेटिक ट्रेडिशंस का विमोचन

कार्यक्रम में पुस्तक विमोचन के दौरान मौजूद अतिथि।

असम के सीएम बोले : बिहार, असम और पश्चिम बंगाल में एनआरसी लागू हो

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि बंगलादेश के लगी बिहार की सीमाओं में रोहिंगिया मुसलमानों का बस जाना बहुत बड़ी समस्या है। बिहार, असम और पश्चिम बंगाल में ये आकर बस गये हैं। इन तीनों राज्यों में एनआरसी लागू होनी चाहिए। नीतीश कुमार और लालू यादव के संबंधों को लेकर उन्होंने कहा कि अब दोनों के बीच में रिश्ते सहज नहीं है विपक्षी दलों का नया गठबंधन सनातन को खत्म कर देने के एजेंडे पर काम कर रहा है। सनातन को कोई समाप्त करने की बात कह रहा है तो कोई एड्स और वायरस बता रहा है। ऐसा जो लोग बोल रहे हैं उन्हें समझना होगा कि सनातन पुरातन और सत्य है। सनातन और हिन्दुओं के खिलाफ यह गठबंधन बना है। इंडिया गठबंधन की भोपाल में होने वाली पहली रैली को लेकर उन्होंने कहा कि रैली तो होगी। रैली करने में कोई परेशानी नहीं है। जाइए भोपाल की खूबसूरती को देखिए लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ही होंगे।

बिहार से जुड़ने पर हमें गर्व

राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि बिहार लोकतंत्र की जननी है। आज के दिन कार्यक्रम होना बड़ी बात है। बिहार से जुड़ने पर मुझे गर्व है। भारत लोकतंत्र की जननी है। यह पहले लोगों ने सोचा नहीं। अब हालात बदल रहे हैं। हमे गर्व होना चाहिए। केन्द्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने कहा कि भारत का लोकतंत्र आज नहीं आया। प्राचीन काल में भी राजा मंत्रिमंडल व लोगों की राय से चुने जाते थे। आईसीसीआर के अध्यक्ष विनय सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि भारत जनतांत्रिक परंपराओं की जन्मस्थली और गंगोत्री है। इसी को लेकर यह आयोजन किया गया है। इस अवसर पर कुलपति प्रो. अभय कुमार सिंह, पूर्व कुलपति प्रो. सुनैना सिंह, जेएनयू के कुलपति शांतिश्री धुलिपुड़ी पंडित उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन नीति आयोग के एडिशनल डायरेक्टर डा. आनंद शेखर द्वारा किया गया।

बिहार का नं. 1 अखबार

हिन्दुस्तान

भरोसा नए हिन्दुस्तान का

भारत का लोकतंत्र दुनिया में सबसे मजबूत : कोविंद

राजगृह (नालंदा), निज प्रतिनिधि। प्राचीन गणतंत्र का इतिहास हो या वर्तमान की शासन व्यवस्था, भारत का लोकतंत्र पूरे विश्व में सबसे मजबूत है। क्योंकि, इस देश का लोकतंत्र यहां के आम नागरिकों द्वारा बनाया गया है। ये बातें नालंदा विश्वविद्यालय में दो दिवसीय वैशाली फेस्टिवल ऑफ डेमोक्रेसी कार्यक्रम में शुक्रवार को पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहीं।

■ अंतरराष्ट्रीय नालंदा विवि के कार्यक्रम में शामिल हुए

उन्होंने कहा कि भारत लोकतंत्र की जननी है। बिहार की वैशाली विश्व का पहला लोकतंत्र है। ऋग्वेद, अथर्ववेद, रामायण, महाभारत सहित भारत के विभिन्न ग्रंथों और वर्तमान सामाजिक व्यवस्था ने देश को मजबूत लोकतंत्र दिया है। अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस पर बिहार के हृदय नालंदा आकर मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं कि बिहार के राज्यपाल व भारत के राष्ट्रपति के रूप में इस बिहार, नालंदा और राजगीर को हमें विशेष रूप से जानने और समझने का मौका मिला। भारत में सदियों से गणतंत्र है। यहां भगवान बुद्ध ने बुद्धं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामी का ज्ञान दिया था। इसमें भी गणतंत्र परिलक्षित होता है। देखें P04

शुक्रवार को नालंदा विश्वविद्यालय में फेस्टिवल ऑफ डेमोक्रेसी कार्यक्रम का दीप जलाकर उद्घाटन करते पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद। साथ में हैं राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर, केन्द्रीय राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी, असम के मुख्यमंत्री हेमंत विश्व शर्मा व अन्य। • हिन्दुस्तान

संबोधित करते पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद। • हिन्दुस्तान

5 हजार साल पुराना है अपना लोकतंत्र : राज्यपाल

- भारतीय लोकतंत्र पूरे विश्व के लोकतंत्र से है सबसे ज्यादा खूबसूरत है : विस्वा शर्मा
- लोकतंत्र की प्राचीन धरती वैशाली और नालंदा का हर कण ज्ञान का पर्याय
- यह गौरवशाली वैशाली की धरती है और जिसपर हमें हैं गौरव

1948 से प्रारंभ हुआ वैशाली महोत्सव का आयोजन

40 ऋग्वेद में तो अथर्ववेद में नौ बार गणतंत्र शब्द का हुआ है प्रयोग : मीनाक्षी लेखी

राजगृह,निज संवाददाता। राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि विश्व का प्राचीन लोकतंत्र भारत है और लोकतंत्र की जननी बिहार है। बिहार में वैशाली विश्व की सबसे प्राचीन लोकतांत्रिक व्यवस्था है। इसको देश-दुनिया और खासकर सभी भारतीयों को इसकी तह तक जाकर समझने की जरूरत है। लोकतंत्र की प्राचीन धरती वैशाली, प्राचीन मगध, राजगृह व नालंदा का हर कण ज्ञान का पर्याय है। इसे जानकर हम सभी को गौरव महसूस होता है।

नालंदा विश्वविद्यालय में शुक्रवार को आयोजित दो दिवसीय वैशाली फेस्टिवल ऑफ डेमोक्रेसी कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि बिहार के अंदर ही कितना सब कुछ है कि इसकी प्रकृति व विचार पर देशभर में चर्चा की जानी चाहिए। यह हमारी जड़ है, जहां से जनतंत्र शुरू हुआ। यह गौरवशाली वैशाली की धरती है। लोकतंत्र की धरती वैशाली पर वैशाली महोत्सव का आयोजन 1948 से प्रारंभ हुआ। लेकिन, हमारा लोकतंत्र 5000 साल से भी कहीं ज्यादा साल पुराना है। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर, केन्द्रीय राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी, असम के मुख्यमंत्री हेमंत विश्व शर्मा व अन्य ने दीप जलाकर शुभारंभ को किया।

कई उतार-चढ़ाव देखे हैं : राज्यपाल श्री आर्लेकर ने कहा कि प्राचीन भारत से लेकर विभिन्न युगों और वर्तमान शासन व्यवस्था में इस देश ने बहुत कुछ देखा है। विभिन्न परिस्थितियों के कारण ही हमारे देश का लोकतंत्र समय के साथ मजबूत और सशक्त होता गया है। राज्यपाल ने कहा कि वैशाली का लोकतंत्र देश के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित होना चाहिए। ताकि, नई पीढ़ी लोकतंत्र को जान व समझ सके। पुरानी परंपरा व संस्कृति के हम वाहक हैं।

फेस्टिवल ऑफ डेमोक्रेसी कार्यक्रम में पुस्तक का विमोचन करते पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी, राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ अर्लेकर, असम के मुख्यमंत्री हेमंत विश्व शर्मा व अन्य • हिन्दुस्तान

फेस्टिवल ऑफ डेमोक्रेसी कार्यक्रम में शामिल विभिन्न देशों के छात्र व आगंतुक लोग।

इमरजेंसी लोकतंत्र पर काला धब्बा : शर्मा

असम के मुख्यमंत्री हेमंत विस्वा शर्मा ने कहा कि भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और नालंदा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के लिए मैं आभार व्यक्त करता हू। नालंदा ज्ञान की प्राचीन धरती है। भारतीय लोकतंत्र पूरे विश्व के लोकतंत्र से सबसे ज्यादा खूबसूरत है।

लोकतंत्र की कई अच्छी तस्वीरें देखने को मिली हैं : मीनाक्षी लेखी

संस्कृति व विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने कहा कि भारतीय इतिहास में लोकतंत्र की कई अच्छी तस्वीरें देखने को मिली हैं। भारतीय व्यवस्था में वेदों, गणतंत्र और कई कालखंडों ने समय-समय पर भारतीय लोकतंत्र की व्यवस्था को कई रूपों में परिभाषित किया है। समय के साथ भारतीय लोकतंत्र काफी सशक्त होता जा रहा है, जिसे पूरी दुनिया महसूस भी कर रही है। भारत मंडपम् में आयोजित जी-20 सम्मेलन में कई देशों ने भारत की प्रशंसा की। लोकतंत्र के मूल्यों की रक्षा करना राष्ट्र के लिए सर्वोपरि कार्य है। रामायण, महाभारत, बुद्धिज्म सहित अनेक ग्रंथों के विचार और चित्रण प्राचीन गणतंत्र से लेकर वर्तमान शासन व्यवस्था तक लोकतंत्र के सशक्त होने की तस्वीर दिखाते हैं। सभी राज्यों में समन्वय स्थापित कर राष्ट्र को मजबूत करने की दिशा में किया जा रहा।

कार्यक्रम में इन्होने भी अपने-अपने विचार रखे

कार्यक्रम में इजिप्ट के राजदूत वाएल मोहम्मद, चिली के राजदूत जुआन रेनाल्डो, नेपाल के राजदूत शंकर प्रसाद शर्मा, अर्जेंटीना के राजदूत ह्यूगो जेवियर गोब्बी, श्रीलंका के उच्चायुक्त अशोक मिलिंद, जेएनयू के कुलपति डॉ. शांति श्री पंडित, नालंदा विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति डॉ. सुनैना सिंह, रांची नगर निगम की पूर्व मेयर आशा लकड़ा, नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति अभय कुमार सिंह, नीति आयोग के अतिरिक्त मिशन निदेशक आनंद शेखर, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष विनय सहस्र बुद्ध, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के महानिदेशक कुमार तुहिन ने भी अपने-अपने विचार रखे।

ज्ञान की धरती नालंदा आकर गौरवान्वित हूं: हेमंत विस्व शर्मा

नालंदा, निज संवाददाता। ज्ञान की धरती नालंदा आकर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। दुनिया के सबसे अच्छे विश्व धरोहर पहली बार आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

इसका इतिहास, वास्तुकला तथा सुंदरता देखकर काफी खुश हूं। ये बातें प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के भग्नावशेष के भ्रमण के बाद आसाम के मुख्यमंत्री हेमंत विस्व शर्मा ने कहीं। उनके साथ राज्यसभा सांसद पवित्र मार्गेरिटा भी थे। उन्होंने कहा कि उन्हें गर्व है कि उन्होंने ऐसे देश में जन्म लिया है जहां नालंदा जैसा विश्वविद्यालय था। मुझे गुस्सा भी आता है कि ज्ञान के इस मंदिर को कोई कैसे विध्वंस कर सकता है। यह ज्ञान प्रज्ञा का केंद्र था। आज इस हेरिटेज पर अभिमान भी है। लेकिन, कुछ राजनीतिक पार्टियां सनातन धर्म के विरोध में बोल रही हैं। सनातन का सीधा संबंध ब्रह्म से है। हम ये नहीं कहेंगे कि एक मुख्यमंत्री के बेटे ने सनातन धर्म के बारे में कहा। क्योंकि, कांग्रेस पार्टी इसे समाप्त करना चाहती है। सनातन से परम आत्मा का सार जुड़ा है।

नालंदा खंडहर का शुक्रवार को अवलोकन करते असम के मुख्यमंत्री हेमंत विश्व शर्मा।

दैनिक भास्कर

बौद्ध धर्म एवं विश्व शांति विषय पर कॉन्फ्रेंस में प्रतिनिधि एवं विद्वानों ने पढ़ा शोध पत्र

कई देश युद्ध में फंसे हैं, बुद्ध के विचारों को अपनाकर शांति चुनें

सिटी रिपोर्टर | राजगीर

सोसाइटी फॉर द एंपावरमेंट द्वारा नालंदा यूनिवर्सिटी में बौद्ध धर्म एवं विश्व शांति विषय पर आयोजित दो दिवसीय इंटरनेशनल कांफ्रेंस शनिवार को सम्पन्न हो गया। कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए सोसाइटी फॉर एंम्पावरमेंट के अध्यक्ष प्रो. सचिन्द्र नारायण ने कहा कि दुनिया के कई देश युद्ध में फंसे हुए हैं। दुनिया ...ों पर काफी प्रभाव पड़ रहा है। ... वाले युवा पीढ़ी पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा। ऐसे में भगवान बुद्ध के विचारों को अपनाकर शांति के मार्ग को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान विश्व युद्ध, संघर्ष, पलायन, महामारी एवं पर्यावरण संकट जैसी अनगिनत समस्याओं का सामना कर रहा है। खुद को शक्तिशाली बनाने के लिए हमने प्रकृति को वश में किया। अपने विचित्र उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हम जीवन की पुनर्रचना कर रहे हैं। लेकिन क्या हम अब भी खुद को जान पाए हैं या हमारे आविष्कार हमें अप्रासंगिक बना देंगे। उन्होंने कहा कि लंबे उपनिवेश वादी दौर से मुक्त हुई दुनिया के समक्ष आज भी साम्राज्यवाद, बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद की गंभीर चुनौती है, जिसने गहरे असंतोष को जन्म दिया है।

शांति की चाह में हम दर-दर भटकने को विवश

डा. हरे कृष्णा तिवारी ने कहा कि आज समाज में किसी चीज को सबसे बड़ी आवश्यकता है तो वह शांति। शांति की चाह में हम दर-दर भटकने को विवश हैं। पूरा समाज, ईर्ष्या, लोभ, मोह, घृणा के कारण त्राहि-त्राहि कर रहा है। हिंसा, दुष्कर्म, लूट, हत्या, आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि घटनाओं से हम तंग आ चुके हैं। लोग एक दूसरे को नीचा दिखाने को आतुर है। विभिन्न राष्ट्रों के बीच तनाव एवं प्रतिस्पर्धा है। उन्होंने कहा कि वैश्विक शांति स्थापित करने में भारत सदैव अग्रणी देशों में शामिल रहा है। भारत अनेक धर्मों की जन्मस्थली है। इन धर्मों ने दुनिया भर में शांति एवं मानवता का संदेश दिया। वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा हिंदू धर्म की प्रभु प्रमुख विशेषता रही है।

कार्यक्रम में ये थे शामिल

इस अवसर पर स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज नालंदा यूनिवर्सिटी के डीन प्रोफेसर जी मिश्रा, डा. केके पांडे, डा. एसपी सिन्हा, डा. अरुण यादव, डा. सुजीत रंजन, डा. चंद्रकांत, प्रो. शैलेंद्र सिन्हा, प्रो. आरएन श्रीवास्तव, डा. राजेश्वर मुखर्जी, डा. अनुराग शर्मा, डा. मुकेश कुमार वर्मा, डा. अजीत सक्सेना, डा. एके पांडे, डा. सुष्मिता, प्रो. एसएम पटनायक आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

बुद्ध की शिक्षा हमेशा प्रासंगिक

प्रो. श्रीकांत सिंह ने कहा कि भगवान बुद्ध की शिक्षा मानव समाज के लिए सदैव प्रासंगिक रहेगी। बुद्ध का करूणामय प्रेम का संदेश सदियों से लोगों व समुदायों का पथ-प्रदर्शन करता आया है। शांति, प्रेम व बंधुत्व का उनका संदेश, आज भी उतना ही अहम है, जितना शताब्दियों पहले था। बुद्ध की शिक्षाओं पर चलकर वैश्विक, शांति व बंधुत्व संभव है। उन्होंने कहा कि ग्लोबलाइजेशन के युग में कोई एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकता है। ऐसे में दया, प्रेम व शांति का बुद्ध का संदेश अधिक अहम हो जाता है। उन्होंने कहा कि मानव सभ्यता पर बौद्ध धर्म का बहुत गहरा प्रभाव रहा है। दुनिया को बेहतर बनाने के लिए बुद्ध के सत्य, शांति व बंधुत्व की शिक्षाओं को पूरी दुनिया में पहुंचाना होगा। भगवान बुद्ध की शिक्षाएं समय की कसौटी उतरी है। पहले की अपेक्षा ज्यादा प्रासंगिक हुई है।

प्रभात खबर

पटना, सोमवार
06.11.2023 | 03

कैडेटों ने किया नालंदा विवि व गंगा जल जलाशय का भ्रमण

राजगीर . ऑल इंडिया ट्रैकिंग कैंप के छठे दिन कैडेटों द्वारा अंतरराष्ट्रीय नालंदा विश्वविद्यालय और गंगा जल उद्वह जलाशय का भ्रमण किया और यादों को कैमरे में कैद किया. विभिन्न राज्यों से आये कैडेट दो दलों में बांटकर अलग अलग जगहों का भ्रमण कर उसके इतिहास को समझा. ग्रुप वन की टीम में उड़ीसा, जम्मू एवं कश्मीर व लद्दाख अलावा बिहार एवं झारखंड निदेशालय के कैडेट शामिल थे. उनके द्वारा गंगाजल उद्वह जलाशय और प्लांट का भ्रमण कर करीब से देखा गया. पूर्वोत्तर राज्यों पश्चिम बंगाल और सिक्किम निदेशालय के कैडेटों द्वारा अंतरराष्ट्रीय नालंदा विश्वविद्यालय की वास्तुकला को देखा. गंगाजल डैम भ्रमण में खुद कैम्प कमांडेंट सह 38 बिहार बटालियन के समादेशी पदाधिकारी कर्नल राजेश बहरी शामिल रहे. इस कैम्प में अलग-अलग राज्यों से 510 कैडेट्स आये हुए हैं। सभी कैडेट्स प्रशिक्षित फिजिकल इंस्ट्रक्टर तथा एसोसिएट एनसीसी पदाधिकारी की देखरेख में ट्रैकिंग कर रहे हैं. ट्रैकिंग कार्यक्रम समाप्त होने के बाद अंतर निदेशालय प्रतियोगिता आरंभ हो गया है. इस कड़ी में क्विज, पेंटिंग, टग ऑफ वॉर, बॉलीबॉल आदि प्रतियोगिता आयोजित होगी। प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागी को सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद पुरस्कृत किया जाएगा. सोमवार को सांस्कृतिक कार्यक्रम संध्या में आयोजित की जायेगी। समापन समारोह के मुख्य अतिथि गया के ग्रुप कमांडर ब्रिगेडियर नीतीश बिष्ट होंगे. ट्रैकिंग कैम्प में कैम्प कमांडेंट कर्नल राजेश बाहरी, डिप्टी कैम्प कमांडेंट लेफ्टिनेंट कर्नल ए पी सिंह, एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल जे पी क्षेत्री, राकेश पांडेय, अरुण कुमार पांडेय, आर एन चौधरी , रुद्र प्रसाद नन्दा , धीरेंद्र साहू , सुरेंद्र कुमार, सुबेदार मेजर सिकुर सेबिया , रूपेश गुरुंग, बी के शुक्ला, डी बी राणा, शंकर जादभ, सतेंद्र सिंह एवं अन्य शामिल हैं.

आज

पटना
शनिवार, २५ नवम्बर, २०२३ | २

नालंदा विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर

पद्मश्री गीता चंद्रन ने भारतनाट्यम की दी प्रस्तुति

प्राचीन भारतीय का गौरवशाली केंद्र नालंदा फिर से भव्य रूप में है सामने : कुलपति

बिहारशरीफ। नालंदा विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस की पूर्व संध्या के अवसर पर विश्वविद्यालय के स्पिक मैके चैप्टर द्वारा पद्मश्री एवं संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित विख्यात नृत्यांगना श्रीमती गीता चंद्रन एवं उनके सहयोगी कलाक. ारों द्वारा भरतनाट्यम नृत्य का आयोजन हुआ। यह कार्यक्रम शुक्रवार को नालंदा विश्वविद्यालय के सुषमा स्वराज सभागार में सम्पन्न हुआ। अपने कार्यक्रम की शुरुआत में उन्होंने पुष्पांज. लि से की जिसमें उन्होंने नृत्य कि भावात्मक लय को प्रस्तुत किया। उसके बाद वर्णम के सहारे नालंदा के विद्यार्थियों को शास्त्रीय नृत्य की बारीकियों से परिचित कराया। कार्यक्रम का समापन वंदे मातरम की भावपूर्ण प्रस्तुति से हुआ।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. अभय कुमार सिंह ने कहा, "प्राचीन भारतीय का गौरवशाली केंद्र नालंदा, जो केवल हमारी स्मृति में मौजूद था, आज अपनी भव्यता के साथ भव्य रूप से प्रकट हो रहा है और हमारा सौभाग्य है कि इस ऐतिहासिक घटना में गौरवान्वित भागीदार हैं।

"कार्यक्रम के महत्त्व को रेखांकित करते हुए प्रो. सिंह ने कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और कलात्मक रचनात्मकता जैसे सभी पहलुओं में अपने छात्रों के समग्र विकास की दिशा में प्रगति के लिए प्रतिबद्ध है। ऐसे कार्यक्रम छात्रों के बीच कलात्मक क्षमता को विकसित करने और उन्हे परिष्कृत करने के लिए एक अवसर प्रदान करते हैं।

यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को भारतीय संस्कृति और विरासत से जुडने में भी सहायक होगा। यह कार्यक्रम नालंदा विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस के अवसर पर स्पिक मैके चैप्टर के तहत आयोजित किया गया था। विश्वविद्यालय के स्पिक मेके चैप्टर द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में 32 देशों के छात्र सहभागी हुए। स्पिक मेके (सोसाइटी फॉर प्रमोशन ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एंड कल्चर अमंग यूथ) की स्थापना 1977 में आईआईटी दिल्ली के पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित प्रोफेसर किरण सेठ के द्वारा भारतीय विरासत के विभिन्न पहलुओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने और युवाओं को प्रेरणा देकर शैक्षिक गुणवत्ता को समृद्ध करने के उद्देश्य से की गई थी।

नालंदा विश्वविद्यालय का एक प्रमुख उद्देश्य युवा पीढ़ी को समेकित दिशा देना और उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता की ओर प्रेरित करना है। शास्त्रीय संगीत का यह कार्यक्रम छात्रों को भारत के समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में सन्निहित अमूर्त, सूक्ष्म और प्रेरणास्पद पहलुओं का अनुभव करने के लिए प्रेरित करेगा। राष्ट्रीय महत्व के अंतर्राष्ट्रीय संस्थान के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस की पूर्व संध्या के अवसर पर यह आयोजन विभिन्न देश के छात्र छात्राओं को भारत की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत से रू-ब-रू होने का अवसर प्रदान करेगा।

राजगीर में पहली बार किसी किले की हो रही खुदाई

अजातशत्रु किला का भूमि पूजन के बाद उत्खनन शुरू

खोलेगा रहस्य

संवाददाता, राजगीर

मगध सम्राट अजातशत्रु के किला का उत्खनन मंगलवार को शुरू हो गया है. राजगीर के किसी सम्राट के किला का उत्खनन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा पहली बार कराया जा रहा है. इस खुदाई के बाद अनेकों रहस्य खुलने की संभावना है. उत्खनन आरंभ करने से पहले भूमि पूजन और उत्खनन में इस्तेमाल होने वाले औजारों की पूजा की गयी. ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार और नालंदा विश्वविद्यालय के अंतरिम कुलपति प्रो अभय कुमार सिंह द्वारा नारियल फोड़ कर और फावड़ा चलाकर उत्खनन कार्य का शुभारंभ किया गया.

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण पटना के अधीक्षण पुरातत्वविद् (उत्खनन) सह राजगीर उत्खनन निदेशक सुजीत नयन भी मौके पर उपस्थित थे. यह उत्खनन कार्य पहले अजातशत्रु किला के पश्चिमी भाग में होना था, लेकिन पूर्वी भाग से उत्खनन कार्य शुरू किया गया है. 2600 साल के पहले के

किले के उत्खनन कार्य का शुभारंभ करते मंत्री श्रवण कुमार और कुलपति एवं अन्य

इतिहास का रहस्य खुलने के आसार हैं. उन कालों का इतिहास देश- दुनिया के सामने लाने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण पूरी तरह तैयार है. 63 साल पहले अजातशत्रु किला की चहारदीवारी का उत्खनन पुरातत्व विभाग द्वारा कराया गया था. राजगीर के राजाओं का यह पहला किला है, जिसकी खुदाई करायी जा रही है. यहां के सम्राट बसु, वृहद्रथ, जरासंध, बिम्बिसार के किला का पता न तो इतिहासकारों ने लगाया है और न ही भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा किसी सम्राट के किला का उत्खनन कर उसके इतिहास को दुनिया के सामने लाया गया है.

पुरातत्व विभाग के अनुसार इस किले के उत्खनन बाद पुरावशेष तो मिलेंगे ही पुरानी रहस्य भी खुलकर सामने आयेंगे. यह उत्खनन पुरातत्व विशेषज्ञों की देखरेख में किया जायेगा. इसके अलावा पुरातत्व के शोधार्थियों के अलावा उत्खनन कार्य में श्रमिक काम करेंगे. निदेशक सुजीत नयन ने बताया कि उत्खनन कार्य में शामिल पुरातत्व विशेषज्ञों और श्रमिकों के आवासन की व्यवस्था किला के समीप ही की गयी है. उनके लिए बांस के घर बनाये गये हैं. उनके लिए शौचालय और स्नानागार आदि का निर्माण भी बांस से ही कराया गया है.

प्रभात खबर
Wed, 20 December 2023
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/74151572

दैनिक भास्कर
पटना, गुरुवार, 1 फरवरी, 2024 | 12

नालंदा विश्वविद्यालय में स्पिक मैके के कलाकारों ने किया पुरुलिया के छऊ लोक नृत्य का प्रदर्शन

30 देशों के विद्यार्थी भारत की समृद्ध संस्कृति एवं लोक कला से परिचित हुए

सिटी रिपोर्टर | बिहारशरीफ

नालंदा विश्वविद्यालय के सुषमा स्वराज सभागार में बुधवार को विश्वविद्यालय के स्पिक मैके हेरिटेज क्लब के छात्रों द्वारा पुरुलिया छऊ नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत 30 देशों के छात्र इस नृत्य की प्रस्तुति से भारत की समृद्ध संस्कृति एवं लोक कला से परिचित हुए। पश्चिम बंगाल के पुरुलिया से आए लोक कलाकारों ने इस पारंपरिक लोक-नृत्य के माध्यम से मार्शल आर्ट, नाटकीय तत्वों और अभिव्यंजक शैली की प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में शामिल कलाकारों ने दुर्गा सप्तसती के महिषासुर वध के प्रसंगों को मंच पर जीवंत कर दिया और दर्शकों को प्राचीन कथा-वाचन व नृत्य प्रदर्शन से परिचित कराया। नृत्य मुखौटों के साथ ढोल, धमसा, बांसुरी और शहनाई जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों की लयबद्ध धुनों पर प्रस्तुत किया गया। लोगों ने इस कार्यक्रम का पूरा आनंद उठाया।

कलाकार और पारंपरिक कला को बढ़ावा देने के लिए ऐसे कार्यक्रम महत्वपूर्ण

इस मौके पर नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति (अंतरिम) प्रो. अभय कुमार सिंह ने कहा कि इस विशिष्ट कला को संरक्षित करने के लिए कलाकारों और इन पारंपरिक कला रूपों को बढ़ावा देने के लिए ऐसे आयोजन बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने छात्रों को भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य का अनुभव करने और उसे और अधिक समृद्ध बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही उन्होंने युवाओं को भारत की सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने के के लिए मंच प्रदान करने के लिए स्पिक मैके के प्रति आभार भी व्यक्त किया।

दिखी सांस्कृतिक झलक

उन्होंने बताया कि स्पिक मैके संस्था शैक्षणिक संस्थानों में भारतीय शास्त्रीय संगीत, नृत्य और संस्कृति की गहरी समझ को विकसित करने के लिए समर्पित है। इन आयोजनों के माध्यम से यह स्वयंसेवी आंदोलन शास्त्रीय व लोक कलाओं से वर्तमान युवावर्ग को जोड़ता है। कार्यक्रम के अंत में छात्रों ने भारत की गौरवशाली लोक सांस्कृति और विरासत की झलक देखने का अवसर मिलने पर खुशी जाहिर करते हुए विश्वविद्यालय और कुलपति के प्रति आभार व्यक्त किया। छात्रों ने कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय में आयोजित ऐसे कार्यक्रम वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक एकीकरण को बढ़ावा देते हैं और विद्यार्थियों में अन्य संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना को विकसित करने मे सहायक होते हैं।

TIMES OF INDIA
2 THE TIMES OF INDIA, PATNA
THURSDAY, FEBRUARY 1, 2024

Purulia Chhau mesmerises Nalanda univ pupils

Times News Network

Patna: The vibrant and enchanting art form of Purulia Chhau took centre stage at Shushma Swaraj Auditorium of Nalanda University (NU) at Rajgir when the student volunteers of Nalanda University SPIC MACAY Heritage Club showcased the rich cultural heritage of West Bengal through captivating performances and storytelling.

Purulia Chhau, a traditional folk dance form originating from the Purulia district of West Bengal, enthralled the audience with its dynamic blend of martial arts, theatrical elements and expressive movements. The event featured talented artists who brought to life the episodes of Mahishasura Vadha, from Durga Saptasati, transporting the audience to a world of ancient legends and folklore.

TOI

An artist performs Purulia Chhau

The performances were marked by elaborate costumes, intricate masks and rhythmic beats of traditional instruments such as the dhol, dhamsa, bansuri and shehnai. Dancers showcased agile footwork, graceful spins and dynamic leaps, reflecting its origins as a warrior art. The event served as a celebration of culture, identity and heritage, uniting communities and preserving the cultural legacy from villages of India. Prof Abhay Kumar Singh, the VC (I) of Nalanda University, expressed gratitude to the artists and SPIC MACAY for their support in promoting and preserving traditional art forms.

दैनिक भास्कर बिहारशरीफ भास्कर 04-02-2024

नालंदा विश्वविद्यालय परिसर में पीएनजी पाइप बिछाने का काम पूरा

सिटी रिपोर्टर | राजगीर

नालंदा विश्वविद्यालय परिसर में घरेलू प्राकृतिक गैस कनेक्शन (पीएनजी) का पाइप बिछाने का काम पूरा कर लिया गया है। इसका उद्घाटन कुलपति प्रो. अभय कुमार सिंह द्वारा किया गया । अब इसकी सुविधा विश्वविद्यालय को मिलेगी। 2019-20 में प्रधानमंत्री ऊर्जा गंगा गैस पाइप लाइन परियोजना के तहत विश्वविद्यालय में पीएनजी की आपूर्ति के लिए पाइप्ड नैचुरल गैस (पीएनजी) लाइन की पहल जमीनी स्तर पर शुरू की गई थी। इसके लिए पीएनजी नियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) द्वारा नियुक्त सिटी गैस वितरण एजेंसी के रूप में आईओसीएल-अदाणी द्वारा एक संयुक्त उपक्रम शुरु किया गया था। विश्वविद्यालय की पहल पर

पीएनजी कनेक्शन का उद्घाटन करते हुए कुलपति।

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से गैस पाइप की डि-टुअरिंग की गई थी और लाइन को घुमाकर राजगीर के रास्ते से लाया गया था। विश्वविद्यालय परिसर में पाइप्ड प्राकृतिक गैस (पीएनजी) कनेक्शन की सुविधा उपलब्ध हो जाने से अब न केवल विश्वविद्यालय को सुविधा होगी बल्कि स्थानीय लोगों को भी पीएनजी की आपूर्ति का लाभ मिलेगा। उद्घाटन के अवसर पर कुलपति प्रोफेसर अभय कुमार सिंह ने कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय के नेट जीरो परिसर में यह एक स्वागत योग्य पहल है और इस सुविधा के साथ हम स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग कर सकेंगे। इसे हम प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के सपने को पूरा करने के उद्देश्य से उठाया गया अपना एक छोटा सा कदम मानते हैं। इन माध्यमों से हम पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और यह उसी दिशा मे एक प्रयास है। नालंदा विश्वविद्यालय के आवासीय परिसर में रह रहे परिवार इससे तत्काल लाभान्वित होंगे।

आज

पटना
बुधवार, ७ फरवरी, २०२४ 3

नालंदा विश्वविद्यालय में हुआ पंडित राजेंद्र प्रसन्ना का शास्त्रीय बांसुरी वादन

बिहारशरीफ। नालंदा विश्वविद्यालय में आज प्रसिद्ध संगीतज्ञ और ग्रैमी पत्र से सम्मानित पं. राजेंद्र प्रसन्ना का मंत्रमुग्ध कर देने वाला शास्त्रीय बाँसुरी वादन आयोजित हुआ। सुषमा स्वराज सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में पं. प्रसन्ना के लयबद्ध वादन के साथ तबले

पर पंडित ललित कुमार ने संगत की। नालंदा में अध्ययनरत विभिन्न देशों के छात्र इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। मौके पर कुलपति प्रो. अभय कुमार सिंह ने शास्त्रीय संगीत के सकारात्मक प्रभाव को रेखांकित करते हुए कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय अपने छात्रों के सांस्कृतिक और कलात्मक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए समर्पित है। ऐसे शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम छात्रों की रचनात्मक प्रवृति को प्रेरित करते हैं। आईआईटी दिल्ली में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित प्रोफेसर किरण सेठ द्वारा 1977 में स्थापित स्पिक मैके ने युवाओं के बीच देश की सांस्कृतिक विरासत और मूल्यों के बारे में जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ABOUT ASEAN WHAT WE DO WHO WE WORK WITH OUR COMMUNITIES SITEMAP

Secretary-General of ASEAN delivers lecture at Nalanda University

Home › Secretary-General of ASEAN delivers lecture at Nalanda University

Home › In The News, News, SecGen's Activities › Secretary-General of ASEAN delivers lecture at N...

Secretary-General of ASEAN delivers lecture at Nalanda University

February 15, 2024

Secretary-General of ASEAN Dr. Kao Kim Hourn today delivered a lecture on *"The Future of ASEAN: ASEAN's Relevance and Resilience in the Evolving Strategic Environment"* at Nalanda University in the State of Bihar in India. Dr. Kao was welcomed by Vice Chancellor of Nalanda University Prof. Abhay Kumar Singh. In his lecture, Dr. Kao emphasised the continuing relevance of ASEAN Centrality as well as ASEAN Outlook on the Indo-Pacific (AOIP) as the guide in ASEAN's engagement in the wider Asia-Pacific and Indian Ocean regions. Dr. Kao also touched on the ongoing important work on the crafting of the ASEAN Community Vision 2045, which is scheduled to be adopted by the ASEAN Leaders in the first half of 2025 and will mark the next phase of ASEAN Community building process beyond 2025.

Share This On

दैनिक भास्कर

पटना, शुक्रवार, 16 फरवरी, 2024

ऐतिहासिक काम है नालंदा विवि का पुनरुद्धार

डॉ. होर्न ने नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार की दिशा में भारत सरकार के प्रयासों को सराहा

सिटी रिपोर्टर| बिहारशरीफ

भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी की 10वें वर्ष पर वर्ष आसियान के महासचिव डॉ. काओ किम होर्न ने गुरुवार को विश्वविद्यालय के सुषमा स्वराज सभागार आसियान का भविष्य विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. होर्न विश्वविद्यालय के दो दिवसीय दौरे पर आये थे। उन्होंने आसियान सदस्य देशों के छात्रों के साथ भी बातचीत की जो आसियान-भारत सहयोग परियोजनाओं के तहत इस विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यात्रा में आसियान में भारत के राजदूत जयंत एन खोबरागड़े भी उनके साथ थे। नालंदा विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण पर चर्चा करते हुए डा. होर्न ने कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय का पुनरुद्धार पूर्वी एशियाई शिखर सम्मेलन के नेताओं द्वारा किए गए ऐतिहासिक निर्णयों में से एक है। उन्होंने आसियान और भारतीय संबंधों के महत्व

पर भी चर्चा की। डॉ. होर्न ने नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार की दिशा में भारत सरकार के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय, जो आसियान- भारत नेटवर्क ऑफ यूनिवर्सिटीज (एआईएनयू) का नेतृत्व कर रहा है, की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी चर्चा की। उन्होंने विश्वविद्यालय की पर्यावरण से संबंधित प्रतिबद्धता और यहां के सुविधाओं को उत्कृष्ट बताया। छात्रों से उन्होंने कहा कि आप सभी भाग्यशाली हैं कि आप नालंदा की गौरवशाली परंपरा से जुड़े हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति (अंतरिम) प्रो. अभय कुमार सिंह ने कहा कि इस संस्थान का एशियाई देशों के बीच संबंधों को सुदृढ़ करने में अभूतपूर्व योगदान रहा है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि नालंदा अपने अवतार में सभ्यतागत मूल्यों पर आधारित एशियाई देशों को जोड़ने में एक सेतु की भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

उपराष्ट्रपति ने नालंदा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों से बातचीत की

राजगीर फ्रंटलाइन

> उपराष्ट्रपति ने आज संसद भवन में अपनी बातचीत में विद्यार्थियों से शांति, प्रगति और सतत विकास का ट्रस्टी बनने का आग्रह किया। उन्होंने भारतीय सभ्यतागत लोकाचार के 'शाश्वत योगदान' पर भी प्रकाश डाला।

नई दिल्ली भारत और 11 देशों के विद्यार्थियों के प्रतिनिधिमंडल ने उपराष्ट्रपति से जगदीप धनखड़ से भेंट की।विगत वर्ष नालंदा विश्वविद्यालय में कार्यक्रम में पधारे उप राष्ट्रपति ने विश्विद्यालय के छात्र छात्राओं को आमंत्रित किया था। नालंदा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का एक प्रतिनिधिमंडल ने नई दिल्ली में संसद भवन में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से मिला। यह प्रतिनिधिमंडल उपराष्ट्रपति द्वारा संस्थान की अपनी पिछली यात्रा के दौरान दिए गए निमंत्रण पर उपराष्ट्रपति से मिलने आया था। प्रतिनिधिमंडल में भारत तथा 11 देशों-भूटान, वियतनाम, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, म्यांमार, लाओस, नेपाल, अर्जेंटीना, केन्या, थाईलैंड और युगांडा- के विद्यार्थी शामिल थे।

उपराष्ट्रपति ने नालंदा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों से बातचीत में बिहार राज्य की अपनी पहली यात्रा में 29 सितंबर, 2023 को नालंदा विश्वविद्यालय की अपनी यात्रा को याद किया। श्री धनखड़ ने नालंदा के इतिहास और इसके 'शक्तिशाली ब्रांड' पर बातचीत की और विद्यार्थियों को अपनी विरासत को और अधिक ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रोत्साहित किया।उपराष्ट्रपति ने विद्यार्थियों से शांति, प्रगति और सतत विकास का ट्रस्टी बनने का आग्रह किया। नालन्दा विश्वविद्यालय के तीन फैकल्टी सदस्य डॉ. बी.सी. अंबिका प्रसाद पाणि, डॉ. पूजा डबराल और डॉ. तोसाबंता पधान, 23 विद्यार्थियों के प्रतिनिधिमंडल के साथ आए।

नालंदा विवि के गवर्निंग बोर्ड की बैठक में लिये गये कई निर्णय

विवि में आधुनिक अस्पताल खुला

संवाददता, राजगीर

अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस अस्पताल का उद्घाटन करते कुलाधिपति प्रो अरविंद पनगढ़िया, कुलपति एवं अन्य.

कुलाधिपति बनने के बाद पहली बार प्रो अरविंद पनगढ़िया नालंदा विश्वविद्यालय के दो दिवसीय दौरे पर राजगीर पहुंचे हैं. उनके द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय परिसर में नवनिर्मित मेडिकल सेंटर का उदघाटन शीलापट का अनावरण कर और फीता काट कर बुधवार को किया गया. यह उद्घाटन नालंदा के पुनर्निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। नालंदा की उत्कृष्टता के रूप में इसके भविष्य को दर्शाता है. कुलाधिपति द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय के गवर्निंग बोर्ड की बैठक भी की गयी.

बैठक में बोर्ड के सदस्य भी शामिल हुये. प्रो अरविंद पनगढ़िया द्वारा अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए शीर्ष स्तर की सुविधाएं प्रदान करने पर प्रकाश डाला गया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अंतरिम कुलपति प्रो अभय कुमार सिंह ने कहा कि नालंदा परिसर में शीर्ष स्तर की चिकित्सा सुविधाओं को शामिल करना यहां के देशी- विदेशी छात्र समुदाय के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है. यह मेडिकल सेंटर लगभग 15 हजार वर्ग फुट में निर्मित है.

अस्पताल के दो मंजिले इमारत में पांच ओपीडी और 15 क्षमता वाली आईपीडी मेडिकल बेड हैं. इस अस्पताल में डिजिटल एक्स-रे, पैथोलॉजी लैब, ऑन-साइट फार्मेसी और एम्बुलेंस जैसी आवश्यक सुविधाएं मौजूद हैं. विश्वविद्यालय गवर्निंग बोर्ड के सदस्यों ने नालंदा की उल्लेखनीय प्रगति और उपलब्धियों की प्रशंसा की. गवर्निंग बोर्ड की बैठक विश्वविद्यालय के अकादमिक और वैश्विक प्रभाव की उन्नति के रणनीतियों व दृष्टिकोणों पर केंद्रित रही. बैठक में विदेश सचिव (पूर्वी) मुक्तेश कुमार परदेसी, बिहार के पूर्व मुख्य सचिव एवं बिहार संग्रहालय के निदेशक अंजनी कुमार सिंह, बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के अध्यक्ष आनंद किशोर, नालंदा विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ आरपी सिंह परिहार, उच्च शिक्षा निदेशालय के अतिरिक्त सचिव सुनील बर्नवाल के अलावे ऑनलाइन बैठक में प्रसून जोशी, आनन्द महिन्द्रा शामिल हुये। एशिया में शैक्षिक, सामाजिक और धार्मिक परिदृश्य में क्रांति लाने के लिए प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय लगभग एक सहस्राब्दी के बाद ऐतिहासिक पुनरुद्धार के दौर से गुजर रहा है. 30 से अधिक देशों के छात्र यहां के छात्रावास में रह कर अध्ययन कर रहे हैं. विश्वविद्यालय का नया अवतार एशियाई पुनर्जागरण के प्रतीक के रूप आशाजनक भविष्य के साथ उभर रहा है.

बिहारशरीफ भास्कर 02-03-2024

विमर्श • नालंदा विश्वविद्यालय के गवर्निंग बोर्ड की बैठक में कई मुद्दों पर चर्चा, चांसलर ने रखा विचार

दुनिया का पहला आध्यात्मिक विश्वकोष नालंदा ने बनाया था

सिटी रिपोर्टर | राजगीर

नालंदा विश्वविद्यालय के गवर्निंग बोर्ड की बैठक शुक्रवार को विश्वविद्यालय के चांसलर अरविंद पनगढ़िया की अध्यक्षता में हुई। बैठक में कई अहम विषयों पर चर्चा की गई। गवर्निंग बोर्ड की बैठक में विदेश मंत्रालय के सचिव मुक्तेश, सचिव उच्च शिक्षा सुनील बरनवाल, डॉ. अंजनी कुमार सिंह, बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के अध्यक्ष आनंद किशोर, प्रसून जोशी, आनंद महिन्द्रा, कुलपति प्रो. अभय कुमार सिंह सहित सभी सदस्य शामिल थे। बैठक में नालंदा विश्वविद्यालय में अब तक हुए कार्य पर विस्तृत रूप चर्चा की गयी। बैठक में चांसलर अरविंद पनगढ़िया ने कहा कि दुनिया का पहला आध्यात्मिक विश्वकोष नालंदा ने तैयार किया था। नालंदा अपने गौरव को एक बार फिर प्राप्त कर सके यही हमारा प्रयास है। उन्होंने कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय से संबंधित कार्य बहुत तेजी गति से पूरे किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय फिर एक बार पूरी दुनिया को ज्ञान की रोशनी देने के लिए चल पड़ा है। उन्होंने कहा कि आधुनिक विषयों में शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देना भी विवि का उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विश्वविद्यालय ने अपने प्रारंभिक वर्षों में बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म के स्कूल स्थापित किए हैं।

विश्वविद्यालय अब प्राकृतिक सुंदरता से भरा एक शानदार पर्यावरण अनुकूल परिसर

उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक अध्ययन, पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन, भाषाएं और साहित्य, प्रबंधन अध्ययन के क्षेत्रों में यह मास्टर डिग्री प्रदान करता है। पाली, संस्कृत, तिब्बती, अंग्रेजी और कोरियाई जैसी भाषाओं और योग में डिप्लोमा और प्रमाण पत्र कार्यक्रम भी चलाये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्राचीन नालंदा विवि का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ था, न ही वर्तमान समय का नालंदा विश्वविद्यालय होगा। लेकिन हमने बेहतरीन शुरुआत की है। विश्वविद्यालय अब प्राकृतिक सुंदरता से भरे एक शानदार पर्यावरण अनुकूल परिसर है।

नालंदा विश्वविद्यालय में शुरू हुआ दो दिवसीय बोधगया ग्लोबल डायलॉग कार्यक्रम

बुद्ध की अहिंसा व करुणा दुनिया के लिए जरूरी : राज्यपाल

संवाददाता, राजगीर .

बोधगया ग्लोबल डायलॉग का उद्घाटन करते राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ अर्लेकर एवं अन्य.

राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर ने कहा कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति का इतिहास हजारों वर्ष पुरानी है. राजगीर -नालंदा -बोधगया हमारे देश की संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है. भगवान बुद्ध केवल राजगीर, नालंदा और बोधगया तक सीमित नहीं हैं. उनके करुणा और अहिंसा के संदेश को दुनिया के लोग मानते और अनुसरण करते हैं. नालंदा विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय बोधगया ग्लोबल डायलॉग का उद्घाटन करते हुए राज्यपाल ने शनिवार को यह कही. कार्यक्रम का उद्घाटन राज्यपाल एवं अन्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया. इस अवसर पर बोधगया ग्लोबल डायलॉग पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया. राज्यपाल ने कहा कि भगवान बुद्ध के विचार, परंपरा और संस्कृति आज भी प्रासंगिक है. महात्मा बुद्ध ने कहा था शस्त्र नहीं शास्त्र अपनाओ. शास्त्र से ही बुद्ध के अहिंसा और करुणा को जन-जन तक पहुंचाया जा सकता है.

उनके विचारों को बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर देते हुए उन्होंने बिहार को शास्त्रार्थ की भूमि बताया. नालंदा को ज्ञान का प्रमुख केंद्र बताते हुए अर्लेकर ने कहा कि महात्मा बुद्ध के करुणा और अहिंसा की जरूरत दुनिया को है. भारत अनादि काल से अहिंसा और करुणा की भूमि है. उन्होंने कहा कि नालंदा की इस ज्ञानभूमि से निकला ज्ञानोदय का संदेश सदैव अनाक्रामकता का रहा है. हमें फिर एकीकृत विचार प्रक्रिया की आवश्यकता है. यह वह भूमि है, जहां शस्त्रों की तुलना में शास्त्रों को प्राथमिकता दी जाती रही है। इस मगध के राजगीर-नालंदा-बोधगया से दुनिया को करुणा और अहिंसा में सन्निहित संदेश दिया गया है ? दुनिया के लिए हमारी करुणा और अहिंसा की अभिव्यक्ति सदैव प्रेरणा स्त्रोत रही है. उन्होंने कहा कि बोधगया डाइलॉग के विचार-विमर्श भविष्य में समाज के लिए मार्गदर्शक का काम करेगा. पिछले महीने अपनी थाईलैंड की यात्रा की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले महीने वह यहां से भगवान बुद्ध की अस्थि लेकर थाईलैंड गए थे. वहां के उप प्रधानमंत्री ने कहा यह भगवान बुद्ध की रेलिक नहीं, भगवान बुद्ध हैं. थाईलैंड में भगवान बुद्ध के साथ सनातन देवी देवताओं की भी अराधना की जाती है.

लेकिन यहां लोग धर्म को बांटने की कोशिश में कुछ लोग लगे हैं। सभी धर्म सनातन धर्म के इर्द-गिर्द हैं. कार्यक्रमों की सफलता की कामना करते हुए उन्होंने कहा कि विश्वास है कि इस डायलॉग में होने वाली चर्चा बाद समाज में सद्भावना, करुणा और अहिंसा के लिए मिल का पत्थर बनेगा. वक्ताओं राजगीर, नालंदा, बोधगया के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व की चर्चा विस्तार से किया गया. वक्ताओं ने कहा कि अपनी उद्गम भूमि से बौद्ध धर्म विलुप्त सा हो गया है. इस फिर से पुनर्जीवित करने की आवश्यकता पर वक्ताओं ने जोर दिया. इस अवसर पर नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो अभय कुमार सिंह ने कहा कि राजगीर और नालंदा ज्ञान, वैभव, पराक्रम साथ राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है. हमारी एकीकृत राष्ट्रीयता की अवधारणा वसुधैव-कुटुंबकम के विचार से प्रेरित है.

नालंदा दृष्टि को व्यापक बनाने के लिए प्रेरित करती है. इसे प्रज्ञा की भूमि बताते हुए उन्होंने कहा कि मगध क्षेत्र का यह एकीकृत परिदृश्य भी इसी समावेशी दृष्टिकोण को दर्शाता है. मगध के वैभवशाली प्रदेश में स्थित नालंदा विश्वविद्यालय जो कभी प्राचीन भारतीय ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता था. फिर तीस से अधिक देशों के ज्ञान पिपासू यहां अध्ययन कर रहे हैं. प्रो सिंह राजगीर के ऐतिहासिक आध्यात्मिक संस्कृत संस्कृत और पराक्रम के गौरवशाली अतीत की चर्चा करते हुए कहा कि भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण उपरांत पहली बौद्ध संगीति राजगीर में ही हुई थी. यह पहली राजधानी रही है. इसके बाद ही पाटलिपुत्र राजधानी बनी थी. प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय केवल भारत का ही नहीं, बल्कि दुनिया का प्रमुख ज्ञान केंद्र था. आज फिर से नालंदा विश्वविद्यालय इसी ज्ञान की भूमि में बनकर तैयार है, जहां दुनिया के कई देशों के छात्र-छात्राएं, भिक्षु- भिक्षुणी पढ़ने के लिए आ रहे हैं.राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सदस्य, डॉ डी एम मुरई ने कहा कि भारतीय इतिहास काफी समृद्ध रहा है.

स्वतंत्र क्षमता और न्याय को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि बुद्ध शांति और करुणा के पुजारी थे विकास के साथ एनएलाइनमेंट जरूरी है. उन्होंने कहा कि संवाद आवश्यक है संवाद के बिना समाज टूट जायेगा बुद्ध महात्मा बुद्ध की सोच और मार्ग को प्रासंगिक बताते हुए उन्होंने राजगीर नालंदा और बोधगया के आध्यात्मिक सांस्कृतिक धार्मिक ऐतिहासिक महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला . इस अवसर पर ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी, गया के लेफ्टिनेंट जनरल पीएस मिन्हास, भारतीय प्रबंधन संस्थान, बोधगया के निदेशक प्रो विनीता सहाय, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सदस्य, डॉ डी एम मुरई, एएसआइ पटना सर्किल की अधीक्षण पुरातत्वविद् गौतमी भट्टाचार्य, देशकाल सोसायटी के अध्यक्ष अरविंद मोहन ने विचार व्यक्त किया.

सभ्यता, संस्कृति, पराक्रम, ज्ञान और राजनीति का प्रमुख केंद्र रहा मगध

राजगीर. भगवान बुद्ध और तीर्थंकर महावीर की कर्मभूमि राजगीर में दो दिवसीय बोधगया ग्लोबल डायलॉग का शुभारंभ शनिवार को हुआ. नालंदा विश्वविद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ लेकर द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया. इस अवसर पर उनके द्वारा नव प्रकाशित एक पुस्तक का भी लोकार्पण किया गया.

इस ग्लोबल डायलॉग कार्यक्रम में नालंदा विश्वविद्यालय के 30 से अधिक देशों के स्टूडेंट के अलावा अनेकों गण्यमान लोग शामिल हुए. कार्यक्रम में राजगीर, नालंदा और बोधगया के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और शैक्षणिक महत्व को वक्ताओं द्वारा रेखांकित किया गया. राज्यपाल ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान बुद्ध के करुणा और अहिंसा का संदेश केवल भारत नहीं, बल्कि दुनिया के लिए प्रासंगिक है. नालंदा को दुनिया का सबसे बड़ा ज्ञान केंद्र बताते हुए उन्होंने कहा कि यहां की सभ्यता, संस्कृति बहुत प्राचीन और महत्वपूर्ण है. भारत की संस्कृति हजारों साल पुरानी है. भगवान बुद्ध की शिक्षा को हर व्यक्ति को जीवन में उतरने की आवश्यकता है. नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो अभय कुमार सिंह ने कहा कि मगध प्राचीन काल से ही संस्कृति, सभ्यता, पराक्रम, ज्ञान और राजनीति का प्रमुख केन्द्र रहा है. यहां की गौरवशाली शैक्षणिक परंपरा दुनिया में विख्यात है. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सदस्य डॉक्टर डी एन मुलई ने कहा भारत का इतिहास बहुत पुराना और काफी समृद्ध रहा है. भगवान बुद्ध के शांति, अहिंसा और करुणा के संदेश को दुनिया में आत्मसात किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि सामाजिक समरसता के लिए संवाद आवश्यक है. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण पटना सर्किल की अधीक्षण पुरातत्वविद् गौतमी भट्टाचार्य ने कहा यह भगवान बुद्ध की कर्मभूमि के साथ उनके प्रमुख शिष्य सारीपुत्र और महामोग्लान की जन्मभूमि है. उनके द्वारा पुरातात्विक और ऐतिहासिक महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया. इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (आईआईएम) बोधगया के डायरेक्टर प्रो विनीता सहाय ने बोधगया ग्लोबल डायलॉग को शैक्षणिक संस्थानों से जोड़ने पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि हजारों साल पहले भारत आर्थिक रूप से काफी समृद्ध रहा है। कोरोना कल ने साबित कर दिया है कि वाणिज्य बिना जीवन अधूरा है. देशकाल सोसाइटी के अध्यक्ष अरविंद मोहन ने कहा डायलॉग के माध्यम से दुनिया में सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत किया जा सकता है. बुद्ध की करुण गांधी की राजनीति में झलकती है. अपनी ही धरती पर बुद्धिज्म के कमजोर होने पर उन्होंने चिंता व्यक्त की.

Governor inaugurated the Bodhgaya Global Dialogues 2024 at Nalanda University

The enlightenment emanating from the land of Nalanda has always advocated non-aggression. In this land where knowledge [shastras] got precedence over power [shastra]. The message of compassion and non-violence was sent out to the world from this heartland of Bharat. I believe that the deliberations of the Bodh Gaya Dialogue will serve as a guide for our society in the future. Today, again, we need an inclusive, integrated thought perspective. Governor of Bihar, Shri Rajendra Arlekar said these words at Nalanda University, Rajgir while addressing the inaugural session of Bodhgaya Global Dialogues 2024 at Sushma Swaraj Auditorium. Vice Chancellor (I) of Nalanda University, Prof. Abhay Kumar Singh said that due to the emergence of a strong Bharat, the concepts of "One Earth. One Family. One Future." are realized. Our inclusive and wide visionary ethos of vasudhaiva-kutumbkam, urges us to transcend silos and broaden our vision. Fragmented history builds divisive nations. He proposed for a new paradigm of comprehensive historiography, and added that our study of history is enriched when viewed through the lens of interconnected landscapes rather than isolated sites and fragmented regions. The 6th edition of Bodhgaya Global Dialogues 2024 is a collaborative educational event between Nalanda University and Deshkaal Society taking place on 16 and 17 March 2024 at the NU campus. This two-day program focuses on the historical heritage of Bodhgaya, Rajgir and Nalanda and the contribution of these regions to the knowledge tradition. Noted journalist and author Arvind Mohan, President, Deshkal Society; Lieutenant General P.S. Minhas, Commandant Officers Training Academy, Gaya; Professor Vineeta Sahay, Director, Indian Institute of Management, Bodh Gaya; Dr. D.M. Mule, Member, NHRC; Dr. Goutami Bhattacharya, ASI, Patna were present as the Guests of honour at the inaugural session of the Bodhgaya Global Dialogues programme.

दैनिक भास्कर **बिहारशरीफ भास्कर** 18-04-2024

नालंदा विवि में ओडिशा की गोटीपुआ कला का प्रदर्शन

सिटीरिपोर्टर | बिहारशरीफ

नालंदा विश्वविद्यालय के सुषमा स्वराज सभागार में बुधवार को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भुवनेश्वर से आए कलाकारों ने ओडिशा के प्रसिद्ध लोक नृत्य गोटीपुआ का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का आयोजन नालंदा विश्वविद्यालय के स्पिक मैके हेरिटेज क्लब के छात्रों द्वारा किया गया। गोटीपुआ ओडिशा की एक पारंपरिक लोक कला है। जिसमें युवा लड़के महिला पात्रों की वेशभूषा में प्रदर्शन करते हैं। अपने पारंपरिक शैली में बाल नर्तकों ने जटिल आंगिक गतियों से उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। नृत्य शैली का उपयोग पौराणिक कथाओं और भगवान जगन्नाथ को समर्पित गीतों को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। नालंदा विश्वविद्यालय के अंतरिम कुलपति प्रो. अभय कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन से न केवल छात्र भारतीय संस्कृति की गहराई से परिचित होते हैं बल्कि उनकी वैश्विक सांस्कृतिक समझ भी विकसित होती है। उन्होंने युवाओं को भारत की सांस्कृतिक विरासत से रूबरू कराने के लिए स्पिक मैके के प्रति आभार व्यक्त किया। भारत की वैविध्यपूर्ण लोक संस्कृति से परिचित होने का मौका देने के लिए विश्वविद्यालय और कुलपति के प्रति आभार व्यक्त किया। इस तरह के आयोजन नालंदा में अध्ययनरत विभिन्न देश के विद्यार्थियों में भारत की विविधतापूर्ण संस्कृतियों के प्रति आदर और सम्मान की भावना को विकसित करने में सहायक होते हैं।

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com **अपना नालंदा** पटना, सोमवार, 13 मई 2024 07

नालंदा विवि में 39 देशों की आर्थिक स्थिति पर शोध होगा

- हुआ करार, प्रोजेक्ट मौसम को धरातल पर उतारने में मदद करेगा नालंदा विवि
- एएसआई के महानिदेशक व नालंदा विवि के कुलपति ने किया करार पर हस्ताक्षर

बिहारशरीफ, कार्यालय संवाददाता। शनिवार को नालंदा विश्वविद्यालय और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के बीच दीर्घकालिक करार हुआ। करार के बाद अब नालंदा विश्वविद्यालय 'प्रोजेक्ट मौसम' के उद्देश्यों को पूरा करने से संबंधित शोध व अंतरराष्ट्रीय अध्ययन करेगा। इसके तहत हिन्द महासागर के सीमावर्ती 39 देशों को सांस्कृतिक, सामुद्रिक व आर्थिक रूप जोड़ने के लक्ष्य को परवान चढ़ाया जाएगा। करार पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अभय कुमार सिंह व एएसआई के महानिदेशक यदुवीर सिंह रावत ने हस्ताक्षर किया। कुलपति ने बताया कि 'प्रोजेक्ट मौसम' संस्कृति मंत्रालय की एक बहुद्देशीय परियोजना है। प्रोजेक्ट मौसम भारत के संस्कृति मंत्रालय व भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विशेषज्ञ पहले से काम कर रहे हैं। इसका लक्ष्य हिन्द महासागर के देशों को आपस में जोड़ना है। ये देश पहले भी व्यापारिक, सांस्कृतिक, सामुद्रिक व आर्थिक रूप से जुड़े हुए थे। यह प्रयास प्राचीन व्यापार और वाणिज्य, ज्ञान मार्ग, धर्म, बौद्ध कला और वास्तुकला, मैरीटाइम और भारतीय संस्कृति से संबंधित स्थलों के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। बैठक में कुलपति डॉ. अभय कुमार सिंह, एएसआई के डीजी यदुवीर सिंह रावत, एएसआई के संयुक्त महानिदेशक एमएस चौहान, पटना के पुरातत्व अधीक्षक डॉ. गौतमी भट्टाचार्य, कंसल्टेंट डॉ. सुरेश, डॉ. राजीव चतुर्वेदी व अन्य शामिल थे।

नालंदा विवि में शनिवार को प्रोजेक्ट मौसम पर करार के बाद एक-दूसरे से हाथ मिलाते कुलपति डॉ. अभय कुमार सिंह व एएसआई के डीजी यदुवीर सिंह रावत।

प्रोजेक्ट मौसम के लिए छह करोड़ आवंटित किये गये

बताया गया कि प्रोजेक्ट मौसम के लिए भारत सरकार ने छह करोड़ 39 हजार 297 रुपये अनुमोदित व आवंटित किये गये हैं। इस परियोजना का उद्देश्य हिंद महासागर में परस्पर सांस्कृतिक, वाणिज्यिक और धार्मिक संबंधों की विभिन्नता के प्रलेखन के लिए पुरातात्विक व ऐतिहासिक अनुसंधान करते हुए बहुआयामी हिंद महासागर की चहुंमुखी खोज करना है।

नालंदा विश्वविद्यालय में इंडो-फारसी अध्ययन केंद्र का उद्घाटन

मुंबई (प्रा.सं.)। नालंदा विश्वविद्यालय में ईरानी संगीतकार फरमान फतेहलियन की सांगीतिक प्रस्तुति के साथ इंडो-फारसी अध्ययन केंद्र का उद्घाटन किया गया। सुषमा स्वराज सभागार में यह कार्यक्रम बुद्ध पूर्णिमा पर आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय के अंतरिम कुलपति प्रो. अभय कुमार सिंह ने कहा कि यह केंद्र भारत और फारस की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करेगा। फारमन फथलियन की सांगीतिक प्रस्तुति भी भारत व ईरान के बीच कला जगत के क्षेत्र में समृद्ध संबंधों को प्रदर्शित करती है। समारोह में नालंदा के प्राध्यापक, विशिष्ट अतिथि और विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विभिन्न देशों के छात्र मौजूद रहे।

बिहारशरीफ भास्कर 06-06-2024

नालंदा विवि में 'ग्रीन गार्जियनशिप' कार्यक्रम शुरू

सिटीरिपोर्टर | राजगीर

नालंदा विश्वविद्यालय ने विश्व पर्यावरण दिवस पर ग्रीन गार्जियनशिप कार्यक्रम की शुरुआत की गयी। कार्यक्रम की शुरुआत कुलपति प्रो. अभय कुमार सिंह ने पौधे लगाकर की। पौधारोपण के बाद मिनी ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम के दौरान घोषणा की गई कि मानसून की शुरुआत के साथ ग्रीन गार्जियनशिप को सभी संकाय और कर्मचारियों व उनके परिवारों के लिए विस्तारित किया जाएगा। प्रो. सिंह ने कहा कि ग्रीन गार्जियनशिप का उद्देश्य विश्वविद्यालय परिसर में लगाए गए पेड़ के साथ एक भावनात्मक संबंध विकसित करना है। प्रो. जयशंकर नायर, डीन, स्कूल ऑफ एनवायरनमेंटल एंड इकोलॉजिकल स्टडीज और संकाय के छात्र ग्रीन गार्जियनशिप पहल को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने आगामी मानसून के दौरान परिसर में दो हरित पार्क विकसित करने की योजना भी बनाई है। राजगीर रेलवे स्टेशन पर कर्मियों द्वारा पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर एसएसई आनंद प्रकाश ने कहा कि पर्यावरण सुरक्षा को लेकर लगातार पौधारोपण कार्यक्रम

किया जा रहा है। इस अवसर पर पंकज कुमार, महावीर मांझी, प्रेम प्रकाश, प्रदीप कुमार, मधेश कुमार, विश्व प्रताप, कुर्बान आदि उपस्थित थे। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय आयुध निर्माणी नालंदा में विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक भी किया गया।

जू सफारी में मना विश्व पर्यावरण दिवस

जू सफारी परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। जिसमें विभिन्न राज्यों के पर्यटक, अलग-अगल संस्थानों के छात्र-छात्राएं तथा पटना वेटनरी कॉलेज के इंटर्नशिप छात्र-छात्रा भी शामिल हुए। इस अवसर पर वनों के क्षेत्र पदाधिकारी राकेश कुमार ने कहा कि जिस परिवेश में हम रहते हैं उसे पर्यावरण कहते हैं। अगर हमारा पर्यावरण सुरक्षित नहीं होगा तो हमारी सुरक्षा पर भी प्रश्नचिन्ह लग जाएगा। जिस हवा में हम सांस ले रहे हैं, जो पानी पी रहे हैं, जिन चीजों का उपयोग कर रहे हैं वे सभी हमारे पर्यावरण के अंतर्गत आती है। ऐसे में पर्यावरण संरक्षण का महत्व बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण का मतलब पर्यावरण की सुरक्षा, पर्यावरण को सुरक्षित रखने वाली आदतें अपनाकर प्रदूषण कम करके और हम सभी अपने-अपने स्तर पर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकते हैं। इस अवसर पर जू सफारी के सहायक वन संरक्षक सह वनों के क्षेत्र पदाधिकारी अरविंद कुमार, पशु चिकित्सा पदाधिकारी डा. दलीप कुमार बैठा, प्रभारी प्रधान लिपिक सुनैना देवी, वनपाल निरंजन कुमार, धर्मेन्द्र कुमार राय, वनरक्षी बवन कुमार, प्रशांत कुमार, राजकुमार मंडल, पप्पू मांझी, मनोज कुमार आदि उपस्थित थे।

THE HINDU
12th June 2024

Nalanda University Launched Green Guardianship Initiative

In a significant step towards environmental sustainability, Nalanda University has launched the Green Guardianship Initiative on the occasion of World Environment Day. The initiative aims to involve the entire university community in planting and nurturing trees, fostering a deeper connection with nature. The event began with a gathering of staff and faculty members at the residence of the Vice-Chancellor (I), Prof. Abhay Kumar Singh. Prof. Singh set an example by planting saplings, marking the formal commencement of the Green Guardianship Initiative. Following the sapling plantation, a felicitation program was held at the Mini Auditorium. During the program, it was announced that the Green Guardianship Initiative would soon be rolled out to all faculty and staff members, including their families, with the onset of the monsoon season. Addressing the gathering, Prof. Abhay Kumar Singh emphasized the significance of the initiative, stating, "The initiative envisions that we develop a bond with 'Our Tree' on the campus. This personal connection with nature is intended to cultivate a sense of responsibility and care for the environment among the university community." The university also announced plans to develop two parks on the campus during the upcoming monsoon season. In addition, the initiative includes labeling and digital marking of trees to enhance environmental awareness and educational value. The Green Guardianship Initiative is part of Nalanda University's broader commitment to sustainability. The university, with its net-zero campus, has long been at the forefront of integrating eco-friendly practices into its operations and academic programs. The initiative aligns with the university's mission to create a harmonious coexistence between humans and nature, reflecting the ancient wisdom that has been the hallmark of ancient Nalanda.

Nalanda University Celebrated 10 th International Yoga Day

Nalanda University celebrated the 10th International Yoga Day with a special enthusiasm still afresh after the recent visit by Hon'ble Prime Minister here. The event saw active participation from the entire Nalanda community, staff, faculty and students. VC (I) emphasized the importance of Yoga in promoting physical and mental well-being.

The program commenced with a series of Yoga sessions led by the university's yoga instructor. These sessions included traditional Asanas, Pranayama (breathing exercises), and chanting, highlighting the holistic benefits of Yoga. Prof. Abhay Kumar Singh, Vice Chancellor (I) of Nalanda University, shared his thoughts on the occasion, stating, Yoga Day at Nalanda University serves as a reminder of the ancient wisdom that Yoga embodies. It is a practice that balances human mind and body and uplifts the human spirit, fostering well-being globally. Prof. Singh also recalled the recent inauguration of Nalanda University by Prime Minister Narendra Modi. During the inauguration, the Prime Minister emphasized India's tradition of viewing education as a tool for human welfare and noted that Yoga Day has become an international festival. PM highlighted that despite developing numerous strands of Yoga, India has never claimed a monopoly over the practice.

पर्यावरण से हम हैं, हमसे पर्यावरण नहीं : प्रो अभय

कार्यक्रम को संबोधित करते नालंदा विवि के कुलपति प्रो अभय कुमार सिंह .

राजगीर. मनुष्य का अस्तित्व पर्यावरण पर निर्भर करता है. लेकिन स्वस्थ जीवन जीने के लिए योग द्वारा हमारी सभी इंद्रियों को जागृत किया जाता है. इसलिए योग और पर्यावरण के बीच गहरा रिश्ता है. जब हम हरी-भरी घास पर चलते हैं, तो सुबह की बूंदाबांदी में भीगे घास के पत्तों का स्पर्श पैरों के लिए सबसे स्वस्थ व्यायाम है. फूलों की खुशबू मूड को बदल देती है. नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो अभय कुमार सिंह ने एक कार्यक्रम में कहा कि दोनों के बीच दिलचस्प रिश्ता है. शांत मन किसी समस्या का समाधान देता है, तो पर्यावरण संतुलित मानसिकता के साथ पनप सकता है. प्रदूषण हमेशा बीमारियों को जन्म देता है. गतिहीन जीवनशैली अक्सर लोगों को बीमार करता है. लेकिन योग के अभ्यास से आशा की नई किरण पैदा की जा सकती है.

उन्होंने कहा कि योग का सबसे अच्छा हिस्सा पर्यावरण है. ध्यान मन को शांत करता है. यह प्रकृति के संगीत (पक्षियों की चहचहाहट) को सुनने का विकल्प देता है. शोध से पता चला है कि मिट्टी को छूने से मन प्रसन्न होता है, क्योंकि मिट्टी में मौजूद सूक्ष्म जीव मस्तिष्क पर उसी तरह प्रभाव डालते हैं, जैसे कोई अवसादरोधी दवाएं. मानव शरीर के पाँच इंद्रियां.प्रकृति से जुड़ी हैं. सबसे महत्वपूर्ण भूमिका पानी की है. पानी हमारे अस्तित्व का सबसे अभिन्न अंग है. योग में पानी को अनेक रूपों में दर्शाया गया है. जैसे ठंडे पानी की थेरेपी से चिंता नियंत्रित होती है. इससे रक्त संचार को बेहतर बनाती है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है. मूड को बेहतर बनाती है. शरीर से विषाक्त पदार्थों को साफ करती है. कुलपति प्रो सिंह ने कहा कि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाया जा रहा है. इसका असर हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है.

उन्होंने कहा कि योग के पांच तत्व जैसे वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी और अंतरिक्ष हैं. ये सभी पर्यावरण से जुड़े हैं. इनमें से किसी का असंतुलन मानव जाति के लिए समस्या पैदा कर देता है. अच्छे स्वास्थ्य का उत्तर पर्यावरण में निहित है. कुलपति ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए कहा कि पर्यावरण आदि काल से हमारे अस्तित्व का आधार रहा है.